❖ विषय सूची ❖

क्रम संख्या	प्रकरणों के नाम	पृष्ठ संख्या
१.	अनुभूमिका	१
२.	स्वलीला अनुशीलन	१०
३.	एक धर्म का सूत्रपात	२०
४.	तारतम और कलमा	३४
५.	कतेब की पूँजी	६४
६.	उपली दृष्टि	८२
	हरिद्वार कुम्भ प्रसंग	९२
	चार सम्प्रदाय	९८
७.	संन्यास मत	११०
८.	षट्दर्शन	१३२
	श्रीजी का जवाब	१५४
	निजानंद संप्रदाय की पद्धति	१६२
९.	औरंगजेब को पैगाम	१८२
१०.	कुरान की हकीकत-सनंध द्वारा बोध	१९२
११.	नलुआ पत्रों का वृत्तान्त	२३६
१२.	मंत्रणा	२५६
१३.	क्यों ए रुक्का आइया	२६४

१४.	सम्राट औरंगजेब से भेंट	२८६
१५.	अवज्ञाकारियों पर रोष	३२४
१६.	लैल तुल कद्र	३४०
१७.	पैगाम ढाँप्या गिरोह ने	३५२
१८.	बड़ी पत्री	३६६
१९.	बड़ी पत्री में पुर्जी - छोटी पत्री	४३६
२०.	राजस्थान के पड़ाव	४७६
२१.	उदयपुर	५१४

मध्यांश - द्वितीय खण्ड समाप्त ।



❖ अनुभूमिका ❖

अहो! ..... श्री निजधामस्थ सुमन सुन्दरसाथजी!

यह संसार सागर अति निरस, धोखेदार, छल-कपट से भरा हुआ पुनः अविश्वसनीय, निर्दयी, दुस्तरातिदुस्तर एवम् विभिन्न अनर्थमय गुणों से युक्त है। ऐसे इस पानी के बुलबुले सदृश क्षणिक जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिनने के अवधि काल में भी मुझे आज पुनः लोकाभ्युदय गहन विषयात्मक स्व-समाज सेवा का अति सुहावना अवसर उपलब्ध हुआ है। फलतः मेरे दिमाग का सातवें आसमान में होना[1] कोई अस्वाभाविक बात नहीं है । किंतु इस जागनी के ब्रह्माण्ड में मुझ जैसे अशक्त शारीरिक अवस्थावाले व्यक्ति पर धामधनी श्री राजजी द्वारा ऐसी अहोभाग्यमय सुअवसर की प्रेरणायुक्त असीमातिअसीम अनुकम्पा होना, तो वास्तव में मेरे दीनैकबन्धो परमपूज्य धामधनी स्वरूप गुरुप्रवर बाबाजी श्री लक्ष्मीदासजी महाराज, नवतनपुरी (जामनगर) की आत्मीय प्रेरणा, अपार दया-कृपा के सिवाय अकाट्य रूपेण असम्भव है।

अतः उनकी हृदयस्थ आत्मीय प्रेरणा, असीम दया-कृपा के प्रतिफल जो कार्य आगे होने जा रहा है, उन सभी प्रतिक्रियाओं के प्रति मैं मेरे धामधनी स्वरूप श्री गुरुदेव के चरणों में नतमस्तक होता हूँ और मैं अपने आपको आजीवन उनका ऋणी मानता रहूँगा। उक्त प्रकार की असीम, अपार दया-कृपा अथवा यह कहा जाय कि उनकी अदृश्य हार्दिक अनुकम्पा के कारण ही मैं ७६ साल की उम्र में अपने अंत समय में भी दम तोड़ना छोड़कर रहल-पहल एवं बची-कुची हिम्मत और ताकत बटोरकर अपने समाज-सेवार्थ फूँक से पहाड़ उड़ाने[2] जैसा कार्य अर्थात् स्वामी श्री लालदासजी महाराज कृत मूल बीतक साहेब को सवाल-जवाब के रूप में प्रकाशित कर समाज के समक्ष रखने जा रहा हूँ।

आज से पहले अपने श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-निजानन्द सम्प्रदाय में करीब २५-३० बीतकों की रचना हो चुकी है। उनमें से स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब उक्त सभी बीतकों की आधारभूता एवम् मूल बीतक साहेब है। श्री निजानन्द सम्प्रदाय में जिस प्रकार श्री प्राणनाथजी के बाद श्री

१. बड़ा घमंड करना । २. थोडी-सी शक्ति से बड़े काम करने का उद्योग करना ।

लालदासजी का स्थान है, उसी प्रकार प्रणामी साहित्य में उपास्य ग्रन्थ "श्री कुलजम स्वरूप साहेब-श्री तारतम सागर" के बाद "स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब" का स्थान है। इसीलिए अन्य बीतकों में स्वामी लालदास कृत बीतक साहेब सर्वाधिक प्राचीन, पूज्य और विश्वसनीय है तथा प्रणामी समाज में इसे प्रथम दर्जे की मान्यता प्राप्त है।

आदिकाल से प्रचलित इस बीतक साहेब में कुल ७३ प्रकरण और ४३७७ चौपाइयाँ हैं। इसी बीतक ग्रन्थ के सवाल-जवाब के रूप में प्रकाशित प्रस्तुत ग्रन्थ आप लोगों के समक्ष उपस्थित है, जिसमें कुल ५४७७ सवाल-जवाब हैं। उक्त ५४७७ सवाल-जवाब को तीन खण्डों में विभक्त किया गया है। जैसे -

१. प्रथम खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या १२५० रहेगी और बीतक की मजल शुरूआत से लेकर सूरत की बीतक पर्यन्त आयेगी।

२. द्वितीय खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या २०१६ होगी। पुनः मजल सूरत से लेकर उदयपुर की बीतक पर्यन्त आयेगी।

३. तृतीय खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या २२११ होगी। पुनः मजल मंदसोर से लेकर अष्ट पहर की सेवा पर्यन्त अर्थात् बीतक समाप्ति तक होगी। अतः संक्षिप्त रूप में :-

(१) प्रथम भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या १२५० होगी।

(२) द्वितीय भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या २०१६ होगी।

(३) तृतीय भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या २२११ होगी।

अतः तीनों खण्डों को मिलाकर सवाल-जवाब की कुल संख्या (१२५०+२०१६+२२११=५४७७) पाँच हजार चार सौ सतहत्तर होगी।

उपरोक्त स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब में मुख्यतः तीन स्वरूप की बीतक आती है। इनमें से कौन-कौन से स्वरूप किस-किस कार्यार्थ आये और वे किस प्रकार इस दुस्तर संसार सागर के बीच आये निजधामस्थ समाज के साथ-साथ संसार की सर्वात्माओं को सब धान बाइस पसेरी[1] के दर्जे में रखकर शेर के मुँह में हाथ डालने[2] जैसा कार्य सम्पन्न कर गये ?

---

१. भले-बुरे को समान जानना । २. साहस का काम करना ।

वर्तमान कलिकाल गुण ग्रस्त निजानन्दी-प्रणामी प्रचारकों को श्रीमन्निजानन्द-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म सिद्धान्त अन्तर्गत इस मान्यता को ध्यान में लेकर चलना जरूरी और अनिवार्य देखने में आ रहा है। क्योंकि हमारा धर्म सिद्धान्त टकसाली बात करनेवाले[१] प्रचारकों को मान्यता देता है, न कि बकवादी एवम् धर्म का दाना बिगाड़नेवाले नामधारी प्रचारकों को! अतः श्री लालदास कृत बीतक साहेब में स्थित, "तीन स्वरूपों की बीतक" विषय को निम्न प्रकार से समझने पर टट्टी की आड़ में शिकार करने[२] के प्रतिफलरूपी पाप-अपराध से बच सकते हैं। जैसे -

१) **"पीउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप"**

- (श्री प्रकाश हिन्दी, प्र.१७/चौ.९)।

पीउ (मूल मिलावेवाले धनीजी का जोश) व्रज में, रास में और जागनी के ब्रह्माण्ड के तीन स्वरूप के रूप में ब्रह्मात्माओं को खेल दिखलाने हेतु पाँच बार पञ्चभौतिक शरीर धारण कर संसार में आये। मूल मिलावेवाले श्री राजजी ने इन ब्रह्माण्ड के कार्यकलाप का मुद्दार भी इन तीन मर्द स्वरूपों के ऊपर ही सौंपा है। जैसे -

"मरद तीनों पर है मुद्दार"

पुनश्च -

२) **"ए तीनों सूरत हैं एक,सो रसूल तीनों सरूप बिसेक"**

- (श्री बड़ा कयामतनामा, प्र.१२/चौ.२)।

अतः तीनों स्वरूप-बसरी, मलकी और हकी में से बसरी स्वरूप ***"रास खेलके आये बरारब स्याम"*** अर्थात् बरारब-अरबवाले तृतीय श्याम स्वरूप मुहम्मद साहेब हैं। पुनः मलकी-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और हकी स्वरूप श्री मेहराज अर्थात् महामति श्री प्राणनाथजी हैं। यसर्थ हे मेरे आत्मीय बन्धुओं, धामस्थ दोस्त अथवा निजानन्दी - प्रणामी प्रचारकों! अपने दिमाग को थोड़ी-सी कसरत कराना जी। आप लोग व्यर्थ में आकाश में छेद करने[३] जैसी हिम्मत क्यों करने लगे हो? वह भी श्री सद्गुरु और महामति स्वरूपों

१. प्रामाणिक बात करना। २. धूर्तता से छिपकर कार्य साधना; छिपकर पाप करना।
३. बड़ी चालाकी दिखलाना।

के खिलाफ? वाह रे वाह! मेरे मित्र बन्धुओं!! तारतम वाणी के इलमी कहलाकर ऐसा? अपनी-अपनी आँखों से निहारकर निम्नोक्त प्रमाण देख लीजिये न !

३) बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब।।

- (श्री छोटा कयामतनामा, प्र.१/चौ.८)।

श्री श्यामाजी के तीनों स्वरूपों-बसरी, मलकी और हकी को अलग- अलग प्रकार की शोभा (उपाधियाँ) प्राप्त हुई हैं। अतः किससे प्राप्त हुई? मूल मिलावेवाले श्री राजजी से। उनमें से एक परमात्मा (श्री राजजी) का सन्देश लेकर आए, दूसरे ने तारतम ज्ञानरूपी कुंजी प्रदान की, तो तीसरे ने सभी धर्मग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट किया।

अतः उक्त तीनों मर्द स्वरूपों-बसरी-मुहम्मद साहेब, मलकी-श्री सद्गुरु देवचन्द्रजी और हकी-श्री मेहराज (महामति श्री प्राणनाथजी) को इस जागनी के ब्रह्माण्ड में किन-किन कार्यों का श्रेय अथवा खिताब मिला? अतः बसरी स्वरूप को ला, इल्लाह अर्थात् क्षर, अक्षर से परे इलिल्लाह-अक्षरातीत ब्रह्मधाम खुदा के अर्शरूपी लक्ष्य को संसार में अवतरित करने का तथा वहाँ के लोगों को शरीअत के मार्ग पर चलाकर इंसानियत की मर्यादा का पालन कराने का, पुनः ब्रह्म एवम् ब्रह्मात्माओं के दूसरी बार स्वप्निक जगत्-खेल में आने विषय की साक्षी रखने का खिताब अथवा श्रेय मिला। मलकी स्वरूप-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को हकीकत-वास्तविकता अथवा वास्तविक ब्रह्म को इंगित करनेवाला ब्रह्म मंत्र-तारतम ज्ञान खेल में अवतरित कर उस ब्रह्मज्ञानाधार प्रथम स्वरूप द्वारा दिए हुए लक्ष्य में पहुँचाने का, प्रेम-सेवारूपी भक्ति-मार्ग जाहिर करने का खिताब-श्रेय मिला। पुनः हकी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी को विज्ञान दर्जे के तारतम-मारफती ज्ञान के माध्यम से सृष्टि के सारे धर्मग्रन्थों के गुह्य-गोप्य अथवा सांकेतिक बातुनी भेदों को खुलस्त कर तीनों सृष्टियों को एक अद्वैत ब्रह्म के चरणों में दृढ़ विश्वास दिलाकर मायावी भूमिका से परे बेहद स्थित अक्षर-अक्षरातीत ब्रह्म के चरण तले सच्चिदानन्दमय भूमिका में पहुँचाने अथवा अखण्ड मुक्तिस्थान में अखण्ड करने का खिताब-श्रेय प्राप्त हुआ। इतना ही नहीं, जड़-चेतन की मुक्ति का विधान जाहिर करने का खिताब अथवा श्रेय भी उन्हीं को दिया गया। अतः

उक्त तीनों स्वरूपों को उक्त भिन्न-भिन्न कार्यों का खिताब-श्रेय दिया तो, किसने? स्वयं मूल मिलावेवाले अद्वैत ब्रह्म श्री राजजी ने! इस प्रकार की गुह्य वास्तविकता को समझे बिना श्री राजजी के आदेश के विरुद्ध आत्मघातरूपी प्रचार-प्रसार करके मेरे निजानन्दी-प्रणामी प्रचारक बन्धु धर्मस्थान एवम् धर्म सिद्धान्त विरुद्ध जीवन यापन कर अन्त में कहाँ प्रस्थान करने के लिए कमर बाँध रहे हैं? हे मेरे मित्रगणों! आकाश-पाताल एक करके[9] भी जघन्य अपराधरूपी कार्य में क्यों प्रवृत्त होते हो? अतः आप प्रचारकों से विनयपूर्वक कहता हूँ कि कृपया धर्म-सिद्धान्त द्रोही साबित होने से पहले ही अपनी-अपनी आँखों में तारतमरूपी चश्मा पहनकर निम्नोक्त चौपाई प्रमाण के रूप में देख लीजिये न! जैसे-

४) बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत।
ए तीनों महंमद की, बीच अरस वाहेदत ।।

-(श्री मारफत सागर, प्र.१४/चौ.८५)।

अरे मेरे आत्मीय बन्धुओं! अथवा वर्तमान तारतम ज्ञान के नामधारी निजानन्दी इलमियों!! *"बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत"* कहा, अतः किसकी एक सुरत? पुनः अर्श वाहेदत के मुहम्मद कौन हैं? अतः उनकी तीन सूरतों (स्वरूपों) को अलग करनेवाले सिद्धान्तद्रोही क्या वाणी-बीतक के दुश्मन तथा श्री राजजी के ही द्रोही नहीं होंगे? अहो मेरे धामस्थ आत्माधार सम्बन्धी निजानन्दी-प्रणामी धर्मप्रचारकों! बिचारा समाज जैसे उस समय निजानन्दाचार्य श्री सद्गुरु और महामति श्री प्राणनाथजी के आश्रय पर निर्भर था, वैसे ही आज का समाज आप लोगों पर आश्रित तथा निर्भर है। अतः क्या आप वर्तमान समाज को उन दोनों सिद्धान्त प्रदत्त महापुरुषों के सिद्धान्त से विमुख बनाकर धुन्धुकारी-परीक्षित मार्ग पर जबरदस्ती घसीटकर दौड़ाने से मूल मिलावेवाले श्री राजजी स्वरूप की नजर में एक कर्त्तव्यपरायण सच्चे धर्मप्रचारक साबित हो पायेंगे? अतः निम्नोक्त चौपाई भी देख लीजिये। जैसे -

५) रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी ।

-(श्री बड़ा कयामतनामा, प्र. ५/चौ. ३७)।

९. बड़ा अन्वेषण करना, बड़ी जाँच-पड़ताल करना ।

रसूल-मुहम्मद साहेब, रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और इमाम-महामति श्री प्राणनाथजी-ये तीनों ही मूल में एक ही स्वरूप हैं। इस बात की साक्षी अल्लाह कलाम-श्री मुख बानी है। उक्त तीनों ही बसरी, मलकी और हकी स्वरूप हैं। जागनी के ब्रह्माण्ड में ये तीनों स्वरूप ही अक्षरातीत ब्रह्म-श्री राजजी के प्रेमरूपी अमृत को तारतम ज्ञान के माध्यम से तीनों सृष्टियों को पिलानेवाले हैं और पिला रहे हैं।

अरे मेरे प्रियात्माओं में भी अग्रगण्य, निजानन्दी-प्रणामी धर्म-प्रचारकों! हाय रे हाय!! श्री राजजी के हुकम-आदेश के स्वरूपयुक्त श्री श्यामाजी का ही अंग भंग करना और अपने ही सिद्धान्त विरुद्ध समाज-द्रोही बनकर धाम में मुँह दिखाने का दावा भी करना? वाह रे वाह!! "हम तुम एक बतन के" हैं, इसलिए सविनय हाथ जोड़ता हूँ कि अपनी आत्मा के उद्धार के लिये श्री लालदास कृत बीतक साहेब के अष्ट-पहर के मंगलाचरण की चौपाई नं. १९ को अच्छी तरह से निहारकर देखिये जरा क्योंकि आप लोग बाणी-बीतक को मानने और सद्गुरु तथा महामति को जाननेवाले कहलाते तो हो, परन्तु किसके आधार पर मानते तथा जानते हो, यह भी विचारणीय है न? अतः

६) बसरी मलकी और हकी, ए हुकम तीन सूरत ।
तिन दई हैयाती दुनी को, करी सैयन वास्ते सरत ।।

बसरी-मुहम्मद साहेब, मलकी-श्री देवचन्द्रजी तथा हकी-श्री मेहराज ठाकुर (महामति श्री प्राणनाथजी), ये तीनों परब्रह्म श्री राजजी के आदेश के स्वरूप हैं। इन स्वरूपों ने संसार के लोगों को अखण्ड मुक्ति प्रदान की। इनमें से हुकम के स्वरूप ने ब्रह्मात्माओं के संसार में प्रकट होने की भविष्यवाणी की थी।

अतः वर्तमान अग्रगण्य तारतम ज्ञान के निजानन्दी-प्रणामी धर्म-प्रचारकों! मैं इसलिए आप लोगों को सचेत कर रहा हूँ कि कहीं आप लोग जिस हाँडी में खा रहे हैं, उसी में छेद तो नहीं कर[9] रहे हैं न ? वर्तमान समाज के कर्णधार विशिष्ट धुरन्धर ब्रह्मज्ञानज्ञ- तारतम ज्ञानज्ञ मेरे आत्मीय दोस्तों! मैं तो आप लोगों के चलन-व्यवहार, धर्म प्रचार-प्रसार को देख-सुनकर

9. उपकार के बदले अपकार (अवगुण) करना ।

चक्कर में पड़ा हुआ हूँ। यसर्थ आप जैसों के समक्ष प्रश्न कर रहा हूँ। मैं अपनी धृष्टता के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ। किंतु हे धुरन्धर अथवा विशिष्ट विद्वानों! मैं श्री मारफत सागर प्र. १३ की चौ. १२ से डरता हूँ, जहाँ कहा है कि, *"तो कह्या जलना याको होए"* परब्रह्म सम्बन्धी ब्रह्मात्माओं का दावा लेनेवाले ये सभी जीवों को उनके दावा लेने मात्र से अथवा इस जघन्य अपराध के कारण नरक की अग्नि में जलना पड़ेगा, तो सिद्धान्तद्रोही, श्री राजजी-द्रोहियों की कौन-सी गति होगी?

पुनः श्री बड़ा कयामतनामा ग्रंथ के प्र.८ की चौ. ४० को देखकर आप प्रचारकों के प्रति दया-भाव भी उत्पन्न होता है, जहाँ कहा है कि -

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर ।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ।।

जो लोग अन्तिम समय में अवतरित परमात्मा स्वरूप श्री प्राणनाथजी के सिद्धान्त को नहीं मानते हैं, वे नास्तिक सिद्धान्तद्रोही लोग नरक की आग में जलते हैं। मुक्तिस्थलों में रहनेवाली मुक्तात्माओं के सुखों को दूर से देखकर वे सिद्धान्तद्रोही और अधिकाधिक रूप से नरकाग्नि में सन्तप्त होते रहते हैं।

अतः मुझे दुःख हो रहा है क्योंकि जीवन भर के शुभाशुभ कर्म का फल, तो धर्म सिद्धान्त देनेवाले स्वरूप के हाथ में ही है न! उक्त चौपाई के आधार पर यहाँ एक जमात निजानन्द सिद्धान्त हम रहे। अंततः हममें से कोई धाम में, तो कोई नरक में होंगे, तो? जब एक दूसरे में परस्पर चार आँख होगी, तब नरकवाले कैसे नरकाग्नि की बढ़ती ताप सहन कर सकेंगे तथा धाम (भिस्त) वाले उनकी गतिविधि को देखकर कैसे अपने आप को सँभाल सकेंगे?

यसर्थ *"एक मिलाय खोल दीजिए, ए वस्तु पावे तब"* के अनुसार उक्त सभी चौपाइयों का मिलान कर अभी-इसी वक्त सतर्क हो जाने में ही आप सबका कल्याण देखकर मैं अर्ज कर रहा हूँ। देखिये तो भी मेरे लिये नहीं, बल्कि अपनी-अपनी आत्मा के लिये ही देखने का कष्ट करें। अभी यहाँ मात्र छः प्रमाण दिए गए हैं। जरूरत पड़ने पर अनगिनत

और कइयों प्रमाण दिए जा सकते हैं। किंतु आशा करता हूँ कि उक्त प्रमाणों के द्वारा ही अपनी आत्मा का कल्याण करने की ओर अग्रसर होंगे एवम् मुझे पुनः कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा।

लक्ष्यबोध करानेवाला उक्त आत्मीय ज्ञान निजधामस्थ आत्माओं के जीवन में अत्यधिक उपयोगी साबित होगा। अतः उक्त तीनों स्वरूपों के जीवन-यात्रा विषयक ज्ञान ब्रह्मात्माओं के लिए जीवन यापन में अवर्णनीय रूपेण फलदायक सिद्ध होगा, इस बात में किंचित् मात्र भी शंका की गुंजाइश नहीं है क्योंकि इन स्वरूपों ने आत्मा के तरण-तारण के लिए साधक को जिन-जिन विषय-वस्तुओं को हृदयाङ्गम करना जरूरी होता है, उन्हें समाज के समक्ष शरीर से कलेजा निकालकर रख देने सदृश समर्पित कर दिया है। अतः उक्त बातों को हृदयाङ्गम कर सृष्टि की सर्वात्माएँ अपनी आत्मा को एक के तीन बनाने[1] की होड़ से बचा सकती हैं और निःशंक बनकर लक्ष्य में पहुँच सकती हैं।

इन तीन महानातिमहान पुरुषों के वास्तविक लक्ष्यबोध ज्ञान का अनुकरण कर निजधामस्थ उन आत्माओं को, जो संसार सागर में भूली-भटकी, मारी-मारी फिर रहीं हैं, अवश्यमेव ही अपने धनी के कदम पर कदम रखकर चलने का प्रेममय आह्वान प्राप्त होगा और "यथा नाम तथा गुणः" चरितार्थ तुल्याने में वे अवश्यमेव कामयाब हो सकेंगी। जैसे -

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम।।

-(श्री सिनगार, प्र. २३/चौ.६२)।

उक्त स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब को हमारे निजानंदी -श्री कृष्ण प्रणामी समाज में स्वयं साध्य स्वरूप हमारे इष्ट द्वारा ही कथित रचना का दर्जा एवम् महत्त्व प्राप्त है। इसीलिए उक्त बीतक साहेब के प्रत्येक प्रकरण के अंत में महामतिजी की छाप दिखाई पड़ती है। अतः जिस प्रकार निष्कलंक बुद्धावतार महामति श्री प्राणनाथजी द्वारा प्रदत्त श्री मुखवाणी - श्री कुलजम स्वरूप साहेब और स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब उनके तत्कालीन समाज के लिए नहीं थी, क्योंकि वे स्वयं श्री मुख

१. अनुचित लाभ उठाना।

वाणी में कहते हैं, *"चरने हैं सो तो आए सही, पर पिछले कारन ए बानी कही"* - (श्री प्रकाश हिन्दी, प्र.३४/चौ.२०), उसी प्रकार मुझ कालबूत द्वारा हो रहा यह प्रकाशन कार्य मेरे समकालीन वर्तमान मात्र जीभ चलानेवाले समाजार्थ हरगिज़ नहीं है क्योंकि ये लोग तो सत्तू बाँधकर मेरा पीछा करना[१] छोड़ते नहीं हैं।

तथापि समाज भले जूते की नोक पर मारना[२] न छोड़े, मेरे कार्यों में टाँग अड़ाने का धर्म पालन करते ही रहे, फिर भी मेरी ओर से उन्हें यही आशीर्वाद है कि वे मेरे कलेजे को मसलना[३] कभी न छोड़ें, हमेशा मसलते ही रहें क्योंकि संसार-समाज में यही तो प्रसिद्ध रूपेण प्रचलित है कि गधा खेत खाय, जुलाहा मारा जाय[४] !

अन्ततोगत्त्वा वर्तमान समकालीन निजानन्दी-प्रणामी समाज समक्ष सविनय निवेदन करता हूँ कि आप लोग मेरे परमार्थी कार्यों के विषय में एक का एक खाये जाने[५] का स्वधर्म तुरन्त परित्याग दें। छट्ठी के दिन भाग्यविधाता ने उनके नसीब में मेरे कार्यकलाप में मदद पहुँचाने का लिखा ही न हो, *"सुख ताले लिख्या नाहीं"* तो वे बिचारे क्या करें? अपितु मेरी धामस्थ दिलदार आत्माएँ-सखियाँ तो जरूर ही इन ग्रन्थों से लाभ उठायेंगी और इन ग्रन्थों की जतन-इज्जत भी करेंगी।

इस प्रकार के मनोवांछित अधूरे-मधुरे भरोसे के साथ मैं अपनी कलम बन्द करने जा रहा हूँ। आशा है, इन बातों पर मेरी धामस्थ दिलदार सज्जन श्रद्धा सुमन आत्माएँ विचार-विवेक जरूर करेंगी।

सुज्ञेषु किं बहुना

दिनांक १७/१२/२०१३

लेखक-

दीनदयाल।

---

१. बुरी तरह से परेशान करना। २. अति तुच्छ समझना। ३. हृदय को चोट पहुँचाना। ४. अपराध कोई करे और दण्ड किसी दूसरे को दिया जाय। ५. आपस में द्वेष करना।

❖ स्वलीला अनुशीलन ❖

धर्मप्रेमी धामस्थ अद्वैत दिलवाली आत्माओं ! जागनी के ब्रह्माण्ड का अत्यधिक सुहावना अवसर हमें प्राप्त हुआ है। पुनः इस उत्तमातिउत्तम साधनयुक्त ब्रह्माण्ड में प्राप्त मानव जीवन को सार्थक बनाने हेतु ब्रह्मज्ञान-तारतम ज्ञान ग्रन्थ भी अपने हाथ में ही है। किंतु श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त - श्री कृष्ण प्रणामी धर्मान्तर्गत प्रचारकों द्वारा वर्तमान समाज की आत्माओं का कल्याण-उद्धार तभी हो सकेगा, जब वे स्वयं सिद्धान्त प्रदत्त महापुरुषों - सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी के सैद्धान्तिक धर्म-मार्ग पर चलें और सामाजिक आत्माओं को भी चलावें।जैसे -

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम ।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम।।

-(श्री सिनगार, प्र. २३/चौ.६२)।

अरे प्रिय धामस्थ आत्माओं! हादी-सद्गुरु के सिद्धान्त को छोड़कर मनमानी चलनेवालों को कदम पर कदम रखकर चलनेवाला थोड़े ही कहेंगे। आप सब जरा सिद्धान्त विषय देखकर ब्रह्मात्माओं की चाल चलें, न कि दुनियाई दम भरें। हे मेरे धामस्थ दोस्तों! आप सबके दिमाग में यह बात यथातथ्य क्यों नहीं आती कि सूरज धूल डालने से नहीं छिपता[1]। अतः सैद्धान्तिक बात तो सैद्धान्तिक ही है। वह अविकल्प एवम् अकाट्यरूपेण रहेंगी। मेरे निजानन्दी धर्मप्रचारक दोस्तों! श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त कलियुगी वि.सं. १६७८ में प्रकट हुआ है और श्रीमद्भागवत ग्रन्थ द्वापर युग की रचना है। अतः वेदों से लेकर श्रीमद्भागवत तक के तमाम धर्मग्रन्थ सृष्टि मात्र की मानवात्माओं की जिस कमी को दूर न कर सके, उस कमी को दूर करने के लिए ही श्रीमन्निजानन्द धर्म सिद्धान्त प्रकट हुआ है। इस विषय में श्रीमन्निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी को तारतम प्रदान करते समय स्वयं श्री राजजी ने श्यामजी के मंदिर में क्या कहा था? क्या आप नहीं जानते? अतः आप लोग जरा अपनी अँतड़ियों को टटोलकर[2] ध्यान देकर निम्न प्रामाणिक चौपाई पर विचार-विवेक कर

---

१. नीचों की दुष्टता से भले आदमियों का गुण नहीं छिपता ।

२. भेद या रहस्य का पता लगाना ।

लीजिये, जो स्वयं श्री राजजी-तारतम देनेवाले स्वरूप ने हादी-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से कहे थे। जैसे-

यह भागवत कागद तुम्हारा, ए तुम्हें खुले कलाम ।
और कोई ना खोल सके, ए जो खलक आम ।।

-(श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र.६/चौ.३२)।

अर्थ :- यह भागवत ग्रन्थ तुम्हारा ही पत्र है। इसमें निहित ब्रह्मज्ञान के शब्द एवम् गूढ़ रहस्य तुम्हें ही स्पष्ट होंगे। चौदह लोकों के भले सभी जन मिलें, किंतु इसके रहस्य एवम् वास्तविकता को वे प्रकट नहीं कर सकेंगे क्योंकि तुम्हारे सिवाय कोई अन्य इसे समझ सकें, तभी तो खोलकर प्रकट कर सकेंगे।

इसलिये उक्त प्रामाणिक चौपाई के रहस्य को समझकर हे मेरे आत्मीय दोस्तों! अभी इस विषय में सचेत हो जाइये, जिससे अन्त काल धाम चलते समय छाती चौड़ी करके चलने[1] के बदले, सिर पकड़कर रोना[2] न पड़े। यसर्थ मैं हाथ जोड़कर आग्रह करता हूँ कि शीघ्रातिशीघ्र आत्मघाती मार्ग छोड़कर अपना सैद्धान्तिक मार्ग अपना लीजिए। मेरे प्रिय मित्रों! श्रीमद्भागवत ग्रन्थ विषय में "शास्त्र श्रवण श्री भागवत"-ऐसा क्यों कहा? इस विषय में गहनतापूर्वक विचार-विमर्श करो। गहनतापूर्वक विचार-विवेक करने पर विवेकशील आत्माएँ अवश्य समझ जायेंगी कि एक तो भागवत में "अद्वैत ब्रह्म नाम" को अविकल्प रूपेण निश्चित कर बताया गया है। जैसे-

अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम्।
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ।।

-(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध १०/१४-३२)।

अर्थ :- अहो! नन्द आदि व्रजवासी गोपों के धन्य भाग्य हैं। वास्तव में वे ही अहोभाग्यशाली हैं क्योंकि परमानन्द स्वरूप सनातन परिपूर्ण ब्रह्म आप, उनके अपने सगे-सम्बन्धी और सुहृद हैं।

इस ग्रन्थ की दूसरी विशेषता है - मिथ्या स्वप्निक सृष्टि विषय में देवर्षि श्री नारद मुनि द्वारा वेदव्यासजी को दिया हुआ "चतुः श्लोकी

१. निर्भय होकर चलना। २. बड़ा पश्चात्ताप करना ।

भागवत", जिसमें स्वप्निक ब्रह्माण्ड से जागृत ब्रह्माण्ड की ओर तथा नाशवन्त ब्रह्माण्ड से अविनाशी ब्रह्माण्ड बेहद भूमिका की ओर इशारा किया गया है। अतः महामति श्री प्राणनाथजी इस विषय को स्पष्ट रूप से दिखाते हुए कहते हैं कि हे मुमुक्षु आत्माओं!

अस्कंध बीजो मुनिए कह्यो, चत्रसलोकी जांहे।
ब्रह्मांडनी जिहां उतपन, अरथ जुओ तांहे ।।

-(श्री प्रकाश गुजराती, प्र. ३१/चौ.६६)।

तीसरी विशेषता यह है कि वेदव्यासजी को समझाते हुए नैष्ठिक ब्रह्मचारी देवर्षि नारद मुनि कहते हैं कि हे वेदव्यासजी! अद्वैत ब्रह्म श्री कृष्ण नाम बिना के धार्मिक नामधारी थोथे ज्ञानयुक्त साहित्य तो, कौवे का तीर्थरूप हैं। जैसे -

"तद्वायसं तीर्थमुशन्ति मानसाः
न यत्र हंसा निरमन्त्युशिक्षयाः।"

अतः कौवे के तीर्थरूपी थोथे ज्ञान में मानसरोवररूपी पचीस पक्ष में विहार करनेवाली तारतम ज्ञान की समझ प्राप्त परमहंसरूपी ब्रह्मात्माएँ कभी रमण-भ्रमण अथवा क्षणिक जीवन के अमूल्य समय को व्यर्थ बरबाद नहीं करेंगी। उक्त त्रिविध विशेषताओं के कारण ही "शास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्धि जागृत को ज्ञान" कहा है। परन्तु ब्रह्मनाम मात्र से आत्मा जागृत नहीं होती। यसर्थ अपनी आपबीती लीला से आत्म-जागृत करने हेतु कहते हैं कि -

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग ।।

- (श्री कलश हिन्दी, प्र.२३/चौ.१)।

अर्थ :- हे सुन्दरसाथजी! अब आप लोग जागृत होकर इस जागनी के सुख को देखिये। यह जागनी का सुख सुहागिनियों के लिये ग्रहण करने योग्य है। तीनों लीलाओं-ब्रज, रास तथा जागनी का ब्रज अर्थात् नवतनपुरी में सद्गुरु स्वरूप द्वारा की हुई ३४ साल की आड़ीका लीला एवम् चौथी-परमधाम पचीस पक्ष की लीला को इस जागनी के ब्रह्माण्ड में जानकर-

समझकर अनुभव करना ही आत्म-जागृति का सुख प्राप्त करना है।

अतः हे मेरे धामस्थ एकात्मरूप दोस्तों! ठण्डे दिमाग से विचार-विवेक करो। अपने अन्दर के अक्ल के दुश्मनपना को तिलाञ्जलि देकर आप सब अक्ल के पुतले[1] साबित होना क्यों नहीं चाहते? जरा विचार-विवेकशील दृष्टि से निहारकर धर्म सिद्धान्त की ओर देखिये तो कि महामति स्वरूप ब्रह्मलीला के विषय में ब्रह्मात्माओं को इशारे से क्या कह रहे हैं। जैसे - हे ब्रह्मात्माओं!

व्रजलीला अति मोटी छे, जो जो नरसैयां वचन प्रमाण।
ए पगलां सरवे आपणां, तमे जाणी सको ते जाण ।।

-(श्री रास ग्रन्थ, प्र.४/चौ.११)।

अर्थ :- व्रजलीला हमारी लीला है, जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। नरसैयाँ के वचन इसके साक्षी हैं। हे ब्रह्मात्माओं! यदि आप जानना चाहती हो, तो यह हमारा अपना ही मार्ग है। देखकर सावधानीपूर्वक इसे शिरोधार्य करो।

अतः यह बात विचारणीय है कि यदि भागवत ग्रन्थान्तर्गत वर्णित व्रजलीला मनन करने योग्य थी, तो श्री मुख बानी में *"व्रजलीला अति मोटी छे, जो जो शुकजीनां वचन प्रमाण"* ऐसा क्यों नहीं कहा गया? इसके बदले *"जो जो नरसैयां वचन प्रमाण"* क्यों कहा गया? अहो! वर्तमान समाज के धुरन्धर विद्वानों!! क्या अब भी आप लोगों पर भागवतरूपी सनक सवार होने[2] में कुछ शेष बचा है? ठण्डे दिमाग से विवेचन कर लीजिये, जिससे समाज भी पथभ्रष्ट होने से बचे और आप लोगों के लिए भी अन्तकाल में अंग-अंग मुसकराते[3] हुए श्री राजजी के आगे मुख दिखाने का रास्ता सुरक्षित रहे। पुनश्चः-

रास नरसैए रे नव वरणव्यो, मारे मन उत्कंठा एह ।
चरण पसाए रे वालातणे, तमे सांभलो कहुं हुं तेह ।।

-(श्री रास ग्रंथ, प्र.५/चौ.२)।

अर्थः- भक्त नरसैयाँ ने रासलीला का वर्णन नहीं किया। मेरे मन

---

१. बड़ा बुद्धिमान् पुरुष । २. बुद्धि भ्रष्ट होना । ३. अति प्रसन्न होना ।

में यह इच्छा है कि मैं अपनी उस लीला का वर्णन करूँ। सद्गुरु धनी के चरणों के प्रताप से मैं रास लीला का वर्णन करता हूँ। हे ब्रह्मात्माओं! आप अपनी आपबीती लीला को ध्यानपूर्वक सुनिये क्योंकि हमारी अपनी रास लीला राजा परीक्षित के शंकापूर्ण प्रश्न के कारण शुकदेवजी द्वारा वर्णन नहीं हो पाई। जैसे -

अ) "प्रश्न चूक्यो भयो अजान, रास लीला ना बरनवी परवान।"
ब) "मैं जोगी तें राजा भयो, रास को सुख न जाए कह्यो।"
क) "सो केहेनेवाला उठके गया, मैं अकेला बैठा रह्या।"
ड) "पर ए केहेवाए धनी के जोस, सो उतर गया बचनके रोस।"
इ) अब सुकजीके केती कहूं बान,
सार काढने ग्रह्यो पुरान ।
सबको सार कह्यो ए जो रास,
ए जो इंद्रावती मुख हुओ प्रकास ।।

-(श्री प्रकाश हिन्दी, प्र. ३३/चौ. १२, १३, १८, २२,२५)।

अर्थ :-अ) राजा परीक्षित भूलकर प्रश्न कर देने के कारण रास लीला के आनन्द से वञ्चित रह गया। इस प्रकार रास लीला का वर्णन न हो पाया। ब) अब मैं पहले की भाँति योगी का योगी ही रह गया और तू भी मात्र राजा ही रह गया। इस प्रकार रास लीला के सुखानन्द का वर्णन नहीं किया जा सका। क) हे राजन! मेरी अन्तरात्मा में विराजमान होकर कोई शक्ति मुझसे ये बचन कहला रही थी। अब वह शक्ति चली गई और मैं यहाँ अकेला ही बैठा रह गया। ड) रास लीला का वर्णन तो परब्रह्म परमात्मा के आवेश से हो रहा था। वह आवेश राजा परीक्षित के शंकापूर्ण प्रश्न के कारण शुकदेव मुनि के क्षुब्ध हो जाने पर उतर गया। इ) शुकदेवजी की वाणी की अब मैं कितनी चर्चा करूँ? उसका सार निकालने के लिए ही मैंने श्रीमद्भागवत की चर्चा की है और पूरे भागवत ग्रन्थ का सार यह "रास लीला" है, जिसका प्रकाश (विस्तार) श्री इन्द्रावती के मुख से (श्री रास ग्रन्थ के माध्यम से) हुआ।

अतः वर्तमान युग के श्री निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-

प्रचारकों! उपरोक्त चौपाइयों के आधार पर काल कवलित होने[1] से पहले ही शीघ्रातिशीघ्र स्व-आत्म-जागृति के साधन पर विचार-विवेक कर लीजिये। इस तरह न आव देखना न ताव[2] और औंधी खोपड़ी के[3] मनुष्य का-सा जीवन व्यतीत करना जागनी के ब्रह्माण्ड के अहोभाग्यमय जीवन प्राप्त बुद्धिजीवियों के लक्षण नहीं हैं। हे मेरे मित्रगणों! जो धामस्थ आत्माएँ खेल में आकर धाम, धनी और अपने आपको विस्मृत कर बैठीं हैं, उनकी जागनी परमधाम का अंकुर होने के कारण उनकी आपबीती लीलाओं द्वारा ही होगी। आप लोगों की अक्ल पर पत्थर पड़ने[4] के कारण ही आप स्वधर्म प्रचारक-अग्रगण्य होते हुए भी निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी समाज को दूसरों की मायागुण ग्रस्त जैसे श्रीमद्भागवत में वर्णित स्वर्ग के देवताओं के (१) गुरु बृहस्पतिजी का अपने भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी ममता द्वारा बलपूर्वक गर्भाधान कराकर भारद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न कराना (२) चक्रवर्ती सम्राट राजा ययाति का एक हजार वर्ष तक विषयों को भोगने-कामासक्त रहने पर भी विषय भोगों से अतृप्त रह जाना (३) पुनः चित्ररथ के पुत्र शशबिन्दु का अपनी दस हजार पत्नियों द्वारा प्रत्येक से लाख-लाख सन्तान उत्पन्न कर एक अरब सन्तान का विस्तार करने जैसी कथाओं के मण्डान में जबरदस्ती घसीट रहे हैं। उक्त विषय लम्पट देवगुरुओं, सम्राटों की आपबीती कहानी के माध्यम से आप प्रचारकगण निजानन्दी - श्री कृष्ण प्रणामी समाज को परमधाम ले जा रहे हैं या नर्क में पहुँचा रहे हैं? अरे प्रचारकों! उक्त प्रकार का मायावी विषययुक्त ज्ञान सुनाते हुए आह्वान करना कि "श्रीमद्भागवत श्रवण से ही परमधाम जाते हैं।" अरे बकवादियों !! क्या आप भागवत श्रवण से ही परमधाम (अक्षरातीत धाम) गये किन्हीं एक-दो व्यक्तियों के नाम गिनवा सकते हैं ? यदि नहीं, तो इस तरह कहते हुए गधे की-सी चिल्लाहट करना, यह कैसी विडम्बना है?

आपकी अपनी अक्ल पर पत्थर पड़ने के कारण ही आप थोथे ज्ञान के आधार पर "श्रीमद्भागवत श्रवण से ही परमधाम जाते हैं" इस प्रकार का आह्वान करते फिर रहे हो। अपने सैद्धान्तिक ज्ञान विषय अँतड़ियाँ टटोलने की शक्ति न पहुँच पाने पर दूसरों की आपबीती कहानी लेकर उक्त प्रकार का आह्वान करते फिरने में क्या आपको जरा-सी भी शर्म नहीं

---

१. मृत्यु को प्राप्त होना। २. सोच विचार कुछ भी न करना।
३. परम मूर्ख मनुष्य। ४. भले-बुरे का ज्ञान न होना, मति भ्रष्ट या विवेकरहित होना।

आई? तथापि अन्त काल सामने आने पर खोपड़ी रँगाना[1] न पड़े, ऐसे धर्म मार्ग पर चलने के लिए सप्रेम आग्रह करता हूँ।

अरे जागनी के ब्रह्माण्ड की जागृत आत्माओं! आप सब धर्म-प्रचारकों के दर्जे में हैं। यसर्थ पूछता हूँ कि श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में प्रणामी धर्म समाज के आत्माओं की जागनी कौन-सी लीलाओं के माध्यम से करने का आह्वान किया गया है? उपरोक्त चौपाई में वर्णित चारों लीलाओं में से ब्रज और रास लीला के विषय में स्पष्ट रूप से क्या इशारा किया गया है? अतः हमारे जागनी कार्य विषय में वशिष्ठ सार और श्रीमद्भागवत ग्रन्थ दृष्टान्त रूप में हैं, जिसमें वर्णन किया गया है कि क्रमशः किस प्रकार भगवान श्री रामचन्द्रजी को गुरु वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजी की ही पूर्व आपबीती लीला से और भगवान विष्णु ने ब्राह्मणरूप धारण कर भक्त मारकण्डेय ऋषि को धोबिन रूप में उनकी ही पूर्व आपबीती लीला श्रवण कराकर जागृत किया था। उपरोक्त दोनों तथ्य निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी धर्मान्तर्गत आत्माओं के आत्म-जागृति हेतु दृष्टान्त रूप हैं। प्रामाणिक रूप में सिद्धान्त हमारे जागनी क्षेत्र की आत्माएँ हैं। अतः हे प्रणामी धर्मप्रचारकों! अब विचार-विवेक कीजिए कि आप हमारे समाज की आत्माओं को कौन-सी लीला द्वारा, वह भी कहाँ की और किसके द्वारा वर्णित लीलाओं द्वारा जागृत कर रहे हो? निजानन्दीय धर्म प्रचार-प्रसार क्षेत्र के विद्वान महानुभावों! उक्त प्रामाणिक बातों, विषय-वस्तुओं को अपनी निजधामस्थ सखियों को देने के विषय में तो मैं आप सबसे सत के बनजारे बनने का ही आग्रह कर रहा हूँ। यसर्थ आप सब यदि महामतिजी द्वारा प्रदत्त चारों लीलाओं के माध्यम से धर्म प्रचार-प्रसार करते, तो अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारने[2] जैसे असोच्य और हानिकारक परिस्थिति से उबर जाते अथवा बच पाते।

अतः हे मेरे धामस्थ एकदिली जमात की प्रियात्माओं! *"तीन लीला चौथी घर की"* में ब्रजलीला देखने के लिए भक्त नरसैयाँ का ग्रन्थ ढूँढ़ने की जरूरत एवम् आवश्यकता नहीं है। नरसैयाँ से भी उत्तम ब्रजलीला का ज्ञान श्री इन्द्रावती के मुखारविन्द से ही प्रकट हुआ है। अतः उसे ही हृदयाङ्गम करना अपेक्षित है। क्योंकि एक तो भक्त नरसैयाँ स्वयं ब्रज लीला में शामिल नहीं था, दूसरे नरसैयाँ का ब्रजलीला वर्णन बिना

१. सिर फोड़कर लोहू बहाना। २. अपने हाथों से अपनी हानि करना।

तारतम का है। पुनः श्री इन्द्रावती आत्मा स्वयं ब्रजलीला में शामिल है तथा उनके श्री मुख से वर्णित ब्रजलीला तारतम द्वारा वर्णित होने के कारण सर्वोपरि उत्तम एवम् ग्राह्य है। श्री इन्द्रावती आत्मा द्वारा वर्णित ब्रजलीला द्वारा हम लोग अपनी आपबीती लीला का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं।

हे मेरे धामस्थ प्यारे सुन्दरसाथजी! श्री इन्द्रावती आत्मा ने ब्रज-लीला का वर्णन तारतम के माध्यम से श्री कुलजम स्वरूप साहेब-तारतम सागर अन्तर्गत श्री रास ग्रन्थ के १) "प्रेम सेवा वाले प्रगट किधी" और २) "एणे पगले आपण चालिए" ३) रास लीला के दौरान अन्तर्ध्यान के समय में स्वयं ब्रजलीला का अनुकरण करते समय के वर्णनवाले प्रकरण में तथा ४) श्री कलश ग्रंथ के गोकुल लीला में ब्रजलीला का अच्छी तरह से बोध कराया है। उक्त चारों स्थानों के वर्णन द्वारा स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है कि उस लीला के दौरान हम लोगों के कौल (कहना), फैल (चलना) और हाल (लक्षण-दशा) कैसे थे! हमारी चित्तवृत्ति निरन्तर कहाँ केन्द्रित थी, जिसके कारण रास लीला में दौड़ते समय वह संसार सागर हमारे लिए गौपदबच्छ भी नाम मात्र के लिए ही रहा। यसर्थ आप सब यदि इसी कौल, फैल और हाल की ओर इशारा करके हमें सावचेत करते हुए कहा है कि, "ए पगला सर्वे आपणा, तमे जाणी सको ते जाण" और "ऐणे पगले चालजो, पगला एह प्रमाण सुन्दरसाथजी"।

प्यारे धामस्थ सुन्दरसाथजी! दूसरी श्री रास लीला श्री कुलजम स्वरूप साहेब-तारतम सागर के प्रथम ग्रन्थ 'श्री रास' के वर्णन द्वारा अनुभव कर लीजिये। तीसरी लीला श्री नवतनपुरी में सद्गुरु स्वरूप द्वारा चौंतीस साल तक की गई आड़ीका आदि लीला है, जिसका अनुभव - जानकारी श्री लालदास कृत बीतक साहेब और श्री कुलजम स्वरूप साहेब के श्री प्रकाश ग्रन्थ द्वारा किया जा सकता है। पुनः चौथी लीला घर - श्री परमधाम की लीला है, जिसे श्री परमधाम पचीस पक्ष की चर्चनी एवम् खिलवत, परिक्रमा, सागर और सिनगार-इन ग्रन्थों द्वारा स्वयं जागृत होकर निजधामस्थ आत्माओं के दिल-दिमाग में भराकर उन्हें जागृत करके जागनी के ब्रह्माण्ड में ही इसका भोग-अनुभव किया जा सकता है। यही श्रीमन्निजानन्दीय - श्री कृष्ण प्रणामी धर्म सिद्धान्त में प्रचार-प्रसार द्वारा आत्म-जागृति की वास्तविक रीत है।

उपरोक्त धर्म सिद्धान्त प्रदत्त मार्ग से स्वयं वंचित रहकर समाज को भी वंचित कराना, यह तो स्वयं को आसमान पर खींचने जैसी बिडम्बना है। निजानन्द स्वामी श्री सद्गुरु और महामति श्री प्राणनाथजी के धर्म सिद्धान्त के समक्ष ऐसी प्रदर्शनी करते क्या आप सबको जरा-सी भी शर्म नहीं आती?

हे कलिकाल गुण ग्रस्त धर्मप्रचारकों! हे मेरे दोस्तों!! आप लोग अभी से आँख-कान खोलकर चलना और सामाजिक आत्माओं को भी चलाना शुरू कर दीजिये, नहीं तो पीछे अवश्यमेव ही सिद्धान्त प्रदत्त उभय महाजनों-श्री सद्गुरु और श्री महामति स्वरूपों के दरबार में सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुँह काला[1] प्रत्यक्ष होगा। ऐसी विकट परिस्थिति के सामने आने पर सामाजिक आत्माएँ उन्हें कैसे देख अथवा सहन कर सकेंगी?

अतः धर्मप्रेमी धामस्थ सुन्दरसाथजी और धर्मप्रचारक मेरे दोस्तों! मैं तो एक ओर धर्म सिद्धान्त को देखता हूँ, तो दूसरी ओर धर्मप्रचारकों को!! पुनः सिद्धान्त प्रदत्त दोनों ही "महाजनो येन गतः स पन्थाः" सद्गुरु स्वरूप और महामति श्री प्राणनाथजी के आगे तौबा खींचते हुए यही कहता हूँ कि हे धनी! यह मुहावरा साकार रूप में प्रत्यक्ष हो गया है, जैसे- "कुतिया चोरों मिल गई, पहरा किसको दें[2]" अर्थात् जब कुतिया और चोरों मिल गये, तब पहरा किसको दें ? अर्थात् कुतिया-धर्म सिद्धान्त रक्षक गादीपति हैं, चोर-स्वगुरुज्ञान द्रोही, कुपथगामी, नामधारी विद्वान, धर्म सिद्धान्त भक्षक, सलाहकार मंत्री ही चोर हैं। ये राजा और मंत्री मिल गये, तो धर्म-सिद्धान्त की रक्षा कौन करे ? निम्नोक्त प्रकार से बकवाद करनेवाले सलाहकार, मंत्री की जबान मूल से उखाड़कर उसी की हथेली पर रखने के लिए श्रीमन्निजानन्द धर्म-सिद्धांत हरगिज़ पीछे हटेगा नहीं। इसलिए हे धनी! आपके चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि इन नामधारी धर्मप्रचारकों को थोड़ी-सी सद्बुद्धि प्रदान करने का कष्ट अवश्य करें, जिससे कि सामाजिक आत्माओं का उद्धार-कल्याण हो सके।

---

१. सच्चा सर्वत्र पूजित होता है, झूठे का कोई विश्वास नहीं करता ।
२. रक्षक जब चोरों से मिल जाते हैं तब रखवाली नहीं हो सकती ।

नोट :-

श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्तान्तर्गत वर्तमान तीनों पुरी धाम एवम् द्वादश परमहंस पीठों सहित पन्द्रह गादीपति महाराज अपने-अपने क्षेत्र में धर्म-सैद्धान्तिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार द्वारा जागनी अभियान का विस्तार कर रहे हैं। उक्त गादीपतियों का मुख्यतः कर्तव्य है कि वे स्वधर्म सिद्धान्त के रक्षक बनते हुए सिद्धान्त भक्षकों को भी धर्म सिद्धान्त के प्रति श्रद्धा-विश्वास दिलाएँ और स्व-इष्ट के प्रति प्रेम उत्पन्न कराएँ ।

परन्तु अपने-अपने स्थान से भविष्य के लिए निकले-निकाले हुए सैद्धान्तिक ज्ञान की तालीम से सम्पन्न नामधारी विद्वान प्रचारक ही सैद्धान्तिक "प्राणनाथ साहित्य"-धर्म के उपास्य ग्रन्थ श्री कुलजम स्वरूप साहेब-श्री तारतम सागर और श्री बीतक साहेब, पुनः श्रीमन्निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी - इन उभय स्वरूपों के प्रति चर्म चक्षु - सुकर दृष्टि लेकर बैठे हैं। अतः वे स्वयं उक्त ब्रह्म लीलामय ब्रह्मज्ञान के प्रति अंगुलियाँ उठाते[9] हुए भोले-भाले साधारण धर्मानुयायी समाज को भी बीतक, वाणी और उभय स्वरूपों के प्रति चर्म चक्षु - सुकर दृष्टि वाला ही बना रहे हैं। यसर्थ मैं आग्रह करता हूँ कि ऐसे मात्र नामधारी विद्वान प्रचारक उत्पन्न करने से तो धर्मस्थान छोड़कर अपने प्रचारकों को साथ लेकर अपने गाँव में ही गौशाला - भैंसशाला खड़ा करके घास काटते हुए जीवन गुजारा करना अत्युत्तम है क्योंकि "जघन्य गुण वृत्तिस्थाः" उक्त प्रकार करते, तो स्वयं भी बचते और धर्म-समाज भी बच पाता!!

सुज्ञेषु किं बहुना -

- लेखक
दीनदयाल।

सूचना :- ता. २४ जून २०१९ के दिन शाम ७.३० बजे अपने आत्मीय सुंदरसाथ के साथ मोबाईल फोन में हुए वार्तालाप के दौरान श्री प्राणनाथजी स्वरूप और तारतम सागर-श्री कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत वाणी-ज्ञान विषय प्रयुक्त किए गए आक्षेप आरोपयुक्त भर्त्सनापूर्ण शब्दों सहित कहे गये १० प्रश्नों की रिकॉर्डिंग सहित सप्रमाण जवाब समय के लिए सुरक्षित है। जरूरत पड़ने पर नाम-स्थान के साथ स्पष्ट किया जायेगा । जहाँ तक मुझे आगे बढ़ना न पड़े, दया करना! सावधान !!!

9. बदनाम करना, अपकीर्ति फैलाना ।

❖ स्वामी श्री लालदास कृत बीतक के सवाल ❖

❖ एक धर्म का सूत्रपात ❖

स. १-हजरतें हज इत करी, लेनें को मक्का ।
फते करी दज्जाल की, कूच करे दारूलबका।।

इस चौपाई का क्या अर्थ है? इस चौपाई के तात्पर्य सहित वास्तविकता को भी स्पष्ट करो।

ज. १- हजरतें हज इत करी, लेनें को मक्का ।
फते करी दज्जाल की, कूच करे दारूलबका।।

हजरतें अर्थात् स्वामी श्री प्राणनाथजी सूरत-मदीना शहर को तीर्थस्थान बनाकर वहाँ से धर्म की पूर्ण सत्ता अपने सिर पर लेकर दिल्ली की ओर दिल्ली की अत्याचारी सत्ता को निस्तेज करने का ध्येय लेकर आगे बढ़े। हजरत मुहम्मद साहेब की मदीना यात्रा का प्रसंग महामति श्री प्राणनाथजी की सूरत में प्रतिष्ठा पर पूरा उतरता है। इसलिए "हजरतें हज इत करी" शब्दों का प्रयोग किया गया →

स. २-सूरत को मदीना शहर कहने का वास्तविक अर्थ क्या है?

ज. २- मुसलिम बादशाहों (औरंगजेब) के शासन काल में भारत में हिन्दू धर्म पालन करनेवाले जितने भी हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलिम- →

स. ३-सूरत से स्वामी श्री प्राणनाथजी कहाँ का लक्ष्य रखकर आगे चले?

स. ४-सूरत से स्वामीजी के साथ कैसे-कैसे लोग और किस लिए चले?

❖ स्वामी श्री लालदास कृत बीतक के जवाब ❖

❖ एक धर्म का सूत्रपात ❖

→ है। दिल्ली की सत्ता को परास्त करना ही मक्का पर क़ब्जा करना है। फत्ते करना अर्थात् परास्त करना। हजरत स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने दज्जालरूपी कलियुग स्वरूप औरंगजेब के अभिमान को परास्त किया, जिसका कारण था कि वह इमाम के जाहिर होने और ईसा की पातशाही जैसी वास्तविकताओं को कबूल करना नहीं चाहता था। तख्त को उलटा देना ही ईसा–रूह अल्लाह की पातशाही शुरू होना है। दैविक सोटे (धक्के) द्वारा तख्त को छुड़ाना ही औरंगजेब को परास्त करना है। तत्पश्चात् ब्रह्मात्माओं को जागृत करते-करते हजरत स्वरूप श्रीजी साहेबजी ने दारूलबका अर्थात् पन्ना की ओर प्रस्थान कर अंत में वहीं विश्राम किया। पन्ना को दारूलबका कहा गया क्योंकि अखण्ड अक्षरातीत के दारूरूपी तारतम ज्ञान के मुख्यातिमुख्य अंश मारफती ज्ञान जैसे - खिलवत, परिक्रमा, सागर और सिनगार जैसे ग्रन्थ यहीं पन्ना में अवतरित हुए। यह स्थान नारायणी सृष्टि में जागनी रास का केंद्र रूप है।

→ इसलाम धर्म में परिवर्तित किया गया था, इसलाम धर्म धारण करनेवाले उन गरीब हिन्दुओं को अरब के मक्का-मदीना के सेजदा का पुण्यार्थ यहीं सूरत से प्राप्त कराया जाता था। इसी कारण से सूरत शहर को मदीना शहर के नाम से भी जाना जाता है।

ज. ३- सूरत-मदीना शहर से दिल्ली के तख्त पर बैठे सुलतान औरंगजेब को परास्त करने का लक्ष्य रखकर स्वामी श्री प्राणनाथजी बनी असराईल स्वरूप होकर आगे बढ़े।

ज. ४- मदीना शहर सूरत से कुरान-हदीसों में भविष्यवाणी के रूप में कहे →

→ प्रमाण बनी असराईल के सहायक के रूप में मर्द जमात अर्थात् →

स. ५- किन अथवा कैसी ब्रह्मात्माओं के महिमा की बातें कहाँ पहुँची?

ज. ५- स्वामी श्री प्राणनाथजी-बनी असराईल के जागनी अभियान का →

स. ६- "इन ब्रह्मात्माओं की सिफत-महिमा सबसे बढ़कर और प्रशंसनीय है"-ऐसा कहाँ लिखा है?

ज. ६- "जागनी धर्माभियान में सारा जीवन श्री प्राणनाथजी के चरणों →

स. ७- "ब्रह्मात्माओं की महिमा की बातें उनके नसीब के मुताबिक होगी"-इस बात की साक्षी कहाँ है?

ज. ७- "इन मोमिन रूहों-ब्रह्मात्माओं के महिमा की बातें कार्यक्षेत्र में →

स. ८- श्री प्राणनाथजी ने अपने साथ चलनेवाले मोमिनों को क्या ताम (खुराक) दिया?

ज. ८- श्री प्राणनाथजी ने अपने साथ चलनेवाले मोमिनों-ब्रह्मात्माओं →

स. ९- श्री निजानन्द स्वामी ने कहाँ के-कौनसे रहस्यों को खोलने की कुंजी अवतरित की?

ज. ९- निजानन्द स्वामी श्री श्यामाजी अवतार-सद्गुरु स्वरूप ने वेद, →

स. १०-स्वामी श्री प्राणनाथजी ने तारतमरूपी कुंजी द्वारा कहाँ के सांकेतिक शब्दों को जाहिर किया?

ज. १०- स्वामी श्री प्राणनाथजी ने तारतमरूपी कुंजी द्वारा मारफत और हकीकत अथवा ज्ञान और विज्ञान दर्जे के उन सभी रहस्यों को →

→ खासल-खास-मोमिन ब्रह्मात्माएँ अपना तन, मन, धन सौंपकर चलीं ।

→ अंश बनकर जो जमात अपने धनी के सेवार्थ धनी के साथ चली, उन खासल-खास ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के जमात की महिमा को अवर्णनीय कहा है। उनकी सिफत-महिमा की बातें नूर परे नूर तजल्लाह अथवा अक्षर परे अक्षरातीत धाम में पहुँची।

→ में सौंपकर चलनेवाली मोमिन रूहों-ब्रह्मात्माओं की सिफत-महिमा, नाम, यश, कीर्ति आदि लोक-परलोक में सबसे बढ़कर, प्रशंसनीय, स्मरणीय और अवर्णनीय है।"-ऐसा कुरान और हदीसों में लिखा हुआ है।

→ उनके लौह महफूज अर्थात् नसीब में लिखे प्रमाण होगी, जो उनके नसीब में खेल में आने से पहले धाम में ही लिख दी गयी थी।"- इस बात की साक्षी कुरान और पुराण दोनों ही पक्षों में भरमार लिखी है।

→ को आत्म-ज्ञान, ब्रह्मज्ञानरूपी ताम (खुराक) दिया, जिससे वे "हम जागें अपने धाम में, हमको नहीं फिकर" अर्थात् हम जहाँ भी पहुँचकर मरेंगे, अपने धाम-मूल मिलावे में उठेंगे, ऐसी हिम्मत-ताकत लेकर, कमर बाँधकर, निःशंक होकर आगे चलें।

→ कुरान और पुराणों एवम् हदीसों के गुह्यातिगुह्य एवम् गोप्यातिगोप्य जैसे आत्मा-ब्रह्म, रूह-अल्लाह के बीच की दूरी को निर्मूल करने जैसे विषयों को खोल देनेवाली नूर कुंजी अवतरित की और उस कुंजी द्वारा सभी सांकेतिक रहस्यों को खोलकर जाहिर कर दिया।

→ खोल दिया, जो संसार के विभिन्न सद्धर्मग्रन्थों में छिपे हुए थे, जिन्हें आज तक कोई खोलकर जाहिर नहीं कर पाया था। "खोलनेवाले स्वयं आकर खोलेंगे"- ऐसा कहते हुए सब जिसके इन्तजार में बैठे थे, अब किसी भी विषय की बातें गोप्य नहीं रह गईं। सांकेतिक शब्दों में लिखे क्षर, अक्षर और उत्तम पुरुष तथा →

→ अलिफ, लाम और मीम में गोता खा रहे आत्म-तत्त्व के सभी →

स. ११-श्री प्राणनाथजी ने ब्रह्मात्माओं को किस ज्ञान का आहार दिया ?

ज. ११- श्री प्राणनाथजी ने ब्रह्मात्माओं को अपनी आत्मा के सम्बन्धी →

स. १२-मोमिन - ब्रह्मसृष्टियों को सुन्नत जमात क्यों और कहाँ कहा है?

ज. १२- ब्रह्मधाम की ब्रह्म सम्बन्धी आत्माओं की जमात अर्थात् मोमिन →

स. १३-"इन आत्माओं के प्रति खुदा-परमात्मा के दिल में बड़ा प्यार है"- यह बात कहाँ लिखी है?

ज. १३ - इन सुन्नत जमात, मोमिन रूहों अथवा ब्रह्मात्माओं के बराबर खुदा के लिए अन्य कोई नहीं है। इन ब्रह्मात्माओं-मोमिन रूहों →

स. १४-कौन-सी आत्माएँ श्रीजी साहेबजी की तन, मन, धन एवम् प्रेम से सेवा करेंगी?

ज. १४- ब्रह्म और ईश्वरी - ये दोनों आत्माएँ तन, मन, धन और आत्मीय लगन के साथ प्रेमपूर्वक श्रीजी साहेबजी की सेवा करेंगी। →

स. १५-अक्षरातीत पूर्णब्रह्म ने खेल में आई ब्रह्म और ईश्वरी आत्माओं को संसार से ढूँढ़-ढूँढ़कर एकत्र करने की जिम्मेदारी किन्हें दी है?

ज. १५- अक्षरातीत-नूर तजल्लाह के ब्रह्म-खुदा ने खेल में बिखरी हुई →

स. १६-कौन-सी आत्माएँ व्रज और रास के ब्रह्माण्ड में थीं और कौन-सी आत्माएँ यहाँ जागनी के ब्रह्माण्ड में आई हैं?

→ खोजियों और भविष्य वक्ताओं की उलझनों को श्री प्राणनाथजी ने तारतम के द्वारा सुलझा दिया ।

→ परमात्मा का ज्ञानरूपी आहार देकर पुष्ट किया। ब्रह्मात्माओं के आत्मा की खुराक है-ब्रह्म, ब्रह्मधाम और अपने परात्म स्वरूप का ज्ञान ।

→ जमात को कुरान और हदीसों में सुन्नत जमात कहा है क्योंकि ये आत्माएँ अपनी आत्मा के सम्बन्धी परात्मा अथवा परमात्मा के ज्ञान को सुनते ही समझकर अपनानेवाली अर्थात् 'यह मेरे लिए ही कहा है'- ऐसा समझकर अपने सिर पर लेनेवाली आत्माएँ हैं।

→ के प्रति खुदा-परमात्मा के दिल में बड़ा प्यार है। जैसे- *"खुदा और बंदे में, जरा नहीं तफावत"* पुनः *"ब्रह्मसृष्टि कही वेद ने, ब्रह्म जैसी तदीगत"* - ये बातें वेद, पुराण, कुरान, हदीसा आदि सद्ग्रन्थों में भरमार लिखी पड़ी हैं।

→ ब्रह्मात्माएँ अपने सम्बन्ध के मुताबिक और ईश्वरी आत्माएँ अपना कर्तव्य पालन करने के लिए अपने धनी की प्रेमपूर्वक सेवा करेंगी क्योंकि ईश्वरी आत्माओं को ब्रह्मात्माओं की "रखोपा रूह कारण" अर्थात् रक्षा करने के लिए भेजा गया है।

→ रूह-आत्माओं को एकत्रित करने की जिम्मेदारी मलकी और हकी स्वरूप अर्थात् रूहों-आत्माओं के जमात की अग्रगण्य सुन्दरबाई सखी-रूह अल्लाह और इन्द्रावती सखी-इमाम मेहदी अथवा महामति स्वरूप को दी है। अतः वे स्वरूप ढूँढ़-ढूँढ़कर भूली-भटकी आत्माओं को एकत्रित कर रहे हैं।

ज. १६- ब्रज और रास-इन दोनों ब्रह्माण्डों में अक्षरातीत ब्रह्म सम्बन्धी ब्रह्मात्माएँ थीं और वे आत्माएँ ही धाम से दूसरी बार यहाँ तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में भी आईं हैं।

स. १७-किन रूहों-आत्माओं के लिए श्री राजजी को तीसरा ब्रह्माण्ड रचना पड़ा?

स. १८-"कौन जानता है कि हम सोकर दूसरे दिन उठे हैं?"-ऐसा कहने का क्या तात्पर्य है?

ज. १८- सृष्टि के लोग, विद्वान एवम् त्रिकालदर्शी भविष्यवक्ता यही कहते एवम् जानते हैं कि ब्रजगोपियों के ब्रज से रास में जाते समय कालमाया का जो ब्रह्माण्ड था, वह पूर्ववत् ही रहा। परन्तु वे यह →

स. १९-कहाँ खेल में उतरी आत्माओं को ब्रह्मसृष्टि कहा है और कहाँ खासल-खास उम्मत कहा है?

स. २०-"उन ब्रह्मात्माओं को कयामत के वक्त स्वयं खुदा आकर दावत अथवा सदुपदेश देकर जागृत करेंगे"-ऐसा किसने कहा है?

स. २१-सकुमार और साकुण्डल कौन-कौन हैं? उन्हें जगाकर ले जाने के लिए किसने और किनसे कहा है?

ज. २१- बादशाह औरंगजेब की परात्मा का नाम सकुमार सखी है और →

स. २२-कलियुगी बुद्धिवालों के साथ लड़ाई करके आत्माओं की शारीरिक बुद्धि छुड़ाकर उन्हें आत्मीय बुद्धि धारण कराने की आज्ञा किसने, किसे दी है?

ज. २२- यह आज्ञा सद्गुरु स्वरूप ने श्री मेहराज-श्री इन्द्रावती सखी को →

स. २३-कौन-कौन धर्म का नाम लेकर धर्म सिद्धान्त के विरुद्ध धरती पर अधर्म फैला रहे हैं?

ज. १७- अक्षरातीत धाम से खेल में आई ब्रह्मात्माओं में से तामस गुण की प्रधानतायुक्त आत्माओं की अधूरी इच्छा को पूरी करने के लिए ही श्री राजजी को इस तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना करनी पड़ी ।

→ नहीं जानते कि उस समय का कालमाया का ब्रह्माण्ड मात्र ही नहीं, बल्कि *'उपज्यो और जाने सोइ ब्रह्माण्ड'* अर्थात् बंशी ध्वनि के साथ-साथ सारी सृष्टि ही अकालिक महाप्रलय को प्राप्त हो गई थी, यह बात किसी को पता नहीं चल पाई। सब यही जानते थे कि हम सोकर दूसरे दिन उठे हैं।

ज. १९ - वेदों में ब्रह्मधाम से उतरी आत्माओं को ब्रह्मसृष्टि कहा है और कुरान में उन्हीं को खासल-खास उम्मत कहा है।

ज. २०- *"उन ब्रह्मात्माओं अथवा खासल-खास जमात को क़यामत के समय स्वयं खुदा आकर दावत अथवा सदुपदेश देकर जागृत करेंगे।"*-ऐसी भविष्यवाणी तृतीय श्याम स्वरूप ने की थी। पुनः यह बात कुरान और हदीसों में भी लिखी हुई है।

→ महाराजा छत्रसाल की परात्मा का नाम साकुण्डल सखी है। इन दोनों को जागृत कर श्री परमधाम ले आने की जिम्मेदारी सद्गुरु स्वरूप श्री श्यामाजी अवतार ने इन्द्रावती सखी अर्थात् श्री मेहराज को दी है।

→ देते हुए कहा था, "ये दोनों सकुमार और साकुण्डल नामक आत्माएँ कलियुगी बुद्धि से ग्रस्त होकर परस्पर लड़ रही हैं। इनकी शारीरिक बुद्धि छुड़ाकर इन्हें आत्मीय बुद्धि का उपदेश देकर सुबुद्धि धारण कराना। इनका परस्पर क्रोध-ब्रोध मिटाकर इन्हें वास्तविकता का ज्ञान कराना।"

ज. २३- हिंदू और इसलाम-दोनों धर्म के रक्षक, धर्म का विस्तार प्रचार-प्रसार करने के नाम से एक-दूसरे से लोहा बाँधकर लड़ रहे हैं।

→

एक सबको इसलाम धर्मवाला बनाना चाहता है, तो दूसरा असुर जाति को ही निर्मूल कर देना चाहता है। वास्तव में एक राख है,

स. २४-काले कलियुगी प्रवृत्तिवालों को ज्ञानरूपी शस्त्र से मारकर दूर करने की आज्ञा किसने और किन्हें दी है?

ज. २४- कुली कलिंगा-कलियुगी वृत्तियों से ग्रस्त लोग देह-बुद्धि रखने

स. २५-यदि ये दोनों लड़ाकू-सकुमार और साकुण्डल क्रोध-ब्रोध छोड़कर समझेंगे, तो धरती के बीच क्या होगा?

ज. २५- यदि ये दोनों लड़ाकू-सकुमार और साकुण्डल आत्मीय ज्ञान द्वारा

स. २६-उक्त दोनों योद्धाओं-साकुण्डल और सकुमार को किस-किस की साक्षी-प्रमाण देकर समझाने को कहा है?

ज. २६- उक्त दोनों योद्धाओं-साकुण्डल और सकुमार को कुरान और पुराण, वेद और कतेब के ज्ञान द्वारा यह अविकल्प रूप से दृढ़

स. २७-बनी असराईल कौन हैं और उनके जमात के अग्रगण्य कौन हैं?

ज. २७- बनी असराईल रूह अल्लाह श्री सद्गुरु स्वरूप हैं। उनकी जमात

स. २८-किसने और किनके साथ हजार महीने तक निरन्तर युद्ध किया?

ज. २८- रूह अल्लाह सद्गुरु स्वरूप (असराईल) ने मायावी बुद्धि

स. २९-उक्त लड़ाई में हजार महीने की अवधि कहाँ -से-कहाँ तक की मानी जाती है?

ज. २९- उपरोक्त लड़ाई में हजार महीने की अवधि श्री सद्गुरु स्वरूप के

→ तो दूसरा खाक है। राख और खाक का परिचय कराकर आत्मीय ज्ञान द्वारा आत्मा और रूह-दोनों की वास्तविकता समझाकर जागृत करना है।

→ के कारण एक-दूसरे के कालरूप बने हैं। वास्तविक तारतम ज्ञानरूपी शस्त्रों द्वारा उनके अंदर की जन्म-जन्मान्तर से जमी हुई पापरूपी अज्ञानता को दूर करने और उन्हें आत्मा अथवा रूह का ज्ञान कराने की आज्ञा श्रीमन्निजानन्दाचार्य सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी ने श्री मेहराज ठाकुर को दी है।

→ समझकर परस्पर क्रोध-ब्रोध छोड़कर एकात्म बनेंगे, तो श्रीजी स्वरूप का **"सुख शीतल करूं संसार"** यह महावाक्य सार्थक हो जायेगा। सारा संसार सुखमय जीवन व्यतीत करने लगेगा और यह धरती ***"स्वर्गदपि गरीयसि"*** सिद्ध होगी।

→ कराने को कहा है कि खुदा और ब्रह्म मात्र दो अलग-अलग नाम हैं। वस्तुतः तत्त्व विशेष दोनों एक ही हैं। खुदा एक है और ब्रह्म अलग है, ऐसा नहीं है। इस बात को उभय पक्ष के सद्धर्मग्रन्थों द्वारा साक्षी-प्रमाण देकर दोनों योद्धाओं में एकात्मता दृढ़ कराने को कहा है।

→ बारह हजार ब्रह्मात्माएँ अथवा मोमिन हैं तथा इन ब्रह्मात्माओं की जमात में श्री इन्द्रावती की आत्मा अर्थात् श्री महामति स्वरूप (रूह अल्लाह का दूसरा जामा) अग्रगण्य हैं।

→ रखनेवाले धर्मविरोधी दज्जालों के साथ वि. सं. १६३८ से लेकर वि. सं. १७१९ तक निरन्तर युद्ध किया । वि. सं. १७१२ के बाद उक्त स्वरूप दूसरे जामे में होकर लड़ते रहे ।

→ जन्म अर्थात् वि. सं. १६३८ से लेकर वि. सं. १७१९ अर्थात् जूनागढ़ के ब्राह्मण हरजी व्यास के साथ हुए धर्मयुद्ध तक मानी जाती है। यहाँ तक कुल ८३ वर्ष ४ महीने होते हैं।

स. ३०-हजार महीनों से भी लंबी और बेहतर लड़ाई किसकी और किसके साथ हुई ?

स. ३१-"बेहतर" (बढ़कर) विषय को कितना समझना चाहिए? पुनः किनके-किनके बीच और कैसी लड़ाई हुई?

ज. ३१- दूसरे जामे द्वारा धर्मविरोधी दज्जालों के साथ की लड़ाई वि.सं. →

स. ३२-यह बेहतर लड़ाई कमर कसकर किसने लड़ी?

स. ३३-यह लड़ाई संसार में सबसे ऊपर की और सबसे बड़ी कैसे साबित हुई?

ज. ३३- यह लड़ाई धर्मक्षेत्र की लड़ाई है। समाज को धर्म-सिद्धान्त देनेवाले सुबुद्धियुक्त ज्ञानीजन आज तक सदैव कुबुद्धि ग्रस्त लोगों के विरुद्ध लड़ते-लड़ते ही समाज को धर्म-सिद्धान्त देते आये हैं। →

स. ३४-उक्त लड़ाई में असराईल के बनी की सहायता किसने की ?

स. ३५-बनी असराईल की और उनके मददगारों की सिफत और उनके द्वारा किया गया परिश्रम अवर्णनीय है। अतः कैसे, स्पष्ट करो?

ज. ३५- बनी असराईल की और उनके मददगारों की हिम्मत, उनकी समझ, उनका विचार-विवेक, उनकी सिफत और उनके द्वारा →

ज. ३०- उक्त ८३ वर्ष ४ महीने तक चली लंबी लड़ाई से बेहतर लड़ाई दूसरे जामे अर्थात् श्री प्राणनाथजी स्वरूप की धर्मविरोधी दज्जालों से चली ।

→ १७५१ तक चली। *"बेहतर"* विषय को समझाने के लिए ही कहा है कि पहले और दूसरे जामे के बाद दज्जालों की लड़ाई महाराजा छत्रसाल से हुई। इसके उपरान्त महाप्रलय तक भी श्री सद्गुरु स्वरूप के तारतम ज्ञान के प्रचार-प्रसार के दौरान ये दज्जाल धर्म के प्रचारकों के साथ लड़ते ही रहेंगे।

ज. ३२- ८३ वर्ष ४ महीने से भी लंबी यह बेहतर लड़ाई श्री प्राणनाथजी ने धर्मविरोधी दज्जालों से कमर बाँधकर जामनगर से लेकर दीव बंदर होते हुए पन्ना तक लड़ी ।

→ कितनों ने लोगों को स्वर्ग, वैकुण्ठ, कैलास, निराकार आदि का लक्ष्य दिया। इन सबसे ऊपर का सिद्धान्त देनेवाले बल्लभाचार्यजी ने लोगों को गोलोक का लक्ष्य दिया। किन्तु यह सिद्धान्त परात्पर अक्षरातीत धाम का उत्तमातिउत्तम और श्रेष्ठातिश्रेष्ठ सिद्धान्त होने के कारण ही इस सिद्धान्त की स्थापना के लिए हुई लड़ाई सभी लड़ाइयों से ऊपर और बड़ी सिद्ध हुई।

ज. ३४- उक्त लड़ाई में असराईल अर्थात् श्री सद्गुरु स्वरूप के बनी अर्थात् लड़के-नजरी पुत्र श्री प्राणनाथजी की मदद अक्षरातीत की मोमिन रूहों-ब्रह्मात्माओं ने तन, मन, धन और आत्म-लगन से की ।

→ किया गया परिश्रम अवर्णनीय है क्योंकि उन्होंने संसार के जन्म-मरणरूपी चक्कर में धोखा खाते फिरनेवालों को इस चक्कर से हमेशा के लिए छुड़ाने के विषय में कड़ी मेहनत और हिम्मत की तथा अपना जीवन ही दान कर दिया । अतः जितनी बड़ी बात, उतना ही बड़ा बखान भी होता है।

स. ३६-वे हिम्मतदार ब्रह्मात्माएँ कौन-कौन हैं, जिन्हें धर्मयुद्ध में जूझने का सामर्थ्य अपने धनी से प्राप्त हुआ?

ज. ३६- उन हिम्मतदार ब्रह्मात्माओं का नाम आगे आनेवाले प्रकरण में कहा जाएगा। अभी यहाँ इतना जानना जरूरी है कि वे आत्माएँ →

स. ३७-वे कौन-कौनसी आत्माएँ हैं, जिन्होंने बारह हजार ब्रह्मात्माओं की जमात का सिर ऊँचा कर दिया?

ज. ३७- तीन गुणों में से तामस गुण प्रधान छः हजार आत्माओं पर अक्षरातीत श्री राजजी की मेहेरपूर्ण दृष्टि सर्वप्रथम ही पड़ी थी, जिन्होंने →

स. ३८-इस अथाह संसार सागर के बीच श्री प्राणनाथजी की सेवार्थ कौन संसार ठुकराकर चले?

ज. ३८- इस अथाह अपार संसार के बीच अपने परलोक के धनी श्री →

स. ३९-खासल-खास जमात के अग्रगण्य हिम्मतदारों में कौन-कौन हैं?

ज. ३९- इस वक्त संसार को ठुकराकर श्रीजी स्वरूप के साथ चलनेवाली जितनी भी ब्रह्मात्माएँ हुईं, वे सब गृहस्थाश्रम में पारिवारिक जीवन →

स. ४०-क्या उन शूरवीरों के दिल-दिमाग में धाम, धनी और अपने कर्तव्य पालन के सिवाय अन्य भी कुछ था?

ज. ४०- बनी असराईल के जमात में असराईल के दूसरे जामे के सहायकों में अग्रगण्य होकर वीतरागी की जगह पर चलनेवाली इन शूरवीर →

→ जीव, ईश्वरी और ब्रह्मसृष्टियों की जमात में से उत्तम जमात अर्थात् ब्रह्मसृष्टि जमात में हैं। इन ब्रह्मसृष्टियों में भी त्रिगुणात्मक भेद है। अतः इन त्रिगुणात्मक आत्माओं में से भी वे तामस गुणयुक्त जमात में हैं।

→ बारह हजार ब्रह्मात्माओं की महिमा, इज्जत, नाम और यश की नाक रख ली। ये आत्माएँ धन्य-धन्य हैं, जिन्होंने सबके बदले धर्मयुद्ध में जूझने का सामर्थ्य और हिम्मत धनी से प्राप्त किया तथा खेल में भी ब्रह्मात्माओं की जमात का सिर ऊँचा कर दिया।

→ प्राणनाथजी की हर प्रकार से सेवा करने के ध्येय से संसार के दुस्तर सम्बन्ध को ठुकराकर चलनेवाली ब्रह्मात्माओं का नाम आगे आनेवाले प्रकरण में आएगा।

→ यापन करनेवाली हैं। अतः सच्चे ज्ञान की सम्बन्धी आत्माएँ, सम्बन्धी का ज्ञान मिलते ही *"कौन आप, कौन पर"* की अच्छी तरह पहचान कर अपने सच्चे सम्बन्धी की सेवार्थ भाग चलीं। अतः ये आत्माएँ ही हिम्मतदारों में हिम्मतदार और खासल-खास में अग्रगण्य हैं।

→ आत्माओं के दिल-दिमाग में सिर्फ धाम, धनी और अपना कर्तव्य-पालन करने की धुन अर्थात् *"धनी आज्ञा सर्वोपरि"* मात्र थी। उसके सिवाय अन्य कुछ नहीं था ।

- (प्रकरण ३२, सवाल-जवाब नं. ४०, कुल सं. १२५० + ४०= १२९०)।

❖ तारतम और कलमा ❖

स. १- अब उन साथियों के नाम के साथ उनका परिचय भी दीजिए, जो श्रीजी साहेबजी के संग धर्म अभियान के लिए चले?

ज. १- अब यहाँ मदीना शहर-सूरत से लगभग पाँच सौ सुन्दरसाथ की जमात को साथ लेकर श्री प्राणनाथजी धर्मझण्डे के साथ जयकारा लगाते हुए निकले। इस समय श्रीजी साहेबजी के सहायक बनकर →

स. २- स्वामी श्री प्राणनाथजी के साथ सुन्दरसाथजी की तन,मन और धन से सेवा करके अपना जीवन धन्य बनाने के ध्येय से चलनेवाले कौन थे?

स. ३- तन, मन और धन से धनी और सुन्दरसाथजी की सेवा करने के लिए कौन भाई चले?

स. ४- वे कौन भाई हैं, जो गायक भी थे और जिन्होंने वाणी गाकर जीवन पर्यन्त श्रीजी स्वरूप की सेवा की?

स. ५- श्रीजी के प्रेम के वशीभूत होकर परिवार का मोह त्यागकर कौन भाई श्रीजी स्वरूप के साथ चले?

स. ६- स्वामी श्री प्राणनाथजी को सर्वस्व अर्पण कर गरीबदास की पदवी किसने प्राप्त की?

स. ७- वे कौन हैं, जो वचन तो वेदान्त के सुनाते थे, परन्तु अपने मन को ही वश नहीं कर सके?

❖ तारतम और कलमा ❖

→ सेवार्थ उनके साथ चलनेवाले मोमिनों में अग्रगण्य पन्द्रह-अठारह सुन्दरसाथ के नाम इस प्रकार हैं। जैसे-श्रीजी साहेबजी की धर्मपत्नी श्री बाईज्यूराज, गोवर्धन भाई, भीम भाई, नागजी भाई, श्याम भट्ट, नाहना भाई, पाखड़ी भाई, कानजी भाई, रामजी भाई, जमुनाबाई, छबीलदास भाई, धारा भाई, लालदासजी महाराज, लालबाई, श्यामबाई, शुकदेव भाई, मानिकबाई और प्रेमजी भाई आदि-आदि.....।

ज. २- अपने धनी स्वामी श्री प्राणनाथजी सहित अपने धामस्थ अलौकिक परिवार की तन, मन और धन से सेवा करके अपने साथियों में शाबाशी प्राप्त करने के ध्येय से श्री गोवर्धन भाई आत्म-दान कर साथ में चले ।

ज. ३- तन और मन अर्पण करते हुए सेवाभावी होकर अपने द्वारा कमाए हुए धन को भी एकत्रित करके अपने साथियों में शाबाशी प्राप्त करने के ध्येय से श्री गोवर्धन भाई आत्म-दान कर साथ में चले।

ज. ४- वे भाई, भीम भाई हैं, जो अच्छे गायक भी थे और इन्होंने जीवन पर्यन्त श्रीजी स्वरूप को श्री मुखवाणी बड़े प्रेम से गाकर सुनाने की अद्भुत सेवा की ।

ज. ५- गरीबी में सर्वाग्रगण्य नागजी भाई श्रीजी के प्रेम के वशीभूत होकर परिवार की मोह-ममता त्यागकर अपने प्राणों के नाथ-श्री प्राणनाथजी के साथ चल पड़े ।

ज. ६- नागजी भाई अपने स्वामी श्री प्राणनाथजी के चरणों में अपना तन, मन और धन सर्वस्व अर्पण कर खाली हाथ ही चले। इन्होंने ही अपने धनी से गरीबदास की पदवी प्राप्त की ।

ज. ७- वेदान्त के ज्ञाता श्याम भट्ट अपने साथियों को वेदान्त के वचन भी सुनाया करते थे। परन्तु वे अपने मन को ही वश नहीं कर सके, इसी कारण वे श्रीजी स्वरूप का साथ छोड़कर अपने घर वापस लौट गए।

स. ८- कौन भाई श्रीजी स्वरूप के साथ तो निकल पड़े, परंतु कुछ दिनों के पश्चात् अपने घर लौट आये और क्यों?

ज. ८- वेदान्त के ज्ञाता श्याम भट्ट ही शुरूआत में झण्डा पकड़कर →

स. ९- कौन दो भाई घर-परिवार छोड़कर श्रीजी स्वरूप के साथ चले और उन्होंने जीवनभर श्रीजी का साथ निभाया?

ज. ९- श्री नाहना भाई और पाखड़ी भाई अपना घर - परिवार आदि सब →

स. १०- अपना-अपना कुटुम्ब-परिवार लेकर श्रीजी के साथ चलनेवाले भाई कौन-कौन हैं?

स. ११- किसने श्रीजी स्वरूप की सेवा में अपने एक भी अंग पीछे नहीं रखे और जीवन भर श्रीजी का साथ निभाया?

ज. ११- उक्त दोनों भाइयों अर्थात् रामजी भाई और कानजी भाई ने श्रीजी →

स. १२- अपना कुटुम्ब-परिवार छोड़कर चलनेवाली स्त्रियों में से हिम्मती स्त्री कौन है?

स. १३- श्रीजी को परवरदिगार श्री राजजी स्वरूप मानकर किसने सेवा की?

स. १४- जमुनाबाई के पुत्र कौन हैं? किन्हें जमुनाबाई का पुत्र जानकर श्रीजी ने सेवा की जिम्मेदारी दी?

स. १५- कौन भाई कुछ दिनों तक श्रीजी के साथ-साथ चले और पुनः पीछे लौट गये ?

स. १६- गाँव-गाँव तथा विभिन्न स्थानों में बसे साथ को पत्र पहुँचाने का कार्य कौन करते थे ?

→ जयध्वनि करते हुए श्रीजी के साथ चले थे। परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् मन को वश में न रख सकने के कारण वे अपने घर वापस लौट आए।

→ कुछ छोड़कर श्रीजी साहेबजी के साथ जागनी अभियान में जयकारा लगाते हुए चले। इन दोनों भाइयों ने श्रीजी साहेबजी के साथ रहकर सेवा करते हुए अपना पूरा जीवन व्यतीत किया।

ज. १०- श्री रामजी भाई और श्री कानजी भाई - ये दोनों भाई अपना - अपना कुटुम्ब-परिवार भी साथ लेकर श्रीजी के साथ जागनी अभियान में निकल पड़े।

→ स्वरूप की सेवा में अपने एक भी अंग पीछे नहीं रखे। अपने सर्वांग श्रीजी के चरणों में बलिदान कर जीवन भर स्वामीजी का साथ निभाया। माया से इन्हें तनिक भी लगाव नहीं था। ये किसी भी सेवा के लिए कभी पीछे नहीं हटे।

ज. १२- अपने कुटुम्ब-परिवार को स्वप्नवत् छोड़कर श्रीजी साहेबजी के संग चलनेवाली हिम्मती स्त्री का नाम है - *"जमुनाबाई"*।

ज. १३- जमुनाबाई ने श्रीजी साहेबजी को साक्षात् पूर्णब्रह्म परमात्मा स्वरूप मानकर अत्यंत प्रेमपूर्वक उनकी सेवा की ।

ज. १४- जमुनाबाई के पुत्र छबीलदास भाई हैं। छबीलदास भाई को ही श्रीजी साहेबजी ने जमुनाबाई का पुत्र जानकर सेवा की जिम्मेदारी सौंपी।

ज. १५- धारा भाई कुछ दिनों तक श्रीजी और जमात के साथ-साथ चले और पुनः पीछे अपने घर लौट गये।

ज. १६ - श्रीजी स्वरूप के पास से लौटने के पश्चात् धारा भाई ही जगह-जगह पर गाँव-गाँव तथा विभिन्न स्थानों में बसे सुन्दरसाथ को जा-जाकर पत्र पहुँचाने का कार्य करते थे।

स. १७-लालबाई और श्यामबाई कौन-कौन थीं? ये सदैव किनकी सेवा में तत्पर रहतीं थीं?

स. १८-श्रीजी साहेबजी के पास आनेवालों में से "खाली हाथ" आने में किनका नाम है?

स. १९-किसने जीवनभर श्री प्राणनाथजी का दायाँ हाथ होकर जीवन यापन किया?

ज. १९- खाली हाथ आनेवाले श्री लालदासजी ने ही अन्तिम समय तक →

स. २०-कौन दो जन सूरत से तो श्रीजी स्वरूप के साथ नहीं चल सके, परन्तु मेरता पहुँचकर श्रीजी के संग हो लिये?

स. २१-कौन भाई प्रेम विह्वल होकर श्रीजी की दिशा पकड़कर उन तक पहुँचने के लिए दौड़ पड़े थे?

स. २२-वे भाई कहाँ श्रीजी से मिले थे और अपनी जमात में शामिल हुये थे?

स. २३-सदैव श्रीजी साहेबजी के पास में ही रहकर तन, मन से सेवा निभानेवाले भाई कौन हैं?

स. २४-उक्त प्रकार से समाज सहित श्री प्राणनाथजी सूरत से चलकर कहाँ आ पहुँचे?

ज. २४- उपरोक्त प्रकार मदीना शहर सूरत से *"निजानन्द सिद्धांत* - →

ज. १७- लालबाई श्री लालदासजी की धर्मपत्नी थीं और श्यामबाई उनकी पुत्री थीं । ये दोनों सदैव श्री बाईज्यूराजजी की सेवा में तत्पर रहतीं थीं।

ज. १८- श्री प्राणनाथजी के पास आनेवालों में से "खाली हाथ" आने में श्री लालदासजी का नाम है। उन्होंने स्वयं बीतक साहेब में वर्णन किया है *"लालदास संग चले, खाली लेकर हाथ।"*

→ श्रीजी साहेबजी के चरणों में उनका दायाँ हाथरूप होकर सेवा निभायी। श्रीजी साहेबजी के दिल-दिमाग में जँचनेवाले सबसे अधिक विश्वास के पात्र श्री लालदासजी महाराज ही हैं।

ज. २०- श्री शुकदेव भाई और मानिकबाई सूरत से तो श्रीजी स्वरूप के साथ नहीं चल सके, परन्तु ये मेरता में आकर श्री निजधाम समाज में सम्मिलित हो गए।

ज. २१- श्री प्रेमजी भाई *"यथा नाम तथा गुणः"* सम्पन्न होकर अत्यधिक प्रेम विह्वल होकर श्रीजी साहेबजी की दिशा पकड़कर उन तक पहुँचने के लिए घर से दौड़ पड़े थे।

ज. २२- अत्यन्त प्रेम विह्वल होकर दिशा पकड़कर भागते-भागते प्रेमजी भाई की बीच मार्ग में ही जमात से भेंट हो गई थी और तत्पश्चात् वे जमात में शामिल होकर उनके संग हो लिये ।

ज. २३- प्रेमजी भाई ने सदैव अपने स्वामी श्री प्राणनाथजी के समीप उपस्थित रहकर जीवन भर तन और मन से उनकी सेवा निभाई।

→ *श्री कृष्ण प्रणामी धर्म की जय"*- यह जयकारा लगाते हुए झण्डे के साथ श्रीजी स्वरूप के जागनी अभियान का जुलूस गुजरात स्थित अहमदाबाद होते हुए वहाँ चार दिन रहकर पुनः वहाँ से सिद्धपुर आ पहुँचा।

स. २५-श्री प्राणनाथजी किस मुख्य उद्देश्य से इस दिव्य यात्रा के लिए निकले थे?

ज. २५- श्री प्राणनाथजी सूरत से झण्डे के साथ जयध्वनि घोषित करते →

स. २६-श्रीजी साहेब उक्त जमात सहित गुजरात स्थित अहमदाबाद शहर में कितने दिन रहे?

ज. २६- उक्त जमात के साथ जयकारा लगाते हुए श्रीजी स्वरूप की शोभा- →

स. २७-अहमदाबाद से जमात सहित कहाँ पहुँचकर श्रीजी स्वरूप ने जुलूस रोका?

स. २८-कौन भाई परिवार सहित अहमदाबाद पहुँचे? पुनः वे श्रीजी से आज्ञा लेकर वापस क्यों लौट गये ?

ज. २८- लक्ष्मण भाई अपने परिवार को साथ लेकर सूरत से झण्डे के →

स. २९-किसने माया में भ्रमित होकर अपना अमूल्य जीवन योंही व्यर्थ व्यतीत कर दिया, परन्तु अन्त में वे श्रीजी के पास आ पहुँचे?

स. ३०-श्री प्राणनाथजी अपनी (लगभग) पाँच सौ की जमात सहित सिद्धपुर में कितने दिन रहे?

स. ३१-भगवान उपाध्याय कौन थे, जिन्होंने अत्यंत आनन्दित होकर सुन्दरसाथ समूह की सेवा की?

स. ३२-उनका पूरा नाम क्या था और वे श्रीजी के पीछे-पीछे पालनपुर तक क्यों पहुँचे थे?

→ हुए मुख्य रूप से सकुमार और साकुण्डल सखी को माया में से निकालने के ध्येय से इस दिव्य यात्रा के लिए निकले थे। अतः "एक तीर, दो निशान" की तरह ही उनका दूसरा ध्येय दिल्लीवाले से विशेष "धर्मयुद्ध" करना भी था।

→ यात्रा गुजरात स्थित अहमदाबाद पहुँची। शोभायात्रा सहित जमात वहाँ केवल चार दिन ही ठहरी। पुनः वहाँ से जुलूस आगे निकल गया।

ज. २७- गुजरात स्थित अहमदाबाद से जयध्वनि के साथ श्रीजी की शोभा-यात्रा का जुलूस सिद्धपुर पहुँचा। सिद्धपुर पहुँचकर श्रीजी ने जुलूस को कुछ विश्राम दिया ।

→ साथ जमात में होकर अहमदाबाद पहुँचे। जब इनका परिवार इनके लिए बड़ा भारी बोझल बन गया, तब उन्होंने श्रीजी से कुछ काल परिवार के साथ ही रहने की आज्ञा माँगी और लौटकर वापस अपने घर आ गये ।

ज. २९- लक्ष्मण भाई ने परिवार एवम् व्यापार के मायावी सुखों में भ्रमित रहकर अपने जीवन की अमूल्य घड़ियाँ योंही व्यर्थ व्यतीत कर दीं। परन्तु अन्त में जब से अपना होश सँभाला, तब से पुनः श्रीजी स्वरूप की ओर दौड़ पड़े।

ज. ३०- महामति श्री प्राणनाथजी अपनी (लगभग) पाँच सौ की जमात के साथ सिद्धपुर तीर्थस्थल में बाईस दिन रहे ।

ज. ३१- भगवान उपाध्याय सिद्धपुर के तीर्थगुरु के स्थान में थे। उन्होंने सुन्दरसाथ जमात की सेवा में कोई कमी नहीं रखी। अत्यन्त आनन्दित होकर उन्होंने जमात की सेवा की ।

ज. ३२- उक्त सेवाभावी उपाध्याय का पूरा नाम था-भगवान रेवादास उपाध्याय। वे लौकिक धन के लालची थे। विदा होते समय →

→ श्रीजी साहेबजी ने उन्हें एक मोहर विदाई रूप में दी थी। अतः →

स. ३३-भगवान उपाध्याय श्रीजी की पहचान क्यों नहीं कर सके?

ज. ३३- श्रीजी स्वरूप के बाईस दिन तक सिद्धपुर में ही रहने पर भी भगवान रेवा उनकी पहचान नहीं कर सके क्योंकि वे जातित्व →

स. ३४-क्या सोचकर तीर्थगुरु भगवान रेवादास पालनपुर तक श्रीजी का पीछा करते गये थे?

ज. ३४- भगवान रेवादास उपाध्याय ने सोचा, "भले न वे क्षत्रिय महात्मा हैं, तो क्या हुआ? वे धनाढ्य और दिलदार दानी भी तो हैं !! यहाँ →

स. ३५-भगवान रेवा की नीयत को पहचानकर पालनपुर में उन्हें किसने सचेत कर दिया?

स. ३६-गोवर्धन भाई ने क्या कहते हुए किस तरह भगवान रेवा को सचेत किया?

ज. ३६- गोवर्धन भाई ने भगवान रेवा से कहा, "अरे! मूर्ख रेवा!! तू लौकिक →

स. ३७-गोवर्धन भाई के सचेत करने पर भगवान रेवादास ने श्रीजी के चरण पकड़कर क्या कहा?

ज. ३७- उक्त प्रकार गोवर्धन भाई द्वारा सावधान करने पर भगवान →

स. ३८-भगवान रेवादास की बात सुनकर श्री प्राणनाथजी ने उन्हें क्या सुना दिया?

स. ३९-श्रीजी स्वरूप द्वारा भगवान रेवा को सुनाए गए दो-चार शब्दों में किस-किस का वर्णन था?

→ दूसरी मोहर प्राप्त करने की लालच में वे पालनपुर तक श्रीजी स्वरूप का पीछा करते आये थे।

→ भेद में जीते थे। श्रीजी साहेब जाति से क्षत्रिय थे और वे स्वयं उपाध्याय अर्थात् ब्राह्मण जाति के थे। ब्राह्मणत्व के अभिमान में चूर रहने के कारण उनका ध्यान श्रीजी स्वरूप की चर्चा-कथा की ओर नहीं जा सका। "एक मोहर" ही उन्हें क्षत्रिय के पीछे-पीछे दौड़ा लायी थी।

→ कई महात्मा जमात सहित आए, परंतु आज तक मुझे दान-दक्षिणा के रूप में किसी ने 'एक मोहर' नहीं दी। ये तो दिलदार दानी लगते हैं। कुछ और दूर तक यदि इन्हें पहुँचाने चला जाऊँ, तो दूसरी मोहर जरूर मिलेगी।"-यह सोचकर लौकिक वस्तु की लालच में भगवान रेवा श्रीजी के पीछे-पीछे पालनपुर तक आये।

ज. ३५- भगवान रेवादास की लौकिक धन सम्बन्धी लालचपूर्ण नीयत को देखकर पालनपुर में श्री गोवर्धन भाई ने उन्हें सचेत किया।

→ धन की लालच में मारा-मारा क्यों फिर रहा है? तू इन दिव्य स्वरूप की पहचान कर !!! उनसे तू अलौकिक धन क्यों नहीं माँग लेता? वे तुझे अलौकिक दिव्य धन का भण्डार दे सकते हैं।"

→ रेवादास ने चलते जुलूस के बीच ही बैलगाड़ी में बैठे श्रीजी साहेबजी के चरण पकड़ लिये और कहने लगा, "आप मेरी आत्मा को जगाकर मुझे परात्मा की पहचान कराने की कृपा कीजिए।"

ज. ३८- भगवान रेवादास द्वारा चलती गाड़ी में की हुई अर्ज के बदले में श्रीजी साहेब ने उन्हें दो-चार शब्द सुना दिये।

ज. ३९- श्रीजी स्वरूप द्वारा भगवान रेवा को सुनाए गए दो-चार शब्द निम्नलिखित हैं। जैसे -

→

याद करो निजधाम,
जमुना ताल घाट की,
और अक्षर मुकाम ।

ब्रज रास में हम थे, भी तीसरे आए इत ।
अब खेल देख पीछे फिरें, जाए लगें हम तित ।।

अर्थात् तुम अपनी आत्मा के उस निजधाम को स्मरण कर लो,

स. ४०-श्रीजी स्वरूप ने रेवादास को अक्षरातीत धाम से खेल में आने का क्या कारण बताया?

स. ४१-उक्त चार शब्द प्राप्त कर घर लौटने पर रेवादास उपाध्याय क्या करने लगे?

ज. ४१- उक्त चार शब्द प्राप्त कर घर लौटने पर रेवादास उपाध्याय गायत्री

स. ४२-भगवान रेवादास उपाध्याय ने उक्त चार शब्दों का जाप कितने महीने तक किया?

स. ४३-भगवान रेवादास की संगत किनके साथ थी? उन भाई का नाम क्या है?

ज. ४३- भगवान रेवादास की संगत उनके ही प्रांगण के सामने रहनेवाले

स. ४४-उक्त चार शब्दरूपी मंत्र की बातें केशवदास को किस प्रकार मालूम पड़ी?

ज. ४४- रेवादास उपाध्याय हमेशा सुबह स्नान करके आते समय जबान से गायत्री मंत्र "ॐ भूः भूवः स्वः....." जपते हुए आते थे। छः

→ जहाँ श्री यमुनाजी बह रही हैं, जहाँ हौज कौसर तालाब सुशोभ्य है, जहाँ के सातों घाटों की शोभा अत्यंत न्यारी है। पुनः जिस धाम के सामने अक्षर धाम जगमग-जगमग कर रहा है ।

ब्रज और रास लीला में हमने ही रमण किया था। अब हम तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में अपनी इच्छा पूरी करने पुनः आए हैं। यहाँ से खेल देखकर अपनी सुरता फिराकर हमें पुनः उस निजधाम में लौट जाना है और वहाँ जाकर अपनी आत्मा के सम्बन्धी परमात्मा से मिलना है।

ज. ४०- श्री प्राणनाथजी ने उस समय भगवान रेवादास को अक्षरातीत धाम से खेल में आने का कारण हमारी संसाररूपी खेल अर्थात् असत्, जड़, दुःखरूपी मायावी नाटक देखने की इच्छा बताई।

→ मंत्र की जगह उक्त चार शब्द जपने लगे। निरंतर जपते-जपते जब उन्हें वे चार शब्द कण्ठस्थ हो गये, तब भी वे निरन्तर जपते ही रहे । छोड़ते ही नहीं थे।

ज. ४२- भगवान रेवादास उपाध्याय ने उक्त चार शब्दों का जाप गायत्री मंत्र की तरह निरंतर छः महीने तक किया ।

→ एक क्षत्रिय के साथ थी, जिनका नाम था - केशवदास। दोनों के घर का प्रांगण एक ही था। दोनों परस्पर दोस्त की तरह रहते थे और हमेशा सत्संग किया करते थे।

→ महीने बाद काम विशेष बाहर गये केशवदास लौट आये, तब उन्होंने स्नान करके आते भगवान रेवा के मुख से कोई दूसरा ही मंत्र सुना। तब भगवान रेवा से पूछने पर भगवान रेवादास ने वे चार शब्द केशवदास भाई को सुना दिये।

स. ४५-जब केशवदास ने भगवान रेवा से पूछा कि उन्हें उक्त चार शब्द किसने दिये, तब भगवान रेवा ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. ४५- जब केशवदास ने भगवान रेवा से पूछा कि उन्हें उक्त चार शब्द →

स. ४६-"एक क्षत्रिय यहाँ से निकले थे"- यह वाक्यांश किसने और किन्हें सुनाया?

स. ४७-"कहा कहों तुम्हे इस ठाम"- यह वाक्यांश किसने, किनसे और कब कहा?

स. ४८-" यह तो अक्षरातीत था"- ऐसा किसने और किससे कहा? पुनः कौन अक्षरातीत थे?

स. ४९-उक्त वचनों के सिवाय केशवदास ने भगवान रेवादास से क्या-क्या कहा?

ज. ४९- उक्त वचनों के सिवाय केशवदास ने तीर्थगुरु भगवान रेवादास उपाध्याय से कहा, "अरे भाई रेवा ! तुझे क्या कहूँ? किन शब्दों →

स. ५०-"ओ ऐसे ही उत से चल्या" - इस वाक्यांश का तात्पर्य पूरी तरह स्पष्ट करो।

ज. ५०- *"ओ ऐसे ही उत से चल्या"*- इस वाक्यांश का तात्पर्य है कि उक्त प्रकार से भगवान रेवा को धिक्कारने के पश्चात् केशवदास भाई ने भगवान रेवा से पूछा, "अरे ! वे स्वरूप किस ओर गये हैं? →

स. ५१-केशवदास श्रीजी स्वरूप को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दिल्ली तो जा पहुँचे, परन्तु दिल्ली में श्रीजी स्वरूप किस जगह पर हैं, यह बात उन्हें किसने बतायी?

→ किसने दिये, तब भगवान रेवा ने उन्हें जवाब देते हुए कहा, "अरे भाई! छः महीने पूर्व पाँच सौ की संख्यावाली जमात लेकर एक क्षत्रिय यहाँ आये थे। वे मेरे तीर्थस्थान में २२ दिनों तक रहे। उन्होंने ही मुझे ये चार शब्द सुनाए थे।"

ज. ४६- *"एक क्षत्रिय यहाँ से निकले थे"*- यह वाक्यांश उपाध्याय रेवादास ने केशवदास भाई को सुनाया ।

ज. ४७- *"कहा कहों तुम्हे इस ठाम"*- यह वाक्यांश केशवदास ने वे चार वचन सुनने के पश्चात् भगवान रेवादास उपाध्याय से कहा।

ज. ४८- *"यह तो अक्षरातीत था"*- यह वाक्यांश केशवदास ने भगवान रेवादास उपाध्याय से कहा। वे कोई क्षत्रिय पुरुष नहीं, अक्षरातीत ब्रह्म श्री प्राणनाथजी थे।

→ द्वारा तुझे धिक्कारूँ? अक्षरातीत पुरुष तेरे घर में आकर बाईस दिन रहकर चले गये और तू उन्हें एक क्षत्रिय पहचानकर रह गया? कौड़ी के बदले तूने उन दिव्य पुरुष को छोड़ दिया और वे तो तुझे चलते-चलते भी चार शब्दरूपी *"चार हीरे"* पकड़ा गये।"

→ मैं भी उसी ओर जाकर उनसे मिलूँगा।"- ऐसा कहते हुए केशवदास भाई जहाँ खड़े थे, वहीं से भगवान रेवा द्वारा बताई हुई दिशा की ओर श्रीजी स्वरूप को ढूँढ़ने के लिए निकल पड़े। हर जगह पूछते-पूछते श्रीजी को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते केशवदास भाई दिल्ली आ पहुँचे । बहुत परिश्रम से ढूँढ़ने पर श्रीजी स्वरूप उन्हें मिले।

ज. ५१- सिद्धपुर से चले हुए केशवदास दिल्ली तो पहुँचे, परन्तु उन्हें पता नहीं था कि श्रीजी साहेब दिल्ली में कहाँ ठहरे हैं। केशवदास दिल्ली जाकर रामचन्द्र बनिया के पास पहुँचे। वहाँ उन्हें श्रीजी के निवास-स्थान का पता मिला।

स. ५२-उस समय श्रीजी स्वरूप दिल्ली में कहाँ बैठे थे? केशवदास कहाँ पहुँचकर श्रीजी स्वरूप से मिले?

स. ५३-केशवदास लाल दरवाजे में कितने समय रहे? जब उनकी आत्मा पूरी तरह जागृत हो गई, तब उन्होंने किस लिए कमर बाँध ली?

स. ५४-जब केशवदास दिल्ली से वापस अपने घर लौट आये, तब उन्होंने क्या किया?

स. ५५-केशवदासजी ने दिल्ली से लौटकर सबसे पहले किसे जागृत किया?

स. ५६-सिद्धपुर में केशवदास ने कितने सुन्दरसाथ को जागृत किया?

ज. ५६- केशवदास ने सिद्धपुर में अन्य बहुत से सुन्दरसाथ को जागृत →

स. ५७-केशवदास ने भगवान रेवादास को किस-किसकी पहचान करायी?

स. ५८-द्वारकादास को केशवदास द्वारा ज्ञान लेकर प्रबुद्ध होने पर क्या अनुभूति होने लगी?

ज. ५८- सिद्धपुर आकर केशवदास ने भाई द्वारकादास को जानकार और →

स. ५९-द्वारकादास कौन-सी भावना लेकर घर-बार छोड़कर कहाँ पहुँचे?

ज. ५२- उस समय श्री प्राणनाथजी दिल्ली स्थित लाल दरवाजे में एक क्षत्रिय की हवेली में विराजमान थे। केशवदास वहीं जाकर श्रीजी साहेबजी से मिले।

ज. ५३- केशवदास लाल दरवाजे में श्री प्राणनाथजी के पास लगभग एक-डेढ़ महीने रहे। जब उन्होंने श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त - श्री कृष्ण प्रणामी धर्म पूरी तरह समझ लिया और उनकी आत्मा जागृत हो गई, तब धर्मविरोधियों से लड़ने के लिए उन्होंने कमर बाँध ली।

ज. ५४- जब केशवदास दिल्ली से पूरी तरह जानकर, समझकर, आत्मा जागृत कर वापस लौट आये, तब सिद्धपुर आकर वे जागनी का कार्य करने लगे।

ज. ५५- केशवदासजी ने दिल्ली से सिद्धपुर लौटकर सर्वप्रथम भगवान रेवादास को धर्म-सिद्धांत समझाकर जागृत किया और तारतम देकर उन्हें धाम के सुन्दरसाथ जमात में शामिल किया।

→ किया, जिनमें से कुछेक के नाम निम्नलिखित हैं। जैसे - भगवान रेवादास, द्वारकादास, दूसरे केशवदास, त्रीकमदास, गंगादास, विट्ठल भाई आदि आदि.....।

ज. ५७- केशवदास ने सर्वप्रथम भगवान रेवादास उपाध्याय को सदुपदेश देकर परमधाम और श्रीजी साहेबजी के स्वरूप की पहचान करायी और उन्हें तारतम का बोध देकर साथ समुदाय में शामिल किया।

→ प्रबुद्ध बनाया। ज्ञान समझने के पश्चात् द्वारकादास को परमधाम के अखण्ड लीला की अनुभूति होने लगी। उनके लिए अब जगत् से मिलनेवाले सुख की आशा निर्मूल होकर मिट गई।

ज. ५९- द्वारकादास भाई अपना घर-बार छोड़कर जीवन पर्यन्त श्रीजी और सुन्दरसाथ की सेवा करने की भावना लेकर श्रीजी साहेब के पास दिल्ली पहुँच गये।

स. ६०-दूसरे केशवदास को तारतम की पहचान होने पर क्या-क्या हुआ?

स. ६१-कौन-कौन भाई क्या करने पर निजधाम मार्ग पर पूर्ण निष्ठा से समर्पित हुए?

स. ६२-कौन भाई घर-परिवार छोड़कर मन में विश्वास लेकर कहाँ पहुँच गये ?

ज. ६२- सिद्धपुर में जब केशवदासजी के श्री मुख से विट्ठल भाई ने तारतम →

स. ६३-किसके साथ टक्कर लेने की बात सुनते ही कौन भयभीत होकर घर लौट गये?

ज. ६३- जब भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में औरंगजेबरूपी दज्जाल से →

स. ६४-सिद्धपुर स्थित अपने घर में केशवदास ने क्या किया और क्यों?

ज. ६४- केशवदास ने सिद्धपुर स्थित अपने घर में ही मंदिर की स्थापना →

स. ६५-श्री प्राणनाथजी पालनपुर से कहाँ पहुँचे? वहाँ कौन थे और वे कैसे थे?

ज. ६५- श्री प्राणनाथजी धाम की आत्माओं को साथ लेकर सिद्धपुर से →

स. ६६-मेरता में श्री प्राणनाथजी को किनके साथ टक्कर लेनी पड़ी ?

स. ६७-उस यति के साथ श्रीजी साहेबजी का शास्त्रार्थ कितने दिनों तक चला?

ज. ६०- तारतम की समझ प्राप्त होते ही दूसरे केशवदासजी की नश्वर-स्वप्निक, लोक और परलोक में भ्रमित हुई बुद्धि को अमूल्य प्रकाश मिल गया ।

ज. ६१- श्रीकमदास और गंगादास भाई अपने श्रवणों से चर्चा-रस का पान करते ही मन में पूर्ण विश्वास लेकर श्रीजी साहेबजी के निजधाम मार्ग पर पूर्ण निष्ठा सहित समर्पित हो गए ।

→ ज्ञान की चर्चा सुनी, तब उनकी काया पलट गयी। थोड़ी-सी पहचान प्राप्त करते ही उन्होंने अपना घर-परिवार छोड़ दिया और मन में विश्वास लेकर श्रीजी साहेब के पास दिल्ली जा पहुँचे।

→ टक्कर लेने की अथवा उससे सत्याग्रह करने की बात चली, तो बिट्ठल भाई भयभीत हो गये। वे सारी सेवा छोड़-छाड़कर श्री प्राणनाथजी से विमुख होकर अपने घर जा पहुँचे ।

→ कर दी। प्रतिदिन वहाँ परमधाम की चर्चा-वार्ता होने लगी। वहाँ के समस्त सुन्दरसाथ एकत्रित होकर आत्मा-परमात्मा तथा श्री राजजी के विषय का सत्संग करने लगे। बाद में केशवदास श्रीजी के पास पहुँच गये।

→ पालनपुर होते हुए मेरता पहुँचे। मेरता में एक बड़ा तेजस्वी लाभानन्द यति नामक तांत्रिक रहता था। वह अन्य सभी को परास्त कर मेरता के समाज में राजा सदृश होकर बैठा था।

ज. ६६- मेरता में श्री प्राणनाथजी को उक्त तेजस्वी तांत्रिक लाभानन्द यति से टक्कर लेनी पड़ी।

ज. ६७- उस यति के साथ श्रीजी साहेबजी का शास्त्रार्थ लगातार दस दिनों तक चला।

स. ६८-लाभानन्द यति कितने दिन में जगह-जगह पर निरुत्तर होकर परास्त हो गया?

ज. ६८- लाभानन्द यति दसवें दिन के शास्त्रार्थ में प्रत्येक विषय पर बात-

स. ६९-कितने दिन की रात्रि में यह यति दैत्यों के विभिन्न मंत्रों द्वारा कई उपाय करते-करते थक गया?

ज. ६९- दसवें दिन परास्त होकर लाभानन्द यति समाज के बीच से काला मुँह लेकर अपने घर गया। तब रात को वह तांत्रिक विद्या का सहारा लेकर मंत्र का आह्वान करने लगा। उसने जितने भूत-

स. ७०-रातों-रात उस यति की क्या दशा हुई? क्यों वह दूसरे दिन मिला ही नहीं?

ज. ७०- जब उस यति की तांत्रिक विद्या काम नहीं कर सकी, तब वह मुँह

स. ७१-उस यति के एक भी मंत्र ने उसका साथ नहीं दिया, इसका मुख्य कारण क्या था?

ज. ७१- लाभानन्द यति द्वारा साधे गए विभिन्न तन्त्रों-मन्त्रों में से एक भी

स. ७२-मेरता में सर्वप्रथम श्री प्राणनाथजी से मिलने कौन भाई आये?

ज. ७२- जब लाभानन्द यति दसवें दिन श्रीजी स्वरूप से शास्त्रार्थ में परास्त होकर रातों-रात वहाँ से भाग खड़ा हुआ अथवा गायब हो गया,

स. ७३-श्री प्राणनाथ के स्वरूप की पहचान होने के बाद रामचन्द्र भाई को क्या हुआ?

ज. ७३- श्रीजी स्वरूप की चर्चा सुनकर रामचन्द्र भाई ने उनके स्वरूप

→ बात में निरुत्तर होते गया और अन्त में परास्त हो गया। तब वह सोचने लगा, "मैं महत्त्वहीन हो गया। समाज के बीच में मुझे हार स्वीकार करनी पड़ी।"

→ प्रेतों के मंत्रों की साधना की थी, उन्हें वह क्रमशः एक-एक करके आजमाने लगा। किसी भी मंत्र के द्वारा न वह श्रीजी को पहाड़ के नीचे दबाकर मार सका, न पेड़ आदि में लटकाकर मार सका और न समुद्र में ही डुबा सका। उसके मंत्रों से न घर हिला और न पर्वत ही उठा। तब वह हारकर बैठ गया।

→ दिखाने के लायक ही नहीं रहा। अतः वह तांत्रिक लाभानन्द यति रातों-रात मेरता शहर छोड़कर गायब हो गया। दूसरे दिन मिला ही नहीं।

→ मन्त्र उसका साथ नहीं दे पाया क्योंकि वह उन मन्त्रों का प्रयोग जिनके ऊपर कर रहा था, उन स्वरूप (श्रीजी साहेबजी) की रक्षा तो पाँच प्रबल शक्तियाँ अर्थात् पंचवासनाएँ करती हैं तथा सभी देव उनकी रक्षार्थ पहरेदार बनकर खड़े रहते हैं, तो ऐसे स्वरूप पर भूत-प्रेत आदि के तन्त्र-मन्त्र कैसे कार्य कर सकते हैं?

→ तब ये बात सारे मेरता शहर में फैल गयी। चारों ओर आश्चर्य की लहर फैल गयी और वहाँ की जनता लाभानन्द यति को परास्त करनेवाले श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ आने लगी। उन दर्शकों में से सर्वप्रथम श्रीजी के दर्शन और ज्ञान श्रवणार्थ रामचन्द्र पंसारी भाई आये।

→ की पहचान कर ली। तत्पश्चात् वे श्रीजी की सेवा में लीन हो गये। सेवा का आनन्द प्राप्त कर उनके मन में अन्य किसी वस्तु की आस ही नहीं रही ।

स. ७४-मेरता शहर में अपने ठहरने और सुन्दरसाथ को ठहराने के लिए श्रीजी ने क्या किया ?

स. ७५-मेरता में किस विषय का शोर पड़ा और उसके प्रतिफल वहाँ क्या हुआ?

ज. ७५- मेरता में श्री प्राणनाथजी की प्रेम भरी कथा-चर्चा की धूम मच गयी। ब्रह्मानन्द की अनुभूति करानेवाली विचित्र ढंग की चर्चा →

स. ७६-चांपसी भाई और रघुनाथ भाई ने कैसे आकर अपनी आत्मा श्रीजी के चरणों में समर्पित की?

ज. ७६- चांपसी भाई प्रेम से चित्त बाँधकर चर्चा सुनने आते थे। उनके →

स. ७७-अग्रवाल बनिया जाति में से मेरता के सुप्रसिद्ध कौन व्यक्ति आये? वे कैसे आये और उन्होंने आकर क्या किया?

ज. ७७- श्रीजी स्वरूप की चर्चा श्रवणार्थ और दर्शन हेतु अग्रवाल बनिया जाति में से मेरता नगर के सुप्रसिद्ध सेठ श्री राजाराम भाई आये। उन्होंने जब श्रीजी स्वरूप के दर्शन कर उनके श्री मुख से चर्चा सुनी, तो वे सपरिवार सत्य धर्म में दीक्षित हो गये। पुनः उन्होंने →

स. ७८-मेरता के दूसरे धर्मप्रेमी सेठ कौन थे, जो घर-परिवार सहित निजानन्द धर्म में दीक्षित हुए?

ज. ७८- मेरता के दूसरे धर्मप्रेमी सेठ थे-झांझन भाई। वे भी सपरिवार →

स. ७९-चर्चा सुनने के बाद अंग-अंग में विश्वास लेकर कौन-कौन चार जन श्रीजी के चरणों में आये?

ज. ७४- मेरता शहर में श्री प्राणनाथजी ने अपने और उपस्थित सुन्दरसाथ के ठहरने के लिए एक हवेली ली।

→ यहाँ चलने लगी। चिन्तन-चितवन, चर्चा-कथा के अतिरिक्त किसी को अन्य कोई काम ही नहीं सूझता। सारा जनसमूह नगर से उमड़ पड़ा। चर्चा-कथा सुननेवालों की विचित्र-सी भीड़ दिखाई देने लगी। श्रीजी स्वरूप को श्रोतागण मधुमक्खियों की तरह घेरे रहते थे। उनकी चर्चा से प्रभावित होकर लोग उनकी शरण में आने लगे। यहाँ कितने ही लोग धर्म में दीक्षित भी हुये।

→ साथ एक दूसरे रघुनाथ भाई भी चर्चा श्रवण में एकाग्रता रखते थे। ये दोनों भाई अपने-अपने कुटुम्ब-परिवार का परित्याग कर श्रीजी के चरणों में अपनी आत्मा समर्पित कर उनके साथ ही चल पड़े।

→ श्रीजी से हाथ जोड़कर तन, मन और धन की सेवा में से धन की सेवा माँग ली और वे कहने लगे, "आपके साथ आपके चरणों में आनेवाले अथवा आये हुए सम्पूर्ण सुन्दरसाथ की आर्थिक सेवा की जिम्मेदारी आज से मेरी होगी। चाहे सारा भारत वर्ष हमारे धर्म में उमड़ आए। पुनः अरब देश भी क्यों न आ जाए, किंतु आप धर्म में शामिल साथ की सेवा किसी अन्य को न दीजिएगा। मेरी यह बिनती आप स्वीकार करें।" उक्त प्रकार से राजाराम भाई ने श्रीजी से जीवन भर के लिए आर्थिक सेवा माँग ली।

→ धर्म में शामिल होकर श्रीमन्निजानन्द धर्म में दृढ़ रहे तथा तन, मन और धन से सुन्दरसाथ की सेवा की। चर्चा-श्रवण में भी ये दोनों सेठ बड़े जबरदस्त थे। श्रीजी स्वरूप की पहचान कर उन्होंने श्रीजी के चरणों में अपनी आत्मा ही समर्पित कर दी।

ज. ७९- श्रीजी स्वरूप की चर्चा सुनकर अंग-अंग में उमंग लेकर श्रद्धा-विश्वास के साथ जो चार जन धर्म में दीक्षित हुए, उनके नाम →

→ इस प्रकार हैं। जैसे-श्री मकरन्द भाई, श्री मानसिंह भाई, श्री →

स. ८०-अन्य और चार जन भी चर्चा द्वारा पिघलकर धर्म में शामिल हुये। अतः ये दूसरे चार जन कौन-कौन हैं?

ज. ८०- उक्त चार जनों के अलावा अन्य चार जन भी चर्चा-कथा द्वारा →

स. ८१-सरूपदे का मतलब क्या है? सरूपदे जमात में कौन-कौन और कितने लोग शामिल हुए तथा वे कैसे चर्चा सुनते थे?

ज. ८१- सरूपदे का मतलब है-स्त्रीवर्ग। यहाँ स्त्रीवर्ग में श्रीमती लक्ष्मीबाई, श्रीमती रंभाबाई धर्म में आईं। पुनः जादीबाई, कुशलीबाई, चाँदबाई, मोजबाई, भागबाई, तेजबाई, अनूपीबाई, राधाबाई, →

स. ८२-उक्त नामवाले सुन्दरसाथ के सत्संग द्वारा और अनेकों सुन्दरसाथ जागृत हुए। यहाँ उनका नाम क्यों नहीं आया?

ज. ८२- उक्त सुन्दरसाथ के धर्म में दीक्षित हो जाने से इन साथियों के →

स. ८३-मेरता में इस नए धर्म-सिद्धान्त में आत्मा समर्पित करके कौन-कौन शामिल होने लगे?

ज. ८३- मेरता में इस नए धर्म-सिद्धान्त में अपनी आत्मा समर्पित कर वे →

स. ८४-सर्व सुन्दरसाथ और श्रीजी स्वरूप का खर्च उठाने के पश्चात् स्वयं श्रीजी के ही लिए कौन और क्या भेजते थे?

→ मोहन भाई और श्री मनोहर भाई। ये सुन्दरसाथ समाज में सहर्ष शामिल हुए।

→ पिघलकर श्रीजी के चरणों में आत्म-समर्पण करते हुए धर्म में शामिल हुए, जिनके नाम हैं-श्री शार्दूल भाई, श्री नन्दराम भाई, श्री ऋषिश्वर भाई और श्री जीवनदास भाई ।

→ बेनबाई और मुरलीधरबाई भी धर्म में आये। चार-पाँच सौ सुन्दरसाथ में से यहाँ मात्र दस-पन्द्रह जनों का ही नाम लिया गया है। उक्त सुन्दरसाथ बड़े जिज्ञासापूर्वक चर्चा सुनने आते थे और एकाग्र चित्त देकर ध्यानपूर्वक श्रवणों द्वारा चर्चा-रस का पान करते थे। चर्चा में जब-जब ब्रह्मसृष्टि की महिमा का वर्णन आता था, तब उसे सुनकर उक्त साथ मन में अत्यधिक प्रसन्न और गद्‌गद हो उठते थे।

→ सत्संग से अन्य अनेकानेक सुन्दरसाथ आए । उन सब पर भी श्री राजजी महाराज ने कृपा कर उन्हें भी अपनी चरण-शरण में आश्रय दिया है। किंतु उनके नामों का उल्लेख यहाँ इसलिए नहीं किया गया है क्योंकि यदि सभी के नाम के उल्लेख यहाँ किए जाएँ, तो नामों से ही पुस्तक भर जाएगी।

→ ही शामिल हुए, जिन्हें यह सिद्धान्त समझ में आया; जिन्हें इस चर्चा का स्वाद मिल सका और जिन्हें इन प्रेम और जोश के स्वरूपों का दर्शन और वास्तविकता का मर्म मिल सका और अंततः जिनके हाथ धामधनी ने थाम लिये।

ज. ८४- श्रीजी एवम् सम्पूर्ण सुन्दरसाथ का आर्थिक खर्च तो राजाराम भाई उठाते ही थे, परन्तु वे श्रीजी साहेबजी के लिए ओढ़ने का एक पतला कम्बल भी भेजते थे।

स. ८५-कौन भाई साथ की आर्थिक सेवा सहित तारतम वाणी समझने में भी सदैव तत्पर रहते थे?

स. ८६-कौन बाई श्रीजी की सेवा में सदैव सावधानीपूर्वक उपस्थित रहती थीं?

स. ८७-किनका ध्यान श्री प्राणनाथजी के चरणों में ही लगा रहता था?

स. ८८- इस समय मेरता में श्रीजी साहेब की चर्चा का कैसा प्रभाव पड़ा?

स. ८९-चर्चा सुनकर श्रोताओं के मन में क्या-क्या और कैसा-कैसा अनुभव होता था?

ज. ८९- मेरता में श्रीजी स्वरूप के श्री मुख की चर्चा श्रवण करनेवाले →

स. ९०-"एक मजल जो इन समै" अर्थात् यहाँ एक मजल पूरी हुई। इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

ज. ९०- *"एक मजल जो इन समै"* अर्थात् यहाँ एक मजल पूरी होने का मतलब यह है कि कुरान शरीफ में जो छः दिन का कार्यक्रम बताया गया है, उन छः दिनों में से यहाँ चौथे दिन की लीला का अंशरूप और महत्त्वपूर्ण कार्य अर्थात् 'ईसा और मुहम्मद' अथवा →

स. ९१-मेरता के मजल में प्राप्त हुई अखण्ड आनन्द की अनुभूति कैसी है और उसे कौन जानते हैं?

ज. ९१- मेरता में साथ के जागरण की चर्चा की बातें बहुत निराली एवम् →

ज. ८५- वह व्यक्ति सेठ राजाराम भाई ही हैं। ये राजाराम भाई हर प्रकार की सेवा के साथ-साथ आर्थिक सेवा सहित तारतम वाणी समझने में भी सदैव अग्रगण्य, तत्पर और सावधान रहते थे।

ज. ८६- मानबाई श्रीजी साहेब की सेवा में सदैव सावधानीपूर्वक उपस्थित रहती थीं।

ज. ८७- इनका अर्थात् मानबाई का ध्यान सदैव श्री प्राणनाथजी के चरणों में ही लगा रहता था। वे हमेशा श्रीजी स्वरूप के दर्शन का लाभ लेती थीं।

ज. ८८- इस समय मेरता शहर में श्री प्राणनाथजी के ब्रह्मज्ञान की चर्चा का समाचार जोर-शोर से फैल गया। श्रीजी की चर्चा-श्रवण और दर्शनार्थ आनेवालों की संख्या में भारी वृद्धि हुई। मेरता का सारा जन समूह ही उमड़ पड़ा ।

→ भाग्यवान् सुन्दरसाथजी के मन में नित्य प्रति नए-नए उत्साह, आनन्द का संचार होता था। धामधनी और अपने परात्मा की अनुभूति के कारण उनका अंग-अंग पुलकित हो उठता था।

→ 'कलमा और तारतम' के मिलाप का कार्य पूरा हुआ। यहाँ से श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त सर्वदेशी अथवा विश्व सिद्धान्त के रूप में जाहिर हुआ। ब्रह्मज्ञान-खुदाई इलम कदापि एक पक्षीय नहीं हो सकता। कारण दिन और रात भी एक ही सृष्टिकर्ता के हैं। जागनी अभियान का पहला पड़ाव मेरता है क्योंकि यहीं कलमा और तारतम का मिलान हुआ तथा ईसा और मुहम्मद के मिलान द्वारा श्रीजी स्वरूप को अहमद पदवी प्राप्त हुई।

→ विस्तारवाली हैं। उस समय की चर्चा के प्रभावपूर्ण ब्रह्मज्ञान द्वारा प्राप्त हुआ आनन्दमय अनुभव अविकल्प और अवर्णनीय है। उस आनन्द का अनुभव तो वे ही कर सकते थे, जो उस समय वहाँ उपस्थित थे क्योंकि वह अखण्डानन्द अकथ्य है।

स. ९२-मेरता से श्रीजी ने किन्हें दो पत्र लिखकर भेजे? वह पत्र लेकर मेरता से कौन और कहाँ गये?

ज. ९२- मेरता से श्रीजी साहेबजी ने राजा यशवन्त सिंह को दो पत्र लिखे →

स. ९३-मेरता से जिस कार्य विशेष पत्र लिखकर राजा यशवन्त के पास भेजा गया था, क्या वह कार्य हुआ? यदि नहीं, तो क्यों?

ज. ९३- गोवर्धन भट्ट ने सिंध नदी पार अटक पहुँचकर राजा यशवन्त →

स. ९४-मेरता में श्रीजी साहेबजी कितने महीने रहे?

स. ९५-एक दिन जब श्रीजी स्वरूप बाहर बगीचे में टहल रहे थे, तब क्या हुआ?

स. ९६-मसजिद के मुल्ला ने कहाँ चढ़कर क्या कहा और उसे सुनकर श्रीजी विचारमग्न क्यों हो गये?

ज. ९६- इसलाम धर्म के मंदिर को मसजिद कहते हैं। श्रीजी स्वरूप ने देखा कि मसजिद के मुनारे पर चढ़कर शाम के ठीक साढ़े चार बजे मुल्ला ने आवाज लगाई। उसने बड़ी तेज आवाज में बाँग दी →

स. ९७- ला, इलाह और इल्लुल्लाह का अर्थ क्या है? मुहम्मद स्वरूप ने कहाँ पहुँचकर कलमा लाये?

स. ९८-"मुहम्मदुर्रसूललुल्लाह" का अर्थ क्या है? स्पष्ट करो।

ज. ९८- *"मुहम्मदुर्रसूललुल्लाह"* का अर्थ है मुहम्मद साहेब इल्लुल्लाह अर्थात् अक्षरातीत उत्तम पुरुष के संदेशवाहक हैं अथवा अरब के →

→ क्योंकि वह राजा हिन्दू धर्म की रक्षा करने की हिम्मत रखता था, ऐसा श्रीजी के सुनने में आया था। तब चिट्ठी लिखकर श्रीजी स्वरूप ने गोवर्धन भाई को उस राजा के पास भेजा। वह पत्र लेकर गोवर्धन भट्ट सिंध नदी पार अटक स्थित राजा यशवन्त के पास गये।

→ सिंह को पत्र और समाचार दिया। परन्तु राजा यशवन्त सिंह अभिमान की मूर्ति था। उसमें परमधाम का अंकुर नहीं था। इसलिए उन्हें ब्रह्म-चर्चा में रस नहीं मिला। अतः सोचा हुआ कार्य नहीं बन सका।

ज. ९४- मेरता शहर में श्री प्राणनाथजी पूरे चार महीने रहे।

ज. ९५- एक दिन जब श्रीजी स्वरूप बाहर बगीचे में टहल रहे थे, तब एक अद्भुत बात उनके सुनने में आयी।

→ *"ला इलाह इल्लुल्लाह, मुहम्मदुर्रसूललुल्लाह।"*- यह सुनकर श्रीजी साहेबजी विचारमग्न रह गए । बाँग की आवाज में उन्हें ला, इलाह और इल्लुल्लाह का मिलान क्षर, अक्षर और उत्तम पुरुष से मिला। इस विषय को लेकर श्रीजी स्वरूप विचारमग्न हो गए, "अच्छा ! रसूल मुहम्मद ने कुरान अक्षरातीत से अवतरित किया !!"

ज. ९७- ला, इलाह और इल्लुल्लाह का अर्थ है-क्षर, अक्षर और उत्तम पुरुष। अरब के रसूल मुहम्मद स्वरूप ने अक्षरातीत धाम पहुँचकर कलमा उतारा।

→ मुहम्मद साहेब ने नूर परे नूर तजल्लाह अर्थात् अक्षर परे अक्षरातीत - उत्तम पुरुष परमात्मा (खुदा) के पास पहुँचकर कुरानरूपी संदेश उतारा ।

स. ९९- उक्त कलमा का अर्थ स्वामी श्री लालदासजी महाराज ने बीतक में क्या किया है?

ज. ९९- उक्त कलमा का अर्थ करते हुए श्री बीतक साहेब में स्वामी श्री लालदासजी महाराज ने कहा है -

ला तो नाहीं को कह्या, इलाह तो है हक ।
ए अक्षर अक्षरातीत की, बात बड़ी बुजरक ।। →

स. १००-निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी द्वारा कही बातों के आधार पर श्रीजी ने क्या कहा?

ज. १००- श्री श्यामाजी अवतार निजानन्द स्वामी श्री सद्गुरु स्वरूप द्वारा कही बातों के आधार पर श्रीजी ने कहा, "श्री सद्गुरु स्वरूप →

स. १०१-उक्त बातों द्वारा श्रीजी साहेबजी ने क्या निश्चय किया और क्या दावा लिया?

ज. १०१- उक्त बातों द्वारा श्रीजी स्वरूप ने यह निर्णय लिया कि रसूल →

स. १०२-"इनका कौन दावा करे बिना हम"-यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है तथा इस वाक्यांश का अर्थ क्या है? अच्छी तरह समझाओ।

ज. १०२- *"इनका कौन दावा करे बिना हम"*- यह वाक्यांश →

स. १०३-मुहम्मद साहेब किनका समाचार लानेवाले कासिद-पत्रवाहक हैं?

स. १०४-"कुरान मुसलमानों का धर्मग्रन्थ है", परंतु उसमें किनका संदेश लिखा है?

→ अर्थ :- "ला" तो क्षर पुरुष अर्थात् नश्वर को कहा है और "इलाह" शब्द कूटस्थ अक्षर ब्रह्म के लिए कहा गया है। पुनः "इल्लुल्लाह" अक्षरातीत धामस्थ उत्तम पुरुष परमात्मा के लिए कहा गया है। मुहम्मद साहेब ने अक्षरातीत ब्रह्म-खुदा का संदेशरूपी ग्रंथ कुरान अवतरित किया। अतः वे संदेशवाहक रसूल कहलाये ।

→ ने भी तो यही कहा था कि तुम ब्रह्मात्माएँ परमधाम से खेल देखने आयी हो। वहाँ अक्षरातीत धाम में परब्रह्म परमात्मा एवम् ब्रह्मात्माओं के सिवाय अन्य कोई नहीं है, तो रसूल मुहम्मद किनके लिए आये ?"

→ मुहम्मद आये, तो मात्र हमारे लिए। उन्होंने अक्षरातीत में पहुँचकर कुरान लाये, तो मात्र हमारे लिए। अतः कुरान में अवश्य ही हमारे घर की बातें हैं। कुरान हमारे धनी की भेजी हुई चिट्ठी है। अतः मेरे सिवाय अन्य कौन कुरान का दावा ले सके !

→ महामति श्री प्राणनाथजी के श्री मुख का है। इस वाक्यांश का मतलब यह है कि कुरान ग्रन्थ हमारा है और उसमें कही बातें भी हमारी हैं। कुरान ग्रन्थ हमारे धनी द्वारा हमारे लिए भेजी हुई चिट्ठी है। उसमें हमारे घर की बातें हैं। कुरान मुसलिम समाज के लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए आया है।

ज. १०३- मुहम्मद साहेब ब्रह्मसृष्टियों-मोमिनों का समाचार लेकर आनेवाले ब्रह्मात्माओं के कासिद-पत्रवाहक हैं।

ज. १०४- *"कुरान मुसलमानों का धर्मग्रन्थ है"*, परंतु उसमें श्री राजजी ने अक्षरातीत-हमारे घर की बातें लिख भेजी हैं।

स. १०५-श्री प्राणनाथजी के जागनी अभियान में यहाँ तक मात्र किनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान की चर्चा हुई?

ज. १०५- श्री प्राणनाथजी के जागनी अभियान में यहाँ अर्थात् मेरता →

स. १०६-मुहम्मद के ज्ञान और ईसा के ज्ञान के मिलते ही श्री प्राणनाथजी स्वरूप को कौन-सी पदवी प्राप्त हुई?

स. १०७-श्री प्राणनाथजी को अहमद पदवी प्राप्त होने का क्या कोई प्रमाण है? यदि है, तो दीजिए।

ज. १०७- श्री प्राणनाथजी को अहमद पदवी प्राप्त होने का प्रमाण वाणी की निम्नलिखित चौपाई है। अतः →

❖ कतेब की पूँजी ❖

स. १-कलमा सुनने के पूर्व श्रीजी साहेबजी का ध्यान किस ओर नहीं था?

ज. १- श्रीजी साहेब जब तक मेरता नहीं पहुँचे थे, तब तक चर्चा-कथा →

स. २-कलमा सुनने के पश्चात् श्री प्राणनाथजी के लिए क्या अमूल्य पूँजी बन गई?

ज. २- मेरता में कलमा सुनने के पश्चात् श्रीजी के दिल-दिमाग में कुरान एक प्रत्यक्ष साक्षीरूपी अमूल्य पूँजी सिद्ध हुई। परमात्मा के खोजी →

→ तक मात्र ईसा स्वरूप सद्गुरु द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञान की चर्चा-कथा वेद, पुराणों की साक्षियों द्वारा होती आयी अर्थात् मात्र वेद पक्ष की चर्चा हुई।

ज. १०६- अरब के मुहम्मद के ज्ञान (कलमा) और ईसा के ज्ञान (तारतम) के मिलते ही श्री प्राणनाथजी को *"अहमद"* की पदवी प्राप्त हुई।

→ **महंमद आया ईसे मिने, तब अहंमद हुआ स्याम।**
अहंमद मिल्या मेहेदी मिने, ए तीन मिल हुए इमाम।।

-(खुलासा, प्र. १५/चौ. २१)।

अर्थात् मुहम्मद, अहमद और मेहदी-ये तीनों मिलकर *"इमाम"* स्वरूप बने।

-(प्रकरण ३३, सवाल-जवाब नं. १०७, कुल सं. १२९०+१०७ =१३९७)।

❖ कतेब की पूँजी ❖

→ करते समय कुरान की ओर उनका बिलकुल ध्यान नहीं था। उसमें उन्हें दिलचस्पी भी नहीं थी। वे वेद, पुराण, उपनिषदादि के प्रमाणों से ही विषय-वस्तु को प्रमाणित कर सुनाते थे ।

→ लोगों में से जिस-जिसने अपनी-अपनी खोज विषय का अनुभव बताया, वह सब तो परोक्ष ही था। प्रत्यक्ष खुदा (ब्रह्म) से मिलकर लाया हुआ संदेश तो कुरान में है। इसलिए कुरानरूपी ज्ञान ब्रह्मात्माओं के लिए एक अमूल्य निधि है।

स. ३- अब मेरता से श्री प्राणनाथजी किस स्वरूप में होकर आगे बढ़े? अहमद पदवी का वास्तविक-गोप्य अर्थ क्या है? क्या यह स्पष्ट करना यहाँ अत्यंत जरूरी नहीं है?

ज. ३- अब मेरता से श्रीजी स्वरूप कलमा और तारतम दोनों पक्षों के ज्ञानयुक्त "अहमद" स्वरूप होकर आगे बढ़े। दोनों कन्धों पर हिन्दू और मुसलिम-इन दोनों समाजों को लेकर समान दृष्टिवत् →

स. ४- श्री प्राणनाथजी ने श्री लालदासजी से मिलते ही क्या कहा?

स. ५- उक्त प्रकार की बातें सुनने के पश्चात् लालदासजी ने श्री प्राणनाथजी से क्या कहा?

स. ६- श्रीजी ने किन्हें कलमा का अर्थ स्पष्ट कर समझा दिया?

स. ७- इसके उपरान्त श्रीजी साहेबजी ने लालदासजी से कुरान के विषय में क्या-क्या कहा?

ज. ७- श्री प्राणनाथजी ने कलमा का अर्थ स्पष्ट करके श्री लालदासजी →

स. ८- ईसा और मुहम्मद के मिलने पर क्या-क्या होने को कहा है और कहाँ कहा है?

ज. ८- जब ईसा-रूह अल्लाह श्री श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी का शास्त्र ज्ञान और मुहम्मद साहेब के कुरान का ज्ञान श्री →

स. ९- अब श्री प्राणनाथजी ने सुलतान औरंगजेब के साथ क्या करने का निश्चय किया?

ज. ९- अब श्री प्राणनाथजी ने पूरी तैयारी के साथ बादशाह औरंगजेब से →

→ आगे चल पड़े। यहाँ "अहमद" शब्द का वास्तविक - गोप्य अर्थ स्पष्ट कर देना अत्यंत जरूरी है क्योंकि "अहमद" शब्द का वास्तविक अर्थ है "अहं ब्रह्मास्मि"। अतः श्रीजी स्वरूप ब्रह्म स्वरूप अथवा खुदा स्वरूप होकर मेरता से आगे चले। अब यहाँ खुदा की सृष्टि में श्रीजी के लिए हिन्दू-मुसलिम, सुर-असुर और वेद-कतेब दिन एवम् रात की तरह हुए। अपने में देखकर समझा जाय, तो एक इनसान के दो हाथ की तरह। अतः अब किसे ठुकरायें और किसे अपनायें?

ज. ४- श्री प्राणनाथजी ने श्री लालदासजी से मिलते ही कहा, "हमने आज एक रहस्य पाया है।"

ज. ५- श्रीजी के श्री मुख से उक्त प्रकार की बातें सुनते ही लालदासजी ने उनसे यह विनय किया, "आप वे रहस्य की बातें मुझे भी बताने की कृपा कीजिए, तब मैं भी जान पाऊँ।"

ज. ६- श्रीजी साहेबजी ने श्री लालदासजी महाराज को कलमा का एक-एक अर्थ स्पष्ट करके समझा दिया।

→ से कुरान के विषय में यह भी कहा, "ब्रह्म श्री राजजी ने मुहम्मद साहेब को कुरान देकर संसार में भेजा है। उसमें तुम्हारे और हमारे काम की बातें लिखी हैं। अरे! तुम्हारे लिए ही कुरान भेजा गया है।"

→ प्राणनाथजी में एकाकार होगा, तब उन्हें "अहमद" की उपाधि मिलेगी, तब अहमद स्वरूप यथाशीघ्र इस "दो धारी तलवार" द्वारा दज्जालरूपी कलियुग को मारेंगे। ऐसा कुरान और हदीसों में कहा है।

→ धर्मयुद्ध करने का निश्चय किया। सर्वप्रथम कलमा और तारतम का ज्ञान देकर उसे दावत करेंगे अर्थात् उसे जागृत करेंगे। वह इस ज्ञान पर विश्वास कर जरूर आयेगा।

स. १०-अब मुसलिम समाज में सर्वप्रथम श्रीजी साहेबजी ने किसे दावत करने की ठानी?

स. ११-यहाँ श्री प्राणनाथजी सद्गुरु द्वारा कही किन बातों की याद दिला रहे हैं?

ज. ११- सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी ने कहा था, "जब उक्त विशिष्ट →

स. १२-अब श्रीजी स्वरूप ने विशेषकर किन्हें ढूँढ़ निकालने के लिए कमर बाँधी?

ज. १२- अब श्रीजी स्वरूप ने विशेषकर सद्गुरु द्वारा कही विशिष्ट दो →

स. १३-कलियुगी दज्जाल कौन हैं, जो बदफैली की धूम मचा रहे हैं?

स. १४-कब समस्त साथ अपनी-अपनी परात्मा का स्मरण करते हुए आत्म-जागृति के लिए स्वयं भागकर आ मिलेंगे?

ज. १४- जब उपरोक्त दोनों आत्माएँ-साकुण्डल और सकुमार जागृत होंगी, →

स. १५-इस प्रकार की योजना तय कर श्रीजी स्वरूप मेरता से कहाँ-कहाँ होते हुए आगरा पहुँचे?

ज. १५- उक्त प्रकार की योजना तय कर "अहमद" खिताब से युक्त श्री →

स. १६-कितने दिन आगरा में आराम कर पुनः श्रीजी स्वरूप ने किस प्रकार दिल्ली की ओर प्रस्थान किया?

ज. १६- ज्यादातर समय गोकुल, मथुरा और आगरा में ही व्यतीत हुआ। →

ज. १०- निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी ने कहा था, "दो आत्माएँ विशिष्ट हैं, जिनके नाम हैं -सकुमार और साकुण्डल।" अतः सर्वप्रथम श्रीजी साहेबजी ने सकुमार आत्मा को दावत करने की ठानी।

→ दोनों आत्माएँ जागृत हो जायेंगी, तब सभी ब्रह्मात्माएँ संसार के त्रितापरूपी दुःख-कष्ट से अघाकर अपने प्रियतम श्री राजजी के पास जाने को तत्पर हो जायेंगी।"

→ आत्माओं-साकुण्डल और सकुमार को इस माया के दलदल से उबारने अथवा निकालने और उन्हें जागृत करने के लिए कमर बाँधी।

ज. १३- कलियुगी दज्जाल आसुरी प्रवृत्तियों से ग्रस्त, दुष्टाई के कर्म करनेवाले लोग हैं। उन्हीं को भविष्य पुराण में "कलियुग" कहा गया है।

→ तब उभय पक्षों से धाम की आत्माएँ-रूहें भागते-भागते आकर निजानन्द धर्म में शामिल होंगी। समस्त सुन्दरसाथ तारतम ज्ञान द्वारा अपनी-अपनी परात्मा का स्मरण करेंगे और कयामत-आत्म जागृति के अन्तिम दौर में स्वयं ही दौड़-दौड़कर आ मिलेंगे।

→ प्राणनाथजी दिल्ली के तख्तवाले को निशाना बनाकर जुलूस सहित मेरता से गोकुल, मथुरा और वृन्दावन होते हुए आगरा पहुँचे।

→ पुनः अपनी जमात के अशक्त व्यक्तियों को आगरा की एक हवेली में रखकर उस जमात की देखभाल की जिम्मेदारी श्री बाईज्यूराज को सौंपकर श्रीजी स्वरूप युद्धभूमि दिल्ली में प्रवेश करने के लिए योग्य जमात अर्थात् जो अपनी रक्षा स्वयं कर सकें, उन्हें लेकर आगे चले।

स. १७-श्रीजी स्वरूप ने सर्वप्रथम दिल्ली में किस जगह पर डेरा डाला और वहाँ कितने समय तक रहे?

ज. १७- श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने गोकुल, मथुरा और आगरा होते हुए →

स. १८-दिल्ली में उस जगह श्रीजी से मिलने कहाँ-कहाँ से कौन-कौन आ पहुँचे?

स. १९-मेरता से कौन भाई दिल्ली आए और दिल्ली आकर उन्होंने दिल्ली में ही अपना स्थायी निवास बना लिया?

स. २०-कैसे-कैसे सुन्दरसाथ श्रीजी के चरण की आस लेकर दिल्ली आते और पुनः कुछ दिन रहकर वापस भी लौट जाते?

स. २१-कैसे लोग सिद्धान्त के विमुख हो गये और मुँह नीचा कर लौट गये?

ज. २१- हिन्दुत्व की कट्टरता की अज्ञानता में चूर लोग सुन्दरसाथ के →

स. २२-गोवर्धन भाई कहाँ से दिल्ली आए और दिल्ली आकर वे कहाँ ठहरे?

ज. २२- गोवर्धन भाई मेरता से सिंध नदी पार अटक स्थित यशवन्त सिंह →

स. २३-गोवर्धन भाई ने दिल्ली में गंगाराम भाई की दुकान में ठहरकर क्या किया?

→ दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। सर्वप्रथम दिल्ली में अपनी जमात के साथ उन्होंने "बिट्ठल गौर पुरा" सैयद की हवेली में डेरा डाला। इस हवेली में वे जमात सहित छः महीने रहे।

ज. १८- दिल्ली स्थित "बिट्ठल गौर पुरा" सैयद की हवेली में श्रीजी से मिलने सूरत से मुकुन्ददास और मेरता से रामचन्द्र भाई आए तथा अन्य जगह-जगह से बहुत से सुन्दरसाथ आये।

ज. १९- मेरता से रामचन्द्र भाई, मुकुन्ददास भाई के साथ दिल्ली आये। वे कुछ दिन सुन्दरसाथ के बीच रहे और तत्पश्चात् दिल्ली शहर में ही अपना स्थायी निवास बना लिया।

ज. २०- अनेकों सुन्दरसाथ चारों ओर से श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ दिल्ली आते । पुनः कुछ दिनों दिल्ली रहकर अपने घर वापस लौट जाते। किन्तु उनके मन में निजानन्द धर्म के प्रति श्रद्धा-विश्वास कम नहीं होता। परमधाम के प्रति उनमें श्रद्धा-विश्वास बना रहता।

→ बीच आकर भी अवज्ञाकारी बने रहे और निजधाम में प्रविष्ट न हो सके। उनका सिर सदैव नीचा रहा। वे कुरान की बातें सुन ही नहीं सके। कलाम से ही डर गये। अतः सलाम नहीं मार सके।

→ के पास श्रीजी स्वरूप का पत्र लेकर गये थे। कुछ दिनों के पश्चात् वे वापस अटक से सिंध नदी पार कर पुनः दिल्ली लौट आये। वे दिल्ली में लाल दरवाजे के पास गंगाराम भाई की दुकान में ठहरे थे।

ज. २३- दिल्ली में गंगाराम भाई की दुकान में रहकर गोवर्धन भाई ने गंगाराम और आशाजीत भाई को आत्म-बोध देकर जागृत किया। चर्चा सुनकर दोनों ही भाइयों को आत्म-शान्ति मिली ।

स. २४-किस भाई ने किनके द्वारा दो-चार शब्द सुनकर उन शब्दों पर अपने मन में गंभीरता से विचार किया?

ज. २४- श्री गोवर्धन भाई ने नैनसुख महाजन को दो-चार शब्दों में कुछ →

स. २५-एक दिन गोवर्धन भाई कहाँ घूम रहे थे कि उन्हें अचानक गरीबदास मिल गये?

ज. २५- एक दिन गोवर्धन भाई उर्दू बाजार में घूम रहे थे कि अचानक →

स. २६-गोवर्धन भाई ने मिलते ही गरीबदास भाई से किनके विषय में और क्या पूछा?

स. २७-गोवर्धन भाई किन्हें श्रीजी साहेबजी के पास ले जाना चाहते थे?

ज. २७- श्री गोवर्धन भाई ने लाल दरवाजे के पास स्थित गंगाराम भाई →

स. २८-श्रीजी साहेबजी का पता गोवर्धन भाई को किसने दिया और उस समय श्रीजी साहेब कहाँ थे?

स. २९-गरीबदासजी ने श्रीजी साहेबजी को किनके आगमन का समाचार दिया?

स. ३०-जब गोवर्धन भाई साथियों को लेकर श्रीजी के पास आये, तब वहाँ क्या काम चल रहा था?

स. ३१-गोवर्धन भाई ने श्रीजी साहेब को किनके समाचार से अवगत कराया?

ज. ३१- गोवर्धन भाई ने श्रीजी साहेब को सिंध नदी पार अटक स्थित →

→ उपदेश कर दिया। अतः गोवर्धन भाई द्वारा कहे उन वचनों पर नैनसुख भाई "विचार विचार विचारिए, बेधे सकल संधान" की तरह गंभीरतापूर्वक विचार करते रहे। तत्पश्चात् समाधान होने पर तारतम ग्रहण किया।

→ उन्हें गरीबदास भाई मिल गये। गोवर्धन भाई भागते-भागते जाकर उनसे मिले। पुनः हताश होकर उनसे श्रीजी साहेब का समाचार पूछा।

ज. २६- गोवर्धन भाई ने मिलते ही आतुरतापूर्वक गरीबदासजी से श्रीजी साहेबजी का पता पूछा।

→ की दुकान में दो-तीन दिन ठहरकर कुछेक साथ को तारतम ज्ञान का बोध देकर जागृत किया था। अतः उन्हीं साथ को वे श्रीजी की कृपा तले उनके चरणों में सौंपना चाहते थे।

ज. २८- उर्दू बाजार में मिले गरीबदास भाई ने गोवर्धन भाई को श्रीजी साहेबजी का पता दिया। उस समय श्री प्राणनाथजी अपनी जमात के साथ बिट्ठल गौर पुरा में सैयद की हवेली में थे।

ज. २९- जब गरीबदास भाई उर्दू बाजार से फिरकर श्रीजी के पास आये, तब उन्होंने सर्वप्रथम अटक से लौटे गोवर्धन भाई के आगमन का समाचार श्रीजी साहेब को दिया।

ज. ३०- जब अपने द्वारा जागृत तीनों भाइयों को लेकर गोवर्धन भाई सैयद की हवेली में श्रीजी से मिलने आये, तब उस समय वहाँ परमधाम के चित्रपट का कार्यक्रम चल रहा था।

→ यशवन्त सिंह की बातों से अवगत कराया कि इस राजा में बिलकुल भी जिज्ञासा नहीं है। धर्म विषयक किन्हीं बातों में उसे दिलचस्पी नहीं है। अतः "बिना अंकुरे क्या करे" मैंने भी बहुत कोशिश तो की, परंतु सब व्यर्थ गयी।

स. ३२-श्रीजी साहेबजी सैयद की हवेली में कितने समय रहे? उन्हें लाल दरवाजा की हवेली में कौन ले गये?

स. ३३-लाल दरवाजे की हवेली में आकर श्रीजी साहेब ने क्या विचार किया और वे क्या करने लगे?

ज. ३३- लाल दरवाजे की हवेली में बैठकर श्रीजी साहेबजी ने विचार →

स. ३४-एक पत्र में श्रीजी स्वरूप ने कहाँ के और कितने प्रश्न बनाकर रखे?

स. ३५-वह पत्र तैयार करने में रात-दिन कौन-कौन मेहनत करते थे?

ज. ३५- उक्त प्रश्न बनाने और पत्र तैयार करने में रात-दिन श्रीजी →

स. ३६-लाल दरवाजे में श्रीजी साहेबजी किनकी हवेली में ठहरे?

स. ३७-श्री प्राणनाथजी ने कहाँ सुन्दरसाथ से पूछा कि अब आगे क्या करना है?

ज. ३७- लाल दरवाजे में बैठकर श्री प्राणनाथजी ने सुन्दरसाथ को अपने पास बैठाकर सुलतान औरंगजेब को पत्र भेजने के सम्बन्ध में →

स. ३८-पत्र भेजने अथवा दिल्ली के सुलतान के पास पहुँचाने के विषय में श्रीजी स्वरूप क्या करने की सोचने लगे?

ज. ३८- पत्र भेजने अथवा दिल्ली के सुलतान के पास पहुँचाने के विषय में श्रीजी स्वरूप सोचने लगे, "अब आगे किसके द्वारा सम्राट के →

ज. ३२- बिट्ठल गौर पुरा सैयद की हवेली में श्री प्राणनाथजी साथियों सहित छः महीने रहे। दयाराम भाई और नैनसुख भाई उन्हें लाल दरवाजे की हवेली में ले गये।

→ किया, "अपनी सारी बातें सप्रमाण एक पत्र में लिखकर सुलतान औरंगजेब के पास भेजनी चाहिए।" इस प्रकार विचार कर सम्राट औरंगजेब को पत्र द्वारा अपने तारतम ज्ञान का बोध कराने हेतु श्रीजी स्वरूप पत्र बनाने में लग गये।

ज. ३४- एक पत्र में श्रीजी स्वरूप ने कुरान शरीफ़ धर्मग्रन्थ के अन्दर के कुल बाईस प्रश्न बनाकर रखे, जिससे पत्र पढ़ते ही सुलतान औरंगजेब को सारी बातें समझ में आ जायें।

→ साहेबजी और लालदासजी मेहनत करते थे। श्री राजजी की सेवा मानकर सकुमारबाई को जगाने के लिए दोनों रात-दिन एक करके बड़ी मेहनत से पत्र बना रहे थे।

ज. ३६- लाल दरवाजे में श्रीजी साहेबजी एक क्षत्रिय की हवेली में ठहरे। वहाँ उनकी जमात भी साथ में ही है।

→ विचार-विमर्श किया। बहुत देर तक विचार-विमर्श चला और सभी को इस विषय में अपने-अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया गया कि अब आगे पत्र पहुँचाने के लिए क्या उपाय करना है?

→ पास यह पत्र पहुँचाएँ?" तब सबके मन्तव्य (ध्येय) का मन्थन कर यह निश्चय किया गया कि एक व्यक्ति को ढूँढ़ निकाला जाय, जिसका दरबार से सम्पर्क हो। ऐसा विचार कर ही रहे थे, तभी एक भाई आ पहुँचे।

स. ३९-उस समय वहाँ किसने आकर श्रीजी को प्रणाम किया और श्रीजी ने उनसे क्या पूछा?

ज. ३९- इस समय एक भाई ने आकर श्रीजी साहेब के चरणों में प्रणाम →

स. ४०-जिस पत्र को दिल्ली के सुलतान औरंगजेब के पास भेजने के लिए तैयार किया था, वह पत्र किसे सुनाया गया?

ज. ४०- जिस पत्र को लालदासजी और श्रीजी साहेबजी ने दिन-रात एक →

स. ४१-दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के पास भेजने के लिए तैयार किये गए पत्र को सुनकर आशाजीत भाई ने श्रीजी स्वरूप से क्या कहा?

ज. ४१- दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के पास भेजने के लिए तैयार किए →

स. ४२-"यह पत्र तो हिन्दी में है। अतः वह कैसे सुनेगा? वह तो शरीअत का पालन बड़ी दृढ़तापूर्वक करता है।" -ऐसा कौन कह रहे हैं?

ज. ४२- "यह पत्र तो हिन्दी में है। अपने आपको मोमिन कहनेवाला →

स. ४३-लाल दरवाजे की हवेली में श्रीजी साहेबजी कितने महीने ठहरे ?

स. ४४-यहाँ अटारी पर बैठकर श्रीजी साहेबजी किस-किस की चर्चा करते थे?

स. ४५-इस हवेली में श्रीजी स्वरूप के पास चर्चा की लालचवश कौन आते थे?

ज. ४५- इस हवेली में वेद-वेदान्त की चर्चा श्रवण करने की लालच से →

→ किया। उनका नाम था - आशाजीत। तब श्रीजी ने उनसे पूछा, "अब बादशाह औरंगजेब के पास पत्र पहुँचाने के लिए क्या करना है?"

→ कर मेहनत से दिल्ली के सुलतान के पास भेजने के लिए तैयार किया था, वह पत्र आशाजीत भाई को सुनाया गया कि ऐसा पत्र तैयार किया गया है। अतः यह पत्र उसके पास कैसे पहुँचाया जाय?

→ गए पत्र को सुनकर आशाजीत भाई ने कहा, "अरे! औरंगजेब हिन्दी भाषा में लिखे इस पत्र को क्यों देखेगा? मुगल सम्राट औरंगजेब तो सदैव से ही हिन्दुओं का परम शत्रु रहा है। प्रातः काल में हिन्दुओं का मुँह देखना भी वह अशुभ मानता है। वह स्वयं अपने आप को मोमिन (ब्रह्मसृष्टि-श्रेष्ठ भक्त) कहता है।"

→ बादशाह औरंगजेब इसे अपने श्रवणों से क्यों सुनेगा? फिर एक बात यह भी है कि मुसलिम शासन में शरीअत का पालन अत्यंत कट्टरतापूर्वक होता है।"-यह बात आशाजीत भाई ने श्रीजी स्वरूप से कही।

ज. ४३ - लाल दरवाजे में क्षत्रिय की हवेली में अपनी जमात सहित श्री प्राणनाथजी स्वरूप पूरे दो महीने रहे।

ज. ४४- क्षत्रिय की हवेली में अटारी पर एकान्त में बैठकर श्रीजी साहेबजी वेद और वेदान्त की चर्चा करते थे।

→ नित्य प्रति एक सूफी फकीर आते थे। उन्हें श्रीजी के श्री मुख से वर्णित वेद-वेदान्त की चर्चा अत्यंत मीठी लगती थी। अतः वे चर्चा श्रवणार्थ कुछ दिन तक आते रहे।

स. ४६-खासल-खास जमात में से दिल में पूर्ण विश्वास लेकर यहाँ कौन आये?

स. ४७-दयाराम भाई ने सबके देखते-देखते श्रीजी साहेबजी की नजरों में कौन-सा पद प्राप्त कर लिया?

स. ४८-दयाराम भाई को समझा-बुझाकर श्रीजी की चर्चा में कौन लाए थे?

स. ४९-दयाराम भाई को श्रीजी की चर्चा सुनकर कैसा लगा अथवा उन्होंने क्या अनुभव किया ?

स. ५०-चंचल भाई को किसने चर्चा सुनायी थी? उन्हें चर्चा द्वारा क्या प्राप्त हुआ, जिससे वे धर्म में शामिल हुए?

स. ५१-हरप्रसाद और हरकरण भाई ने किनकी प्रेरणा द्वारा अखण्ड सुख प्राप्त किया?

स. ५२-कौन-कौन अपने घर के बुजुर्गों से डरते-डरते चर्चा सुनने आया करते थे?

स. ५३-उक्त दोनों भाइयों ने धर्म में पूर्ण विश्वास आने पर क्या किया?

स. ५४-चर्चा सुनने पर भी भिखारीदास भाई श्रीजी स्वरूप की किस भावना से सेवा करते थे?

स. ५५-भिखारीदास भाई ने बड़े स्नेहपूर्वक श्रीजी साहेबजी और सुन्दरसाथ जमात को क्या किया?

ज. ४६- खासल-खास जमात में से दिल में पूर्ण विश्वास लेकर यहाँ दयाराम भाई आये।

ज. ४७- दयाराम भाई ने सबके सामने सबके देखते-देखते निजधाम मार्ग में विश्वास के कारण ब्रह्मात्माओं में विशेषकर खासल-खास ब्रह्ममुनि का पद प्राप्त कर लिया।

ज. ४८- दयाराम भाई को समझा-बुझाकर श्रीजी साहेब की चर्चा में नैनसुख भाई लाए थे।

ज. ४९- श्रीजी साहेब की चर्चा सुनकर दयाराम भाई को जो सुख प्राप्त हुआ, उस सुख का वर्णन इस मुख से करना बिलकुल असम्भव है। ऐसा बीतककार श्री लालदासजी कहते हैं।

ज. ५०- दयाराम भाई ने चंचल भाई को चर्चा सुनाई थी। उस चर्चा द्वारा चंचल भाई को बड़ी आत्म-शान्ति प्राप्त हुई और वे तुरन्त धर्म में दीक्षित हो गए।

ज. ५१- हरप्रसाद और हरकरण भाई ने किसी से चर्चा नहीं सुनी थी। ये दोनों भाई स्वयं श्रीजी की प्रेरणा से अखण्ड सुख के भागीदार बने थे।

ज. ५२- हरप्रसाद और हरकरण-ये दोनों भाई अपने बड़े-बुढ़ों के भय के कारण छिप-छिपकर प्रेम से चर्चा सुनने आया करते थे।

ज. ५३- उक्त दोनों भाइयों ने निजानन्द धर्म पर पूर्ण विश्वास आने पर अपने बुजुर्गों से डरते-छिपते हुए भी धर्म ग्रहण किया ।

ज. ५४- भिखारीदास भाई ने थोड़ी-सी चर्चा सुनी थी। परंतु उन्होंने श्रीजी स्वरूप की मात्र एक साधु-महात्मा के रूप में पहचान की थी। अतः वे उसी भाव से श्रीजी स्वरूप की सेवा करते थे।

ज. ५५- भिखारीदास भाई ने बड़े स्नेह से श्री प्राणनाथजी सहित जमात को अपने घर में पधराया और बड़े प्रेम से भोजन कराया। सभी सुन्दरसाथ की भी उन्होंने बड़े प्रसन्न चित्त से सेवा की ।

स. ५६-गंगाराम भाई चर्चा में किस प्रकार आते थे और क्या-क्या करते थे?

स. ५७-दयाराम भाई चर्चा में कैसे आते थे? पुनः वे श्रीजी को क्या अर्पण करते थे?

स. ५८-चंचलदास भाई श्रीजी के चरणों में चर्चा श्रवणार्थ किस प्रकार आते थे?

ज. ५८- चंचलदास भाई जब भी श्रीजी के चरणों में चर्चा श्रवणार्थ आते →

स. ५९-किनके कुटुम्ब-परिवार के लोग उनसे झगड़ते थे और किस लिए उन्हें मना किया करते थे?

स. ६०-कौन भाई स्वजनों की बातों को महत्त्व नहीं देते थे और क्या करते थे?

स. ६१-किसने श्रीजी साहेब की एक साधु-महात्मा के रूप में पहचान करके यथाशक्ति उनकी सेवा की?

स. ६२-जेठा महाजन कैसे थे? वे चर्चा सुनकर भी अथवा वचनों के मर्मभेदी ज्ञाता होते हुए भी क्या नहीं छोड़ सके?

स. ६३-श्रीजी साहेबजी यहाँ इस वक्त पुनः-पुनः क्या-किस विषय में विचार करने लगे?

ज. ६३- श्रीजी साहेबजी अब यहाँ पुनः-पुनः यह विचार करने लगे, →

ज. ५६- गंगाराम भाई कभी भी चर्चा सुनने खाली हाथ नहीं आते थे। बाजार में जो भी अच्छी वस्तु उन्हें दिखाई देती थी, उसे लाकर वे श्री प्राणनाथजी की सेवा में प्रस्तुत कर देते थे ।

ज. ५७- दयाराम भाई जब भी चर्चा श्रवणार्थ आते थे, तो मिठाई, पकवान और विभिन्न प्रकार के मेवा आदि लेकर ही आते थे तथा मन में दृढ़ विश्वास के साथ वे उक्त सामग्रियाँ श्रीजी को अर्पित करते थे।

→ थे, तब वे घर के लोगों की नजर बचाकर अपनी दुकान से कोई-न-कोई वस्तु अवश्य लाते थे। वे बड़े उत्साहपूर्वक मन में बड़ी उमंग लेकर श्रीजी के लिए विभिन्न वस्तुएँ लाया करते थे।

ज. ५९- चंचलदास भाई के घर में कुटुम्ब-परिवार के लोग उनसे लड़ते-झगड़ते रहते थे तथा उन्हें दुकान की वस्तुएँ ले जाने के लिए सदैव मना किया करते थे।

ज. ६०- उक्त कारण से चंचलदास भाई घर-परिवार के लोगों की नजर बचाकर वस्तुएँ लाया करते थे और स्वजनों की बातों को कोई महत्त्व ही नहीं देते थे।

ज. ६१- श्रीजी स्वरूप की मात्र ऊपरी पहचान होने के कारण रामचन्द्र बनिया ने श्रीजी साहेब स्वरूप को मात्र एक साधु-महात्मा मानकर यथाशक्ति उनकी सेवा की ।

ज. ६२- जेठा महाजन बड़े ज्ञानी वेदान्ती थे। वे चर्चा सुनकर श्रीजी के वचनों का मर्म भी समझ लेते थे। परन्तु विचार-विवेक से खाली होने के कारण शून्य सिद्धान्त उनके दिमाग से दूर नहीं हो सका। जैसे *"पर छूटा न सुन मकान"*।

→ "बादशाह हमारी बातों को कैसे सुनेगा? यहाँ की परिस्थिति भी ऐसी है कि दज्जालों के कारण इस प्रदेश में अधिक दिन ठहरा भी नहीं जा सकता।"

स. ६४-श्रीजी साहेब कैसे स्थान की खोज में थे और उस स्थान की जरूरत उन्हें किस लिए पड़ी?

स. ६५-श्रीजी साहेबजी ने लाल दरवाजे में समस्त सुन्दरसाथ से परामर्श करते हुए क्या कहा?

स. ६६-उक्त प्रकार सुन्दरसाथ से विचार-विमर्श करने के पश्चात् लाल दरवाजे से श्रीजी कहाँ चले?

स. ६७-श्रीजी स्वरूप ने कितने सुन्दरसाथ को लाल दरवाजे में छोड़ा और कितने तथा कैसे-कैसे सुंदरसाथ को वे अपने साथ ले गये ?

स. ६८-"मैं तुम लोगों का कुशल समाचार लेते रहूँगा। तुम लोग अभी यहीं रहो।"-ऐसा श्रीजी ने किससे कहा?

स. ६९-लालदासजी यहाँ अपने सुन्दरसाथ से क्या समझकर अपनी आत्मा जगाने को कह रहे हैं?

ज. ६९- बीतककार श्री लालदासजी यहाँ अपने सुन्दरसाथ से कह रहे हैं, "हे सुन्दरसाथजी! आप सब अपने स्वामी प्रियतम परमात्मा श्री →

❖ उपली दृष्टि ❖

स. १- किस समय सूरत से किन-किन को साथ लेकर लक्ष्मीदास भाई दिल्ली चल पड़े और क्यों?

ज. ६४- श्रीजी साहेबजी इस समय किसी सुरक्षित स्थान के व्यवस्था की खोज में थे, जहाँ बैठकर वे औरंगजेब से धर्मयुद्ध छेड़ सकें ।

ज. ६५- श्रीजी साहेबजी ने लाल दरवाजे में वहाँ के सुन्दरसाथ से परामर्श करते हुए कहा, "आप लोग भी औरंगजेब तक समाचार पहुँचाने का कोई उपाय बताइये, जिससे हम उस तक संदेश पहुँचा सकें।"

ज. ६६- उक्त प्रकार सुन्दरसाथ से विचार-विमर्श करने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी लाल दरवाजे से साथियों सहित शाहजहाँपुर बोड़िया चले ।

ज. ६७- श्रीजी स्वरूप ने लगभग आधी जमात को लाल दरवाजे की हवेली में ही छोड़ दिया और आधे साथ में ऐसे-ऐसे सुन्दरसाथ को लेकर आगे शाहजहाँपुर बोड़िया चले, जो धर्मयुद्ध में काम आ सकें।

ज. ६८- जिन सुन्दरसाथ जमात को श्रीजी स्वरूप ने लाल दरवाजे की हवेली में छोड़ दिया, उन्हें श्रीजी साहेबजी ने आश्वासन देते हुए कहा, "मैं शाहजहाँपुर बोड़िया पहुँचने के बाद सबका कुशल समाचार लेते रहूँगा।"

→ राजजी को याद करो। परमात्मा की कृपा से ही यह सब कार्य हो रहा है। आप सब इन बातों पर विचार कर अपनी आत्मा को जागृत करो।"

- (प्रकरण ३४, सवाल-जवाब नं. ६९, कुल सं. १३९७+६९=१४६६)।

❖ उपली दृष्टि ❖

ज. १- जिस समय दिल्ली में श्रीजी स्वरूप और लालदासजी सकुमार-बाई को संदेश पहुँचाने के लिए रात-दिन एक कर पत्र बनाने में तल्लीन थे, उसी समय सूरत से श्री लक्ष्मीदास भाई, रूपाबाई →

→ और बेटी यमुना को साथ लेकर दिल्ली आ पहुँचे। उनके साथ श्रीजी के दर्शनार्थ नारायणदास, गोविन्ददास, रामबाई, सभाचन्द्र क्षत्रिय, भगवती, हरिराम आदि आठ-दस अन्य साथ भी दिल्ली आए थे क्योंकि →

स. २-कौन-कौन श्रीजी साहेबजी के चरणों में आश्रय प्राप्त करने की आस से दिल्ली आये?

स. ३-कौन-कौन श्रीजी की शरण में आकर साथ समूह में कुछ दिन रहे और पुनः माया का सुख भोगने के लिए वापस चले गये?

स. ४-किनके घर में श्री कृष्ण-श्री राजजी प्रतिदिन भोजन करने आते थे?

स. ५-सूरत में श्री लक्ष्मीदासजी के घर में क्या चमत्कार हुआ था ?

ज. ५- सूरत में लक्ष्मीदास भाई के घर में लौकिक चमत्कार हुआ। वहाँ →

स. ६-किन्हें आवेश आता था और माया का उन पर किंचित् भी प्रभाव नहीं रहता था?

स. ७-श्री राजजी लक्ष्मीदास भाई को कैसा आश्वासन देते थे और एक दिन श्री राजजी ने किनके ऊपर हँसी करने की ठानी ?

स. ८-एक दिन बातों-ही-बातों में भाई लक्ष्मीदासजी से श्री राजजी ने क्या वादा किया?

→ लक्ष्मीदास भाई को श्री राजजी ने दर्शन देकर कहा था, "हे लक्ष्मीदास! आज से आठवें दिन तेरे हाथों द्वारा सकुमारबाई की जागनी होनी है और तू यहीं बैठा है ?"

ज. २- नारायणदास भाई, गोविन्ददास भाई और रामबाई को साथ लेकर लक्ष्मीदास भाई श्रीजी के चरणों में आश्रय पाने की आस से दिल्ली आये।

ज. ३- सभाचन्द्र क्षत्रिय, भगवती और हरिराम भाई कुछ दिनों तक साथ समुदाय में श्रीजी साहेबजी के संग रहे। मायाजन्य परिवार के प्रेममय आकर्षण के कारण वे अपने घर लौटकर पुनः माया का मीठा सुख भोगने में लग गये।

ज. ४- लक्ष्मीदास भाई के घर में श्री राजजी-श्री कृष्णजी नित्य प्रति भोजन ग्रहण करने आते थे। इस बात से उनके मन मे बड़ी संतुष्टि रहती थी।

→ बाह्य दृष्टि (उपली दृष्टि) को अधिक महत्त्व दिया गया अर्थात् लक्ष्मीदास भाई के घर में श्री राजजी नित्य प्रति दर्शन देते थे और भोजन आरोगते थे।

ज. ६- श्री लक्ष्मीदास भाई को आवेश आता था और उन पर माया का किंचित् मात्र भी प्रभाव नहीं रहता था।

ज. ७- श्री राजजी दर्शन देकर लक्ष्मीदास भाई से प्रत्यक्ष बातें करते थे और उनकी सभी इच्छाएँ पूर्ण करने का आश्वासन देते थे। एक दिन श्री राजजी ने भाई लक्ष्मीदास पर हँसी करने की ठानी ।

ज. ८- एक दिन श्री राजजी और लक्ष्मीदास भाई दोनों बात कर रहे थे। बातों-बातों में श्री कृष्णजी ने उनसे वादा किया, "आज से आठवें दिन तुम्हारे हाथों से सकुमारबाई की जागनी होगी।" इस तरह श्री राजजी ने लक्ष्मीदासजी पर हँसी करने की ठानी ।

स. ९- सूरत में श्री राजजी द्वारा किए हुए वादे की बात लेकर श्री लक्ष्मीदासजी भागते-भागते कहाँ पहुँचे?

ज. ९- उक्त प्रकार सूरत में श्री राजजी द्वारा किए हुए वादे की बात →

स. १०-वहाँ जाकर लक्ष्मीदास भाई ने सबके सामने श्रीजी के आगे क्या घोषणा की?

ज. १०- लक्ष्मीदास भाई ने दिल्ली पहुँचकर समस्त सुन्दरसाथ के बीच →

स. ११-लक्ष्मीदास भाई की उक्त बातें सुनकर श्रीजी साहेबजी ने लक्ष्मीदास भाई से क्या कहा?

ज. ११- लक्ष्मीदास भाई की उक्त बातें सुनकर श्रीजी स्वरूप ने लक्ष्मीदास भाई से कहा, "ये सब श्री राजजी के हाथ की बात है। श्री राजजी →

स. १२-श्रीजी साहेबजी ने किन्हें अपने समान बैठने की आज्ञा दी?

स. १३-"या बैठे मेरे जोड़"-यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है और इस वाक्यांश का क्या तात्पर्य है?

ज. १३- *"या बैठे मेरे जोड़"* -यह वाक्यांश श्रीजी साहेबजी के श्री →

स. १४-श्रीजी की उक्त बातें सुनकर श्रीजी के आगे लक्ष्मीदासजी ने क्या कबूल किया और क्या कहा?

ज. १४- श्रीजी स्वरूप की उक्त बातें सुनकर भाई लक्ष्मीदासजी ने उनसे →

स. १५-तब श्रीजी की आज्ञा से सुन्दरसाथ ने लक्ष्मीदास भाई को कहाँ बिठाया ?

→ लेकर (सुनकर) श्री लक्ष्मीदास भाई अपनी पत्नी और पुत्री सहित भागते-भागते दिल्ली स्थित लाल दरवाजे की हवेली में विराजमान श्रीजी स्वरूप के पास पहुँचे।

→ यह घोषणा कर दी, "मुझे श्री राजजी ने दर्शन देकर आज से आठवें दिन तेरे हाथों सकुमार की जागनी होगी, ऐसा कहा है। अतः यह सुनकर मैं भागा-भागा चला आया हूँ।"

→ किसी को भी शोभा देकर कार्य करा सकते हैं। जब आप से श्री राजजी ने वादा किया है, तो आप मेरे आगे होकर वह कार्य कर सकते हैं। वह कार्य आप चाहे मेरे आगे होकर करें या मेरे जोड़े बैठकर करें, मुझे कोई एतराज नहीं है। मेरे पीछे तो सब कोई हैं ही।"

ज. १२- श्रीजी साहेबजी ने अपने सुन्दरसाथ श्री लक्ष्मीदास भाई को अपने जोड़े बैठने की आज्ञा दी।

→ मुख का है। इस वाक्यांश का तात्पर्य है कि श्रीजी साहेबजी ने भाई लक्ष्मीदास से कहा, "यदि आगे होकर कार्य करने की हिम्मत नहीं होती, तो आप मेरे जोड़े (समान) होकर यह कार्य करें।"

→ कहा, "मैं आपके आगे तो नहीं हो सकूँगा। परन्तु आपके समान (जोड़े) बैठकर यह कार्य करूँगा।" इस तरह लक्ष्मीदास भाई ने जोड़े (समान) बैठकर कार्य करने की बात कबूल की।

ज. १५- तब श्रीजी की आज्ञानुसार सुन्दरसाथ ने लक्ष्मीदासजी को भी श्रीजी स्वरूप की तरह आसन देकर श्रीजी स्वरूप के जोड़े बिठाया।

स. १६-दो-तीन दिन में ही श्री लक्ष्मीदासजी स्वयं लज्जित क्यों हुए?

ज. १६- श्रीजी स्वरूप के श्री मुख से चर्चा-कथा हो रही थी। सभी चर्चा में बैठकर चर्चा-श्रवण कर रहे थे। श्रीजी के जोड़े बैठे लक्ष्मीदास →

स. १७-श्याम भट्ट और भीम भट्ट श्री लक्ष्मीदासजी को ताने मारकर उनकी हँसी करते हुए क्या कहते थे?

ज. १७- श्याम भट्ट और भीम भट्ट श्री लक्ष्मीदासजी को ताने मारकर उनकी →

स. १८-आठवें दिन श्री राजजी ने क्या किया? पुनः लक्ष्मीदासजी ने श्री कृष्णजी से क्या कहा?

ज. १८- जब आठवाँ दिन भी व्यतीत हो गया, तब श्री कृष्णजी ने पुनः →

स. १९-उक्त प्रकार श्री लक्ष्मीदासजी का विनय भरा आग्रह सुनकर श्री राजजी ने क्या किया?

स. २०-इस प्रकार श्री राजजी ने लक्ष्मीदास भाई पर हँसी करके श्री प्राणनाथजी को किस बात की सूचना दी?

ज. २०- उक्त प्रकार श्री राजजी ने लक्ष्मीदासजी पर हँसी करके श्री →

स. २१-श्रीजी ने यहाँ के सुन्दरसाथ से किस विषय में अथवा क्या विचार-विमर्श किया?

स. २२-अब श्रीजी साहेब दिल्ली-लाल दरवाजे की हवेली से कहाँ गये?

स. २३-शाहजहाँपुर बोड़िया में किसने, किनके ऊपर और क्या किया?

→ को देखकर श्रोता लोग परस्पर इशारों में बातें करते और हँसते थे। यह देखकर दो-तीन दिन में ही लक्ष्मीदास को ज्ञान हो गया, "मैंने श्रीजी स्वरूप के जोड़े बैठकर बहुत बड़ी गलती की है।" ऐसा जानकर लक्ष्मीदासजी लज्जित हो गए ।

→ हँसी करते हुए कहते थे, "आठवें दिन तक जब यह सकुमार को नहीं जगा पायेगा, तो इसकी क्या दशा होगी? काम कहाँ बैठकर करने को कहा है? जोड़े बैठकर करने को? श्रीजी के बराबर होने का इसे कितना शौक है?" इस प्रकार की बातें करते-करते दोनों हँसते थे, जिसे देखकर लक्ष्मीदासजी की हिम्मत चली गई।

→ लक्ष्मीदासजी को दर्शन दिया। श्री कृष्णजी के सामने आते ही लक्ष्मीदास ने उनसे कहा, "हे प्रभु! अपने वादे के अनुसार सकुमारबाई को जागृत करने की कृपा कीजिए।"

ज. १९- उक्त प्रकार श्री लक्ष्मीदासजी का विनय भरा आग्रह सुनकर श्री कृष्णजी मुसकुराते हुए तुरन्त अदृश्य हो गये।

→ प्राणनाथजी को इस बात की सूचना दी कि औरंगजेब की जागनी का समय कयामत की तरह निश्चित नहीं है। उसकी जागनी में समय लगेगा। देर है, पर अंधेर नहीं।

ज. २१- पुनः यहाँ इस समय श्री प्राणनाथजी ने साथियों से विचार-विमर्श किया, "अब एकान्त रहना जरूरी है।"

ज. २२- अब श्रीजी साहेब लाल दरवाजे की हवेली छोड़कर आधे साथियों को साथ लेकर शाहजहाँपुर बोड़िया पहुँचे ।

ज. २३- शाहजहाँपुर बोड़िया में अष्ट धातु, पाँच तत्त्व और तीन गुण से निर्मित मानव के पंचभौतिक शरीररूपी दीवार पर दिन-रात (आजूज-माजूज) रूपी काल ने आतंक फैला दिया।

स. २४-"मलकुल मौत झलूविया"-इस कथन का क्या तात्पर्य है, स्पष्टतः समझाओ? यह कहर किनके ऊपर टूटी?

स. २५-श्रीजी साहेबजी ने नागजी भाई को किस प्रकार बचाया?

स. २६-नागजी भाई को श्रीजी स्वरूप ने साक्षात् किसका अनुभव कराया और क्या दिया ?

स. २७-शाहजहाँपुर बोड़िया में कौन सिरदार थे? वे क्या देखकर श्रीजी साहेबजी के प्रति प्रभावित हुए?

स. २८-किसकी आंतरिक दृष्टि खुल नहीं सकी और क्यों वे ज्ञान-रस का तनिक-सा भी पान नहीं कर सके?

ज. २८- उक्त सिरदार क्षत्रिय की आंतरिक दृष्टि खुल नहीं सकी और वे →

स. २९-शाहजहाँपुर बोड़िया से किन-किन को श्रीजी ने खड़कारी के राजा के पास भेजा और किस उद्देश्य से?

ज. २९- शाहजहाँपुर बोड़िया से श्रीजी साहेबजी ने निर्मलदास के साथ →

स. ३०-भेजे गए लोगों ने खड़कारी के राजा के पास जाकर क्या अनुभव किया और कितने दिनों में वापस आकर श्रीजी स्वरूप को क्या खबर दी?

स. ३१-शाहजहाँपुर बोड़िया में श्रीजी के श्रीमुख से क्या अवतरित हुआ और उसमें क्या वर्णन था? अवतरित वाणी को क्या किया गया?

ज. २४- *"मलकुल मौत झलूविया"* -इस कथन का तात्पर्य है - मार देने वाली मौत। यह महामारी मरगीरूपी कहर ब्रह्ममुनियों में से श्री नागजी भाई के ऊपर टूटी।

ज. २५- नागजी भाई को यमराज ने अपने पंजों में दबोच लिया था। परंतु श्रीजी साहेबजी ने अपने आत्मबल द्वारा यमराज को पछाड़कर नागजी को बचा लिया।

ज. २६- श्रीजी साहेबजी ने नागजी भाई को साक्षात् परमधाम का अनुभव कराया और अपना आवेश देकर उन्हें काल के मुँह से निकाल लिया ।

ज. २७- शाहजहाँपुर बोड़िया में एक क्षत्रिय सिरदार थे। वे श्रीजी की वेश-भूषा एवम् उनके असाधारण ज्ञान को देखकर उनसे अत्यधिक प्रभावित हुए।

→ श्रीजी के ज्ञानरूपी रस का अपने श्रवणों द्वारा तनिक-सा भी पान नहीं कर सके क्योंकि वे खासल-खास जमात के अंकुरवाली आत्मा में से नहीं थे।

→ अन्य चार जनों को खड़कारी के राजा के पास किसी उद्देश्य को लेकर भेजा। उद्देश्य यह था कि यदि एक हिन्दू राजा जाग जाय, तो वह औरंगजेब से टक्कर ले सकेगा।

ज. ३०- निर्मलदास तथा अन्य साथियों ने खड़कारी के राजा के पास दस दिन रहकर उसे समझाया। अन्त में उन्हें यह अनुभव हुआ कि वह धर्म-कार्य के योग्य नहीं है। अतः यह समाचार लेकर वे सब वापस लौट आये ।

ज. ३१- शाहजहाँपुर बोड़िया में श्री प्राणनाथजी के श्री मुख से कुरान पक्ष का ज्ञानगर्भित एक प्रकरण अवतरित हुआ। उस प्रकरण में *"बिना एक हम"* शब्द द्वारा सांकेतिकरूप में आखरी मुहम्मद को →

→ अवतरित किया गया था। उसे मुसलिम समाज के अनुकूल अर्थात् *"हम"* शब्द बदलकर *"बिना एक मुहम्मद"* किया गया, →

स. ३२-भीम और लालदास-इन दोनों भाइयों को श्री प्राणनाथजी ने क्या आदेश दिया?

ज. ३२- श्रीजी स्वरूप ने उक्त अवतरित *"बिना एक मुहम्मद"* नामक →

स. ३३-श्रीजी साहेबजी का आदेश सिर चढ़ाकर उक्त दोनों भाई कहाँ से कहाँ चल पड़े और क्यों?

स. ३४-जब भीम भाई और लालदासजी श्रीजी के आदेश का पालन करने को निकले, तब पीछे से तुरन्त ही आवेश के स्वरूप-जबराईल ने क्या संदेशा भेजा?

स. ३५-तब तुरन्त उस काम को स्थगित करने की सूचना देने के लिए लालदास और भीम भाई के पीछे कौन आये?

स. ३६-कान्हजी भाई ने दिल्ली पहुँचकर उक्त दोनों भाइयों को क्या समाचार दिया?

ज. ३६- कान्हजी भाई ने दिल्ली पहुँचकर दोनों भाइयों से मिलकर कहा, →

स. ३७-अब पैगाम पहुँचाने दिल्ली गये दोनों भाई और उन्हें रोकने गये हुए भाई किस बात का इंतजार करते रहे?

❖ हरिद्वार - कुम्भ प्रसंग ❖

स. ३८-महामति श्री प्राणनाथजी हरिद्वार कुम्भ के मेले में कब

→ जिससे *"बिना एक मुहम्मद"* सुनकर मुसलमान आत्माएँ सचेत हो जायें।

→ प्रकरण को पैगाम के रूप में दिल्ली के सुलतान औरंगजेब तक पहुँचाने की आज्ञा लालदास और भीम भाई को दी और श्रीजी साहेब की आज्ञा सिर चढ़ाकर दोनों दिल्ली की ओर निकल पड़े।

ज. ३३- श्रीजी की आज्ञा शिरोधार्य करके उपरोक्त प्रकरण लेकर दोनों भाई शाहजहाँपुर बोड़िया से दिल्ली स्थित बादशाह औरंगजेब के पास संदेश देने के लिए निकल पड़े।

ज. ३४- एक दिन पहले अवतरित प्रकरण शिरोधार्य करके जब दोनों-भीम भाई और लालदासजी दिल्ली की ओर रवाना हुए, तब तत्पश्चात् दूसरे ही दिन आवेश स्वरूप जबराईल ने सूचना दी, "अरे, यह कार्य अभी स्थगित कर दो! अभी इस कार्य के लिए देरी है।"

ज. ३५- तब तुरन्त लालदासजी और भीम भाई को संदेश पहुँचाने का कार्य स्थगित करने की सूचना देने के लिए पीछे से श्रीजी साहेबजी ने कान्हजी भाई को भेजा। तीनों भाई एक ही दिन दिल्ली पहुँचे।

→ "जिस कार्य के लिए आज्ञा देकर श्रीजी साहेबजी ने आप दोनों को भेजा है, श्रीजी का आदेश है कि वह कार्य अभी स्थगित किया जाय। मुझे वहाँ आने दो, तत्पश्चात् उस कार्य के प्रति विचार करके आगे बढ़ेंगे।"

ज. ३७- अब पैगाम पहुँचाने दिल्ली गए दोनों भाई और उन्हें रोकने के लिए पीछे से गए भाई मिलकर "श्री राजजी कब दिल्ली आयेंगे"- इस बात का इंतजार करते रहे।

❖ हरिद्वार - कुम्भ प्रसंग ❖

ज. ३८- महामति श्री प्राणनाथजी शाहजहाँपुर बोड़िया (दिल्ली) में स्थित →

गये थे? धर्म स्थापित करने की तिथि, वर्ष और मास कौन-कौन से हैं, स्पष्ट करो?

स. ३९-कुम्भ का मेला कहाँ-कहाँ और कितने साल में लगता है?

ज. ३९- कुम्भ का मेला नासिक, प्रयाग, उज्जैन और हरिद्वार-इन चार →

स. ४०-कुम्भ के मेले में उपस्थित होनेवालों के लिए क्या कोई नियमादि भी बनाए गए थे?

ज. ४०- हाँ! कुम्भ के मेले में शामिल होनेवाले धर्म-सिद्धान्त के लोगों के →

स. ४१-मेले में उपस्थिति के लिए यदि नियमादि थे, तो क्या अथवा कैसे थे?

ज. ४१- हरिद्वार के कुम्भ मेले में उपस्थित होने के विषय में वि.सं.१७२९ में ही सुरसुरानन्दजी के शिष्य अभयानन्दजी और बालानन्दजी (जो बहुत ही प्रसिद्ध और प्रभावशाली महात्मा थे) ने सभी सम्प्रदायवालों को एकत्रित कर, द्वारा (द्वारपाल), अखाड़ा, झण्डा, निशान आदि की मर्यादा बाँधी थी। इस सम्मेलन में कुम्भ के →

स. ४२-दिल्ली स्थित शाहजहाँपुर बोड़िया में कितने मास रहकर श्रीजी पुनः कहाँ चले?

ज. ४२- राजधानी दिल्ली के पास स्थित शाहजहाँपुर बोड़िया में श्री →

स. ४३-श्रीजी साहेबजी ने अपनी जमात में से कितने साथ को कहाँ रखा और कितने तथा कैसे साथ को लेकर हरिद्वार चले?

→ दाउद पाण्डे की हवेली से वि. सं. १७३५ में हरिद्वार गये थे और वि. सं. १७३५ के वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि के दिन अपना धर्मझण्डा गाड़कर सबके बीच धर्म स्थापित किया था।

→ स्थानों में तीन-तीन साल में लगता है। यह मेला एक स्थान में बारह वर्ष बाद आता है। इस वक्त यह मेला हरिद्वार में होनेवाला था।

→ लिए मेले का आयोजन करनेवाले प्रबन्धकों द्वारा कुछ नियमादि बनाए गए थे और वे अनिवार्यरूप से पालन करने होते हैं। हरिद्वार में होनेवाले कुम्भ के मेले के कुछ समय पूर्व ही वृन्दावन में मेले के प्रबन्धकों की बैठक हुई थी।

→ मेले के सभी नियम निश्चित किए गये थे कि अमुक-अमुक सम्प्रदाय की सवारी, झण्डा, निशान आदि का अमुक क्रम होना चाहिए।

इस समय कुल ७२ नियम बनाए गए थे, जिन्हें सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया था। उनमें से एक नियम यह भी था कि हरिद्वार में जब-जब कुम्भ का मेला हुआ करेगा, उसके कुछ समय पहले चारों सम्प्रदाय और सभी अखाड़ेवालों का एक सम्मेलन वृन्दावन में हुआ करेगा तथा उसके द्वारा सवारी आदि के नियम पुनः निश्चित होते रहेंगे।

→ प्राणनाथजी जमात सहित एक मास रहकर तत्पश्चात् तुरन्त हरिद्वार की ओर चले। वहाँ श्रीजी ने विभिन्न मत-मतान्तरों के साथ ब्रह्म-प्राप्ति विषयक ज्ञान की छान-बीन की।

ज. ४३- श्रीजी साहेबजी ने अपनी जमात के बहुसंख्यक लोगों को दाउद पाण्डे की हवेली में रखा और चालीस-पचास ऐसे साथियों को लेकर हरिद्वार के मेले पर पहुँचे, जो समय पर धर्मयुद्ध करते हुए स्वयं की रक्षा भी कर सकें।

स. ४४-दिल्ली का धर्मयुद्ध छोड़कर श्रीजी स्वरूप अचानक हरिद्वार की ओर क्यों चल पड़े?

ज. ४४- शाहजहाँपुर बोड़िया में सकुमार सखी को जागृत करने की तैयारी करते-करते अचानक आकाशवाणी द्वारा श्रीजी स्वरूप को सूचना मिली, "बादशाह औरंगजेब को पैगाम पहुँचाने का कार्य अभी →

स. ४५-नया विजियाभिनन्द बुद्धजी का शाका बैठते समय शालिवाहन शाका, ई.स. और विक्रम सम्वत् कितना-कितना था?

ज. ४५- नया विजियाभिनन्द बुद्धजी का शाका बैठते समय शालिवाहन →

स. ४६-इस समय श्रीजी को हरिद्वार कुम्भ के मेले में किन-किन मत-मतान्तरों से शास्त्रार्थ करना पड़ा?

ज. ४६- इस समय विक्रमादित्य के राज्य से लेकर १७३५ वर्ष हो चुके। →

स. ४७-हरिद्वार कुम्भ के मेले में बुद्ध -ईश्वरों के ईश अर्थात् श्री बुद्धजी कितने समय रहे?

स. ४८-हरिद्वार कुम्भ के मेले में विभिन्न धर्म-सम्प्रदाय के आचार्यों में से मुख्य कौन-कौन थे?

स. ४९-चार वर्ण और चार आश्रम कौन-कौन से हैं? उन्होंने श्रीजी को कैसी दृष्टि से देखा और क्यों?

ज. ४९- चार वर्ण - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और क्षुद्र हैं तथा चार आश्रम - ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वाणप्रस्थाश्रम और संन्यास आश्रम →

→ पूरा नहीं होगा। अतः आप अभी हरिद्वार में बारह साल बाद होनेवाले कुम्भ के मेले की ओर चले जाइये।" उक्त सूचना मिलते ही श्रीजी स्वरूप हरिद्वार के मेले में पहुँच गये। वहाँ विभिन्न धार्मिक मत-मतान्तरों के साथ श्रीजी का शास्त्रार्थ हुआ और श्रीजी ने विजय प्राप्त कर अपने धर्म के विजियाभिनन्द शाका की स्थापना की।

→ का १६०० शाका था और वि. सं. १७३५ तथा ई. स. १६७८ सम्पूर्ण हुआ था। इस समय महाप्रभु ने विभिन्न सम्प्रदायों की भ्रमित विचारधाराओं को सीधी दिशा देकर सबको एक ही परमात्मा के सिद्धान्त पर प्रतिष्ठित कर दिया। तभी से विजियाभिनन्द बुद्धजी के शाका का शुभारम्भ हुआ।

→ अतः श्रीजी को कुम्भ के मेले में चार वर्ण मतवालों, चार आश्रम मतवालों, चार सम्प्रदाय मतवालों, षट्दर्शनियों तथा दस नाम संन्यासियों से शास्त्रार्थ करना पड़ा।

ज. ४७- हरिद्वार कुम्भ के मेले में बुद्ध-ईश्वरों के ईश अर्थात् श्री बुद्धजी विभिन्न धर्माचार्यों के साथ शास्त्रार्थ रूपी सत्संग करते हुये चार मास रहे ।

ज. ४८- हरिद्वार कुम्भ के मेले में उपस्थित विभिन्न धर्म-सम्प्रदाय के आचार्यों में से चारों सम्प्रदाय के आचार्य, षट्दर्शनी तथा दस नाम संन्यासी आदि मुख्य थे।

→ हैं। सभी ने महाप्रभु को आश्चर्य एवम् संदेह की दृष्टि से देखा क्योंकि जमात सहित आकर श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने किसी की आज्ञा लिए बिना ही "ब्रह्म चबूतरे" पर अपना धर्म-झण्डा गाड़ दिया । इस बात से सबको बड़ी ईर्ष्या हुई।

स. ५०-कुम्भ के मेले में उपस्थित उक्त लोगों ने श्रीजी साहेबजी से क्या कहा?

ज. ५०- कुम्भ के मेले में उपस्थित उक्त सभी लोगों ने एकमत होकर श्री प्राणनाथजी से कहा, "आपका धर्म-मार्ग नया ही दिखाई देता →

स. ५१-विभिन्न मत-मतान्तरों के आचार्यों द्वारा उपरोक्त प्रकार से पूछे जाने पर श्रीजी ने उनके प्रश्नों का उत्तर कैसे दिया?

स. ५२-श्रीजी साहेबजी ने उपस्थित प्रश्नकर्ताओं को अपना-अपना सैद्धान्तिक ज्ञान किस प्रकार समझाने का आग्रह किया?

स. ५३-समझाने पर भी कोई संदेह रह जाए, तो श्रीजी ने कैसे और क्या करने को कहा?

❖ चार सम्प्रदाय ❖

❖ रामानुज सम्प्रदाय ❖

स. ५४-हरिद्वार कुम्भ मेले में "ब्रह्म चबूतरे" पर खड़े होकर सर्वप्रथम किस सम्प्रदाय के विद्वानों ने अपनी मान्यता पेश की?

स. ५५-उक्त आचार्य-विद्वानों ने अपनी शास्त्र, वेद आदि विषयक मान्यताओं के विषय में श्रीजी से क्या कहा?

स. ५६-उन्होंने अपने इष्ट की साधना करते कैसी माला धारण करने को कहा?

→ है। हमने न इस धर्म को पहले कभी देखा है और न ही इस सम्बन्ध में कभी सुना ही है। आप अब तक छिपे हुए अपने इस मत का आंतरिक भेद एवम् आशय शास्त्र प्रमाणों के साथ स्पष्ट कीजिए कारण कि आपके ज्ञान का हममें से किसी के साथ ताल-मेल नहीं बैठता।"

ज. ५१- विभिन्न मत-मतान्तरों के आचार्यों द्वारा उक्त प्रकार से पूछे जाने पर सबके समक्ष श्रीजी ने कहा, "आपके कथनानुसार आपका धर्म प्राचीन-पुरातन है। अतः प्रथम आप ही अपने इष्ट और धर्म से हमें भलीभाँति परिचित कराने की कृपा कीजिए।"

ज. ५२- श्रीजी साहेबजी ने उपस्थित प्रश्नकर्ताओं से आग्रह किया, "क्रोध एवम् अहंकार को त्यागकर आप मुक्त मन से हमें अपने मत की वास्तविकता समझाने का प्रयास कीजिए। पुनः आप जो कहना चाहें, उसे वेदों द्वारा यथार्थ साक्षी देकर पुष्ट कीजिए, जिससे हमें पूर्ण विश्वास हो जाए।"

ज. ५३- श्रीजी ने परमतत्त्व के सम्बन्ध में अपना स्थिर मत बतलाने की अर्ज की और कदाच उनके समझाने पर भी कोई संदेह रह जाए, तो उसका भी समाधान कर देने की कृपा करने का आग्रह किया।

❖ चार सम्प्रदाय ❖

❖ रामानुज सम्प्रदाय ❖

ज. ५४- हरिद्वार कुम्भ मेले में "ब्रह्म चबूतरे" पर खड़े होकर सर्वप्रथम रामानुज सम्प्रदाय के आचार्यों ने विद्वत्तापूर्वक अपने धर्म-सिद्धान्त के अंतर्गत आनेवाली मान्यताओं को पेश किया।

ज. ५५- उक्त आचार्य-विद्वानों ने श्रीजी से कहा, "हम आपको अपनी शास्त्र, वेद एवम् मंत्र विषयक धारणा बताते हैं। उन्हें प्राप्त करने का हमारा गोपनीय मार्ग है। आप अपने दृष्टिकोण से उस पर विचार कीजिए।"

ज. ५६- उक्त आचार्य-विद्वानों के मतानुसार उनके धर्म के गुरुजी ने इष्ट की साधना करते इष्ट के नाम की माला को हृदय में धारण करने का आदेश दिया है।

स. ५७-उन्होंने अपने सिद्धान्त के गोत्र और शाखा का नाम क्या कहा?

स. ५८-पुनः आचार्यजी ने वर्ण और वेद-श्रवण के विषय में क्या कहा?

स. ५९-सतलोक की चार प्रकार की मुक्तियों में से रामानुजाचार्य ने कौन-सी मुक्ति प्राप्त करने की मान्यता अपने सिद्धान्त में बतायी ?

स. ६०-उनके मत में कौन-से मठ की मान्यता है और किसकी परिक्रमा की जाती है?

स. ६१-उन्होंने अपना बीज मंत्र कौन-सा कहा और वे अपने इष्ट-ब्रह्म को कैसे और किस रूप में मानते हैं?

स. ६२-वे किस स्थान को क्षेत्र के रूप में मानते हैं और सुख विलास का अनुभव कहाँ करते हैं?

स. ६३-वे किसे अपने इष्ट के रूप में मानते हैं अथवा उनके इष्ट का नाम क्या है और वे कैसी हैं?

स. ६४-रामानुज सम्प्रदाय की पद्धति किससे चली और यह पद्धति कैसी है?

स. ६५-रामानुज सम्प्रदाय में शाला के रूप में चौदह लोक से परे स्थित किस लोक-धाम को मान्यता दी है?

स. ६६-रामानुजाचार्य ने अपनी पद्धति में धाम, तीर्थ और देवी में किसे मान्यता दी है?

ज. ६६- रामानुजाचार्यजी के अनुसार उनकी पद्धति में धाम के रूप में →

ज. ५७- रामानुजाचार्य ने अपने सिद्धान्त का गोत्र परम पवित्र अच्युत बताया और प्रभु के अविनाशी नाम की शाखा बतायी ।

ज. ५८- आचार्यजी ने अपने धर्म का वर्ण शुक्ल तथा अन्य सभी वर्णों से न्यारा बताया। पुनः सामवेद के श्रवण को मुक्ति का द्वार बताया।

ज. ५९- सतलोक, जिसे मूर्धन्य (वैकुण्ठ) लोक भी कहते हैं, वहाँ प्राप्त होनेवाली चार प्रकार की मुक्तियों में से रामानुजाचार्य ने अपने सिद्धान्त में सामीप्य मुक्ति प्राप्त करने की मान्यता बतायी ।

ज. ६०- उनके मतानुसार वे वैकुण्ठ को ही अपना मठ मानते हैं और उनमें सुमेरु पर्वत की परिक्रमा की जाती है।

ज. ६१- रामानुजाचार्यजी ने अपना बीज मंत्र निराकार बताया और वे अपने इष्ट-ब्रह्म को आकाश के समान विशाल और सर्वत्र व्यापक मानते हैं।

ज. ६२- वे पद्मनाभी नामक स्थान को क्षेत्र के रूप में मानते हैं और मेलकोटा में सुख विलास का अनुभव करते हैं।

ज. ६३- वे शुभ्रातिशुभ्र अत्यन्त प्रकाशमान लक्ष्मीजी को अपनी इष्ट मानते हैं। वे उन्हें गोपनीय रूप में मानते हैं।

ज. ६४- रामानुज सम्प्रदाय की पद्धति लक्ष्मीजी से चली और यह पद्धति भ्रमरहित है।

ज. ६५- रामानुजाचार्य के सिद्धान्त में शाला के रूप में चौदह लोकों से परे वैकुण्ठ लोक में स्थित रंगशाला को मान्यता दी है।

→ रंगनाथ धाम की मान्यता है और वे कावेरी नदी को अपना तीर्थ मानते हैं। पुनः उनकी सभी इच्छाओं को पूर्ण करनेवाली देवी "कमला" हैं।

स. ६७-उक्त सम्प्रदायवालों ने किसे अपना देवता माना है और किसे सिद्धान्त प्रदान करनेवाले आद्याचार्य के रूप में स्वीकारा है?

स. ६८-अलख निरन्जन नाम किसका बताया है? उक्त प्रकार की पद्धति की मान्यता किसकी है?

स. ६९-रामानुज सम्प्रदाय की पद्धति सुनकर श्री प्राणनाथजी ने क्या जवाब दिया?

स. ७०-पुनः श्रीजी साहेबजी ने रामानुजाचार्य के आगे क्या अथवा किस प्रकार का प्रश्न रखा?

ज. ७०- पुनः श्रीजी साहेबजी ने रामानुजाचार्य के आगे यह प्रश्न रखा, →

स. ७१-"तब कहां जीव को वास"- उक्त वाक्य किसने, किससे पूछा?

ज. ७१- *"तब कहां जीव को वास"* अर्थात् जब वेद और शास्त्र कहते →

❖ नीमानुज सम्प्रदाय ❖

स. ७२-रामानुज सम्प्रदाय के बाद किस सम्प्रदाय के आचार्य अपनी मान्यता-पद्धति कहने उठे?

स. ७३-उक्त आचार्य ने अपनी पद्धति में किन-किन मान्यताओं का वर्णन किया?

स. ७४-नीमानुज सम्प्रदाय के आचार्य किससे कह रहे हैं कि वे तत्त्व की बातों को ग्रहण कर आत्म-शान्ति प्राप्त करें?

ज. ६७- उक्त सम्प्रदायवालों ने श्री नारायणजी को अपना देवता माना है और विष्णुजी को सम्प्रदाय के आद्याचार्य के रूप में स्वीकारा है।

ज. ६८- रामानुज सम्प्रदाय में अलख निरन्जन गायत्री देवी का नाम है। उक्त प्रकार की पद्धति की मान्यता रामानुज सम्प्रदाय की है।

ज. ६९- रामानुज सम्प्रदाय की पद्धति सुनकर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने यह जवाब दिया, "आपके सम्प्रदाय को ऐसा अगाध ज्ञान देनेवाले रामानुजाचार्य धन्य हैं।"

→ "आपने जितने भी स्थानों के नाम लिए, वे सब के सब चौदह लोक अथवा जगत् के अन्दर ही हैं। पुनः वेदों में तो संसार को नाशवन्त कहा गया है।"

→ हैं कि महाप्रलय में पिण्ड और ब्रह्माण्ड दोनों नाश हो जाते हैं, तो उस अविनाशी जीवात्मा का ठिकाना कहाँ है? - यह प्रश्न श्रीजी स्वरूप ने रामानुज सम्प्रदाय के आचार्यजी से पूछा।

❖ नीमानुज सम्प्रदाय ❖

ज. ७२- रामानुज सम्प्रदाय के विद्वान-आचार्य के पश्चात् "ब्रह्म चबूतरे" पर अपनी मान्यता-पद्धति पेश करने के लिए नीमानुजाचार्य उपस्थित हुये ।

ज. ७३- उक्त आचार्य ने "ब्रह्म चबूतरे" पर खड़े होकर अपनी पद्धति में अपने सम्प्रदाय के वेद, इष्ट, जाप, धाम आदि मान्यताओं का वर्णन किया।

ज. ७४- नीमानुज सम्प्रदाय के आचार्य श्रीजी साहेबजी सहित अन्य श्रोताओं से कह रहे हैं कि वे सब तत्त्व की बातों को ग्रहण कर आत्म-शान्ति प्राप्त करें।

स. ७५-उक्त सम्प्रदायवालों की शाला कहाँ है और वे धर्म-क्षेत्र किसे मानते हैं?

स. ७६-पुनः नीमानुजाचार्य के सिद्धान्त में सुख विलास का स्थान कौन-सा कहा है और वे अपना धाम कौन-सा बताते हैं?

स. ७७-नीमानुजाचार्य ने अपने समाज का तीर्थ और इष्ट कौन-कौन-सा कहा?

स. ७८-विद्वान आचार्यजी ने अपनी पद्धति में किस वेद की मान्यता बतायी और जाप किसका बताया?

ज. ७८- नीमानुज सम्प्रदाय-सिद्धान्त के आचार्य ने अपनी पद्धति में →

स. ७९-नीमानुजाचार्य के अनुसार किस देवी की उपासना करने से कैसी अथवा कौन-सी मुक्ति प्राप्त होती है?

स. ८०-वे किस मंत्र का जाप जपने को कहते हैं? पुनः उस मंत्र से उन्हें किस देव की प्राप्ति होती है?

स. ८१-वे अपनी पद्धति और सम्प्रदाय किसके माध्यम से चलाया हुआ बताते हैं?

स. ८२-नीमानुजाचार्य ने अपने सिद्धान्त और मत को अन्य मतों से कैसा बताया?

स. ८३-उनकी मान्यताओं के अनुसार उनके वंश, मंत्र, ऋषि और सम्प्रदाय के आद्याचार्य कौन-कौन हैं?

ज. ७५- नीमानुज सम्प्रदाय के आचार्य अपनी पद्धति में मथुरा को अपनी शाला मानते हैं और पवित्र स्थान गोकुल को वे अपना धर्म-क्षेत्र मानते हैं।

ज. ७६- पुनः नीमानुज सम्प्रदाय के सिद्धान्त में श्री वृन्दावन को सुख विलास का स्थान कहा है और द्वारिकापुरी को वे अपना अखण्ड धाम बताते हैं।

ज. ७७- नीमानुजाचार्य ने अपने समाज का तीर्थ गोमती नदी को बताया और रुक्मिणी देवी को सम्प्रदाय की इष्ट कहा।

→ यजुर्वेद की मान्यता बतायी और हरि नाम की माला का जाप बताया। उनकी मान्यतानुसार हरि नाम के जाप से मायावी छल एवम् दूषण, विकारादि नष्ट हो जाते हैं।

ज. ७९- नीमानुजाचार्य के अनुसार वृन्दा नाम की देवी की उपासना करने से श्री हरि के समान रूप प्राप्त करानेवाली अर्थात् सारूप्य मुक्ति प्राप्त होती है।

ज. ८०- वे ॐकार मंत्र का जाप जपने को कहते हैं। उस मंत्र के द्वारा उन्हें प्रणव ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

ज. ८१- वे अपनी पद्धति और सम्प्रदाय ब्रह्माजी के मानस पुत्रों- सनकादिकों द्वारा चलाया हुआ बताते हैं।

ज. ८२- नीमानुजाचार्य ने अपने सिद्धान्त और मत को अन्य मतों से अत्यन्त प्राचीन एवम् श्रेष्ठ सिद्धान्तों से युक्त बताया।

ज. ८३- उनकी मान्यताओं के अनुसार उनका गायत्री गोपाल नामक वंश है और गोपाल नाम का ही मंत्र है। पुनः उनके सम्प्रदाय के ऋषि दुर्वासा हैं और आद्याचार्य नारदजी हैं।

स. ८४-नीमानुजाचार्य के अनुसार उनके देवता कौन हैं? पुनः वे क्या करते हैं?

स. ८५-नीमानुज सम्प्रदाय की पद्धति को श्रवण करने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने क्या प्रश्न किया?

ज. ८५- नीमानुज सम्प्रदाय की पद्धति को श्रवण करने के पश्चात् श्रीजी →

स. ८६-श्री प्राणनाथजी ने उनकी कमी का क्या कारण बताया और उनकी मान्यता को कैसा कहा?

ज. ८६- श्रीजी स्वरूप ने नीमानुज सम्प्रदाय के आचार्य को उनकी कमी का कारण बताते हुए कहा, "आप सत्यासत्य में भेद नहीं मानते। →

❖ विष्णु श्याम सम्प्रदाय ❖

स. ८७-विष्णु श्याम सम्प्रदाय के आचार्य ने किसके आगे क्या-क्या वर्णन किया?

स. ८८-उक्त विद्वान-आचार्य ने धर्म का शालारूपी स्थान, तीर्थ और सुख विलास का स्थान कौन-कौन-सा बताया ?

स. ८९-उनके अनुसार उक्त प्रकार की मान्यताओं का पालन करने पर क्या नष्ट होता है?

स. ९०-उनकी पद्धति में मार्कण्डेय ऋषि के धाम को क्या मानते हैं और उनका धाम कौन-सा है?

स. ९१-उक्त सम्प्रदाय के इष्ट कौन हैं और किसकी सेवा करने को ही इस सम्प्रदाय में उपासना कहा है?

स. ९२-पुनः आचार्यजी ने अपनी मान्यताओं में वेद, माला, गोत्र और शाखा के विषय में क्या-क्या बताया?

ज. ८४- नीमानुजाचार्य के अनुसार विष्णु के वाहन गरुड़ उनके देवता हैं, जो सदैव सन्तों की रक्षा करते हैं।

→ साहेबजी ने उनसे यह प्रश्न किया, "क्या आपने कभी इस बात पर विचार नहीं किया कि आप कुछ बातें संसार के अन्दर की और कुछ बातें संसार से परे की करते हैं?"

→ परन्तु यह बात वेद सम्मत नहीं है। आपकी सैद्धान्तिक मान्यताएँ खिचड़ी सदृश हैं। आप सद्गुरु के ज्ञान के बिना और कर ही क्या सकते हैं? यही कारण है कि आप संसार के द्वन्द्व-संताप से छूट नहीं पाए।"

❖ विष्णु श्याम सम्प्रदाय ❖

ज. ८७- विष्णु श्याम सम्प्रदाय के आचार्य ने श्रीजी स्वरूप सहित वहाँ उपस्थित जमात के आगे अपने सम्प्रदाय के इष्ट, उपासना, वेद, जप आदि सभी का वर्णन किया।

ज. ८८- उक्त विद्वान-आचार्य ने अपने धर्म का शालारूपी स्थान विष्णु-कांची, तीर्थस्थान-श्वेत गंगाचक्र और इन्द्रिय दमन में ही सुख बिलास की मान्यता बतायी।

ज. ८९- उनके अनुसार उक्त प्रकार की मान्यताओं का पालन करने से सांसारिक विकार नष्ट हो जाते हैं और सब कुछ पवित्र हो जाता है।

ज. ९०- उनकी पद्धति में मार्कण्डेय ऋषि के धाम को तीर्थ मानते हैं और पुरुषोत्तमपुर उनका धाम है।

ज. ९१- उक्त सम्प्रदायवालों की इष्ट लक्ष्मीजी हैं और इस सम्प्रदाय में जगन्नाथजी की सेवा करने को ही उपासना कहा है।

ज. ९२- पुनः आचार्यजी ने वेदों में अथर्ववेद की मान्यता बतायी और इष्ट के नाम की माला को ही सार तत्त्व कहा। उन्होंने अपना गोत्र अच्युत बताया और त्रिपुरारी शंकर को शाखा बताया।

स. ९३-उनकी मान्यतानुसार धर्म का वर्ण कौन-सा है? वे किसका जाप जपते हैं तथा उनके सम्प्रदाय के ऋषि, देवता तथा आचार्य कौन-कौन हैं?

स. ९४-उनके ब्रह्म कौन हैं? उनका सम्प्रदाय कहाँ से चला और वे कहाँ मुक्ति प्राप्त होने को बताते हैं?

स. ९५-उक्त प्रकार की सम्प्रदाय-पद्धति सुनकर श्री प्राणनाथजी ने विष्णु श्याम संप्रदाय के आचार्य को क्या जवाब दिया?

ज. ९५- उपरोक्त प्रकार की मान्यतायुक्त पद्धति सुनने के पश्चात् महाप्रभु →

❖ माधवी सम्प्रदाय ❖

स. ९६-विष्णु श्याम सम्प्रदाय के आचार्य के पश्चात् किस सम्प्रदाय के आचार्य अपनी मान्यता रखने के लिए खड़े हुये?

स. ९७-माधवी सम्प्रदाय के आचार्य ने अपने सम्प्रदाय की क्या-क्या मान्यताएँ रखीं ?

स. ९८-सब कोई जिस प्रकार अपना धर्म वेदानुकूल कहते आए, उसी तरह इन्होंने भी क्या कहा?

स. ९९-माधवी सम्प्रदाय की मान्यताओं में शाला और क्षेत्र कौन-कौन से हैं?

स. १००-उक्त सम्प्रदाय-सिद्धान्त के आचार्य सुख विलास किसमें मानते हैं और वे किस पुरी को अपना धाम मानते हैं?

ज. ९३- उनकी मान्यतानुसार धर्म का वर्ण शुक्ल है। वे तुलसी मंत्र का जाप करते हैं। उनके सम्प्रदाय में जलबिम्ब नामक ऋषि की मान्यता है। उनके देवता वरुण हैं तथा वामदेव उनके आचार्य हैं।

ज. ९४- उनके ब्रह्म गायत्री देवी हैं। उनका सम्प्रदाय महादेवजी से चला है। ब्रह्म में लीन होने अर्थात् सायुज्य मुक्ति को ही वे अपना अन्त लक्ष्य बताते हैं।

→ श्री प्राणनाथजी ने विष्णु श्याम संप्रदाय के आचार्य से कहा, "आपने जो कुछ भी कहा, वह सब संसार के अन्तर्गत ही है तथा वेद, शास्त्र और पुराणादि ग्रंथों में संसार को नाशवन्त कहा गया है। यसर्थ आपका सैद्धान्तिक मत वेद के विरुद्ध है। आपके विशिष्ट सम्प्रदाय का मूल महाप्रलय के दौरान कहाँ रहता है?"

❖ माधवी सम्प्रदाय ❖

ज. ९६- विष्णु श्याम सम्प्रदाय के आचार्य के पश्चात् "ब्रह्म चबूतरे" पर माधवी सम्प्रदाय के आचार्य उपस्थित होकर अपने सम्प्रदाय के गोत्र, क्षेत्र, इष्ट, धाम और वेद आदि की मान्यता का वर्णन करने लगे।

ज. ९७- माधवी सम्प्रदाय के आचार्य ने अपनी मान्यताएँ रखते हुए अपने इष्ट, मंत्र, जाप, तीर्थ, शाला आदि का वर्णन कर बताया।

ज. ९८- अन्य सम्प्रदायों की तरह ही माधवी सम्प्रदाय के आचार्य ने भी अपने सम्प्रदाय की मान्यताओं को वेदानुकूल बताया।

ज. ९९- माधवी सम्प्रदाय की मान्यताओं में अवन्तिकापुरी-उज्जैन को शाला और नीमखार नामक स्थान को अपना क्षेत्र कहा है।

ज. १००-उक्त सम्प्रदाय-सिद्धान्त के आचार्य के अनुसार उनकी मान्यता में अंगपात अर्थात् शरीर को नष्ट करने में ही सुख विलास माना जाता है और बद्रीनाथपुरी को वे अपना धाम मानते हैं।

स. १०१-इस सम्प्रदाय के भक्त किस स्थान को तीर्थ मानते हैं और वे किसकी उपासना करते हैं?

स. १०२-उक्त पद्धति के आचार्य किन्हें अपना इष्ट मानते हैं और वे वेदों में किस वेद को मान्यता देते हैं?

स. १०३-इस सम्प्रदाय के भक्त लोग किस इष्ट के नाम का जाप करते हैं और किसका गायन करते हैं?

स. १०४-इस सम्प्रदाय में किस स्वरूप के मंत्र की मान्यता है? पुनः इनके आचार्य का नाम क्या है?

स. १०५-इस सिद्धान्त में हंस क्या है और इनके देवता कौन हैं? पुनः यह सम्प्रदाय किससे चला?

स. १०६-इस सिद्धान्त की पद्धति में मुक्ति क्या है और किस लोक की है?

स. १०७-उक्त सम्प्रदायवालों की सैद्धान्तिक मान्यता सुनकर श्री प्राणनाथजी ने उन्हें क्या जवाब दिया? पुनः उनके आगे क्या प्रश्न रख दिया?

ज. १०७- उक्त सम्प्रदायवालों की सैद्धान्तिक मान्यता सुनकर श्री प्राणनाथजी ने कहा, "यह सब तो आपने संसार के अन्दर की →

❖ संन्यास मत ❖

(प्रथम मन्या)

स. १- संन्यास मत में कितने प्रकार के संन्यासी होते हैं? उनमें कितने प्रकार की मन्या और कितने मठों की मान्यता है?

ज. १०१- इस सम्प्रदाय के भक्त अलखा नदी को अपना तीर्थ मानते हैं और ब्रह्मा देवता की उपासना करते हैं।

ज. १०२- उक्त पद्धति के आचार्य देवी सावित्री को अपना इष्ट मानते हैं और वे वेदों में आदिवेद ऋग्वेद को मान्यता देते हैं।

ज. १०३- इस सम्प्रदाय के भक्त लोग हरिनाम की माला का जाप हृदय से करते हैं और वे विष्णु नामक गायत्री स्तोत्र का गायन करते हैं।

ज. १०४- इस सम्प्रदाय में हंस स्वरूप विष्णु मंत्र की मान्यता है। पुनः ब्रह्माजी इस सम्प्रदाय के सत्य आचार्य हैं।

ज. १०५- इस सिद्धान्त में हंस इनके ऋषि और देवता हैं। पुनः यह सम्प्रदाय ब्रह्माजी से प्रारम्भ हुआ है।

ज. १०६- इस सम्प्रदाय की पद्धति में श्री हरि के धाम में पहुँचना ही मुक्ति है। विष्णु लोक-वैकुण्ठ में सालोक्य मुक्ति प्राप्त करना ही इस सम्प्रदाय का अन्तिम लक्ष्य-ध्येय है।

→ बातों का ही वर्णन किया है। वेदों ने इस संसार को नाशवन्त बताया है । तो आपने जिसे मुक्तिस्थान माना है, वह स्थान कहाँ है?" पुनः उनके आगे यह प्रश्न रख दिया, "महाप्रलय में जब सारी सृष्टि का नाश हो जाता है, तब आपकी अजर-अमर आत्मा का निवास स्थान कहाँ है?"

- (प्रकरण ३५, सवाल-जवाब नं. १०७, कुल सं.१४६६+१०७ =१५७३)।

❖ संन्यास मत ❖

(प्रथम मन्या)

ज. १- संन्यास मत में दस प्रकार के संन्यासी होते हैं, जो दस नाम संन्यासी के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनमें सात मन्या और चार मठों की मान्यता है।

स. २- संन्यास मतवालों ने ज्ञान की किस अवस्था में पहुँचे हुए किनके मत को समझने को कहा?

स. ३- प्रथम मन्या कहाँ की है? इनके मठ का नाम क्या कहा है?

स. ४- इसका क्षेत्र कौन-सा है और वह कैसा है? वहाँ कौन-से देवता शोभायमान हैं?

स. ५- इस मन्या की देवी किस नाम की हैं? पुनः वे तीर्थस्थान किस स्थान को मानते हैं?

स. ६- इस मन्या के आचार्य का नाम क्या है? वे क्या करते हैं?

स. ७- इस सम्प्रदाय का नाम क्या है? इस मन्या के कितने और कौन-कौन से संन्यासी कहलाते हैं?

स. ८- प्रथम मन्या के देवता कौन-कौन हैं? यह पश्चिम की मन्या कैसी है?

(द्वितीय मन्या)

स. ९- दूसरी मन्या कौन-सी दिशा की मानी जाती है? इसमें कौन-कौनसे संन्यास आते हैं?

स. १०-इस मन्या के मठ का नाम क्या है? पुनः इस मठ के सम्प्रदाय को किस नाम से जानते हैं?

स. ११-द्वितीय मन्या का क्षेत्र कौन-सा है? पुनः इनके देवता का शुभ नाम क्या है?

ज. २- संन्यास मतवालों ने ज्ञान की परम अवस्था में पहुँचे हुए परमहंसों के मत को जानने-समझने को कहा।

ज. ३- प्रथम मन्या पश्चिम दिशा की है। इनके मठ का नाम शारदा है।

ज. ४- इस मठ-मन्यावालों का क्षेत्र पुनीत द्वारिका है और वहाँ सुदेचर नामक देवता शोभायमान हैं।

ज. ५- इस मन्या की देवी भद्रकाली दुर्गा हैं और गंगा तथा गोमती नदियाँ इस मन्या की तीर्थ मानी गयी हैं।

ज. ६- इस मन्या के आचार्य अनुभूति सरूपाचार्य हैं। वे अपने सभी भक्तों की सभी अभिलाषाएँ पूर्ण करते हैं।

ज. ७- इस मठ-मन्यावालों के सम्प्रदाय का नाम कीटवार है। इस मन्या के तीर्थ और आश्रम नाम के दो संन्यासी कहलाते हैं।

ज. ८- प्रथम मन्या के देवता ब्रह्मा और विष्णु हैं। यह पश्चिम की मन्या सुख शान्ति प्राप्त करानेवाली है।

(द्वितीय मन्या)

ज. ९- दूसरी मन्या पूर्व दिशा की मानी जाती है। इसमें बन और अरण्य नामक दो प्रकार के संन्यास आते हैं।

ज. १०- इस मन्या के मठ का नाम गोवर्धन है तथा इस मठ के सम्प्रदाय को भोगवार नाम से जानते हैं।

ज. ११- उत्तम पुरुष-ब्रह्म के चरण ही द्वितीय मन्या का क्षेत्र है। पुनः इनके देवता का शुभ नाम जगन्नाथ है।

स. १२-इस मन्या के मान्य आचार्य कौन-कौन हैं? पुनः ये कौन-सी देवी को मानते हैं?

स. १३-दूसरी मन्या के तीर्थ कौन-कौन से हैं? द्वितीय मन्या की उक्त मान्यताएँ किसने सुनी?

(तृतीय मन्या)

स. १४-तृतीय मन्या की विधि वर्णन करते हुए इस मन्या के संन्यासियों ने अपने मठ का नाम क्या बताया?

स. १५-पुनः इस मन्या के संन्यासियों ने अपने सम्प्रदाय का नाम क्या बताया और किसके चरणों का आश्रय सिद्धि देनेवाला बताया ?

स. १६-इस मन्यावालों ने किस देवता को मान्यता दी?

स. १७-उक्त मन्या द्वारा कितने प्रकार के संन्यासी निकलते हैं और कौन-कौन से?

स. १८-इस मन्यावालों के आचार्य कौन हैं और ये किसे अपनी देवी मानते हैं?

स. १९-पुनः इस मन्यावालों ने मुक्ति का क्षेत्र और तीर्थ किसे माना?

स. २०-इस मन्या को माननेवालों ने अपनी मान्यताओं को किस प्रकार पेश किया अथवा किस प्रकार अपनी मान्यताओं का परिचय दिया?

ज. १२- इस मन्या के मान्य आचार्य बलभद्र और पद्मा हैं। ये सदैव सहायक रहनेवाली बिंबलाई नामक देवी को मानते हैं।

ज. १३- दूसरी मन्या के तीर्थ रोहिणी और महोदधि नामक हैं। द्वितीय मन्या के इन आचार्यों का मत श्रीजी ने ध्यानपूर्वक सुना ।

(तृतीय मन्या)

ज. १४- तृतीय मन्या की विधि का वर्णन करते हुए इस मन्या के संन्यासियों ने अपने मठ का नाम जोयसी कहा।

ज. १५- पुनः इस मन्या के संन्यासियों ने अपने सम्प्रदाय का नाम आनन्दवार बताया और बद्रीनाथजी के चरणों का आश्रय सिद्धि देनेवाला बताया ।

ज. १६- इस मन्यावालों ने नारायण को अपने देवता के रूप में मान्यता प्रदान की।

ज. १७- उक्त मन्या द्वारा तीन प्रकार के संन्यासी निकलते हैं, जिनके नाम हैं - गिरि, पर्वत और सागर ।

ज. १८- इस मन्यावालों के आचार्य श्री नराटोटकाचार्यजी हैं और ये पुण्यागिरि नामक देवी को मानते हैं।

ज. १९- उपरोक्त मन्यावालों ने मुक्ति का क्षेत्र और तीर्थ अलखा नदी को माना ।

ज. २०- उक्त मन्या के आचार्यों ने अपनी मान्यताओं को सप्रमाण तथा सम्पूर्ण परिचय के साथ अर्थात् वेद-शास्त्रों की साक्षी के साथ पेश किया ।

(चतुर्थ मन्या)

स. २१-चौथी मन्या किस दिशा की है और इस मठ का नाम क्या है?

स. २२-इस मन्या के माध्यम से कितने प्रकार के संन्यासी निकलते हैं और किस-किस नाम के?

स. २३-इस मन्या के सम्प्रदाय का नाम क्या है और ये अपना क्षेत्र किस स्थान को मानते हैं?

स. २४-इस मन्यावालों ने अपना देवता किसे माना है और देवी किसे माना है?

स. २५-इस मन्या के आचार्य और ऋषि का नाम क्या है? पुनः ये अपना तीर्थ किस स्थान को मानते हैं?

स. २६-उक्त सभी मन्याओं के साथ इस चौथी मन्या की मान्यताएँ किसने सुनी?

(पंचम मन्या)

स. २७-पाँचवीं मन्या का नाम क्या है? उसका मठ कौन-सा है और कहाँ है?

स. २८-पाँचवीं मन्यावाले सम्प्रदाय का ठिकाना कहाँ है?

स. २९-इस मन्यावालों को ज्ञान प्रदान करनेवाले कौन हैं, जिनके चरणों में ये अपना क्षेत्र मानते हैं?

स. ३०-पाँचवीं मन्यावालों के सत्य देवता कौन हैं? पुनः ये अपना आचार्य किसे मानते हैं?

(चतुर्थ मन्या)

ज. २१- चौथी मन्या दक्षिण दिशा की है और इस मठ का नाम श्रृंगेरी मठ है।

ज. २२- इस मन्या के माध्यम से तीन प्रकार के संन्यासी निकलते हैं। जैसे - पुरी, भारती और सरस्वती।

ज. २३- इस मन्या के सम्प्रदाय का नाम भूर्वार है और ये रामेश्वर के चरणों में अपना क्षेत्र मानते हैं।

ज. २४- चौथी मन्याबाले संन्यासियों की मान्यताओं के अनुसार उनके देवता शंकर और बराह हैं तथा ये कामिक्षा नामक देवी को अपनी देवी के रूप में मान्यता देते हैं।

ज. २५- इस मन्या के आचार्य पृथ्वीधरा हैं और ऋषि का नाम श्रृंगी ऋषि है। ये टोकभद्र नामक श्रेष्ठ स्थान को अपना तीर्थ मानते हैं।

ज. २६- उक्त सभी मन्याओं के साथ इस चौथी मन्या की मान्यताएँ, सिद्धान्त और बिचार श्रीजी साहेबजी ने सुने।

(पंचम मन्या)

ज. २७- पाँचवीं मन्या का नाम ऊर्ध है। उसका मठ सुमेरु है, जो जम्बू द्वीप के मध्य में है।

ज. २८- पाँचबीं मन्याबाले सम्प्रदाय का ठिकाना काशी में है।

ज. २९- इस मन्याबालों को ज्ञान प्रदान करनेबाले शंकर भगबान हैं। ये शंकर भगबान के चरणों-कैलास स्थान को ही अपना क्षेत्र मानते हैं।

ज. ३०- निरंजन नामक देबता ही पाँचबीं मन्याबालों के सत्य देबता हैं। पुनः ये ईश्बर को ही अपने आचार्य के रूप में मान्यता देते हैं।

स. ३१-इस मन्या के सिद्धान्तानुसार वे किसे अपनी देवी मानते हैं?

स. ३२-इनके सिद्धान्तानुसार इनके मन्यावालों की आत्मा का तीर्थस्थान कौन-सा है?

स. ३३-पाँचवीं मन्या की मान्यताओं को सुनकर श्रीजी ने मन में क्या विचार किया ?

(षष्ठम मन्या)

स. ३४-छठवीं मन्या की विधि-मान्यता कैसी है? वे अपनी विधि का कैसा वर्णन करते हैं?

स. ३५-षष्ठम मन्या के साधु-सन्त किसकी आराधना करते हैं? वे सभी किसे अपना आराध्य मानते हैं?

स. ३६-छठवीं मन्यावालों की मन्या क्या है और वे किसे अपना मठ मानते हैं?

स. ३७-इनके सम्प्रदाय का नाम क्या है और इन्हें किसके द्वारा कहाँ पहुँचने में भूल नहीं होती?

स. ३८-षष्ठम मन्या के संन्यासी अपना क्षेत्र किस स्थान को मानते हैं और देवता किसे मानते हैं?

स. ३९-इस मन्या में कहाँ धारण करने योग्य किस देवी को मान्यता दी जाती है?

स. ४०-उपरोक्त छठवीं मन्यावाले कैसे चैतन्य को आचार्य और तीर्थ मानते हैं?

ज. ३१- इस मन्या के सिद्धान्तानुसार वे माया को ही अपनी देवी मानते हैं।

ज. ३२- इनके सिद्धान्तानुसार इनके मन्यावालों की आत्मा का तीर्थस्थान मानसरोवर है।

ज. ३३- पाँचवीं मन्या के सिद्धान्त की मान्यताओं को सुनकर श्रीजी ने मन में यह विचार किया कि कोई भी संन्यास मतवाले संसार से परे नहीं पहुँचे हैं।

(षष्ठम मन्या)

ज. ३४- छठवीं मन्या की विधि-मान्यता का वर्णन न हो सके, ऐसी है। वे अपनी विधि-मान्यता पहुँच से अत्यंत परे अर्थात् अपार-अगम्य बताते हैं।

ज. ३५- षष्ठम मन्या के बहुत से साधु-सन्त दस नाम के इष्टों की आराधना करते हैं। वे सभी इस मन्या को अपना आराध्य मानते हैं।

ज. ३६- छठवीं मन्यावालों की मन्या आत्मा है। वे मूल स्त्रोत परात्मा को ही अपना मठ मानते हैं।

ज. ३७- इनके सम्प्रदाय का नाम सत्सन्तुष्ट है और इन्हें इस योगपद से अपने लक्ष्य में पहुँचने में कभी भूल नहीं होती।

ज. ३८- षष्ठम मन्या के संन्यासी नाभि को अपना क्षेत्र मानते हैं तथा उन्होंने देवता की जगह में परमहंस देवता को आसीन किया है।

ज. ३९- इस मन्या में हृदय में धारण करने योग्य मनसा नामक देवी को मान्यता दी जाती है।

ज. ४०- उपरोक्त छठवीं मन्यावाले सर्वत्र व्यापक चैतन्य (चेतन स्वरूप) को आचार्य और त्रिकुटी को ही तीर्थ जानते और मानते हैं।

स. ४१-छठवीं मन्यावाले संन्यासियों का सर्वमान्य श्रेष्ठ क्षेत्र कौन-सा है?

स. ४२-छठवीं मन्या की मान्यताओं को सुनकर स्वामीजी ने क्या विचार किया ?

स. ४३-ब्रह्ममुनियों के सिद्धान्त को छठवीं मन्या के लोग कहाँ घटाते हैं?

(सप्तम मन्या)

स. ४४-सातवीं मन्या की विधि को क्या करने को कहा है? यह मन्या कहाँ-किस द्वीप में है?

स. ४५-इनकी मान्यता और सिद्धान्त में किसके पुत्र शिखारूप हैं और सूत्र क्या है?

स. ४६-इस मन्या में किसको सूत्र कहा है? पुनः इस मन्या में कितने प्रकार के मठों का वर्णन है?

स. ४७-ये मन्यावाले कौन-कौनसी तथा किन-किन दिशाओं की मन्या को श्रेष्ठ कहकर वर्णन करते हैं?

स. ४८-कितने मठों के कितने ब्रह्मचारी हैं और उनके नाम क्या-क्या हैं?

स. ४९-पुनः उक्त मन्यावालों के कितने आचार्य हैं? उन आचार्यों के नाम क्या-क्या हैं और उनके मठ कितने हैं?

स. ५०-सभी संन्यासी विचार-विवेक कर किसके आगे बोले?

ज. ४१- छठवीं मन्यावाले संन्यासियों का सर्वमान्य श्रेष्ठ क्षेत्र मानसरोवर है।

ज. ४२- छठवीं मन्या की मान्यताओं को सुनकर स्वामीजी ने यह विचार किया, "इनमें ब्रह्ममुनियों के योग्य सिद्धान्त भी है।"

ज. ४३- ब्रह्ममुनियों के सिद्धान्त को छठवीं मन्या के लोग पिण्ड और ब्रह्माण्ड में ही घटाते हैं।

(सप्तम मन्या)

ज. ४४- अब सातवीं मन्या की विधि तथा मान्यताओं का वर्णन श्रवण करने को कहा है। यह मन्या जम्बू द्वीप के अन्तर्गत भारतवर्ष में ही विद्यमान है।

ज. ४५- इनकी मान्यता और सिद्धान्त में ब्रह्माजी के पुत्र सनकादिक शिखा रूप हैं और सांख्यायन सूत्ररूप हैं।

ज. ४६- इस सप्तम मन्या में उपनयन-जनेऊ को सूत्र कहा है। पुनः इस मन्या में चार प्रकार के मठों का वर्णन है।

ज. ४७- ये मन्यावाले पश्चिम की पहली मन्या, पूर्व की दूसरी मन्या तथा उत्तर-दक्षिण की दो मन्याएँ श्रेष्ठ हैं, ऐसा वर्णन करते हैं।

ज. ४८- चारों मठों के चार ब्रह्मचारी हैं। उनके नाम हैं - आनन्द, स्वरूप, चेतन और प्रकाश।

ज. ४९- पुनः उक्त मन्यावालों के चार आचार्य हैं। जैसे-हंस, परमहंस, बोध (बह्वृदक) और कुटीचर। इस प्रकार सात मन्या के सात मठ हैं।

ज. ५०- सभी संन्यासी एकमत होकर विचार-विवेकवत् श्री प्राणनाथजी के आगे बोले।

स. ५१-सभी संन्यासियों ने श्रीजी से कैसे और क्या करने को कहा?

ज. ५१- सभी संन्यासियों ने रीतपूर्वक श्रीजी से कहा, "हमने सातों मठों →

❖ सातों मन्या के मंत्र ❖

स. ५२-सात मन्या के मंत्र कितने हैं? पहली मन्या कहाँ शोभायमान है?

स. ५३-इस मन्या में से संन्यासियों को कितने और किन-किन नामों के दीक्षा-मंत्रादि दिये जाते हैं?

स. ५४-पश्चिम दिशा की मन्या का मन्त्र कैसा है? इस मन्या के कितने नाम हैं और कौन-कौनसे?

स. ५५-पश्चिम दिशा की मन्या के मंत्र का वर्णन अर्थ सहित करो।

ज. ५५- पश्चिम दिशा की मन्या का मंत्र - →

स. ५६-पूर्व दिशा की मन्या के कितने और कौन-कौन-से नाम हैं? इस दिशा के मंत्र को किससे श्रवण करना है?

स. ५७-पूर्व दिशा की मन्या के मंत्र का वर्णन अर्थ सहित करो।

ज. ५७- पूर्व दिशा की मन्या का मंत्र -
ॐ सोहं मठः प्रतीच्यात्सर्वदिङ्मुखे नमस्ते करोम्यहम्। →

स. ५८-उत्तर दिशा की मन्या के कितने और कौन-कौन से नाम हैं? इस मन्या के मंत्र को किससे श्रवण करना है?

→ के संन्यासियों का वर्णन किया। पुनः हमने उपदेश, बोध, ज्ञान, दीक्षा आदि अपनी सब विधि कह दी। अब आप इसका विचार-विवेकवत् तुलनात्मक निर्णय कर लीजिए।"

❖ सातों मन्या के मंत्र ❖

ज. ५२- सात मन्या के मंत्र भी सात हैं। पहली मन्या पश्चिम में शोभायमान है।

ज. ५३- इस मन्या में से संन्यासियों को तीर्थ और आश्रम-इन दो नामों के दीक्षा-मंत्रादि दिए जाते हैं।

ज. ५४- पश्चिम दिशा की मन्या का मंत्र चित्त में धारण करने योग्य है। इसके दो नाम हैं। जैसे-तीर्थ और आश्रम।

→ **ॐ ही नीलहंसः सोहं परम हंसः ॐ सिद्धान्त भास्करोहं। सिद्धेश्वरदेवः सोहं ब्रह्मेति मंत्रः।**

अर्थः -ॐ नील हंस तथा परमहंस मैं ही हूँ। इस मंत्र के देवता सिद्धेश्वर हैं और "सोहं" ब्रह्ममंत्र है।

ज. ५६- पूर्व दिशा की मन्या के दो नाम हैं। जैसे-वन और अरण्य। इस दिशा के मंत्र को उत्तम पवित्र मन से श्रवण करना है।

→ **जगन्नाथो देवता सोऽहं ब्रह्मेति मंत्रः।।**

अर्थः- ॐ सोऽहम् - मैं ही मठरूप हूँ। पश्चिम से सभी दिशाओं में मैं नमस्कार करता हूँ। इस मंत्र के देवता जगन्नाथ हैं और सोऽहम् ब्रह्म मंत्र है।

ज. ५८- उत्तर दिशा की मन्या के तीन नाम हैं। जैसे-गिरि, पर्वत और सागर। इस मन्या के मंत्र को उत्तम पवित्र मन से श्रवण करना है।

स. ५९-उत्तर दिशा की मन्या के मंत्र का वर्णन अर्थ सहित करो।

ज. ५९- उत्तर दिशा की मन्या का मंत्र -

ॐ सोऽहं हंसः तत्त्वमसि अहं ब्रह्मास्मि। नारायणो देवता सोऽहं ब्रह्मेति मंत्रः ।। →

स. ६०-चौथी अर्थात् दक्षिण की मन्या के कितने और कौन-कौनसे नाम हैं? इस मन्या के लोग कैसे मंत्र का उच्चारण करते हैं? पुनः इस मन्या के मंत्र को कैसे सुनना है?

स. ६१-दक्षिण दिशा की मन्या के मंत्र का वर्णन अर्थ सहित करो?

ज. ६१- दक्षिण दिशा की मन्या का मंत्र -

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्म ॐ क्लीं स्मीति सोऽहं। →

स. ६२-पाँचवीं अर्थात् ऊर्ध्वा मन्या का मठ कौन-सा है और कैसा है? इस सम्प्रदाय के ज्ञान का स्थान कौन-सा है?

स. ६३-पाँचवीं मन्या के मंत्र का वर्णन अर्थ सहित करो।

ज. ६३- पाँचवीं मन्या का मंत्र -

ॐ नीलहंसः परमहंसः सोऽहं तत्त्वमसि निरञ्जनो देवता सोऽहं ब्रह्मेति मंत्रः। →

स. ६४-छठवीं मन्या क्या है? इस मठ को किस नाम से जाना जाता है? ये किसे अपना देवता मानते हैं?

स. ६५-छठवीं मन्या के मंत्र का वर्णन अर्थ सहित करो।

→ अर्थः- ॐ सोऽहं हंस - मैं ही वह हंस-ब्रह्म हूँ। वह ब्रह्म तू है। मैं ब्रह्म हूँ। इस मंत्र के देवता नारायण हैं और "सोऽहं ब्रह्म" यह मंत्र है।

ज. ६०- चौथी अर्थात् दक्षिण की मन्या के तीन नाम हैं। जैसे - पुरी, भारती और सरस्वती। इस मन्या के लोग सत्य मंत्र का उच्चारण करते हैं। पुनः इस मन्या के मंत्र को हृदय से श्रवण करना है।

→ आत्मा तत्त्वमसि अहं ब्रह्मास्मि सोऽहं हंसः। आदिवाराहो देवता सोऽहं ब्रह्मेति मंत्रः ।।

अर्थः- ॐ भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक ब्रह्म ॐ क्लीं अस्मि- यह सब मैं हूँ। मैं वही हूँ, आत्मा तुम वही हो। मैं ब्रह्म हूँ। मैं हंस हूँ। इस मंत्र के देवता बराह हैं और "सोऽहं ब्रह्म" यह मंत्र है।

ज. ६२- पाँचवीं अर्थात् ऊर्ध्वा मन्या का मठ श्रेष्ठ स्थान सुमेरु है। इस सम्प्रदाय के ज्ञान का स्थान काशी है।

→ अर्थः- "ॐ नील हंसः" ॐ नीलहंस तथा परमहंस मैं हूँ। वह तू है। इस मंत्र के देवता निरंजन हैं और "सोऽहं ब्रह्म" यह इस मन्या का मंत्र है।

ज. ६४- छठवीं मन्या आत्मा है। इस मठ को पर-आत्म नाम से जाना जाता है। ये परमहंस को अपना देवता मानते हैं ।

ज. ६५- छठवीं मन्या का मंत्र -

→

→ ॐ सोऽहं हंसः तत्त्वमसि पद, ब्रह्म त्वं पद, माया असि पद, तत्पद जीवो ब्रह्म परमहंसो देवता सोऽहं ब्रह्मेति मंत्रः।। →

स. ६६-सातवीं मन्या कहाँ है? इस मन्या के शिखा और सूत्र कौन हैं?

स. ६७-सातवीं मन्या के मंत्र का वर्णन अर्थ सहित करो।

ज. ६७- सातवीं मन्या का मंत्र -

ॐ ह्रीं नीलहंसः सोऽहं परमहंसः सच्चिदानन्दो देवता →

स. ६८-अतः संन्यास सम्प्रदायवालों ने किसका विस्तृत वर्णन कर सुनाया?

स. ६९-इन संन्यास मतवालों के अंतर्गत अन्य कितने मात्राओंवाला कौन-सा मंत्र-ज्ञान भी है? पुनः वह मंत्र उन्हें किस अवस्था में पहुँचानेवाला है?

स. ७०-उक्त प्रकार की विस्तृत व्याख्यावाली मान्यता श्रीजी ने कैसे सुनी?

स. ७१-तत्पश्चात् संन्यास मतवालों ने संन्यास मार्ग की मान्यताओं के विषय में क्या कहा अर्थात् उनके मार्ग में संन्यास भेष धारण करने का प्रयोजन क्या है?

स. ७२-किसके प्रताप से संन्यास मतवालों ने कौन-से मत का वर्णन किया, ऐसा उन्होंने कहा?

→ अर्थः- मैं वह हंस हूँ। वह पद तू है। तू ब्रह्म पद है। तू मायारूपी पद है। जीव तत्पद है। वही ब्रह्म है। परमहंस इस मंत्र के देवता हैं तथा "सोऽहं ब्रह्म" यह मंत्र है।

ज. ६६- सातवीं मन्या जम्बू द्वीप में भारत वर्ष के अन्तर्गत है। ब्रह्माजी के मानस पुत्र सनकादिक इस मन्या के शिखा और सूत्र हैं।

→ सोऽहं ब्रह्मेति मंत्रः।।

अर्थः- ॐ हीं नीलहंस तथा परमहंस मैं हूँ। इस मंत्र के देवता सच्चिदानंद हैं और "सोऽहं ब्रह्म" यह मंत्र है।

ज. ६८- अतः संन्यास सम्प्रदायवालों ने सातों मन्या के दीक्षा मंत्र का विधिवत् विस्तृत वर्णन कर सुनाया।

ज. ६९- इन संन्यास मतवालों के अंतर्गत अन्य बारह मात्राओंवाला गायत्री मंत्र-ज्ञान भी है और वह मंत्र उन्हें परम अवस्था में पहुँचानेवाला है।

ज. ७०- उक्त प्रकार की विस्तृत व्याख्यावाली मान्यता सद्गुरु श्री प्राणनाथजी ने भलीभाँति सुनी ।

ज. ७१- तत्पश्चात् संन्यास मतवालों ने संन्यास मार्ग की मान्यताओं के विषय में कहा, " संन्यास मत माता-पिता, पिण्ड-शरीर और प्राण तथा पूर्व जन्म तक का निश्चित रूप से उद्धार करनेवाला है। इसी प्रयोजनवश उक्त फल प्राप्त करने के उद्देश्य से हमारे मार्ग में संन्यास भेष धारण किया जाता है।"

ज. ७२- अपने सर्वज्ञ कुलगुरु के चरणों के प्रताप से संन्यास मतवालों ने संन्यास मत का वर्णन किया, ऐसा उन्होंने कहा।

स. ७३-कौन-से सम्प्रदाय को मानने से क्या होता है और किसकी प्राप्ति होती है? पुनः वह प्राप्त होनेवाला कैसा है?

स. ७४-पूर्व, पश्चिम और उत्तर मन्या के आचार्यों के नाम क्या-क्या हैं?

ज. ७४- पूर्व मन्या के आचार्यों के नाम हैं - बन और अरण्य। पश्चिम →

स. ७५-पुनः दक्षिण मन्या के कितने आचार्य हैं और कौन-कौन-से?

स. ७६-उक्त प्रकार से कितने मठों के कितने आचार्यों के नाम कहे गये? पुनः संन्यास मत एवम् सम्प्रदाय कब-से चला आ रहा है? उक्त संन्यास मत की मान्यता किसे सुनायी गयी?

स. ७७-संन्यास मत कैसा है और किनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान से प्रकाशित है?

स. ७८-सब प्रकार के विषय भोगों का परित्याग करके भ्रमण करनेवाला सम्प्रदाय किसका है?

स. ७९-किसने संन्यास मत का स्पष्ट रूप में प्रचार-प्रसार किया?

स. ८०-सतयुग में संन्यास मत के कौन-कौन-से आचार्य हुए और त्रेता युग में कौन-कौन-से ?

स. ८१-उक्त दोनों युगों के आचार्यों को क्या करना चाहिए?

ज. ७३- संन्यास सम्प्रदाय को मानने से करोड़ों घोर पापों का नाश होता है और नारायण ब्रह्म की प्राप्ति होती है, जो समग्र संसार में समाहित है।

→ मन्या के आचार्यों के नाम हैं-तीर्थ और आश्रम। उत्तर मन्या के आचार्यों के नाम गिरि, पर्वत और सागर हैं, जो सबको भव से पार उतारनेवाले हैं।

ज. ७५- पुनः दक्षिण मन्या के तीन आचार्य हैं। जैसे-पुरी, भारती और सरस्वती।

ज. ७६- उक्त प्रकार से चारों मठों के दस आचार्यों के नाम कहे गये । पुनः संन्यास मत एवम् सम्प्रदाय युगों-युगों से चला आ रहा है। उक्त संन्यास मत की मान्यता श्री सद्गुरु स्वरूप प्राणनाथजी को सुनायी गयी ।

ज. ७७- संन्यास मत वेद सम्मत है और दत्तगुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से प्रकाशित है।

ज. ७८- सब प्रकार के विषय भोगों का परित्याग करके भ्रमण करनेवाला सम्प्रदाय संन्यासियों का है।

ज. ७९- आद्य शंकराचार्यजी ने संन्यास मत का स्पष्ट रूप से प्रचार-प्रसार किया।

ज. ८०- सतयुग में संन्यास मत के ब्रह्मा, विष्णु और शिव-ये तीन आचार्य हुए तथा त्रेता युग में वसिष्ठ, शक्ति और पराशर-ये तीन आचार्य हुए।

ज. ८१- उक्त दोनों युगों के आचार्यों को भलीभाँति समझना चाहिए।

स. ८२-पुनः द्वापर युग और कलियुग में संन्यास मत के कौन-कौनसे आचार्य प्रसिद्ध हैं?

स. ८३-शंकराचार्य के कितने शिष्य हुए तथा कौन-कौनसे? पुनः उनमें से विशिष्ट कौन हैं?

स. ८४-शंकराचार्य के चौथे शिष्य कौन हैं? उक्त चारों शिष्यों के कितने शिष्य हुए?

स. ८५-इन दस नाम संन्यासियों ने क्या करके ख्याति प्राप्त की?

स. ८६-ब्रह्माचार्य के शिष्य कौन हुये और उनके कितने तथा कौन-कौनसे शिष्य हुये?

स. ८७-क्या साथ में रखने के कारण इन संन्यासियों का सम्प्रदाय दण्डीवान सम्प्रदाय बन गया?

स. ८८-पद्मआचार्य के शिष्य कौन हुए ? इनके पुनः कौन-कौन से दो शिष्य हुए?

स. ८९-किस आचार्य के तीन शिष्य कल्याण करनेवाले हुये?

स. ९०-ऊर्ध्वाचार्य किसके शिष्य हुए? पुनः उनके द्वारा कितने और कौन-कौनसे शिष्य हुये?

स. ९१-वर्तमान युग में कितने नामवाले संन्यासी प्रकट हुये हैं?

ज. ९१- वर्तमान युग में उक्त दस नामवाले संन्यासी प्रकट हुये हैं और →

ज. ८२- पुनः द्वापर युग में संन्यास मत के व्यास और शुकदेव-ये दो आचार्य हुये तथा कलियुग में गौड़,गोविन्द और शंकराचार्य-ये तीन आचार्य हुए ।

ज. ८३- शंकराचार्य के चार शिष्य हुए। पहले ब्रह्माचार्य, दूसरे पद्माचार्य, तीसरे नराटोटकाचार्य तथा चौथे श्रृंगी ऋषि। पुनः इनमें से तीसरे शिष्य नराटोटकाचार्य विशिष्ट कहे गए ।

ज. ८४- शंकराचार्य के चौथे शिष्य श्रृंगी ऋषि कहे जाते हैं। उक्त चारों शिष्यों के दस शिष्य हुए।

ज. ८५- इन दस नाम संन्यासियों ने संन्यास मत स्थापित कर ख्याति प्राप्त की।

ज. ८६- ब्रह्माचार्य के शिष्य सरूपाचार्य हुए और उनके तीरथ और आश्रम-ये दो शिष्य हुए।

ज. ८७- डंडा-दण्ड साथ में रखने के कारण इन संन्यासियों का सम्प्रदाय दण्डीवान सम्प्रदाय बन गया ।

ज. ८८- पद्माचार्य के शिष्य बलभद्र हुए। इनके पुनः वन और अरण्य - ये दो शिष्य हुए।

ज. ८९- आचार्य नराटोटकाचार्य के तीन शिष्य-गिरि, पर्वत और सागर कल्याण करनेवाले हुये।

ज. ९०- ऊर्ध्वाचार्य श्रृंगी ऋषि के शिष्य हुए। पुनः उनके द्वारा पुरी, भारती और सरस्वती-ये तीन शिष्य हुए।

→ उन्होंने कलियुग में संन्यास सम्प्रदाय वृद्धिवत् प्रकट किया है।

- (प्रकरण ३६, सवाल-जवाब नं. ९१, कुल सं.१५७३+९१=१६६४)।

❖ षट्दर्शन ❖

स. १- तत्पश्चात् षट्दर्शन - छः शास्त्रों के विद्वानों ने अपने मत के विषय में क्या बताया ?

स. २- षट्दर्शियों के अनुसार षट्दर्शन को कैसे अथवा किस प्रकार, क्या करने से, किसकी प्राप्ति होती है?

स. ३- षट्दर्शी विद्वान किसके चारों मुखों से उच्चारित किसका नित्य अध्ययन करते हैं?

स. ४- किनके पूर्व मुख से कौन-सा वेद उत्पन्न हुआ?

स. ५- ब्रह्माजी के किस मुख से प्रकट, किस वेद का षट्दर्शी मतवाले पठन-पाठन करते हैं? पुनः ब्रह्माजी के पश्चिम के मुख से कौन-सा वेद उच्चारित हुआ?

स. ६- ब्रह्माजी के दक्षिण मुख से उच्चारित कौन-से वेद का ये षट्दर्शी नित्य उच्चारण करते हैं?

स. ७- कौन-से वेद के कितने प्रामाणिक भाग अर्थात् अंग हुए?

स. ८- नैयायिक दर्शन (शास्त्र) ब्रह्माजी के किस दिशा के मुख से प्रकट हुआ?

स. ९- तत्पश्चात् ब्रह्माजी के पश्चिम मुख से कितने शास्त्र प्रकट हुये?

स. १०-ब्रह्माजी के पश्चिम मुख से प्रकट शास्त्रों के नाम क्या-क्या हैं?

❖ षट्दर्शन ❖

ज. १- हरिद्वार कुम्भ के मेले में एकत्रित षट्दर्शन - छः शास्त्रों के विद्वानों ने बताया कि उनका शास्त्रीय मत बहुत प्राचीन है।

ज. २- षट्दर्शियों के अनुसार षट्दर्शन को विचार-विवेकपूर्वक ग्रहण करने से मानवात्माओं को निश्चय ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

ज. ३- षट्दर्शी विद्वान चतुर्मुखी ब्रह्माजी के चारों मुखों से उच्चारित चारों वेदों का नित्य अध्ययन करते हैं।

ज. ४- चतुर्मुखी ब्रह्माजी के पूर्व मुख से चारों वेदों में से आद्यवेद ऋग्वेद प्रकट हुआ।

ज. ५- चतुरानन ब्रह्माजी के उत्तर मुख से प्रकट अथर्ववेद का षट्दर्शी मतवाले पठन-पाठन और अध्ययन करते हैं। पुनः ब्रह्माजी के पश्चिम के मुख से यजुर्वेद उत्पन्न हुआ।

ज. ६- ब्रह्माजी के दक्षिण मुख से उच्चारित सामवेद का ये षट्दर्शी नित्य उच्चारण करते हैं।

ज. ७- ब्रह्माजी के दक्षिण मुखारविन्द से प्रकट सामवेद के प्रामाणिक रूप में छः भाग अथवा अंग हुए। ब्रह्म तत्त्व सिद्ध करने के लिए उक्त छः अंगों-प्रमाणों की आवश्यकता होती है।

ज. ८- नैयायिक दर्शन (शास्त्र) ब्रह्माजी के पूर्व मुख से प्रकट हुआ, जो वाद-विवाद विषय में कुशल है।

ज. ९- तत्पश्चात् ब्रह्माजी के पश्चिम के श्री मुख से यजुर्वेद पर आधारित तीन शास्त्र प्रकट हुये।

ज. १०- ब्रह्माजी के पश्चिम के श्री मुख से प्रकट हुये शास्त्रों में पातञ्जल, सांख्य एवम् वैशेषिक-ये तीन शास्त्र हैं।

स. ११-सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के दक्षिण दिशा के मुख से कौन-सा दर्शन (शास्त्र) प्रकट हुआ?

स. १२-ब्रह्माजी के उत्तर दिशा के मुख से कैसा और कौन-सा शास्त्र प्रकट हुआ?

स. १३-उक्त प्रकार से कितने दर्शनों के, कितने मत हुये? पुनः इन्हें कैसा मत कहते हैं?

स. १४-उक्त छः शास्त्रों के कितने आचार्य हैं?

स. १५-ब्रह्माजी के किस मुख से न्याय शास्त्र हुआ और इसका प्रकाश किससे हुआ?

स. १६-उत्तर मीमांसा और पूर्व मीमांसा की रचना किस-किसने मिलकर की?

ज. १६- उत्तर मीमांसा और पूर्व मीमांसा की रचना जैमिनी एवम् व्यास →

स. १७-सांख्य नामक दर्शन-शास्त्र की रचना करनेवाले आचार्य कौन हैं?

स. १८-पातांजलि, वैशेषिक और वेदान्त-इन तीन दर्शनों-शास्त्रों के आचार्य कौन-कौन हैं?

स. १९-उक्त छः दर्शनों के आचार्य कौन माने गये? कुछ ज्ञानीजन क्या देखकर क्या करते हैं?

❖ न्याय दर्शन ❖

स. २०-नैयायिक दर्शन किन तीनों को भिन्न एवम् अनादि स्वीकार करता है?

ज. ११- सतलोक स्थायी सृष्टिकर्ता ब्रह्माजी के चतुर्थ-दक्षिण दिशा के मुख से मीमांसा दर्शन (शास्त्र) प्रकट हुआ।

ज. १२- ब्रह्माजी के उत्तर दिशा के मुखारविन्द से उत्तम पवित्र वेदान्त शास्त्र प्रकट हुआ।

ज. १३- उक्त प्रकार से छः दर्शनों के छः मत प्रकट हुये। इन्हें प्रामाणिक मत कहते हैं।

ज. १४- उक्त छः शास्त्रों के आचार्य भी छः हैं।

ज. १५- ब्रह्माजी के पूर्व मुख से ऋग्वेद पर आधारित नैयायिक दर्शन - न्याय शास्त्र उत्पन्न हुआ। इसका प्रकाश गौतम ऋषि द्वारा हुआ।

→ ऋषि ने मिलकर विधिवत् की। कर्म प्रधान मीमांसा का विवेकमय विवेचन जैमिनी ऋषि ने किया एवम् शारीरिक वेदान्त, उत्तर मीमांसा का वर्णन व्यास मुनि द्वारा किया गया। इस प्रकार मीमांसा दर्शन की दो विधियों का स्पष्टतः वर्णन किया गया।

ज. १७- सांख्य नामक दर्शन-शास्त्र की रचना करनेवाले आचार्य कपिल-देव हैं।

ज. १८- पातांजलि मत के आचार्य शेष ऋषि हैं। वैशेषिक दर्शन के आचार्य कणाद हैं एवम् वेदान्त दर्शन के आचार्य शिवजी हैं।

ज. १९- उक्त छः ऋषि छः दर्शनों के आचार्य माने गये। कतिपय ज्ञानीजन चतुराई से इन दर्शनों के मत में भिन्नता देखकर वाद-विवाद करते हैं।

❖ न्याय दर्शन ❖

ज. २०- नैयायिक दर्शन स्थूल, सूक्ष्म, कारण (प्रकृति) अथवा माया, जीव, ईश्वर-इन तीनों को ही भिन्न एवम् अनादि स्वीकार करता है।

स. २१-न्याय दर्शन-शास्त्र के मतानुसार कौन-कौनसी इक्कीस सीढ़ियाँ हैं और कैसी हैं?

ज. २१- न्याय दर्शन-शास्त्र के मतानुसार इक्कीस प्रकार के दुःख (जैसे - श्रवण, त्वचा, नेत्र, रसना, नासिका और मन- ये छः इन्द्रियाँ, →

स. २२-न्याय दर्शनवाले इक्कीस सीढ़ियाँ पार करने पर किस वस्तु की प्राप्ति मानते हैं?

स. २३-न्याय दर्शन की मान्यता सुनकर श्रीजी साहेब ने क्या कहा?

ज. २३- न्याय दर्शन की उक्त प्रकार की मान्यताएँ सुनकर श्रीजी साहेब →

स. २४-न्याय दर्शन की मान्यतानुसार मायावी जीव कहाँ पड़े हैं?

स. २५-पुनः श्रीजी साहेबजी ने न्याय दर्शन मतवालों से उक्त २१ सीढ़ियों के विषय में क्या पूछा?

ज. २५- पुनः श्रीजी साहेबजी ने न्याय दर्शन मतवालों से उक्त २१ सीढ़ियों →

स. २६-न्याय दर्शनवालों ने सूक्ष्म शरीर को क्या कहा और नाशवान् किसे कहा?

❖ मीमांसा दर्शन ❖

स. २७-तत्पश्चात् जैमिनी ऋषि द्वारा प्रदत्त कौन दर्शनवाले अपनी मान्यता के विषय में खड़े होकर क्या बोले?

→ पुनः इनके विषय जैसे -शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध तथा संकल्प - विकल्प और उक्त छः इन्द्रियों के विषयों के ज्ञान अर्थात् ६ इन्द्रिय + ६ विषय + ६ ज्ञान तथा सुख, दुःख एवम् शरीर) ही इक्कीस सीढ़ियाँ हैं और ये दुःख का अनुभव करानेवाली हैं।

ज. २२- न्याय दर्शनवाले इक्कीस सीढ़ियाँ पार करने से अथवा उक्त दुःखों के नाश होने पर सत् सुख की प्राप्ति मानते हैं।

→ ने उनसे प्रश्न किया, " यह आपकी कैसी समझ है? आपके वचनों के अनुसार ईश्वर एवम् जीव दोनों ही नाशवान् सिद्ध हैं।"

ज. २४- न्याय दर्शन की मान्यतानुसार दुःख की इन इक्कीस महान् सीढ़ियों में ही माया के सभी जीव पड़े हैं।

→ के विषय में पूछा, "उक्त २१ दुःखमय महान् सीढ़ियाँ पार कर लेने पर जीव को सुख की प्राप्ति करानेवाली सीढ़ी कौन-सी है? पुनः उन्हें कहाँ-कौनसे लोक के सुख की प्राप्ति होती है?"

ज. २६- न्याय दर्शनवालों ने सूक्ष्म शरीर-स्वरूप को नित्य कहा और स्थूल शरीर को नाशवन्त कहा ।

❖ मीमांसा दर्शन ❖

ज. २७- तत्पश्चात् जैमिनी ऋषि द्वारा प्रदत्त मीमांसा दर्शनवाले आचार्य अपनी मान्यता के विषय में खड़े होकर बोले, "संसार में कर्म ही प्रधान है।"

स. २८-उक्त दर्शन के ज्ञाताओं के अनुसार प्रामाणिक रूप से क्या-क्या कर्म ही है?

स. २९-उक्त आचार्यों ने किस-किस को कर्म का ही रूप बताया? कर्म कब-से है और कैसा है?

स. ३०-मीमांसा दर्शन के आचार्यों की उक्त बातें सुनकर श्रीजी साहेबजी ने उन्हें क्या पूछा और क्या कहा?

स. ३१-कर्म का क्या-क्या होता है? पुनः उसमें क्या नहीं होता? मन का विकार क्या है? जीव किससे प्रेरित होकर कर्म करता है?

स. ३२-कैसा मन जीव को किसमें प्रेरित करता है? मन कहाँ तक पहुँच नहीं पाता, तो क्या कैसे पहुँच सकता है?

स. ३३-ब्रह्म किससे रहित है? ब्रह्म का रूप कैसा है, ऐसा वेद और शास्त्र कहते हैं? पुनः उक्त आचार्यों की समझ-मान्यता में क्या है?

❖ सांख्य दर्शन ❖

स. ३४-तत्पश्चात् कपिलदेव द्वारा प्रदत्त सांख्य दर्शन के आचार्य क्या बोले? उन्होंने अपनी मान्यताओं में किन्हें सबका कर्ता और सबसे परे बताया ?

स. ३५-किस-किस के मिलन से संसार की उत्पत्ति और अलगाव से जगत् का नाश कहा है?

ज. २८- मीमांसा दर्शन के ज्ञाताओं के अनुसार कारण, कर्ता एवम् इष्ट सब कर्म ही है।

ज. २९- उक्त आचार्यों ने जीव, ईश्वर और ब्रह्म सबको कर्म का ही रूप कहा। पुनः कर्म अनादि और अनुपम है। कर्म के बिना कुछ नहीं है।

ज. ३०- मीमांसा दर्शन की उपरोक्त प्रकार की मान्यता सुनकर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने कहा, "कर्म के ही तो अनेक बिध एवम् रूप हैं। ब्रह्म तो अखण्ड स्वरूप सदा एकरस रहता है।"

ज. ३१- कर्म का उत्पत्ति और लय होता है। उसमें स्थिरता नहीं होती। मन का विकार अहंकार है। उसी से प्रेरित होकर जीव कर्म में लीन होता है।

ज. ३२- अहंकारी मन ही जीव को कर्म में प्रेरित करता है। मन ही ब्रह्म तक पहुँच नहीं पाता, तो कर्म कैसे पहुँच सकता है।

ज. ३३- ब्रह्म माया से रहित है। ब्रह्म का रूप सम है, ऐसा वेद और शास्त्र कहते हैं। पुनः उक्त आचार्यों की समझ-मान्यता में ही खींचा-तानी है।

❖ सांख्य दर्शन ❖

ज. ३४- तत्पश्चात् कपिलदेव द्वारा प्रदत्त सांख्य दर्शन के ज्ञाता सोच-समझकर बोले, "सबका कर्ता प्रकृति और पुरुष है, जो सबके परे-परात्पर है।"

ज. ३५- सांख्य दर्शनवाले अपने ज्ञानाधार कहते हैं, "जब प्रकृति और पुरुष का मिलन होता है, तब समस्त संसार की उत्पत्ति होती है। पुनः जब वे अलग होते हैं, तब जगत् लय हो जाता है।"

स. ३६-सांख्य दर्शनवालों की उक्त प्रकार की मान्यताओं को श्रवण करने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने क्या जवाब दिया?

स. ३७-तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने सांख्य दर्शनवालों के आगे प्रकृति और पुरुष का वर्णन करते हुए क्या कहा? पुनः सूर्य की दृष्टि में कौन नहीं टिक पाता है?

स. ३८-महाप्रलय में कहाँ-से-कहाँ तक का नाश हो जाने का आह्वान वेद-शास्त्रों में है?

स. ३९-प्रलयकाल में किसका कोई स्वरूप नहीं रह जाता, तो पुनः दोनों कैसे मिलेंगे?

स. ४०-पुनः श्रीजी स्वरूप ने सांख्य दर्शनवालों से किसके रहस्य को समझाकर कहने को कहा? पुनः प्रलय के समय किनके रहने के स्थान को भी स्पष्ट कर देने को कहा?

स. ४१-ये सांख्यदर्शी अपनी समझ से किन दोनों को क्या कहते हैं? पुनः बिना आकार के किसका मिलन नहीं होता? किन दोनों में अन्तर नहीं रहा?

❖ वैशेषिक दर्शन ❖

स. ४२-कर्णदेव-कणाद ऋषि द्वारा प्रकट कौन-से दर्शन को माननेवालों ने कौन-से सिद्धान्त को स्पष्ट किया?

स. ४३-उक्त वैशेषिक दर्शनवालों ने किसका मूल क्या बताया? उनके मतानुसार किसके द्वारा सब कुछ उत्पन्न होता है?

ज. ३६- सांख्य दर्शनवालों की उक्त प्रकार की मान्यताओं को श्रवण करने के पश्चात् महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने कहा, "तुम्हारा मत है प्रकृति और पुरुष से जगत् की रचना हुई? वाह !"

ज. ३७- तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने सांख्य दर्शनवालों के आगे प्रकृति और पुरुष का वर्णन करते हुए कहा, "अरे सांख्य दर्शन के विद्वानों! प्रकृति-जड़ अंधकार रूप है और पुरुष-चेतन प्रकाश स्वरूप है। सूर्य की दृष्टि में अंधकार नहीं टिक पाता है। यह मेरा संदेह है।"

ज. ३८- महाप्रलय में प्रकृति से लेकर पुरुष तक सबका नाश हो जाता है। ऐसा वेद-शास्त्रों में आह्वान है।

ज. ३९- प्रलयकाल में प्रकृति का कोई स्वरूप नहीं रह जाता, तो पुनः दोनों कैसे मिलेंगे?

ज. ४०- पुनः श्रीजी स्वरूप ने सांख्य दर्शनवालों से प्रकृति और पुरुष के रहस्य को समझाकर कहने को कहा। पुनः प्रलय के समय इनका स्थान कहाँ है अथवा वे कहाँ रहते हैं? यह भी स्पष्ट कर देने को कहा।

ज. ४१- ये सांख्यदर्शी अपनी समझ से प्रकृति और पुरुष को निराकार कहते हैं। तो फिर बिना आकार के प्रकृति और पुरुष का मिलन कैसे होगा? पुनः तब प्रकृति और पुरुष में अन्तर ही नहीं रहा।

❖ वैशेषिक दर्शन ❖

ज. ४२- कर्णदेव-कणाद ऋषि द्वारा प्रकट वैशेषिक दर्शन को माननेवालों ने वैशेषिक सिद्धान्त को स्पष्ट किया।

ज. ४३- अपनी मान्यताओं का वर्णन करते हुए वैशेषिक दर्शनवालों ने सारी सृष्टि का मूल काल को ही बताया। उनके मतानुसार काल-समय से ही संसार में सब कुछ उत्पन्न होता है।

स. ४४-पुनः कौन संसार के सम्पूर्ण जीवों को, किस कार्य में प्रवृत्त करता है?

स. ४५-काल किस रूप में सबको अपना क्या बनाकर नष्ट कर डालता है? काल किस रूप में वर्तमान में हमारे सामने उपस्थित है?

स. ४६-वैशेषिक दर्शनवालों की उक्त प्रकार की मान्यतायें सुनकर श्रीजी साहेबजी ने क्या कहा?

स. ४७-वेदों के अन्तर्गत किसे नाशवान् कहा है? ब्रह्म कैसा प्रकाशपुंज है? किस-किस में, किसकी पहुँच ब्रह्म के समीप नहीं है, ऐसा बताया गया है?

स. ४८- किससे उत्पन्न हर चीज का क्या अवश्य होता है?

स. ४९-किससे संसार में सब कुछ उत्पन्न भी होता है और नष्ट भी होता है?

स. ५०-किन्तु किसमें उत्पत्ति और विनाश नहीं है? कौन सबमें व्यापक होते हुए भी सबसे अलग है?

स. ५१-किसने कहा कि शास्त्रों में ब्रह्म का उक्त प्रकार का स्वरूप ही वर्णित है?

स. ५२-कौन लोग, किसका स्वरूप काल से मिला हुआ बताते हैं?

स. ५३-काल, आकार (पिण्ड) आदि सब किसके रूप हैं और कौन इन सबमें नहीं है?

ज. ४४- पुनः काल ही संसार के सम्पूर्ण जीवों को सांसारिक कार्यों में प्रवृत्त करता है।

ज. ४५- काल मृत्यु रूप में सबको अपना ग्रास बनाकर नष्ट कर डालता है। काल ही ब्रह्म रूप है। काल वर्तमान में हमारे सामने ब्रह्मरूप में उपस्थित है।

ज. ४६- वैशेषिक दर्शनवालों की उक्त प्रकार की मान्यतायें सुनकर श्रीजी साहेबजी ने उनसे पूछा, "आप सबका मूल काल को ही क्यों बता रहे हो?"

ज. ४७- वेदों के अन्तर्गत काल को नाशवान् कहा है। ब्रह्म कालरहित प्रकाशपुंज है। श्रुति और स्मृतियों में काल की पहुँच ब्रह्म के समीप नहीं है, ऐसा बताया गया है।

ज. ४८- काल से उत्पन्न हर चीज का विनाश अवश्यमेव होता है। यह तो अविकल्प सत्य बात है।

ज. ४९- काल से ही संसार में सब कुछ उत्पन्न भी होता है और नष्ट भी होता है।

ज. ५०- किन्तु ब्रह्म में तो उत्पत्ति और विनाश नहीं है। ब्रह्म सबमें व्यापक होते हुए भी सबसे अलग हैं।

ज. ५१- श्रीजी साहेब ने कहा कि शास्त्रों में ब्रह्म का उक्त प्रकार का स्वरूप ही वर्णित है।

ज. ५२- वैशेषिक दर्शन के ज्ञाता लोग ब्रह्म का स्वरूप काल से मिला हुआ बताते हैं।

ज. ५३- काल, आकार (पिण्ड) आदि सब माया के रूप हैं और निर्विकार स्वरूप इन सबमें नहीं है।

स. ५४-किसमें काल के अन्तर्गत आनेवाले को क्या नहीं कहा है?

स. ५५-वैशेषिक दर्शन के ज्ञाता काल को क्या कहते हैं और वैसा ही वे किसे समझते हैं?

❖ पातञ्जल दर्शन ❖

स. ५६-वैशेषिक दर्शन के विद्वानाचार्य के पश्चात् कौन-से दर्शनवाले अपना सिद्धान्त रखने के लिए उठे?

स. ५७ पातञ्जल दर्शन के ज्ञानियों के अनुसार ब्रह्म कैसे हैं और सबमें किस तरह हैं?

स. ५८-ब्रह्म प्रत्येक मनुष्य में किस प्रकार विद्यमान है और संसार में कहाँ, किस प्रकार ब्रह्मरूप देखना चाहिए?

स. ५९-पातञ्जल दर्शनवालों ने ब्रह्म का निवास स्थान अथवा धाम कहाँ-कहाँ माना?

स. ६०-उक्त आचार्यों ने पंचभौतिक शरीर में कहाँ-कहाँ चित्त देकर ब्रह्म को खोजने के लिए कहा है?

स. ६१-किस चक्र की साधना करके, किससे खोजने पर, कहाँ, किसकी अनुभूति होती है?

स. ६२-पातञ्जल दर्शनवाले योगाभ्यास के कितने अंगों के नाम का उल्लेख किसके समर्थन सहित करते हैं?

स. ६३-अष्टांग योग साधना के कितने अंग हैं और कौन-कौन-से?

ज. ५४- वेदों में काल के अन्तर्गत आनेवाले को ब्रह्म नहीं कहा है।

ज. ५५- वैशेषिक दर्शन के ज्ञाता काल को निराकार कहते हैं और वैसा ही वे निराकार ब्रह्म को भी समझते हैं।

❖ पातञ्जल दर्शन ❖

ज. ५६- वैशेषिक दर्शन के विद्वानाचार्य के पश्चात् पातञ्जल दर्शन के आचार्य अपनी मान्यता पेश करने के लिए "ब्रह्म चबूतरे" पर खड़े हुए।

ज. ५७- पातञ्जल दर्शन के आचार्यों के मतानुसार ब्रह्म व्यापक हैं और सबमें समाहित हैं।

ज. ५८- ब्रह्म प्रत्येक मनुष्य के शरीर में विद्यमान है और इसी कारण संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है, उसे ब्रह्मरूप देखना चाहिए ।

ज. ५९- पातञ्जल दर्शनवालों ने इस पिण्ड और ब्रह्माण्ड-दोनों को ही ब्रह्म का निवास स्थान अथवा धाम माना।

ज. ६०- उक्त आचार्यों ने पंचभौतिक शरीर में तीन स्थानों-बहत्तर हजार नाड़ियों, षट्चक्रों और आठ अंगों में चित्त देकर ब्रह्म को खोजने के लिए कहा है।

ज. ६१- उक्त प्रकार से नाड़ी, चक्र की साधना करके मन से खोजने पर अपने ही अन्दर ब्रह्म की अनुभूति होने लगती है।

ज. ६२- पातञ्जल दर्शनवाले योगाभ्यास के आठ अंगों के नाम का उल्लेख पातञ्जल शास्त्र के समर्थन सहित करते हैं।

ज. ६३- अष्टांग योग साधना के आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, नियम और जाप (यम)-ये आठ अंग हैं।

स. ६४-ज्योति स्वरूप किसे समझना चाहिए और कौन संसार की उत्पत्ति की कारण रूप हैं?

स. ६५-संसार किससे पैदा हुआ? किसकी किरणों के समान संसार किसमें समाहित है?

स. ६६-उक्त विद्वान किस प्रकार विचार करके पातञ्जल दर्शन के श्रेष्ठ सिद्धान्त को किस तरह ग्रहण करने को कहते हैं?

स. ६७-पातञ्जल दर्शन के आचार्य की बातें सुनकर श्रीजी ने उनसे क्या कहा?

स. ६८-ब्रह्म का स्वरूप किस गुण से सम्पन्न है? परन्तु संसार कैसे गुणों से परिपूर्ण है?

स. ६९-सत्य वस्तु से उत्पन्न वस्तुएँ कैसी होती हैं? पुनः असत्य की पैदाइश भी कैसी होती है?

स. ७०-श्रुतियों ने ब्रह्म को कैसा माना है? ब्रह्म में क्या-क्या नहीं होता?

स. ७१-उत्पत्ति और नाश कहाँ होता है? वेद-शास्त्रों में क्या स्पष्ट लिखा है?

स. ७२-ब्रह्म का आभास किसमें होता है, ऐसा वेदों में वर्णन किया गया है?

स. ७३-माया में किस शक्ति का प्रकटीकरण एवम् प्रकाश होता है, ऐसा कहा गया है?

ज. ६४- ज्योति स्वरूप ब्रह्म को समझना चाहिए। वे ही संसार की उत्पत्ति का बीज अथवा कारण रूप हैं।

ज. ६५- ब्रह्म से ही संसार पैदा हुआ है। ब्रह्मरूपी ज्योति की किरणों के समान संसार ब्रह्म में ही समाहित है।

ज. ६६- पातञ्जल दर्शन के विद्वान सबको आह्वान करते हुए कह रहे हैं कि वे अपनी बुद्धि द्वारा विचार कर पातञ्जल दर्शन के श्रेष्ठ सिद्धान्त को चित्त में निश्चित रूप से ग्रहण करें।

ज. ६७- पातञ्जल दर्शन के आचार्य की मान्यताओं को सुनकर श्रीजी ने उनसे कहा, "आप विवेकवत् ध्यानपूर्वक मेरी आशंकाओं का समाधान कीजिए।"

ज. ६८- ब्रह्म का दिव्य स्वरूप सच्चिदानन्द गुण संपन्न है। परन्तु संसार झूठ, अज्ञान और दुःख से परिपूर्ण दुःख का ही रूप है।

ज. ६९- सत्य वस्तु से उत्पन्न वस्तुएँ सत्य ही होती हैं। असत् से पैदा होनेवाली सामग्री नाशवान् ही होती है।

ज. ७०- श्रुतियों ने ब्रह्म को इच्छारहित माना है। ब्रह्म में कुछ भी उत्पन्न और नाश नहीं होता।

ज. ७१- वेदों के आह्वान के अनुसार उत्पत्ति और नाश माया के अन्तर्गत होता है। वेद-शास्त्रों में ऐसा स्पष्ट उल्लेख है।

ज. ७२- वेदों में ऐसा वर्णन किया गया है कि ब्रह्म का आभास माया के अन्तर्गत होता है।

ज. ७३- माया में उक्त आभास शक्ति का प्रकटीकरण एवम् प्रकाश होता है, ऐसा कहा गया है।

स. ७४-किस-किसमें अन्तर नहीं होता? पुनः किसमें अन्तर होता है?

स. ७५-कौन-कौन परस्पर एक-दूसरे के विरोधी हैं? कौन-कौन एक साथ एक बर्तन अथवा एक स्थान में नहीं रह सकते?

स. ७६-किस-किस की जाति अलग है? इन दोनों में क्या है? सभी बातों के क्या होते हैं? पुनः यहाँ कौन, किसके प्रश्नों का सप्रमाण उत्तर देने को कह रहे हैं?

❖ वेदान्त दर्शन ❖

स. ७७-पातञ्जल दर्शन के आचार्यों के पश्चात् कौनसे दर्शन-शास्त्रवाले अपना सिद्धान्त पेश करने के लिए उठे?

स. ७८-वेदान्त दर्शन के ज्ञाता संसार में किसके सिवाय कुछ भी नहीं मानते?

स. ७९-उक्त आचार्य किसे अनादि मानते हैं? वह सदैव किसके अन्तर्गत रहती है?

स. ८०-मायावी संसार में क्या समाया है? क्या सर्वत्र रहनेवाला और कैसा है?

स. ८१-जो इस संसार में ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरे का अस्तित्त्व मानते हैं, तो वेदान्त दर्शनवाले उन्हें क्या मानते हैं?

स. ८२-किससे लेकर किस तक में ब्रह्म विद्यमान है? ब्रह्म कैसा है और कैसा अस्तित्त्व रखनेवाला है?

ज. ७४- सूर्य और उसकी किरणों में अन्तर नहीं होता। पुनः माया और ब्रह्म में बहुत अन्तर होता है।

ज. ७५- माया और ब्रह्म-ये दोनों परस्पर एक-दूसरे के विरोधी हैं। माया और ब्रह्म, प्रकाश और अन्धकार की ही तरह एक साथ एक बर्तन में अथवा एक स्थान में नहीं रह सकते।

ज. ७६- सत और असत् की जाति अलग-अलग है। इन दोनों में बहुत अन्तर भी है। सभी बातों के प्रमाण होते हैं। अतः यहाँ श्रीजी स्वरूप पातञ्जल मत के आचार्यों से अपने प्रश्नों का सप्रमाण उत्तर देने को कह रहे हैं।

❖ वेदान्त दर्शन ❖

ज. ७७- पातञ्जल दर्शन के विद्वानाचार्य के पश्चात् "ब्रह्म चबूतरे" पर वेदान्त दर्शन के आचार्य अपना सिद्धान्त पेश करने के लिए खड़े हुए।

ज. ७८- वेदान्त दर्शन के ज्ञाता संसार में ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मानते।

ज. ७९- उक्त आचार्य माया को अनादि मानते हैं। वह सदैव ब्रह्म के अन्तर्गत रहती है।

ज. ८०- मायावी संसार में ब्रह्म समाया है। ब्रह्म सर्वत्र रहनेवाला और सबके योग्य है।

ज. ८१- जो इस संसार में ब्रह्म के अतिरिक्त दूसरे का अस्तित्त्व मानते हैं, उन्हें वेदान्त दर्शनवाले अज्ञानी समझते-मानते हैं।

ज. ८२- अणु-सबसे छोटे कण से लेकर हाथी तक में एक ब्रह्म ही विद्यमान है। ब्रह्म इच्छारहित और सबसे अलग अस्तित्त्व रखनेवाला है।

स. ८३-ब्रह्म तत्त्व के लिए किस-किसका विकार नहीं है?

स. ८४-वेदान्तियों की उक्त प्रकार की मान्यताओं को सुनकर कौन बोले?

स. ८५-वेदान्ती सर्वत्र किसको व्यापक मानते हैं? यदि ऐसा हो, तो क्या बिलकुल नहीं होना चाहिए?

स. ८६-वेदान्तियों के उक्त कथनानुसार श्रीजी स्वरूप ने उनसे क्या कहा?

स. ८७-ब्रह्म कैसा होते हुए भी सबमें विद्यमान है? पुनः ब्रह्म इच्छारहित होने पर भी किससे युक्त है?

स. ८८-वेदान्तियों के उक्त कथन को सुनने के पश्चात् श्रीजी ने पुनः उनसे क्या प्रश्न किया?

ज. ८८- वेदान्तियों के उक्त कथन को सुनने के पश्चात् श्रीजी ने पुनः →

स. ८९-किसके समीप माया कुछ भी नहीं है? कौन तीनों काल से रहित है?

स. ९०-वेदान्ती किसे अनादि कहते हैं और किसमें क्या सर्वत्र व्यापक मानते हैं?

स. ९१-तीनों कालों में कभी भी कौन-कौन एक नहीं हो सकते?

स. ९२-पुनः वेदान्ती किसमें, किसका अस्तित्त्व मानते हैं?

स. ९३-वेदान्तियों को यत्रतत्र-सर्वत्र क्या दिखाई देता है?

ज. ८३- ब्रह्म तत्त्व के लिए तो कर्ता और कर्म का विकार ही नहीं है।

ज. ८४- वेदान्तियों की उक्त प्रकार की धुरन्धर और विद्वत्तापूर्ण मान्यताओं को सुनकर श्रीजी साहेबजी बोले।

ज. ८५- वेदान्ती सर्वत्र ब्रह्म को व्यापक मानते हैं। यदि ऐसा हो, तो कहीं भी बिलकुल अज्ञान नहीं होना चाहिए।

ज. ८६- वेदान्तियों के उक्त कथनानुसार श्रीजी स्वरूप ने उनसे कहा, "हमारे मन में यह शंका उत्पन्न हो रही है कि फिर छः शास्त्रों की रचना किसके लिए हुई है?"

ज. ८७- ब्रह्म निराकार होते हुए भी सभी प्राणियों में विद्यमान है। पुनः ब्रह्म इच्छारहित होने पर भी सर्व शोभा से युक्त है।

→उनसे प्रश्न किया, "यदि आपके कहे प्रमाण ब्रह्म है, तो इस संसार की रचना किससे होती है? मेरी यह शंका आप दूर कर दीजिये।"

ज. ८९- ब्रह्म के समीप माया कुछ भी नहीं है। ब्रह्म वर्तमान, भूत और भविष्य-इन तीनों कालों से रहित है।

ज. ९०- वेदान्ती माया को अनादि कहते हैं और माया में ब्रह्म को सर्वत्र व्यापक मानते हैं।

ज. ९१- तीनों कालों में कभी भी माया और ब्रह्म एक नहीं हो सकते।

ज. ९२- पुनः वेदान्ती ब्रह्म में माया का अस्तित्त्व मानते हैं।

ज. ९३- वेदान्तियों को यत्रतत्र-सर्वत्र ब्रह्म दिखाई देता है।

स. ९४- तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने वेदान्तियों से माया के स्वरूप के विषय के कौन-से रहस्य को स्पष्ट करने को कहा?

स. ९५- किसने स्पष्ट रूप से, किसको संसार से अलग बताया है? किन्तु वेदान्ती किसे सर्वत्र विद्यमान कहते हैं?

स. ९६- कहाँ-किस जगह वेदान्तियों से किसका बहुत वाद-विवाद हुआ?

स. ९७- बीतककार श्री लालदासजी उक्त वाद-विवाद के विषय में यहाँ क्या कह रहे हैं?

स. ९८- किन लोगों ने उक्त वाद-विवाद का अनुभव-ज्ञान प्राप्त किया?

स. ९९- वेदान्तियों में कोई-कोई क्या कहते हैं? पुनः उनके अनुसार क्या नहीं रह जाता?

स. १००-यदि कहीं, कुछ भी अज्ञान नहीं रहा, तो पुनः किसकी रचना हुई ही क्यों? पुनः वेदान्तियों का उक्त मत सुनकर किसके मन में उक्त संदेह उत्पन्न होने लगा?

स. १०१-हरिद्वार के कुम्भ के मेले में कितने दर्शनों के आचार्य उपस्थित थे? किसने श्रीजी स्वरूप से बहुत ही वाद-विवाद किया?

स. १०२-उक्त सभी दर्शनों की पद्धति को किसने, किस प्रकार से सुना?

ज. ९४- वेदान्तियों के अनुसार माया अनादि है। अतः श्रीजी स्वरूप ने उनसे माया के स्वरूप के विषय में कहा, "आप माया को किस प्रकार अनादि कहते हैं? और माया निराकार है या साकार? इसका भी रहस्य आप मेरे आगे स्पष्ट कर दीजिये।"

ज. ९५- शंकराचार्यजी ने स्पष्ट रूप से आत्मा को संसार से अलग बताया है, किन्तु वेदान्ती आत्मा को सर्वत्र विद्यमान बताते हैं।

ज. ९६- हरिद्वार के कुम्भ मेले में वेदान्तियों से महाप्रभु श्री प्राणनाथजी का बहुत वाद-विवाद हुआ।

ज. ९७- बीतककार श्री लालदासजी उक्त वाद-विवाद के विषय में यहाँ कह रहे हैं, "वहाँ मेले में जो कुछ भी देखने या सुनने में आया, उसका किन शब्दों में वर्णन करें!"

ज. ९८- उस समय वहाँ-हरिद्वार कुम्भ के मेले में उपस्थित लोगों ने ही उक्त वाद-विवाद का अनुभव-ज्ञान प्राप्त किया।

ज. ९९- वेदान्तियों में कोई-कोई सर्वत्र ब्रह्म व्यापक है, ऐसा कहते हैं। तब तो उनके मतानुसार कहीं कुछ भी अज्ञान नहीं रह जाता।

ज. १००- यदि कहीं कुछ भी अज्ञान नहीं रहा, तो पुनः छः शास्त्रों की रचना हुई ही क्यों? वेदान्तियों का मत सुनकर श्रीजी के मन में उक्त संदेह उत्पन्न होने लगा।

ज. १०१- हरिद्वार के कुम्भ के मेले में छः दर्शनों के आचार्य उपस्थित थे। उक्त छः शास्त्रों के आचार्यों ने श्रीजी स्वरूप के साथ बहुत वाद-विवाद किया।

ज. १०२- उक्त सभी दर्शनों के विभिन्न सिद्धान्त एवम् उपासना पद्धति को महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने ध्यानपूर्वक बहुत ही मनोयोग से सुना।

स. १०३-किन सबने मिलकर, किससे और क्या कहा?

स. १०४-तदुपरान्त किसने, किसे अपना धर्म-सिद्धान्त किस प्रकार रखने को कहा?

स. १०५-सभी आचार्यों ने मिलकर श्रीजी स्वरूप से अपना धर्म-सिद्धान्त पेश करते समय क्या प्रमाणित कर कहने को कहा?

स. १०६-उक्त विषय में विभिन्न मत के आचार्यों ने श्रीजी स्वरूप से अपनी सम्प्रदाय पद्धति के विषय में क्या देकर, किस प्रकार पेश करने को कहा?

❖ श्रीजी का जवाब ❖

स. १०७-हरिद्वार के कुम्भ मेले में उपस्थित विभिन्न मत के आचार्यों द्वारा उक्त प्रकार से पूछे जाने पर श्रीजी साहेबजी ने उनसे क्या कहा?

ज. १०७- हरिद्वार के कुम्भ मेले में उपस्थित विभिन्न मत के आचार्यों →

स. १०८-महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने सर्वप्रथम उनके सामने कौन-से पुराण का प्रमाण दिया?

स. १०९-उस पुराण में किस विषय में, किस-किस के बीच हुई, कैसी बातें कही हैं?

ज. १०३- हरिद्वार कुम्भ के मेले में उपस्थित सभी सम्प्रदाय के आचार्यों ने मिलकर श्रीजी साहेबजी से कहा, "हम सबने अपने-अपने मत-सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का स्पष्ट वर्णन कर दिया है।"

ज. १०४- तदुपरान्त श्री प्राणनाथजी से सभी धर्म के आचार्यों ने कहा, "आप अपने धर्म के सिद्धान्तों को सप्रमाण प्रत्यक्ष रूप में प्रकट कीजिए।"

ज. १०५- सभी आचार्यों ने मिलकर श्रीजी स्वरूप से अपना धर्म-सिद्धान्त पेश करते समय कौन-से शास्त्र में कहाँ पर आपके धर्म-सम्प्रदाय आदि का वर्णन है?- यह प्रमाणित कर कहने को कहा।

ज. १०६ उक्त विषय में विभिन्न मत के आचार्यों ने श्रीजी स्वरूप से कहा, "वेद-शास्त्रों की साक्षी देकर आप अपने सिद्धान्तों का विधिवत् विस्तृत वर्णन कीजिए। अपनी पद्धति के माध्यम से अपनी मान्यताओं को पेश कर हमें संतोष दिलाइए।"

❖ श्रीजी का जवाब ❖

→ द्वारा उक्त प्रकार से पूछे जाने पर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने उन्हें यह उत्तर दिया, "हे सन्तों! हरिवंश पुराण में व्यासजी ने जो विचार राजा जन्मेजय के प्रति कहा है, उन बातों को विरोध भावना छोड़कर ध्यान से सुनिये और उस पर विचार कीजिए।"

ज. १०८- महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने सर्वप्रथम उनके सामने हरिवंश पुराण की साक्षी पेश कर उन्हें समझाया और दिखाया।

ज. १०९- उस पुराण में व्यासजी और राजा जन्मेजय के बीच हुई ब्रह्ममुनियों के प्रकटीकरण की अनहोनी बातों के विषय में अलौकिक बातें कही हैं।

स. ११०-वे विचित्र और आश्चर्यवत् बातें सुनकर किसने, किससे प्रश्न किया?

स. १११-राजा जन्मेजय को उक्त विषय में समझाते हुए किसने और क्या कहा?

ज. १११- राजा जन्मेजय को उक्त विषय में समझाते हुए व्यासजी ने →

स. ११२-पुनः राजा जन्मेजय ने व्यासजी से क्या पूछा?

स. ११३-उक्त प्रकार का प्रश्न सुनकर व्यासजी ने राजा जन्मेजय से क्या कहा?

स. ११४-वे ब्रह्ममुनि किसके सिवाय अन्य किसी की आराधना नहीं करेंगे?

स. ११५-वे ब्रह्मात्माएँ कैसी चर्चा-कथा करेंगे? पुनः उनकी चर्चा सुनकर लोग क्या करेंगे?

स. ११६-किस धाम के ब्रह्ममुनियों के प्रकटीकरण का वर्णन किसने, किसे और कैसे सुनाया?

स. ११७-उक्त बातों की पुराणों द्वारा साक्षी देकर किसने, किन्हें और क्या करने को कहा?

ज. ११०- वे विचित्र एवम् आश्चर्यवत् बातें सुनकर राजा जन्मेजय ने व्यासजी से प्रश्न किया।

→ कहा, "कलियुग में ब्रह्ममुनि प्रकट होंगे। इनका प्रकट होना सहज बात नहीं है। हे जन्मेजय! उनके अवतरण से एक अघटित घटना घटित होगी अर्थात् कभी न हुए ब्रह्ममुनि इस धरती पर प्रकट होंगे।"

ज. ११२- पुनः राजा जन्मेजय ने व्यासजी से पूछा," सनकादिकों से लेकर आज तक अनेक ऋषि-मुनि प्रकट हुए हैं। क्या वे ब्रह्ममुनि नहीं थे? क्या आप ब्रह्म के अंशरूप ब्रह्ममुनियों में से नहीं हैं?"

ज. ११३- उक्त प्रकार का प्रश्न सुनते ही व्यासजी ने राजा जन्मेजय से कहा, "हे राजन्! वे ब्रह्ममुनि किसी भी युग में पहले कभी नहीं प्रकट हुए हैं। किन्तु कलियुग में वे प्रत्यक्ष रूप में प्रकट होंगे।"

ज. ११४- वे ब्रह्ममुनि उत्तम पुरुष पूर्णब्रह्म परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी देवी-देवता की आराधना नहीं करेंगे।

ज. ११५- वे ब्रह्मात्माएँ ऐसी नवीन चर्चा करेंगे, जिसे पहले कभी कहा और सुना न गया हो। उनकी वह कथा सुनकर लोग उनकी पूजा करने लगेंगे।

ज. ११६- 'अक्षरात्परतः परः'- अक्षरातीत ब्रह्मधाम से ब्रह्ममुनियों के संसार में प्रकट होने की चर्चा व्यासजी ने अनेक प्रकार से सविस्तार राजा जन्मेजय को सुनायी।

ज. ११७- उक्त बातों की साक्षी पुराणों द्वारा देकर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने कहा, "हम उनकी साक्षी देकर चर्चा करते हैं। अतः हे धर्मज्ञ साधु-सन्तों! आप सब उस पर विचार-विवेक कीजिए।"

स. ११८-महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने हरिवंश पुराण द्वारा कौन-सी साक्षी दी? उस साक्षी में किन्हें प्रधान पुरुष के आश्रय में रहनेवाला कहा गया और किस युग में, कहाँ, क्या होने को कहा है?

ज. ११८- महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने हरिवंश पुराण द्वारा निम्नलिखित साक्षी दी। अतः -

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ब्रह्मरूपिणः ।
उत्पन्ना ये कृत युगे प्रधान पुरुषाश्रयाः ।।

→

स. ११९-"उनकी चर्चा-कथा सुनकर सारी सृष्टि के लोग उन्हें पूज्य भाव से मानेंगे।"-इसका प्रमाण क्या है? पेश करो।

स. १२०-कौन अथवा किस स्वरूप की पूजा के प्रताप से जीव सृष्टि का उद्धार होगा? पुनः इस बात की साक्षी रूप कौन-सा प्रमाण है? पेश करो।

ज. १२०- अग्रगण्य सखी इन्द्रावती स्वरूप (श्री प्राणनाथजी) की पूजा

→

स. १२१-उक्त बातों की साक्षियाँ अन्य किन-किन ग्रन्थों में प्राप्त की जा सकती है?

स. १२२-ब्रह्ममुनियों के प्रकटीकरण की साक्षी किस-किसने, कहाँ स्पष्ट रूप से कही हैं?

→ कथायोगेन तान्सर्वान पूजयिष्यन्ति मानवाः ।
यस्य पूजा प्रभावेन जीव सृष्टि (उद्धारणम्) समुद्धारः ।।

- (हरिवंश पुराण, भविष्य पर्व, अध्याय ४)।

अर्थः- प्रधान पुरुष (अक्षरातीत ब्रह्मधाम) के आश्रयभूत जो ब्रह्मरूपी मुनि कृतयुग (कलियुग) में उत्पन्न होंगे (हुए हैं), वे अभूतपूर्व होंगे। कथा योग के द्वारा सभी मनुष्य उनकी पूजा करेंगे। उस पूजा के प्रभाव से मायावी जीव सृष्टि का उद्धार होगा।

उक्त साक्षी में ब्रह्मसृष्टियों को प्रधान पुरुष अक्षरातीत परमात्मा श्री कृष्ण-अद्वैत ब्रह्म के आश्रय में रहनेवाली कहा है। वे कलियुग में भारतवर्ष के यत्रतत्र-सर्वत्र प्रकट होंगी, ऐसा कहा है।

ज. ११९- ब्रह्मसृष्टियों में अग्रगण्य इन्द्रावती स्वरूप (श्री प्राणनाथजी) की चर्चा-कथा योग के कारण मानव मात्र उनकी पूज्य भाव से पूजा करेंगे। इसका प्रमाण निम्नलिखित है। जैसे–

"कथायोगेन तान्सर्वान पूजयिष्यन्ति मानवाः"।

→ के प्रभाव से (सेवा-पूजा के पुण्य से) मायावी जीव सृष्टि का उद्धार होगा अर्थात् वे जन्म-मरण से मुक्त होंगे। पुनः इस बात की साक्षीरूप प्रमाण निम्नलिखित है। जैसे -

"यस्य पूजा प्रभावेन जीव सृष्टि (उद्धारणम्) समुद्धारः"।

ज. १२१- उक्त बातों अर्थात् ब्रह्ममुनियों के प्रकटीकरण विषयक भविष्यवाणी की विभिन्न साक्षियाँ उपनिषद् एवम् अठारह पुराणों में भी प्राप्त की जा सकती हैं।

ज. १२२- ब्रह्ममुनियों के प्रकटीकरण की साक्षी आगमभाषियों ने अपने-अपने ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से कही हैं।

स. १२३-श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने किस विषय के जिज्ञासुओं को कैसे श्रवण करने को कहा?

स. १२४-महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ब्रह्मजिज्ञासुओं को कैसे समझाने को कह रहे हैं?

स. १२५-श्रीजी साहेब की उक्त प्रकार की बातें सुनकर सभी सम्प्रदायवाले क्या सोचने लगे?

स. १२६-पुनः उन्होंने श्रीजी साहेबजी से किस ध्येय से, क्या पूछने का संगठन किया?

स. १२७-संगठन करने के पश्चात् सभी मत-मतान्तर के आचार्यों ने मिलकर श्रीजी से क्या कहा?

स. १२८-सभी मत के आचार्यों ने श्रीजी साहेबजी के आगे उनकी मान्यताओं को किस प्रकार जानने-समझने की चाहना की?

ज. १२८- सभी मत के आचार्यों ने श्रीजी स्वरूप के सामने आकर श्रीजी →

स. १२९-किसके अभिमान में चूर होकर इस समय किसने श्रीजी स्वरूप से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे?

स. १३०-पुनः सबने मिलकर श्रीजी स्वरूप से विशेष रूप से किस बात की माँग की और क्यों?

ज. १२३- श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने ब्रह्मलीला के जिज्ञासुओं-ग्रहणकर्ता अथवा ग्राहकों को भलीभाँति ध्यान से चर्चा श्रवण करने को कहा।

ज. १२४- महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ब्रह्मात्मा और ब्रह्मलीला के जिज्ञासुओं को वेद, उपनिषद् आदि की साक्षी देकर समझाने को कह रहे हैं।

ज. १२५- श्रीजी के मुख से उक्त प्रकार का आह्वान सुनकर सभी सम्प्रदायवालों ने विचार किया, "ये कहीं-किसी भी सिद्धान्त में निरुत्तर होनेवाले नहीं हैं।"

ज. १२६- पुनः उन्होंने श्रीजी साहेबजी को हराने अथवा निरुत्तर साबित करने के ध्येय से उनसे उनके धर्म-सिद्धान्त की पद्धति पूछने का संगठन किया।

ज. १२७- संगठन करने के पश्चात् सभी मत-मतान्तर के आचार्यों ने मिलकर सलाह करते हुए श्रीजी से कहा, "आप अपने सम्प्रदाय का परिचय, धाम, क्षेत्र आदि प्रमाण सहित हमारे आगे रखिये।"

→ के सम्प्रदाय की मान्यताओं के विषय में कहा, " हे स्वामीजी! आप हमारे आगे अपने सम्प्रदाय का परिचय साक्षी देकर कहिये। जिस प्रकार हम सबने अपने-अपने सम्प्रदाय का परिचय दिया, आप भी उसी प्रकार प्रसन्न चित्त होकर अपने सम्प्रदाय का परिचय दीजिए।"

ज. १२९- ज्ञान के अभिमान में चूर होकर इस समय सभी ज्ञानियों ने श्रीजी स्वरूप से विभिन्न प्रकार के प्रश्न सविस्तार पूछे।

ज. १३०- पुनः सबने मिलकर श्रीजी स्वरूप को निरुत्तर करने के ध्येय से विशेष रूप से यह माँग की, "हे स्वामीजी! आप भी अपने सम्प्रदाय की शाखा, शिखा और सूत्र को स्पष्ट कर कहिए।"

स. १३१-उन्होंने श्रीजी स्वरूप से गोत्र, इष्ट के साथ-साथ अन्य क्या-क्या पूछा?

स. १३२-पुनः उन्होंने सम्प्रदाय की शाला से लेकर तीर्थ तक में क्या-क्या पूछा?

स. १३३-उन्होंने सैद्धान्तिक ज्ञान से लेकर अन्तिम कहाँ तक पूछा?

स. १३४-उक्त प्रकार से पूछने पर श्रीजी साहेबजी ने उन्हें किस तरह और क्या कहा?

ज. १३४- उक्त प्रकार से पूछ लेने पर परम कृपालु स्वामी श्री प्राणनाथजी →

स. १३५-श्रीजी स्वरूप अब यहाँ किसका परिचय देने जा रहे हैं? वह रहस्य कैसा है?

स. १३६-कैसी चर्चा को कैसे, किस प्रकार सुनने को कहा है? पुनः सुनकर क्या करना है?

स. १३७-श्रीजी स्वरूप ने क्या नहीं करने को कहा है? अन्यथा क्या होने का सूचित किया?

स. १३८-तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने उनसे क्या स्पष्ट कर कहा?

स. १३९ कैसे होकर सुनने पर, किससे उत्पन्न भ्रामक विचार दूर हो जायेंगे, ऐसा श्रीजी स्वरूप ने उनसे कहा?

❖ निजानंद सम्प्रदाय की पद्धति ❖

स. १४०-हमें आत्मीय ज्ञान देकर परमात्मा तत्त्व का बोध करानेवाले सद्गुरु कौन हैं?

ज. १३१- उन्होंने हाथ जोड़कर आग्रहपूर्वक श्रीजी स्वरूप से गोत्र, इष्ट के साथ-साथ उनका सेवन, जाप, साधन, मंत्र, पुरी तथा देवी के प्रताप आदि के विषय में भी प्रमाण सहित स्पष्टतः पूछा।

ज. १३२- पुनः उन्होंने सम्प्रदाय की शाला से लेकर सुख विलास का स्थान, ऋषि, देवता, तीर्थ और शास्त्र आदि के विषय में पूछा।

ज. १३३- उन्होंने सैद्धान्तिक ज्ञान से लेकर कुल, फल, द्वार, निवास और सम्प्रदाय आदि के नाम तक सब कुछ विस्तार से पूछा।

→ ने उन्हें उदार भाव से कहा, " हे सन्तों! आप सब ध्यान से सुनिए !! हम आपके एक-एक प्रश्न का उत्तर देकर आपको सन्तुष्ट करते हैं।"

ज. १३५- श्रीजी स्वरूप अब यहाँ अपने सम्प्रदाय का परिचय देने जा रहे हैं, जिसका रहस्य अब तक नहीं कहा गया है।

ज. १३६- उक्त अलौकिक चर्चा को ध्यान से सुनने को कहा गया है। पुनः सुनकर उस पर विचार करने को कहा गया है।

ज. १३७- श्रीजी स्वरूप ने दोषों को ग्रहण न करने को कहा है। अन्यथा तत्त्व की बात समझ में न आ सकेगी।

ज. १३८- तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने उनसे स्पष्टतः कहा, "हम आपको श्रुति एवम् स्मृतियों की साक्षी-प्रमाण देकर समझायेंगे।"

ज. १३९- जिज्ञासु होकर सुनने पर कलियुग के प्रभाव से उत्पन्न आपके भ्रामक विचार दूर हो जायेंगे, ऐसा श्रीजी स्वरूप ने उनसे कहा।

❖ निजानंद सम्प्रदाय की पद्धति ❖

ज. १४०- हमें आत्मीय ज्ञान देकर परमात्मा तत्त्व का बोध करानेवाले परब्रह्म परमात्मा के आनन्द अंग श्री देवचन्द्रजी, जिन्हें शास्त्रादि →

→ में श्री श्याम की जोड़ी श्यामाजी स्वरूप कहा है, वे ही हमारे →

स. १४१-हमारे सम्प्रदाय का सूत्रपात कहाँ-से अथवा किससे हुआ है?

स. १४२-सूत्र-कूटस्थ अक्षर से परे कौन-सा तत्त्व है और वह कैसा है?

स. १४३-उक्त प्रकार का ज्ञान प्रदत्त करनेवाले गुरु के विषय की साक्षी कहाँ है और कौन-सी है?

ज. १४३- उक्त ज्ञानवान् सद्गुरु के विषय का साक्षीरूपी प्रमाण स्कन्द पुराणे, गुरूगीतायाम में निम्न प्रकार लिखा है। जैसे -

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्।

→

स. १४४-उक्त साक्षी-प्रमाण का भावार्थ अथवा लक्ष्यार्थ क्या है?

ज. १४४- उक्त प्रमाण के अनुसार सत + चित् + आनन्द = सच्चिदानन्द →

स. १४५-समस्त सृष्टि के सूत्रधार कौन हैं? उसके परे परात्पर रूप में कौन हैं? उक्त बातों का साक्षीरूपी प्रमाण यदि है, तो अर्थसहित पेश कीजिए।

ज. १४५- समस्त सृष्टि के सूत्रधार अक्षर ब्रह्म ही हैं। इस सूत्रधार से परे परात्पर अक्षरातीत धाम के अद्वैत ब्रह्म उत्तम पुरुष परमात्मा शिखा रूप में विराजमान हैं। इस मूल सूत्र और शिखा से परिचित ही यथार्थ वेदज्ञ, ब्रह्मज्ञानी अथवा परमहंस है। उक्त बातों का साक्षीरूपी प्रमाण निम्नलिखित है। जैसे - →

→ सद्गुरु हैं।

ज. १४१- हमारे सम्प्रदाय का सूत्रपात कूटस्थ अक्षर ब्रह्म से हुआ है। उसका धाम अक्षर धाम है।

ज. १४२- सूत्र-कूटस्थ अक्षर से परे शिखारूप में अक्षरातीत ब्रह्म हैं, जो चिन्मय, चिद्घन और अनुपम स्वरूपवाले हैं तथा आद-अनाद से विराजमान हैं।

→ एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षि रूपं,
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरु तन्नमामि।।

- (स्कन्द पुराणे, गुरूगीतायाम)।

अर्थः- ब्रह्मानन्द, परम सुख देनेवाले ज्ञान के मूर्तिबन्त स्वरूप, सुख-दुःखादि द्वन्द्वों से रहित, आकाश के समान स्वच्छ, 'तत्त्वमसि' आदि पदों का लक्ष्य, एक, नित्य, निर्मल, अचल, सदा साक्षीरूप, भावातीत, सत्, रज, तम-इन तीनों गुणों से रहित सद्गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

गुणयुक्त परमात्मा के आनन्दांश के अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी हैं। उनका मूल स्थान अक्षर परे अक्षरातीत ब्रह्मधाम है। उस धाम के अद्वैत ब्रह्म श्री कृष्ण-श्याम की जोड़ी श्री श्यामा स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी हैं।

→ यदक्षरं परं ब्रह्म तत्सूत्रमिति धारयेत्।
सूचनात्सूत्र मित्याहुः सूत्रं नाम परं पदम्।।
तत्सूत्रं विदितं येन स विप्रो वेदपारगः।।

- (ब्रह्मोपनिषद)।

अर्थः- अक्षर ब्रह्म (सत् ब्रह्म), जिनके परे अक्षरातीत उत्तम पुरुष हैं, वे ही समस्त सृष्टि के सूत्रधार हैं। इस मूल सूत्र से परिचित ही यथार्थ में वेदज्ञ, ब्रह्मज्ञानी है। परमहंस उसी अविनाशी सूत्र को धारण करते हैं।

स. १४६-यथार्थ में ब्रह्मज्ञानी कौन है? परमहंस किस सूत्र को धारण करते हैं?

ज. १४६- यथार्थ में जो उपरोक्त सूत्र-शिखारूपी अविनाशी तत्त्व को →

स. १४७-ब्राह्मणत्व के विषय में ब्रह्मज्ञानियों ने क्या कहा है? पुनः इस बात का क्या प्रमाण है?

ज. १४७- ब्राह्मणत्व के विषय में ब्रह्मज्ञानियों ने कहा है कि जिसकी ज्ञानमयी शिखा है और जिसने ज्ञानमय यज्ञोपवीत धारण किया है, उसी में सम्पूर्ण ब्राह्मणत्व है। पुनः इस बात का प्रमाण निम्न प्रकार से है। जैसे- →

स. १४८-चिद् ब्रह्म ही कौन रूप है तथा तीनों भुवनों में कौन व्याप्त है?

स. १४९-उपरोक्त विषय-वस्तु का प्रमाण क्या है और कहाँ है?

स. १५०-हमारे सम्प्रदाय में सेवन किस पुरुष का करते हैं? पुनः ब्रह्मात्माओं का गोत्र क्या है?

ज. १५०- ब्रह्मात्माएँ अक्षरातीत पुरुषोत्तम पूर्णब्रह्म परमात्मा का सेवन करती हैं। पुनः उस चिद्घन ब्रह्म के आनन्द अंग से उनका अवतरण हुआ है। इसलिए चिदानन्द ही उनका गोत्र है। इस बात का प्रमाण निम्न प्रकार से है। जैसे -

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते।।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ।

– (गीता-अ.१५/१६-१७)। →

→ धारण करता है, उससे पूर्णरूपेण परिचित है, वही परमहंस, ब्रह्मज्ञानी है। परमहंस अविनाशी तत्त्वरूपी सूत्र (शिखा) को धारण करते हैं।

→ शिखा ज्ञानमयी यस्य उपवीतं च तन्मयम् ।
ब्राह्मण्यं सकलं तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः ।।
चिदेवपञ्च भूतानि चिदेव भुवनत्रयम् ।

– (ब्रह्मोपनिषद्)।

अर्थः- जिसकी ज्ञानमयी शिखा है और ज्ञानमय यज्ञोपवीत है, उसी में सम्पूर्ण ब्राह्मणत्व है, ऐसा ब्रह्मज्ञानियों ने कहा है। चित् ब्रह्म ही पंचभूत रूप है तथा चित् ब्रह्म ही तीनों भुवनों में व्याप्त है।

ज. १४८- चिद्-चिद्घन ब्रह्म ही उत्तम पुरुष परमात्मा अद्वैत ब्रह्म हैं। तीनों भुवनों में उन ब्रह्म की सत्ता व्याप्त है।

ज. १४९- उपरोक्त विषय-वस्तु का प्रमाण जवाब नं. १४३,१४५ और १४७ में अंकित किये गये श्लोक हैं। उक्त साक्षियाँ स्कन्द पुराण, गुरूगीतायाम और ब्रह्मोपनिषद में हैं।

→ अर्थः- जगत् में क्षर और अक्षर दो ही पुरुष प्रसिद्ध हैं। सम्पूर्ण सृष्टि-जगत् के प्राणियों को 'क्षर' कहते हैं और कूटस्थ अविनाशी ब्रह्म को अक्षर कहते हैं। इन दोनों से उत्तम, इनसे न्यारा एक पुरुष है, जो इन दोनों पर नियन्त्रण करता है और परमात्मा कहलाता है।

पुनश्च :-

अनादिमादि चिद् रूपं चिदानन्दं परं विभुः।
वृन्दावनेश्वरं ध्यायेत त्रिगुणस्यैक कारणम् ।।

– (वराह संहिता)।

→

→ अर्थः जो अनादि हैं, चिद्घन-चिदानन्द स्वरूप हैं। परम विभु →

स. १५१-हम इष्ट किसे मानते हैं और मानने की साधना कौन-सी अथवा कैसी है? इस बात को प्रमाणित करनेवाला क्या कोई प्रमाण है? यदि है, तो पेश कीजिए।

ज. १५१- परमकिशोरी श्यामाजी को ही हम अपनी इष्ट-आराध्या मानते हैं। हम परमात्मा को पतिरूप में अनन्य भाव से प्रेम लक्षणा भक्ति द्वारा प्राप्त करने का एक मात्र साधन मानते हैं। इस बात को प्रमाणित करनेवाली साक्षी निम्नलिखित है। जैसे -

सिद्ध रूपाऽसिचाराध्या साश्यामा जीवनं मम्।
यः स्मृत्वा भावयन्ति त्वां तैरहं भावितः सदा।।
तत्र मे वास्तवं रूपं यत्र यत्र भवादृशी ।
ममेष्टं च ममात्मा त्वं राधैव राध्यते मया ।।

- (पुराण संहिता)।

अर्थः- स्वयंसिद्ध स्वरूपा राधा देवी आप मेरी आराध्या हैं। आप ही मेरे जीव की जीवन हैं। जो लोग भक्ति-भावना से →

स. १५२-उत्तम पुरुष कौन हैं और कहाँ हैं? इस बात का क्या प्रमाण है?

स. १५३-उक्त बात का खुलासा साक्षी-प्रमाण के अर्थसहित स्पष्टरूपेण कीजिए।

स. १५४-हमारा गोत्र क्या है, इष्ट कौन हैं और हम इष्ट की साधना कैसे करते हैं?

→ अर्थात् सबके स्वामी हैं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सबके कारण रूप हैं। उन वृन्दावननाथ श्री कृष्ण का मैं ध्यान करता हूँ।

→ आपकी आराधना करते हैं, उनका मैं अनुगृहीत हूँ। मैं आप में ही अपने वास्तविक स्वरूप के दर्शन करता हूँ। मेरी इष्टरूप तथा आत्म-स्वरूप आप राधिकाजी हैं। इसलिए मैं सदा आपकी आराधना करता हूँ। पुनः-

"नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया"
"भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन"

- (गीता, अ.११/५३-५४)।

अर्थः- श्री कृष्णजी कहते हैं, "हे अर्जुन! मैं न तो वेदपाठ के द्वारा, न तपस्या से, न दान देने से और न ही यज्ञ करने से प्राप्त होता हूँ। मैं तो केवल अनन्य भक्ति से ही प्राप्त हो सकता हूँ।"

अतः अक्षरातीत अद्वैत उत्तम पुरुष सहित श्री श्यामाजी हमारे इष्ट हैं और हम पतिव्रता स्त्री जैसे अपने पति को मानती हैं, उसी प्रकार अनन्य सती भाव से पतिव्रता साधन द्वारा इष्ट की आराधना करते हैं।

ज. १५२- उत्तम पुरुष अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म परमात्मा हैं। वे अक्षरातीत ब्रह्मधाम में विराजमान हैं। इन बातों का प्रमाण गीता, पुराण संहिता आदि ग्रंथों में उपलब्ध है।

ज. १५३- उक्त बात की साक्षी-प्रमाण का अर्थसहित स्पष्टतः खुलासा जवाब नं. १५० और १५१ में किया गया है।

ज. १५४- हमारा गोत्र चिदानन्द है। पुनः हमारी इष्ट परमकिशोरी श्री श्यामाजी हैं और हम सती स्त्री की तरह पतिव्रता भाव से अपने इष्ट की साधना करते हैं।

स. १५५-निजानन्द सिद्धान्त में परमात्मा को किस रूप में, किस भाव से और कौन-सी भक्ति द्वारा माना जाता है?

स. १५६-जगत् में कितने पुरुष प्रसिद्ध हैं? कौन-कौन पुरुष कैसे-कैसे हैं?

स. १५७-उन दोनों से न्यारे कौन पुरुष हैं? वे पुरुष कैसे हैं और उक्त दोनों पुरुषों को क्या करते हैं?

स. १५८-अक्षरातीत उत्तम पुरुष कैसे हैं? कैसे स्वरूप में हैं?

स. १५९-कौन किसके कारणरूप हैं? उन वृन्दावननाथ का क्या करना चाहिए?

स. १६०-उक्त पुरुषों के विषय-वस्तु को सिद्ध करने के लिए क्या कोई प्रमाण है? यदि है, तो पेश कीजिए।

स. १६१-हमारी आराध्या कौन हैं? वे हमारे जीव के क्या हैं?

स. १६२-जो लोग श्री राधा देवी की आराधना कैसे करते हैं, उनका मैं क्या हूँ?

स. १६३-मैं आप में ही अपने कैसे स्वरूप के दर्शन करता हूँ?

ज. १५५- निजानन्द सिद्धान्त में अपने इष्ट परमात्मा को आत्मा के पति के रूप में सती भाव से माना जाता है। पुनः हम अपने इष्ट को अनन्य परा दशधा प्रेम लक्षणा भक्ति मार्गरूपी साधन द्वारा मानते हैं।

ज. १५६- जगत् में दो पुरुष प्रसिद्ध हैं। जैसे-एक हैं क्षर पुरुष-आदिनारायण और दूसरे अक्षर पुरुष कूटस्थ-सृष्टिकर्ता। नाशवन्त पुरुष का नाम है-क्षर और अविनाशी सृष्टिकर्ता पुरुष का नाम है-अक्षर।

ज. १५७- उन दोनों पुरुषों से न्यारे-अलग हैं-उत्तम पुरुष। उन्हें परमात्मा कहा जाता है। वे दोनों पुरुषों पर नियन्त्रण करते हैं।

ज. १५८- अक्षरातीत उत्तम पुरुष आत्मा स्वरूप हैं और आत्मीय लीला करते हैं। अक्षरातीत उत्तम पुरुष चिद्घन चिदानन्द स्वरूप में हैं तथा वे ही परम विभु सबके स्वामी हैं।

ज. १५९- वे अक्षरातीत उत्तम पुरुष श्री कृष्ण ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि सबके कारणरूप हैं। उन वृन्दावननाथ श्री कृष्ण का ध्यान करना चाहिए।

ज. १६०- उक्त पुरुषों के विषय-वस्तु को सिद्ध-प्रमाणित करनेवाला प्रमाण जवाब नं.१५० में देखिए।

ज. १६१- स्वयंसिद्धरूपा राधा देवी हमारी आराध्या हैं। वे ही हमारे जीव की जीवन हैं।

ज. १६२- जो लोग श्री राधा देवी की आराधना भक्ति-भावना से करते हैं, मैं उनका अनुगृहीत हूँ।

ज. १६३- मैं आप में ही अपने वास्तविक स्वरूप के दर्शन करता हूँ। मेरी इष्टरूप तथा आत्म-स्वरूप आप राधिकाजी हैं। इसलिए मैं सदा आपकी आराधना करता हूँ।

स. १६४-श्री कृष्णजी किससे कहते हैं कि वे वेदपाठ आदि साधनों द्वारा प्राप्त नहीं होते हैं?

स. १६५-मैं तो कौन-सी भक्ति मात्र से ही प्राप्त हो सकता हूँ, ऐसा श्री कृष्णजी ने अर्जुन से कहा?

स. १६६-उक्त बातें कहाँ-किस धर्मग्रन्थ में हैं? उक्त बातों को प्रमाणित करनेवाला श्लोक पेश कीजिए।

स. १६७-हम कैसे स्वरूप का जाप करते हैं? पुनः हमारे सम्प्रदाय का दीक्षा मंत्र क्या है और कैसे गुण से युक्त एवम् शक्ति से संपन्न है?

स. १६८-हम कौन-सी देवी को मानते हैं? पुनः पुरी अथवा धाम किस स्थान को मानते हैं?

स. १६९-कौन रूप-लावण्य से युक्त हैं?

स. १७०-उक्त स्वरूप किस पर विराजमान हैं? हम किस जोड़ी का स्मरण करते हैं?

स. १७१-उक्त विषय-वस्तुओं को प्रमाणित करनेवाला क्या कोई प्रमाण है? यदि है, तो अर्थसहित पेश कीजिए।

ज. १७१- उक्त विषय-वस्तुओं को प्रमाणित करनेवाला प्रमाण निम्न प्रकार है। जैसेः-

राधया सह श्रीकृष्णं युगलं सिंहासने स्थितम् ।
पूर्वोक्तं रूप लावण्यं दिव्य भूषा श्रृगम्बरम् ।।

- (वराह संहिता)।

अर्थः- रूप और लावण्य से सम्पन्न दिव्य वेशभूषा से युक्त →

ज. १६४- श्री कृष्णजी अर्जुन को माध्यम बनाकर सृष्टि की सर्वात्माओं से कहते हैं, "हे अर्जुन! मैं न तो वेदपाठ के द्वारा, न तपस्या से, न दान देने से और न ही यज्ञ करने से प्राप्त होता हूँ।"

ज. १६५- मैं तो केवल अनन्य भक्ति द्वारा ही प्राप्त हो सकता हूँ, ऐसा श्री कृष्णजी ने अर्जुन से कहा।

ज. १६६- उक्त बातें श्रीमद्भागवत गीता में हैं। उक्त बातों को प्रमाणित करनेवाला श्लोक जवाब नं. १५१ में है।

ज. १६७- हम युगलकिशोर श्री राजश्यामाजी का जाप करते हैं। पुनः हमारे सम्प्रदाय का दीक्षा मंत्र तारतम मंत्र है, जो सर्वपापनाशक और मोक्षप्रद है।

ज. १६८- हम तो ब्रह्मज्ञान करानेवाली ब्रह्मविद्या को ही देवी मानते हैं। पुनः श्री ५ नवतनपुरी धाम को ही हम अपनी पुरी अथवा धाम मानते हैं।

ज. १६९- श्री राधिका महारानी रूप और लावण्य से युक्त दिव्य वेश-भूषा से सम्पन्न हैं।

ज. १७०- उक्त स्वरूप सुन्दर सिंहासन पर विराजमान हैं। श्री राधा सहित श्री कृष्ण की किशोर युगलजोड़ी का हम स्मरण करते हैं।

→तथा सिंहासन पर विराजमान श्री राधा सहित श्री कृष्ण की किशोर युगलजोड़ी का स्मरण करता हूँ।

पुनश्च :-

स्वकृत विचित्रयोनिषु विशन्निव हेतुतया ।
तरतमतश्चकास्स्यनलवत् स्वकृतानुकृतिः ।।
अथ वितथा स्वमूष्ववितथं तव धाम समं ।
विरजधियोऽन्वयन्त्यभिविपण्यव एकरसम् ।।

- (भागवत, १०-८७-१९)। →

→ अर्थः- हे परमात्मन् ! कार्य-कारण, स्वकृत-विकृत योनियों में जड़-चेतन नानारूप प्राणियों में प्रविष्ट आप अग्नि की भाँति अर्थात् जैसे एक ही अग्नि काष्ठ के आकार भेद से अनेक रूपों में कहीं उत्तम, तो कहीं अधम, तो कहीं विचित्र रूप में दृष्टिगोचर होती है, उसी प्रकार स्वनिर्मित अनेक आकृतियों में अन्तर्यामी रूप से नाना भाँति सब प्रकार से आप ही भास रहे हैं। परन्तु इस तत्त्व को तारतम मंत्र से ही जाना जा सकता है। हे प्रभु! मिथ्याभूत नश्वर इन नाना स्वरूपों के सिमट जाने पर भी अति अविनाशी एकरस रहनेवाले तुम्हारे धाम को कोई निर्मल →

स. १७२-कार्य-कारणवश कैसी योनियों में और कैसे-कैसे रूपों में कौन, किस प्रकार प्रविष्ट हैं?

स. १७३-एक ही काष्ठ के आकार भेद की तरह कौन अनेक रूप में दृष्टिगोचर होते हैं?

स. १७४-किसमें, किस-किस रूप में, किस प्रकार से, कौन भासते हैं?

स. १७५-उक्त प्रकार की बातें किस मंत्राधार ज्ञान से ही समझी जा सकती हैं?

स. १७६-मिथ्याभूत नश्वर किसके सिमट जाने पर भी कौन रहता है?

स. १७७-किसके, कैसे धाम को, कैसी बुद्धिवाले ही जानते हैं और किस तरह प्राप्त करते हैं?

→ बुद्धिवाले ही जानते हैं और स्तुति कर प्राप्त होते हैं।

पुनः-

ब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि सर्वज्ञानमनुत्तमम् ।
यत्रोत्पत्तिलयं चैव ब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ।।

- (ब्रह्मविद्योपनिषद्)।

अर्थः- सर्व ज्ञानों से उत्तम ज्ञान ब्रह्मज्ञान मैं कहता हूँ । जिस ब्रह्मविद्या में ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि का उत्पत्ति-लय होता है, जिस सर्वोत्तम ब्रह्मविद्या से ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि का आविर्भाव एवम् तिरोभाव होता है।

ज. १७२- कार्य-कारणवश स्वकृत-विकृत योनियों में जड़-चेतन नाना रूप प्राणियों में वे परमात्मा-प्रभु अग्नि की भाँति प्रविष्ट हैं।

ज. १७३- वे प्रभु-दिव्य परमात्मा जैसे एक ही अग्नि काष्ठ के आकार भेद से अनेक रूप में कहीं उत्तम, तो कहीं अधम, तो कहीं विचित्र रूप में दृष्टिगोचर होती है। उसी प्रकार वे ब्रह्म अनेकरूप में दृष्टिगोचर होते हैं ।

ज. १७४- स्वनिर्मित अनेक आकृतियों में अन्तर्यामी रूप से नाना-भाँति, सब प्रकार से वे परमात्मा ही भासते हैं।

ज. १७५- पूर्वोक्त तत्त्वों को तारतम मंत्राधार ज्ञान से ही जाना-समझा जा सकता है, अन्यथा समझ नहीं आती है।

ज. १७६- मिथ्याभूत नश्वर उक्त नाना स्वरूपों के सिमट जाने पर भी अविनाशी एकरस स्वरूप पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री कृष्ण ही रहते हैं।

ज. १७७- उक्त वर्णित स्वरूप के अविनाशी धाम को कोई निर्मल बुद्धिवाले ही जानते हैं और स्तुति कर प्राप्त करते हैं।

स. १७८-उक्तकथित गूढ़ातिगूढ़ रहस्यमय तत्त्व विषयक प्रमाण कौन-सा है और कहाँ है?

स. १७९-सर्व ज्ञान से कैसे ज्ञान का वर्णन किया है? उस ज्ञान में किस-किस का क्या होता है? पुनः किस-किस का आविर्भाव एवम् तिरोभाव होता है?

स. १८०-हमारे पक्ष कितने हैं और वे किस रूप में हैं? हमारे धर्म-सिद्धान्त की शाला कौन-सी है?

स. १८१-हमारे सिद्धान्त के भक्तजनों का क्षेत्र कौन-सा है, जिनके प्रताप से महापापों का भी नाश हो जाता है?

स. १८२-हमारे निजानन्द सिद्धान्त में सुख विलास का स्थान किसे माना गया है?

स. १८३-पुनः उक्त सिद्धान्त की मान्यताओं में ऋषि के रूप में किन्हें मान्यता दी है? क्यों?

स. १८४-हमारे निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में किस वेद और तीर्थ की मान्यता है?

स. १८५-हम किस शास्त्र का ज्ञान श्रवण करते हैं? पुनः क्यों?

ज. १८५- हम अपने इष्ट की लीला का वर्णन करनेवाले ग्रंथ श्रीमद्भागवत →

स. १८६-हमारे धर्म-सिद्धान्त के भक्तजनों के कुल का मूल क्या है और धर्म-सिद्धान्त की उक्त मान्यताओं द्वारा हमें किस फल की प्राप्ति होती है?

ज. १७८- उक्तकथित गूढ़ातिगूढ़ रहस्यमय तत्त्व विषयक प्रमाण जवाब नं.१७१ में है और श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध के ८७ वें अध्याय के १९ वें श्लोक में है।

ज. १७९- सर्व ज्ञान से उत्तम ब्रह्मज्ञान का वर्णन किया है, जिस ब्रह्मविद्या में ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि का उत्पत्ति-लय होता है। पुनः जिस सर्वोत्तम ब्रह्मविद्या से ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि का आविर्भाव एवम् तिरोभाव होता है।

ज. १८०- हमारे पक्ष १०८ हैं और वे आत्मा को परमात्मा (इष्ट) के चरणों तक पहुँचाने की ज्ञानरूपी सीढ़ियाँ हैं। हमारे धर्म-सिद्धान्त की शाला गोलोक है।

ज. १८१- हमारे धर्म-सिद्धान्त के भक्तजनों की आत्मा का क्षेत्र हमारे श्री सद्गुरु के चरण हैं, जिनके प्रताप से महापापों का भी नाश हो जाता है।

ज. १८२- हमारे श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में अखण्ड नित्य वृन्दावन को सुख विलास का स्थान माना गया है।

ज. १८३- हमारे धर्म-सिद्धान्त की मान्यताओं में महाविष्णु को ऋषि के रूप में मान्यता दी है क्योंकि हम महाविष्णु-आदिनारायण की सृष्टि अथवा ब्रह्माण्डरूपी राज्य में खेल देखने आये हैं।

ज. १८४- हमारे निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में स्वसंवेद की मान्यता है और हम श्री यमुनाजी को तीर्थ मानते हैं।

→ द्वारा ज्ञान श्रवण करते हैं क्योंकि उसमें ब्रह्मलीला-व्रज और रास का वर्णन है, जिस लीलाज्ञान से हमारी बुद्धि जागृत होती है।

ज. १८५- हमारे धर्म-सिद्धान्त के भक्तजनों की आत्माओं के कुल का मूल आनन्द है क्योंकि निजानन्द सम्प्रदाय का उद्गम नित्यानन्द स्वरूप श्री श्यामाजी से हुआ है। पुनः धर्म-सिद्धान्त →

→ की उक्त मान्यताओं द्वारा आत्मा का कल्याण होता है और →

स. १८७-हमारे सिद्धान्त की आत्माओं का मुक्तिधाम कहाँ है और निवास स्थान कहाँ है?

स. १८८-हमारे सम्प्रदाय का नाम क्या है? पुनः इस सम्प्रदाय का प्रकटीकरण किनके द्वारा हुआ है?

स. १८९-किनकी कृपा-दया से हमें इस सम्प्रदाय का परमतत्त्व-ज्ञान प्राप्त हुआ है?

स. १९०-किनके चरण-प्रताप से हम उस अक्षरातीत धाम-द्वार में प्रवेश करते हैं?

स. १९१-उक्त पद्धति के मान्यताओं के प्रकट होने की साक्षी किस शास्त्र में है?

ज. १९१- उक्त पद्धति के मान्यताओं के प्रकट होने की साक्षी कैलासवासी →

स. १९२-हरिद्वार स्थित कुम्भ के मेले में किसने, किस-किससे, कैसी चर्चा की?

स. १९३-अपनी लौकिक और पारलौकिक सभी घोषणाओं को सिद्ध करने हेतु किसने, किसे सम्मत साक्षियाँ दीं?

स. १९४-कौन-से समय में धूमकेतु (पुच्छल तारा) दिखाई दिया? पुनः वह वर्ष कितने महीनों का था?

➞ अखण्ड आनन्द विहाररूपी फल की प्राप्ति होती है।

ज. १८७- हमारे सिद्धान्त की आत्माओं का मुक्तिधाम दिव्य ब्रह्मपुर है तथा पूर्णब्रह्म अक्षरातीत का घर-परमधाम ही हमारा निवास स्थान है।

ज. १८८- हमारे सम्प्रदाय का नाम *"निजानन्द सम्प्रदाय"* है। पुनः इस सम्प्रदाय का प्रकटीकरण सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा हुआ है।

ज. १८९- निजानन्द स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की दया-कृपा द्वारा ही हमें इस सम्प्रदाय का परमतत्त्व-ज्ञान प्राप्त हुआ है।

ज. १९०- निजानन्द स्वरूप सद्गुरु के चरण-प्रताप से हम उस अक्षरातीत ब्रह्मधाम के द्वार में प्रवेश करते हैं।

➞ महादेवजी के "माहेश्वर तन्त्र" नामक ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से वर्णित है। हमारे सद्गुरु को प्राप्त "निजानन्द" पदवी भी महादेवजी द्वारा रचित माहेश्वर तन्त्र द्वारा ही प्रमाणित है। उनके द्वारा कहे हुए भविष्य वचन अभी यहाँ जाहिर हुए हैं।

ज. १९२- उपरोक्त प्रकार से हरिद्वार स्थित कुम्भ के मेले में विभिन्न सम्प्रदाय के आचार्यों से श्रीजी साहेब ने महती चर्चा की।

ज. १९३- हरिद्वार कुम्भ के मेले में श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने अपनी लौकिक और पारलौकिक सभी घोषणाओं को सिद्ध करने के लिए वेद, पुराण, शास्त्र, उपनिषद् आदि से सम्मत साक्षियाँ दीं।

ज. १९४- वि. सं.१७३५ में धूमकेतु (पुच्छल तारा) दिखाई दिया। पुनः उस वर्ष में एक मास कम था अर्थात् वह वर्ष ग्यारह महीनों का था।

स. १९५-उस समय संसार के प्रायः सभी लोग कैसी अवस्था में थे?

स. १९६-संसार के समस्त धर्मग्रन्थों में क्या घोषणा है? कैसे समय में, कैसे अवतार प्रकट होकर क्या चलायेंगे?

स. १९७-किस वाणी को सभी लोग पढ़ते रहे, किन्तु कैसी बुद्धि के कारण क्या हुआ?

स. १९८-इसी साल कितने वि.सं. से कौन-सा शाका प्रारम्भ होने को कहा गया था?

स. १९९-संसार के कैसे-कैसे सम्प्रदायों के आचार्यों से शास्त्रार्थ कर किसने, क्या प्राप्त की?

स. २००-किसकी आज्ञा से उपस्थित जनसमूह के बीच कार्य-कारणवश किसका विस्तार किया?

स. २०१-उक्त प्रकार हरिद्वार के मेले में क्या देखने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने कहाँ जाने का विचार किया?

स. २०२-कहाँ स्थित, किसकी हवेली में सुन्दरसाथ को छोड़कर कौन,कहाँ आये थे?

स. २०३-पुनः कहाँ से चलकर श्रीजी स्वरूप फिर दिल्ली पहुँचे और किनसे मिले?

स. २०४-इस समय श्री प्राणनाथजी की सेवा में हमेशा कौन रहते थे?

ज. १९५- उस समय संसार के बुद्धिजीवी लोगों सहित प्रायः सम्पूर्ण लोग अज्ञानपूर्ण अवस्था में अचेत-से थे।

ज. १९६- संसार के समस्त धर्मग्रन्थों में भविष्यवाणी के रूप में यह घोषणा है कि उक्त वर्णित समय में ही विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार प्रकट होकर शाका चलायेंगे।

ज. १९७- उक्त प्रकार की घोषणायुक्त भविष्यवाणी को सभी लोग पढ़ते रहे, किन्तु भ्रमित बुद्धि के कारण भूले रहे।

ज. १९८- इसी वर्ष वि.सं.१७३५ और शालीवाहन शाका १६०० पूर्ण से विजियाभिनन्द बुद्धजी का शाका प्रारम्भ होने को कहा था।

ज. १९९- संसार के प्रमुख प्रचलित सम्प्रदायों के आचार्यों से शास्त्रार्थ कर श्रीजी ने विजय प्राप्त की।

ज. २००- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म श्री राजजी की आज्ञा से उपस्थित जनसमूह के बीच विजय प्राप्त कर कार्य-कारणवश सत्य धर्म का विस्तार किया।

ज. २०१- उक्त प्रकार हरिद्वार के कुम्भ मेले में विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों का खेल-तमाशा देखने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने दिल्ली जाने का विचार किया।

ज. २०२- दिल्ली स्थित दाउद पाण्डे की हवेली में सुन्दरसाथ को छोड़कर श्रीजी साहेबजी हरिद्वार के कुम्भ मेले में आये थे।

ज. २०३- हरिद्वार में धर्म-विजय प्राप्त कर श्रीजी स्वरूप पुनः हरिद्वार से दिल्ली आये और साथियों से मिले।

ज. २०४- इस समय श्री प्राणनाथजी की सेवा में हमेशा गरीबदासजी रहते थे।

स. २०५-किन्हें, किसने और कौन-सी जिम्मेदारी प्रदान की थी? उन्हें श्रीजी अपने श्री मुख से और क्या कहते थे?

स. २०६-किसके पास संदेश पहुँचाने की आज्ञा श्रीजी ने किसे और कब दी थी?

ज. २०६- हरिद्वार जाने के पूर्व श्री प्राणनाथजी मोमिनों के साथ जिस →

स. २०७-पुनः उक्त कार्य को कुछ समय के लिए क्या किया गया था? अब पुनः क्या करने की आज्ञा हुई?

स. २०८-उक्त कार्य के लिए उत्सुकतापूर्वक कौन कदम बढ़ाते थे?

ज. २०८- जब श्रीजी साहेब द्वारा उपरोक्त कार्य को पुनः शुरूआत करने →

❖ औरंगजेब को पैगाम ❖

स. १- हरिद्वार से निष्कलंकबुद्धावतार, महाप्रभु श्री प्राणनाथजी दिल्ली आकर किसकी हवेली में स्थित साथियों से मिले?

स. २- श्री प्राणनाथजी ने हरिद्वार में कितने समय तक रहने के पश्चात् पुनः दिल्ली आकर सुन्दरसाथ को सहारा दिया?

स. ३- कहाँ बैठकर श्री प्राणनाथजी ने महिलाओं तथा अन्य सीधे सादे बाल तथा वृद्धों को सुरक्षित स्थान में रखकर कार्य करने का परामर्श किया?

ज. ३- दिल्ली स्थित दाउद पाण्डे की हवेली में बैठकर श्री प्राणनाथजी →

ज. २०५- गरीबदास भाई को श्रीजी ने खानसामा की जिम्मेदारी प्रदान की थी। श्रीजी उन्हें अपने श्रीमुख से दीवान भी कहते थे।

→ औरंगजेब बादशाह को संदेश पहुँचाने के कार्य की तैयारी कर रहे थे, उसी बादशाह के पास संदेश पहुँचाने की आज्ञा लालदासजी को श्रीजी ने हरिद्वार जाने से पहले दी थी।

ज. २०७- पुनः उक्त कार्य को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया था। अब पुनः उक्त शेष रहे कार्य को आगे बढ़ाने की आज्ञा हुई।

→ की आज्ञा प्राप्त हुई, तब श्रीजी की आज्ञा पाकर इस कार्य के प्रति कदम आगे बढ़ाने के लिए श्री लालदासजी सदैव ही उत्सुक रहते थे।

- (प्रकरण ३७, सवाल-जवाब नं. २०८, कुल सं. १६६४+२०८ =१८७२)।

❖ औरंगजेब को पैगाम ❖

ज. १- महामति श्री प्राणनाथजी हरिद्वार से निष्कलंकबुद्धावतार साबित होकर धर्म-विजय प्राप्त कर दिल्ली आये और दाउद पाण्डे की हवेली में स्थित साथियों से मिले।

ज. २- महामति श्री प्राणनाथजी ने हरिद्वार में चार मास रहकर पुनः दिल्ली आकर महान् धर्म-अभियान में सुन्दरसाथ को सहारा दिया।

→ ने सुन्दरसाथ से महिलाओं सहित सीधे सादे और बाल तथा वृद्धों के रहने के लिए एक सुरक्षित स्थान की व्यवस्था करने का एवम् अकेले पुरुष वर्ग सहित स्वतंत्र होकर औरंगजेब से धर्मयुद्ध करने का परामर्श किया।

स. ४- अब इसके आगे कौन और कैसा अभियान चलाने की तैयारियाँ कर रहे हैं?

ज. ४ - अब इसके आगे श्रीजी स्वरूप महिलाओं एवम् अशक्त जनों को →

स. ५- उपरोक्त समस्त लोगों को लेकर श्रीजी स्वरूप दिल्ली से कहाँ चले और वहाँ उन्हें किस प्रकार रखा?

स. ६- अनूप शहर का चौधरी कौन था? वह श्रीजी के दर्शनार्थ कितनी बार आया?

स. ७- उसने श्रीजी को क्या भेंट किया? उसने श्रीजी स्वरूप की किस तरह पहचान की? क्या वह श्रीजी स्वरूप के वास्तविक स्वरूप को पहचान सका?

स. ८- श्रीजी स्वरूप अनूप शहर से पुनः दिल्ली आकर कहाँ ठहरे और वहाँ के सुन्दरसाथ से कैसी सलाह-मशविरा की?

स. ९- श्रीजी स्वरूप के अनूप शहर से वापस आने का समाचार सुनते ही दिल्ली के सुन्दरसाथ किस तरह श्रीजी स्वरूप से मिलने आए?

स. १०-यहाँ दिल्ली में एकत्रित सुन्दरसाथ के बीच बैठकर श्रीजी ने किसे संदेश पहुँचाने की योजना बनायी?

स. ११-शाहगंज से श्री प्राणनाथजी ने किसे-कहाँ पत्र लिखकर वह पत्र पहुँचाने के लिए आदमी भेजा?

→ सुरक्षित स्थान में रखकर पुरुष वर्ग को साथ लेकर औरंगजेब तक संदेश पहुँचाने के लिए क्या-क्या रास्ता निकालना पड़ेगा, किसी भी तरह से धर्म-अभियान की योजना तय करने की तैयारियाँ कर रहे हैं।

ज. ५- उक्त प्रकार से विचार-विमर्श कर समस्त महिला वर्ग को साथ लेकर श्रीजी स्वरूप दिल्ली से अनूप शहर चले और वहाँ एक हवेली लेकर महिला सुन्दरसाथ के रहने का प्रबन्ध कर दिया।

ज. ६- अनूप शहर का चौधरी एक पाठक था। वह दो दिन श्रीजी के दर्शनार्थ आया और उससे श्रीजी ने चर्चा भी की।

ज. ७- उसने श्रीजी स्वरूप को गुलाब के इत्र की शीशी भेंट की। उसे स्वामीजी के स्वरूप की ऊपरी पहचान थी। श्रीजी की अन्तरात्मा को वह परख नहीं सका।

ज. ८- उक्त प्रकार से सुन्दरसाथ को अनूप शहर में ठहराकर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी पुनः दिल्ली आये। दिल्ली के शाहगंज में ठहरकर उन्होंने वहाँ के सुन्दरसाथ से सलाह-मशविरा की कि अब आगे का कार्यक्रम किस प्रकार आगे बढ़ाना है?

ज. ९- श्रीजी साहेब के अनूप शहर से दिल्ली आने का समाचार सुनते ही दिल्ली के सुन्दरसाथ श्रीजी के दर्शनार्थ भाग-भागकर आने लगे।

ज. १०- दिल्ली में एकत्रित वहाँ के स्थायी सुन्दरसाथ के बीच बैठकर स्वामी श्री प्राणनाथजी ने बादशाह औरंगजेब तक सन्देश पहुँचाने की योजना बनायी।

ज. ११- दिल्ली स्थित शाहगंज की हवेली से महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने एक पत्र श्री नवतनपुरी गादीपति श्री बिहारीजी को लिखा और वह पत्र पहुँचाने के लिए एक साथी को भेज दिया।

स. १२-उस पत्र में श्रीजी स्वरूप ने कहाँ से कहाँ तक का अथवा किस विषय का समाचार लिखा था?

स. १३-पुनः श्री प्राणनाथजी शाहगंज छोड़कर कहाँ आये? वहाँ सुन्दरसाथ से मिलकर किसे लिखे हुए पत्र पर विचार-विमर्श किया?

स. १४-किसे बुलाकर सनंध वाणी सुनायी गयी? उसमें किसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी?

स. १५-नबी और नारायण की तुलना किए गए प्रकरण को सुनते ही आशाजीत भाई को क्या हुआ?

स. १६-वह प्रकरण सुनकर आशाजीत भाई ने श्रीजी स्वरूप के आगे क्या विचार प्रकट किया?

स. १७-आशाजीत भाई ने श्री प्राणनाथजी को बिना सिर के आदमी क्यों कहा अथवा इसका क्या कारण है?

स. १८-आशाजीत भाई श्री प्राणनाथजी की तैयारियाँ देखकर डरते-डरते क्या कहते हुए भाग गए?

ज. १८- आशाजीत भाई श्री प्राणनाथजी की तैयारियाँ देखकर कहने लगे, →

स. १९-श्रीजी साहेब आशाजीत भाई को छोड़कर पुनः क्या विचार करने लगे?

ज. १९- आशाजीत भाई का उक्त हाल देखकर श्रीजी स्वरूप आशाजीत →

ज. १२- उस पत्र में श्रीजी साहेब ने सूरत से लेकर आज तक का धर्म-अभियान विषयक समस्त समाचार सविस्तार लिखा था।

ज. १३- पुनः शाहगंज की हवेली छोड़कर श्री प्राणनाथजी लाल दरवाजे की हवेली में आ गये और वहाँ समस्त सुन्दरसाथ से मिलकर औरंगजेब को लिखे गये पत्र पर विचार-विमर्श किया।

ज. १४- आशाजीत भाई को बुलाकर सनंध वाणी सुनायी गयी। उस वाणी में परमात्मा के कृपापात्र मुहम्मद साहेब की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई थी।

ज. १५- सनंध वाणी में आए नबी और नारायण की तुलना किए गए प्रकरण को सुनते ही आशाजीत भाई का विश्वास डोल गया।

ज. १६- वह प्रकरण सुनने के पश्चात् आशाजीत भाई ने श्रीजी के आगे कहा, "आपके यहाँ अब हिन्दू पक्ष की कोई विशेषता नहीं रही। यहाँ तो इसलाम पक्ष को ही अधिक महत्त्व दिया जा रहा है।"

ज. १७- औरंगजेब जैसे क्रूर मुगल शासक के राज्य में श्री प्राणनाथजी को बेधड़क होकर कमर बाँधकर धर्मयुद्ध करते देखकर आशाजीत भाई ने श्री प्राणनाथजी को बिना सिर के आदमी कहा।

→ "अरे ! एक तो औरंगजेब का निरंकुश राज्य!! उस पर भी आप शराअ के कट्टर राज्याधिकारियों से लड़ने को तैयार हुए? यह देखकर मुझे तो चैन ही नहीं पड़ रहा है।" ऐसा कहते हुए डर के मारे भाग गये।

→ भाई को छोड़कर अब अन्य सुन्दरसाथ के मध्य बैठकर इस सम्बन्ध में उनसे विचार-विमर्श करने लगे कि अब आगे क्या किया जाय?

स. २०-वहाँ के सुन्दरसाथ से श्रीजी ने क्या पूछा? उस व्यक्ति द्वारा श्रीजी क्या करवाना चाहते थे?

स. २१-कौन हमारा संदेश कहाँ तक पहुँचा दे, तो किसके मन के सभी दोष दूर हो जायेंगे, ऐसा श्रीजी ने कहा?

स. २२-उक्त प्रकार से तय करके आपस में निर्भय होकर कौन किससे मिलने के लिए गये?

स. २३-काज़ी शेख सलेमान से मिलकर मोमिनों ने क्या अर्ज-प्रार्थना की?

स. २४-काज़ी शेख सलेमान श्रीजी स्वरूप से कितनी बार मिला था? वह कैसा आदमी था और श्रीजी से क्या चाहता था?

स. २५-काज़ी शेख सलेमान से मिलकर ब्रह्ममुनियों ने उससे क्या कहा कि उन्हें उनके पास किसने भेजा है?

स. २६-भेजनेवाले व्यक्ति कहाँ हैं, इस विषय में मोमिनों ने क्या कहकर काज़ी शेख सलेमान को विश्वास दिलाया?

स. २७-उस काज़ी को ब्रह्मात्माओं ने किस प्रकार का प्रलोभन दिखाया?

ज. २७- काज़ी को प्रलोभन दिखाते हुए ब्रह्मात्माओं ने कहा, "यदि आप →

स. २८-उक्त बातों के अलावा फकीर का कार्य करने पर अन्य क्या-क्या होगा, ऐसा मोमिनों ने काज़ी से कहा?

ज. २०- दिल्ली के सुन्दरसाथ से श्रीजी साहेब ने पूछा, "बादशाह का सबसे निकटस्थ राज्याधिकारी-काज़ी कौन है? हम उस व्यक्ति के माध्यम से बादशाह को संदेश पहुँचाना चाहते हैं।"

ज. २१- बादशाह के निकटस्थ काज़ी से मिलकर अपनी वास्तविकता उसके आगे प्रकट की जाय। फिर यदि वह हमारा संदेशा औरंगजेब तक पहुँचा दे, तो उसके मन के सभी दोष दूर हो जायेंगे।

ज. २२- उक्त प्रकार से तय करके आपस में निर्भय होकर मोमिन साथी काज़ी शेख सलेमान से मिलने के लिए गये।

ज. २३- काज़ी शेख सलेमान से मिलकर मोमिनों ने अर्ज-प्रार्थना की, "आप हमें किसी प्रकार से बादशाह से मिलवा दीजिए।"

ज. २४- काज़ी शेख सलेमान इससे पहले महाप्रभु श्री प्राणनाथजी से दो बार मिल चुका था। वह छल-कपटपूर्ण आदमी था। वह चाहता था कि स्वामीजी कुछ चमत्कार दिखायें, तो उन पर विश्वास किया जाय।

ज. २५- काज़ी शेख सलेमान से मिलकर ब्रह्ममुनियों ने उससे कहा कि उन्हें उनके पास एक फकीर ने भेजा है।

ज. २६- "हमें आपके पास भेजनेवाले फकीर इस समय पहाड़ पर विराजमान हैं।"- ऐसा कहकर मोमिनों ने काज़ी शेख सलेमान को विश्वास दिलाया।

→उन फकीर का कहना मानकर हमें बादशाह से मिला देंगे, तो आप पर वे फकीर बहुत खुश होंगे। पुनः आपके मन में जितनी भी अभिलाषाएँ हैं, वे सभी फलीभूत हो जायेंगी।"

ज. २८- मोमिनों ने काज़ी से कहा, " आपकी उक्त बातें तो सिद्ध होंगी ही, परंतु इसके अलावा सारे संसार में एक मात्र धर्म की स्थापना →

→ हो जायेगी। आपसी वैर-विरोध समाप्त हो जाएगा। जिस क्रोध- →

स. २९-उक्त बातों के अलावा शेख सलेमान काज़ी से मोमिनों ने उसके गौरव-महिमा के विषय में क्या कहा?

ज. २९- उक्त बातों के अलावा शेख सलेमान काज़ी से मोमिनों ने उसके गौरव-महिमा के विषय में कहा, "पुनः यदि आप उन फकीर का →

स. ३०-पुनः फकीर का कार्य कर देने पर कौन तुम्हारे चरणों के अधीन होंगे, ऐसा मोमिनों ने काज़ी से कहा?

ज. ३०- "फकीर का कार्य कर देने से उनकी मेहरबानी से संसार में जितने →

स. ३१-फकीर के आशीर्वाद से काज़ी को सुलतान और खुदा के द्वारा क्या होने को कहा?

ज. ३१- "फकीर के आशीर्वाद से एक तो आपको सुलतान का तनिक →

स. ३२-लालदास आदि ब्रह्ममुनियों द्वारा क्या लिखकर देने से काज़ी शेख सलेमान भयभीत हो उठा?

स. ३३-काज़ी शेख सलेमान ने अत्यंत भयभीत होकर मोमिनों से क्या कहा?

स. ३४-भयभीत काज़ी शेख सलेमान द्वारा पूछे गए प्रश्नों का लालदासजी ने क्या जवाब दिया?

ज. ३४- भयभीत काज़ी शेख सलेमान द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब देते →

स. ३५-सच्चे परमात्मा की ओर झुकनेवाले फकीर सांसारिक राज्यों को क्या-कैसा समझते हैं?

→ क्रोध के वशीभूत होकर लोग आपस में झगड़ रहे हैं, वह सब मिट जायेगा।"

→ काम करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे, तो आप मालामाल हो जायेंगे। आपके सभी शत्रु स्वतः ही परास्त हो जायेंगे। आपका सिर स्वाभिमान से सदा ऊँचा रहेगा और आप सर्वत्र गौरव प्राप्त करेंगे। आपकी महिमा पर्वत सदृश ऊँची हो जायेगी।"

→ भी कीमियागर-धातु अथवा लोहे को सोने में बदलनेवाले चमत्कारी पुरुष हैं, वे आपके चरणों में पड़कर आपके अधीन होकर रहेंगे।"-ऐसा मोमिनों ने काज़ी से कहा।

→ भी भय नहीं रहेगा और दूसरे परमात्मा-खुदा की कृपा से रसूल साहेब के यहीं दर्शन हो जायेंगे।" - ऐसा मोमिनों ने काज़ी शेख सलेमान से कहा।

ज. ३२- जब लालदास आदि ब्रह्ममुनियों ने, "सुलतान औरंगजेब का तुम्हें कोई भय नहीं रहेगा।" इस प्रकार लिखकर दिया, तब काज़ी शेख सलेमान भयभीत हो उठा।

ज. ३३- उपरोक्त बातों से अत्यंत भयभीत होकर काँपते हुए काज़ी शेख सलेमान ने मोमिनों से कहा, "तब तो सुलतान के बिना फिर यहाँ अन्य कौन शासन करेगा?"

→ हुए लालदासजी ने कहा, "उन फकीर को परमात्मा-खुदा ने धर्म की व्यवस्था का सम्पूर्ण भार और शोभा देकर बादशाह बनाया है। उन्हें सांसारिक राज्यों से तो कोई मतलब ही नहीं।"

ज. ३५- जो सच्चे - त्यागी फकीर होते हैं, वे परमात्मा-खुदा के ही चिन्तन में लीन रहते हैं। उन्हें इस मृततुल्य संसार की किसी भी वस्तु की →

→चाह नहीं रहती। उन्हें अपनी प्रशंसा में कहे गये शब्द भी थूककर →

स. ३६-उक्त प्रकार की बातें सुनकर काज़ी शेख सलेमान के मन में क्या आया अथवा वह क्या सोचने लगा?

स. ३७-बीतककार श्री लालदासजी यहाँ सुन्दरसाथ को किसका स्मरण करने को कहते हैं?

स. ३८- किसकी कृपा-दया से यहाँ किस घड़ी-समय को सिद्ध करने का युद्ध है?

❖ कुरान की हकीकत - सनंध द्वारा बोध ❖

स. १- लाल दरवाजे की हवेली से श्री प्राणनाथजी ने लालदास और गोवर्धन भाई को क्या आज्ञा देकर कहाँ और किस लिए भेजा?

स. २- श्रीजी ने उनसे मौलवी के पास जाकर कुरान के अन्दर की कौन-कौनसी बातें पूछकर आने को कहा?

ज. २- महामति स्वरूप ने उक्त भाइयों को मुल्ला से यह पूछने को कहा, →

स. ३- किस विषय का कार्य अभी उलझा हुआ है, ऐसा श्रीजी स्वरूप कहते हैं?

→ चाटने के समान प्रतीत होते हैं।

ज. ३६- उक्त प्रकार की बातें सुनकर शेख सलेमान के मन में बड़ा भारी भय उत्पन्न हुआ। वह सोचने लगा, "ये बातें तो बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु मुझसे यह कार्य कैसे हो सकेगा ?"

ज. ३७- बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ धामस्थ सुन्दरसाथ से कहते हैं, "हे मेरे धामस्थ सुन्दरसाथजी! आप सब हजरत इमाम मेहदी अर्थात् परम पूजनीय श्री प्राणनाथजी का स्मरण करो।"

ज. ३८- परम कृपालु धनी की कृपा-दया से धर्म-अभियान रूपी यह धर्मयुद्ध कयामत के समय, आत्म-जागृति की शुभ घड़ी को सिद्ध करने के लिए छेड़ा गया है।

- (प्रकरण ३८, सवाल-जवाब नं. ३८, कुल सं. १८७२+३८=१९१०)।

❖ कुरान की हकीकत - सनंध द्वारा बोध ❖

ज. १- महामति श्री प्राणनाथजी ने लाल दरवाजे की हवेली से लालदास और गोवर्धन भाई को आदेश दिया, "तुम दोनों किसी मौलवी-मसजिद के मुल्ला के पास जाकर कुरान के बातों की चर्चा सुनो।"

→ "आपके धर्मग्रन्थ कुरान में क्या लिखा है? कुरान के अंदर की बातें हमें बताइये-सुनाइये। आप लोग किन्हें पूज्य मानते हैं? ये सभी बातें हमें आप स्पष्ट करके बताइए। उक्त प्रकार से पूछने पर मुल्ला उक्त प्रश्नों का जो जवाब देगा, वे बातें लाकर हमें सुनायें।"

ज. ३- श्रीजी साहेबजी कहते हैं कि बादशाह औरंगजेब को संदेश पहुँचाने का कार्य अभी उलझा हुआ है।

स. ४- औरंगजेब बादशाह के विषय में श्रीजी स्वरूप चिन्ता करते हुए क्या कहते हैं?

ज. ४- श्रीजी साहेबजी बादशाह औरंगजेब के विषय में चिंता करते हुए →

स. ५- कौन-कौन भाई मौलवी के पास मसजिद में गये और वहाँ दोनों क्या करने लगे?

स. ६- मुल्ला ने कुरान के अन्दर की जो भी बातें कहीं, उनकी समझ किसे हुई?

स. ७ - वे बातें सुनकर किन्हें उन सभी बातों पर इस प्रकार पूर्ण विश्वास हो आया कि कुरान के अन्दर भी हमारे धाम की बातें हैं?

स. ८- मुल्ला द्वारा कुरान की बातें सुनाते समय गोवर्धन भाई भयभीत क्यों हुए?

स. ९- मौलाना के आगे बैठकर कुरान की बातें सुनते समय दोनों - लालदास और गोवर्धन भाई में मतभेद क्यों हुआ?

ज. ९- मौलाना के आगे बैठकर कुरान की चर्चा सुनते समय दोनों-लालदास और गोवर्धन भाई में मतभेद इसलिए हुआ क्योंकि →

स. १०-कुरान की बातें सुनकर लालदासजी को क्या हुआ? पुनः गोवर्धन भाई को क्या लगा?

→ कहते हैं,"औरंगजेब को संदेश पहुँचाने का कार्य अभी उलझा हुआ है। वह किस तरह अपनी असल जात मोमिन-ब्रह्मात्माओं को पहचानेगा?"

ज. ५- मौलाना के पास मसजिद में लालदासजी और गोवर्धन भाई गये और वहाँ बैठकर मौलाना की बातें सुनने लगे। मौलाना की बातें सुनकर दोनों साथियों में परस्पर विवाद होने लगा।

ज. ६- मसजिद में मुल्ला (विद्वान) ने कुरान के अंदर की जो भी बातें कहीं, उसके वास्तविक अर्थ की समझ स्वामी लालदासजी को हुई।

ज. ७- मुल्ला की बातें सुनकर स्वामी लालदासजी को यह पक्का-पूर्ण विश्वास हो गया कि कुरान में भी हमारे परमधाम की ही बातें लिखी हुई हैं।

ज. ८- मुल्ला द्वारा कुरान की बातें सुनाते समय गोवर्धन भाई भयभीत हो उठे क्योंकि हिन्दुओं को कुरान पढ़ने अथवा सुनने का अधिकार नहीं है।

→ लालदासजी को धाम की बातों पर विश्वास होने से कुरान की बातें सुनते ही जोश आने लगा। पुनः वही बातें सुनकर गोवर्धन भाई को अपने हिन्दुत्व की शर्म आ गई और बादशाह के डर से वे भयभीत हो उठे कि कहीं कोई हमें कुरान पढ़ता देखकर बादशाह को न सुना दे ।

ज. १०- मसजिद में मुल्ला जितनी चर्चा आगे करते जाते, धाम की बातें सुनते ही लालदासजी का जोश बढ़ते जाता। पुनः वही चर्चा सुनकर गोवर्धन भट्ट के मन में बादशाह के प्रति डर बढ़ता जाता था।

स. ११-उक्त दोनों भाई लाल दरवाजे लौटते समय कैसे आये? उस समय श्रीजी क्या करने जा रहे थे?

स. १२-जब गोवर्धन भाई श्रीजी के पास पहुँचे, तब श्रीजी कहाँ विराजमान थे?

स. १३-वापस आकर गोवर्धन भट्ट ने श्री प्राणनाथजी को कौन-सी चर्चा कह सुनायी?

स. १४-लालदासजी श्रीजी स्वरूप के पास किस समय आ पहुँचे? उन्होंने गोवर्धन भाई की कौन-सी बातें सुनी?

स. १५-जब गोवर्धन भाई मुल्ला द्वारा सुनी हुई बातें श्रीजी के आगे बता ही रहे थे कि क्या हुआ?

स. १६-उक्त बातों को सुनकर लालदासजी ने विनयपूर्वक राह में घटित बातें कहते हुए क्या कहा?

ज. १६- श्रीजी के आगे गोवर्धन भाई द्वारा कही हुई बातें सुनकर →

स. १७-लालदासजी ने ऐसा क्या कहा, जिसे सुनकर गोवर्धन भाई क्रोधित हो गये?

ज. १७- स्वामी लालदासजी ने जब चंचल मन के विषय में ऐसा कहा, →

स. १८-गोवर्धन भाई ने बहुत ही नाराजगी जताते हुए श्रीजी साहेबजी से क्या कहा?

ज. ११- उक्त दोनों भाई मसजिद से कुरान की चर्चा सुनकर मार्ग में झगड़ते-झगड़ते लाल दरवाजे की हवेली में आये। महाप्रभु श्री प्राणनाथजी उस समय भोजन करने जा रहे थे। दो घड़ी दिन अवशेष था।

ज. १२- जब गोवर्धन भाई श्री प्राणनाथजी के पास पहुँचे, उस समय श्रीजी अटारी पर सुन्दरसाथ के मध्य में विराजमान थे।

ज. १३- वापस आकर गोवर्धन भाई ने आज मौलवी से सुनी हुई बातें स्वामी श्री प्राणनाथजी को कह सुनायी।

ज. १४- जिस समय गोवर्धन भाई श्रीजी स्वरूप को मौलवी से सुनी हुई बातें सुना रहे थे, उसी समय लालदासजी भी वहाँ आ पहुँचे। गोवर्धन भाई द्वारा श्रीजी को सुनाई सभी बातें उन्होंने सुन ली।

ज. १५- गोवर्धन भाई जैसे ही मुल्ला द्वारा सुनाई हुई कुरान की बातें श्रीजी को सुना ही रहे थे, तुरंत ही लालदासजी वहाँ आ पहुँचे।

→ लालदासजी ने विनयपूर्वक राह में हुए विवाद की चर्चा करते हुए कहा, "हे स्वामीजी! हमारा इस चटाई पर आपके सम्मुख कुछ और ही मन रहता है, किन्तु यहाँ से चले जाने के बाद हमारा मन एकदम ही बदल जाता है। ठिकाने पर ही नहीं रहता।"

→ "चटाई पर हमारा मन जिस तरह स्थिर रहता है, चटाई छोड़ते ही यह मन उतना ही विचलित हो जाता है।" ये बातें सुनते ही गोवर्धन भाई ने ये बातें अपने सिर पर ले लीं और लालदासजी के प्रति अत्यन्त क्रोधित हो उठे।

ज. १८- लालदासजी की उक्त बातों पर गोवर्धन भाई अत्यन्त क्रोधित होकर श्रीजी से कहने लगे, "लालदासजी ने ये सब कुछ मेरे प्रति कहा है। आप इस रहस्य को जानते नहीं हैं।"

स. १९-दोनों भाइयों की उक्त प्रकार की बातें सुनकर श्रीजी स्वरूप किस सोच में पड़ गये?

ज. १९- श्री लालदास और गोवर्धन भट्ट की उक्त प्रकार की बातें सुनकर →

स. २०-इस समय श्रीजी साहेबजी के अन्दर से क्या प्रकट हुआ? यहाँ किस-किसने अपना प्रभाव प्रत्यक्ष प्रकट किया?

स. २१-उक्त बातों के कारण श्रीजी साहेबजी का मुखमण्डल कैसा हो गया?

स. २२-तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप के श्री मुख से कैसे शब्दों का प्रकटीकरण हुआ ?

स. २३-आवेश में आकर श्री प्राणनाथजी ने अपने अभियान को बन्द करने के लिए क्या किया?

स. २४-श्रीजी स्वरूप ने आवेश में किस-किस को कौन-कौन-सा कार्यक्षेत्र सौंप दिया?

ज. २४- श्रीजी स्वरूप ने आवेश में सबके सामने कुरान एवम् कतेब ग्रन्थों के सैद्धान्तिक अनुसन्धान का कार्य लालदासजी को सौंपा। →

स. २५-श्रीजी स्वरूप ने आवेश में किस-किस को क्या बाँट दिया ?

ज. २५- महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने आवेश में आपसी विरोध समाप्त करने के लिए परब्रह्म से प्राप्त सम्पदाओं (शक्तियों) को साथियों में बाँट दिया और उनके कार्यक्षेत्र अलग कर दिये। शेख बदल भाई को दिल्ली के सुन्दरसाथ को सँभालने की आज्ञा दी। लालदासजी →

→ महाप्रभु श्री प्राणनाथजी विचार करने लगे, "इन लोगों की बुद्धि पर मैं पूरा विश्वास कैसे करूँ? मेरे इस अभियान में पूर्ण निष्ठा का होना अत्यंत आवश्यक है।"

ज. २०- इस समय श्री प्राणनाथजी के अन्तःकरण में विद्यमान नूरमय तेज एवम् जोश प्रकट हुए। यहाँ जबराईल-ईश्वरीय शक्ति एवम् असराफील-ईश्वरीय बुद्धि ने अपना प्रभाव दिखाया ।

ज. २१- उक्त बातों के कारण श्रीजी स्वरूप का मुखमण्डल देदीप्यमान हो गया। मानो मुखमण्डल पर बिजली कौंध गयी हो।

ज. २२- तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप के श्री मुख से बड़े ही जोशपूर्ण शब्द प्रकट हुए।

ज. २३- आवेश में आकर अपने अभियान को स्थगित करने के लिए श्री प्राणनाथजी ने सबके विचारानुकूल कार्यक्षेत्र बाँट दिया।

→ भीम और मुकुन्ददास - इन दोनों को उदयपुर जाकर जन-जागरण का कार्य करने का आदेश हुआ। गोवर्धन भट्ट को महाप्रभु ने सूरत चले जाने को कहा और स्वयं अनूप शहर जाने की घोषणा कर दी।

→ को कुरान के सिद्धान्त के ग्रन्थादि सँभालने की आज्ञा हुई और मुकुन्ददासजी को ब्रह्ममुनियों के जागरण के लिए तारतम ज्ञान सौंपा गया। भीम भाई को सुन्दरसाथ को बोध देने के लिए बुद्धि प्रदान की और गोवर्धन भाई को सूरत जाकर गुजरात का जागनी कार्य आगे बढ़ाने का आदेश दिया। जागनी कार्यार्थ विशेष रूप से भीम भाई और मुकुन्ददासजी को उदयपुर भेजा गया और स्वयं वहाँ से अनूप शहर जाने की घोषणा कर दी।

स. २६-इस प्रकार तत्कालीन झंझट और कार्यक्रम की चिन्ता का क्या हुआ?

स. २७-दूसरे दिन प्रातः काल उठकर महामति श्री प्राणनाथजी कहाँ जाने के लिए तैयार हुए?

स. २८-इस शुभ घड़ी के समय वातावरण कैसा था और श्रीजी के पास यात्रा के लिए क्या साधन था?

ज. २८- इस शुभ घड़ी के समय आषाढ़ का महीना था। आसमान से →

स. २९-अनूप शहर जाते समय रास्ते में महामति स्वरूप के ऊपर कैसी कसौटी हुई?

ज. २९- अनूप शहर जाते समय रास्ते में श्रीजी स्वरूप के पेट में कुछ →

स. ३०-ऐसी मुसीबत के समय में श्रीजी को दवाई देनेवाली कौन थी और प्रार्थना करनेवाली कौन थी?

ज. ३०- शारीरिक कसौटी के कारण महामति श्री प्राणनाथजी को दुर्बलता →

स. ३१-कयामत की इस शुभ घड़ी में लालबाई को सान्त्वना देते हुए श्रीजी ने क्या कहा?

ज. ३१- कयामत-जागनी की इस शुभ घड़ी में लालबाई को सान्त्वना →

स. ३२-अनूप शहर पहुँचने के बाद जबराईल ने क्या प्रदर्शित किया?

स. ३३-इस शुभ मुहूर्त में कौन-सी अथवा कैसी वाणी के अवतरण का कार्य हुआ?

ज. २६- उक्त प्रकार धर्मकार्य में उपस्थित तत्कालीन झंझट अथवा समस्याएँ सब समाप्त हुईं। ऐसा लगने लगा कि जैसे किसी के पास कोई कार्य ही नहीं रहा।

ज. २७- दूसरे दिन प्रातः काल उठकर श्री प्राणनाथजी अनूप शहर जाने के लिए तैयार हुए ।

→ मुसलधार वर्षा हो रही थी। श्रीजी के पास यात्रा के लिए एक बैलवाली गाड़ी (पोठी) थी। उस एक बैलवाली गाड़ी (पोठी) पर सवार होकर महामति श्री प्राणनाथजी अनूप शहर के लिए निकल पड़े।

→ गड़बड़ी होने के कारण जुलाब होने लगा। श्रीजी का पेट इतना खुल गया कि जिसकी कोई सीमा ही न रही । बार-बार जुलाब होने से उनके होश हवास ही उड़ गये थे।

→ आ गयी। ऐसे समय में मानिक भाई ने श्रीजी स्वरूप को औषधि दी। श्रीजी की ऐसी अशक्त दशा देखकर लालबाई तो रोने लगी। स्वामीजी की सुरक्षा हेतु उन्होंने परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी से प्रार्थना की।

→ देते हुए महाप्रभु ने कहा, "आप लोग चिन्ता न करें। मेरी सुरता अभी परमधाम लौटनेवाली नहीं है। मेरे परमधाम प्रस्थान का जब समय आयेगा, तब मैं आपको अवश्य सूचित कर दूँगा।"

ज. ३२- येनकेन प्रकारेण श्रीजी स्वरूप अनूप शहर तो पहुँच गये। जब वे अनूप शहर पहुँचे, तब जबराईल-परब्रह्म के आवेश ने अपना सम्पूर्ण बल प्रदर्शित किया।

ज. ३३- इस शुभ मुहूर्त में अनूप शहर में आवेश द्वारा ऐसी वाणी का अवतरण हुआ, जिससे संसार में तहलका मच जाये।

स. ३४-वह वाणी किस वाणी के अनुरूप अवतरित हुई तथा उस वाणी में कहाँ के सांकेतिक रहस्यमय प्रसंगों का स्पष्टीकरण हुआ?

स. ३५-प्रियतम श्री राजजी महाराज ने इस समय महामति स्वरूप को क्या भेंट किया?

स. ३६-उक्त अवतरित वाणी का क्या किया गया? इस वाणी को पढ़कर कौन पीछे नहीं हट सकेंगे?

ज. ३६- उक्त अवतरित सनंध वाणी को लिपिबद्ध किया गया। इस वाणी →

स. ३७-इस मंजिल पर आकर किस तरह सभी प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो गई?

स. ३८-धर्मवीर साथ को इस वाणी से किन विषयों में पूर्ण विश्वास प्राप्त हुआ?

स. ३९-इस वाणी के कहाँ, किसके पास पहुँचने पर, कौन-सी आत्मा अपनी आत्मा बलिदान करेगी?

स. ४०-ये सभी बातें सुनकर किसके मन में संदेह उत्पन्न हुआ?

स. ४१-पाठक चौधरी ने मन-ही-मन में क्या विचार किया?

स. ४२-तत्पश्चात् पाठक चौधरी ने किस प्रकार श्री प्राणनाथजी की आव-भगत की?

ज. ४२- तत्पश्चात् पाठक चौधरी श्री प्राणनाथजी को अपने घर ले आया। →

ज. ३४- वह वाणी तौरेत ग्रंथ-कलश वाणी का भाव लेकर सनंध के तीस (११ से लेकर ४०) प्रकरणों के रूप में अवतरित हुई। उस वाणी में मुहम्मद साहेब द्वारा लाये हुए कतेब-कुरान के सांकेतिक रहस्यमय प्रसंगों का स्पष्टीकरण हुआ।

ज. ३५- कार्य-कारणवश जोश में वस्तु बाँटने के प्रतिफल प्रियतम परमात्मा श्री राजजी ने महामति श्री प्राणनाथजी को सनंध के ३० प्रकरणरूप अपूर्व देन भेंट की।

→ को पढ़कर मोमिनों-ब्रह्ममुनियों ने विचार किया कि इसे सुनकर कोई भी मोमिन पीछे नहीं हट सकेंगे। इसलाम धर्म की सारी हकीकत इन सनंधों द्वारा स्पष्ट रूप से सामने आ गयी।

ज. ३७- इस मंजिल पर आकर धामस्थ आत्माओं की जागनी के लिए धाम की जागृत बुद्धि-तारतम ज्ञान का प्रकाश हुआ, जिसके द्वारा सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो गई।

ज. ३८- धर्मवीर सुन्दरसाथ को सनंध वाणी सुनकर इस बात पर पूर्ण विश्वास हो गया कि अब कोई भी मुसलमान अपने इन सिद्धान्तों पर विश्वास लाने से पीछे नहीं हटेंगे।

ज. ३९- सनंध की यह वाणी जब सकुमारबाई की रूह अथवा औरंगजेब के पास पहुँचेगी, तो वह अवश्य ही अपनी आत्मा बलिदान करेगी।

ज. ४०- उक्त प्रकार की तैयारी की बातों को सुनकर अनूप शहर के चौधरी पाठक के मन में श्रीजी के प्रति संदेह उत्पन्न हुआ।

ज. ४१- पाठक चौधरी ने मन-ही-मन में विचार किया कि इनकी बात को कहाँ तक सत्य एवम् उचित माना जाय।

→ बढ़िया गादी और तकिया लगाकर उस पर श्रीजी को आसीन किया। स्वामीजी ने भी उन्हें अब तक का अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। उसने अपने आत्म-कल्याण के लिए श्रीजी से प्रार्थना की।

स. ४३-श्रीजी स्वरूप की बातें सुनकर उसे क्या हुआ? उसने किस लिये श्रीजी से प्रार्थना की?

स. ४४-पाठक के घर से आकर श्रीजी ने सुन्दरसाथ का मनोबल बढ़ाते हुए क्या कहा?

ज. ४४- पाठक के घर से श्रीजी स्वरूप जब वापस अपने डेरे पर आये, →

स. ४५-श्री प्राणनाथजी ने किनके पास इमाम मेहदी के प्रकट होने की सूचना देने की आज्ञा किन्हें दी?

स. ४६-कौन भाई, किनकी आज्ञा लेकर, किस लिए, कहाँ चल पड़े?

स. ४७-कौन भाई पूर्ण विश्वास के साथ सिर पर क्या उठाकर कार्य पथ की ओर अग्रसर हुए?

स. ४८-शेख बदल भाई जिस दिन दिल्ली पहुँचे, उस दिन कौन-सा दिन था? उस दिन लोग कहाँ जा रहे थे?

स. ४९-शेख बदल भाई किसका संदेश पहुँचाने के लिए कहाँ चले?

स. ५०-वहाँ किस लिए बड़ी संख्या में मुसलमान खड़े थे? सबका मन कैसा था?

स. ५१-जमात के बीच शेख बदल भाई ने क्या किया? जमात के लोगों ने शेख बदल भाई की बातें क्यों नहीं सुनी?

ज. ४३- श्रीजी स्वरूप की बातें सुनकर पाठक चौधरी बहुत प्रसन्न हुआ। उसका सारा संदेह दूर हुआ। उसने अपने आत्म-कल्याण के लिए श्रीजी से प्रार्थना की।

→ तब उन्होंने पुनः साथियों को दर्शन दिया और उनका मनोबल बढ़ाते हुए कहा, "हे ब्रह्मात्माओं! परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने तुम्हें एक विशेष कार्य करने का आदेश दिया है।"

ज. ४५- श्री प्राणनाथजी ने दिल्ली के सम्राट औरंगजेब बादशाह के पास जाकर उसे इमाम मेहदी के प्रकट होने की सूचना देने की आज्ञा शेख बदल भाई को दी।

ज. ४६- शेख बदल भाई श्री प्राणनाथजी की आज्ञा पाकर पैगाम पहुँचाने के लिए सुलतान औरंगजेब के पास चल पड़े।

ज. ४७- शेख बदल भाई पूर्ण विश्वास के साथ संनध ग्रन्थ सिर पर उठाकर कार्य पथ की ओर अग्रसर हुए।

ज. ४८- शेख बदल भाई जिस दिन राजधानी-दिल्ली पहुँचे, उस दिन शुक्रवार था और लोग शुक्रवार की नमाज़ पढ़ने के लिए ईदगाह जा रहे थे।

ज. ४९- शेख बदल भाई भी इमाम मेहदी का संदेश सुलतान तक पहुँचाने के लिए उसी ईदगाह के साथ उसी ओर चल पड़े।

ज. ५०- वहाँ नमाज़ पढ़ने के लिए बड़ी संख्या में मुसलमान लोग खड़े थे, किन्तु वहाँ किसीका भी मन एकाग्र नहीं था। सभी चंचल मन से ही खड़े थे।

ज. ५१- जमात के बीच शेख बदल भाई ने अपनी बात कहने के लिए बहुत ऊँचे स्वर में सनंध वाणी का गायन किया, किन्तु दज्जाल के वशीभूत होने के कारण लोगों ने उनकी बातें सुनी ही नहीं।

स. ५२-सनंध वाणी देखकर उपस्थित लोगों में से कितने लोगों ने क्या कहा?

स. ५३-पुनः संनध वाणी देखकर कई लोगों ने अपनी क्या मजबूरी आगे रखी?

स. ५४-उन लोगों की उक्त प्रकार की बातें लेकर शेख बदल भाई कहाँ आये?

स. ५५-वहाँ से निकलकर शेख बदल भाई पुनः किस हवेली में बैठकर उच्च स्वर से सनंध वाणी पढ़ने लगे?

स. ५६-'बिना एक मुहम्मद' नामक प्रकरण सुनकर एक सैयद ने क्या ज़िद पकड़ी?

स. ५७-उस सैयद ने शेख बदल भाई पर क्यों अथवा किस लिए झूठ बोलने का आरोप लगाया? पुनः शेख बदल भाई कहाँ-से-कहाँ चले आये?

ज. ५७- उस सैयद ने शेख बदल भाई पर झूठ बोलने का आरोप इसलिए →

स. ५८-अनूप शहर से श्री प्राणनाथजी दिल्ली कब आये और दिल्ली आकर उन्होंने क्या किया?

ज. ५८- उक्त वाद-विवाद होने के दो-चार दिन बाद ही श्री प्राणनाथजी →

स. ५९-शेख बदल भाई ने पैगाम के विषय में श्रीजी के सामने क्या विचार प्रकट किये?

ज. ५२- ईदगाह में उपस्थित मुसलमान लोग सनंध वाणी देखकर तरह-तरह की बातें करने लगे। कोई कहते कि परमात्मा के ये वचन हिन्दवी-हिन्दी में कैसे लिखे हैं?

ज. ५३- पुनः संनध वाणी सुनकर कई लोगों ने अपनी मजबूरी आगे रखते हुए कहा, "आप जो कहते हैं वह सत्य प्रतीत होता है, किन्तु हमें ये बातें हिन्दवी में पढ़ना, बाँचना स्वीकार नहीं।"

ज. ५४- उन लोगों की उक्त प्रकार की बातें लेकर शेख बदल भाई अपने घर लौट आए। फिर वहाँ से गनीबेग की हवेली में जा पहुँचे।

ज. ५५- वहाँ से चलकर शेख बदल भाई गनीबेग की हवेली में बैठकर उच्च स्वर से सनंध वाणी में आई मुहम्मद साहेब की महिमा से भरपूर 'बिना एक मुहम्मद' की सनंध पढ़ने लगे।

ज. ५६- *'बिना एक मुहम्मद'* नामक प्रकरण सुनकर एक सैयद ने ज़िद पकड़ ली कि यह अज्ञानियों की हठपूर्ण बातें हैं।

→ लगाया क्योंकि उसके अनुसार परमात्मा के संदेशवाहक एक मुहम्मद साहेब ही नहीं हैं। अब तक परमात्मा के संदेशवाहक कइयों पैगम्बर हो चुके हैं। अतः शेख बदल भाई उनमें से किसी का नाम क्यों नहीं लेते? उस सैयद से शेख बदल भाई का बहुत वाद-विवाद हुआ। तब शेख बदल भाई गनीबेग की हवेली से निकलकर वापस अपने घर आ गये।

→ अनूप शहर से दिल्ली आ गये। पुनः शेख बदल भाई को बुलवाकर बादशाह को संदेश देने के कार्य विषय कोई प्रगति हुई या नहीं, इस बात की पूछ-ताछ की।

ज. ५९- शेख बदल भाई ने श्रीजी के आने पर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। उन्होंने कहा, "मैंने लोगों को बहुत समझाया, किन्तु मुसलमान भाई ही खुदा का संदेश नहीं सुनना चाहते। वे सब परमात्मा से →

→ विमुख हो चुके हैं। अतः यह वाणी देखकर कई लोग कहते हैं, यह तो हिन्दी में लिखे हुए वचन हैं। यह खुदा के वचन कैसे हो सकते हैं? किसी-किसी के मन में अविश्वास है। पुनः कई लोग →

स. ६०-शेख बदल भाई की उक्त बातें सुनकर श्रीजी सुन्दरसाथ के बीच बैठकर क्या विचार करने लगे?

स. ६१-यहाँ पुनः लालदास और गोवर्धन भाई पर किस विषय में श्रीजी की आज्ञा हुई?

स. ६२-श्रीजी की आज्ञा से शेख सलेमान के पास जाकर लालदास और गोवर्धन भाई ने कैसे वचन कहे?

स. ६३-शेख सलेमान क्या कहता रहा? किस विषय के कार्य करने का बहाना करता रहा?

ज. ६३- शेख सलेमान बार-बार कहता रहा, "आज या कल मैं बादशाह →

स. ६४-कितने दिन भटकाने के बाद शेख सलेमान ने एक दिन मोमिनों से क्या कह दिया?

ज. ६४- करीब दो माह तक भटकाने के बाद शेख सलेमान ने एक दिन →

स. ६५-शेख सलेमान की बातें सुनकर लालदास और गोवर्धन भाई का उन पर से विश्वास क्यों हट गया?

ज. ६५- शेख सलेमान काज़ी द्वारा दो माह तक भटकाने के बाद उक्त →

स. ६६-अब श्रीजी साहेबजी लाल दरवाजे की हवेली छोड़कर साथ को लेकर कहाँ गये?

→ ऐसे भी हैं, जो इन बातों को सत्य और श्रेष्ठ कहते हैं, परंतु हिन्दी में लिखा हुआ बाँचने की हमें रवा नहीं है । उन्हें कयामत और इमाम मेहदी विषयक बातें महत्त्वपूर्ण लगती हैं।"

ज. ६०- शेख बदल भाई की उक्त बातें सुनने के पश्चात् सुन्दरसाथ के बीच बैठकर इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी विचार-विमर्श करने लगे, " इन लोगों ने अपनी ही बातों को सुना तक नहीं।"

ज. ६१- यहाँ पुनः श्रीजी साहेबजी ने लालदास और गोवर्धन भाई को काज़ी शेख सलेमान के पास संदेश लेकर जाने की आज्ञा दी।

ज. ६२- श्री प्राणनाथजी की आज्ञा से लालदास और गोवर्धन भाई ने शेख सलेमान के पास जाकर कुरान के यथार्थ ज्ञानपूर्ण ऐसे सत्य वचन कहे, जिसे सुनने से सभी कष्ट-संताप मिट जाते हैं।

→ से आपकी भेंट अवश्य करा दूँगा।" आज-कल, आज-कल करते-करते दो माह बीत गए। बादशाह से भेंट कराने के विषय में वह सदैव कोई-न-कोई नया बहाना ही ढूँढ़ता रहा।

→ मोमिनों से कह ही दिया, "पहले तो इस हिन्दू भेष में बादशाह आपसे मिलेंगे नहीं। यदि आप अपना भेष बदलकर मुसलिम भेष में आएँ, तो मैं बादशाह से आपकी बात कहूँ।"

→ प्रकार से कहने पर लालदास और गोवर्धन भाई का उन पर से विश्वास हट गया और वे विचार करने लगे, "शेख सलेमान द्वारा बादशाह से भेंट होने की बात पर विश्वास नहीं होता।" तब आपस में कहने लगे, "अब हमें वापस लौट जाना चाहिए।"

ज. ६६- अब श्रीजी साहेबजी लाल दरवाजे की हवेली छोड़कर जमात सहित रोहिल्ला खाँन की सराय में आ गये।

स. ६७-रोहिल्ला खाँन की हवेली में आकर श्रीजी ने क्या विचार किया?

स. ६८-उक्त प्रकार से विचार करने के बाद श्री प्राणनाथजी ने किसे और कैसे आदमी को ढूँढ़कर लाने को कहा?

ज. ६८- उपरोक्त प्रकार से विचार-बिमर्श करने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप →

स. ६९-दयाराम भाई द्वारा लाये हुए भाई का नाम क्या था? उसे किस तरह से रखा गया?

स. ७०-उक्त भाई को क्या-कैसा काम करने के लिए रखा गया?

स. ७१-कायम मुल्ला द्वारा चिट्ठी में किस-किस के संवाद के साथ अन्य क्या-क्या लिखवाया गया ?

ज. ७१- कायम मुल्ला द्वारा शेखजी मीराजीय के कथानक-परिसंवाद →

स. ७२-वह चिट्ठी कैसी बनायी गयी? पुनः उसे कहाँ-कहाँ, कितने जन के पास भेजा गया?

स. ७३-उक्त चिट्ठी की प्रतियाँ किसके कर्मचारियों के घर-घर में दी गईं? उसका प्रतिफल क्या हुआ? वे कर्मचारी कैसे थे?

ज. ७३- उक्त चिट्ठी की प्रतियाँ लेकर मोमिनों ने बादशाह के →

स. ७४-काजी शेख निज़ाम के पास मोमिन कितने दिनों तक भटके? वह काजी धर्म कार्यार्थ कैसा था?

ज. ७४- धाम की मोमिन - आत्माएँ अपना फर्ज उतारने के लिए बादशाह →

ज. ६७- रोहिल्ला खाँन की हवेली में आकर श्रीजी स्वरूप ने विचार किया, "यदि हिन्दी में लिखे गये पत्र को फारसी लिपि में बदला दिया जाय, तो शायद बादशाह को वस्तुस्थिति की पहचान हो जाय।"

→ ने दयाराम भाई से फारसी भाषा जाननेवाले एक ऐसे मुल्ला को ढूँढ़कर लाने को कहा, जो हिंदी में लिखे हुए शब्दों को फारसी लिपि में लिख दे।

ज. ६९- दयाराम भाई द्वारा लाये हुए भाई का नाम कायम था। वह किसी मुल्ला का पुत्र था। उसे मासिक वेतन पर रखा गया।

ज. ७०- उक्त भाई को हिन्दी लिपि में लिखे शब्दों को फारसी लिपिबद्ध करके पत्र तैयार करने के लिए रखा गया था।

→ को सुन्दर शैली में फारसी लिपिबद्ध करवाया गया। उसी पत्र में उससे मुहम्मद साहेब के म्याराज (साक्षात्कार) और कयामत की बातों सहित महाकारण अर्थात् ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के संसार में आने से लेकर अब तक की मूल बातें भी लिखवा दी गईं।

ज. ७२- उस चिट्ठी की जिल्द बाँधकर उन्हें नलुआ में डालकर रुक्के-पत्र तैयार किये गये। पुनः वे रुक्के बादशाह औरंगजेब के मित्रों और सेवकों के पास जगह-जगह पहुँचाये गये।

→ राज्याधिकारियों के घर-घर में पुकार की, जिसका प्रतिफल यह मिला कि कोई जागृत नहीं हुआ। सब-के-सब धर्मार्थ मृतक तुल्य निकले। एक खुदा-एक परमात्मा की राह पर अग्रसर होने के लिए कोई भी सावधान नहीं हुआ। सब-के-सब खुदा और हादी के विमुख थे ।

→ के गुरु-उस्ताद शेख निज़ाम के यहाँ कुछ दिनों तक भटकते रहे। किंतु उसे भी सत्य-धर्म, हकीकी दीन इसलाम के कार्य के अयोग्य और धर्मार्थ मरा हुआ मुर्दा तुल्य ही पाया।

स. ७५-दिल्ली के चाँदनी चौक में कौन था? वह कहाँ का था और कैसा था?

स. ७६-उसने लालदासजी से क्या कहा?

स. ७७-वह पुस्तक लेने के लिए लालदासजी कितनी बार उस सौदागर के पास गये?

ज. ७७- दज्जालनामा नामक वह पुस्तक लेने के लिए लालदासजी उस →

स. ७८-कितने दिन पश्चात् पुनः उस सौदागर ने लालदासजी से क्या कहा?

ज. ७८- कुछ दिन उस सौदागर ने लालदासजी को इसी तरह परेशान →

स. ७९-उस पुस्तक के विषय में लालदासजी ने उससे क्या पूछा? उसके जवाब में सौदागर ने क्या कहा?

ज. ७९- उस पुस्तक के विषय में लालदासजी ने उससे पूछा, "तफसीर →

स. ८०-सौदागर द्वारा कही बातें लालदासजी ने किसे बतायीं? उन्होंने क्या कहा?

स. ८१-श्रीजी की आज्ञा से लालदासजी उस सौदागर के पास कितने दिन तक गये?

ज. ८१- श्रीजी की आज्ञा से लालदासजी पुनः उसी सौदागर के घर चार →

ज. ७५- दिल्ली के चाँदनी चौक में सूरत का एक सौदागर रहता था। वह श्रीजी से सूरत में पहले मिल चुका था। यहाँ भी वह श्रीजी से मिलने आया था। वह आदमी असत्यवादी और धोखेबाज़ था।

ज. ७६- उस सौदागर ने लालदासजी से कहा, "हमारे पास दज्जालनामा नामक एक पुस्तक है। मैं वह पुस्तक आपको दिखाऊँगा। उस पुस्तक में दज्जाल की सेना का वर्णनरूपी ज्ञान है।"

→ सौदागर के पास प्रतिदिन एक बार जाते थे। वह सौदागर कई प्रकार की बातें बनाकर अगले दिन देने का वायदा करता रहता था।

→ किया और फिर उसने वह पुस्तक देने से इनकार कर दिया। पुनः कहा, "मेरे पास एक तफसीर हुसैनी नामक पुस्तक है। वह दज्जालनामा पुस्तक तो न जाने कौन ले गया है ? मैं भूल गया हूँ। अच्छा! मैं आपको हुसैनी तफसीर दूँगा।"

→ हुसैनी नामक पुस्तक में क्या है?" तब सौदागर ने जवाब दिया, "अरे! वह तो कुरान शरीफ की टीका है। वह बहुत ही उत्तम और प्रामाणिक पुस्तक है। कुरान की यह सर्वश्रेष्ठ एवम् प्रचलित टीका है।"

ज. ८०- सौदागर द्वारा कही उक्त बातें लालदासजी ने श्री प्राणनाथजी को बतायीं। तब महाप्रभु ने लालदासजी को आज्ञा दी, "तुम वह तफसीर ले आओ।"

→ दिन तक भटकते रहे। परंतु वह सौदागर तो बहाने ही करता रहा। तफसीर तो देता ही नहीं था। चौथे दिन लालदासजी उस सौदागर के पास से निराश होकर वापस श्रीजी के पास आ गये।

स. ८२-अन्त में उस पुस्तक के विषय में भी सौदागर की नीयत देखकर लालदासजी ने क्या कहा?

स. ८३-उस समय श्री प्राणनाथजी के पास कौन बैठा था? उन्होंने श्रीजी से क्या कहा?

स. ८४-भाई दयाराम की बात सुनते ही अत्यंत खुश होकर श्रीजी स्वरूप ने उन्हें क्या आज्ञा दी और क्या कहा?

ज. ८४- दयाराम भाई की विनयपूर्ण बातें सुनकर महाप्रभु ने अतिप्रसन्न →

स. ८५-दयाराम भाई ने श्रीजी की आज्ञा शिरोधार्य करके किसे हुसैनी तफसीर ढूँढ़ने को कहा?

स. ८६-हुसैनी तफसीर निकालने के लिए दयाराम भाई ने कैसा बहाना बनाकर अपने पड़ोसी मित्र को विश्वास दिलाया?

ज. ८६- हुसैनी तफसीर निकालने के लिए दयाराम भाई ने एक बहाना बनाकर अपने पड़ोसी मित्र को विश्वास दिलाते हुए कहा, "आप →

स. ८७-दयाराम भाई के मुसलमान दोस्त ने क्या कहते हुए तफसीर ला दी?

ज. ८७- दयाराम भाई की उक्त बातें सुनते ही दयाराम भाई के मित्र ने →

स. ८८-उस तफसीर का मूल्य कितना था और दयाराम भाई के दोस्त ने उनसे कितने पैसे लिए? दयाराम भाई का सिर आसमान में क्यों पहुँच गया?

ज. ८८- उस तफसीर का मूल्य चालीस रुपये था, किन्तु दयाराम भाई के →

ज. ८२- अन्त में उस पुस्तक के विषय में भी सौदागर की नीयत देखकर निराश होकर लालदासजी ने श्रीजी से कहा, "उसकी बात झूठी प्रतीत होती है।"

ज. ८३- उस समय श्री प्राणनाथजी के पास दयाराम भाई उपस्थित थे। उन्होंने श्रीजी से विनय किया, "आप इस कार्य के लिए मुझे आज्ञा दीजिए।"

→ होकर दयाराम भाई को आज्ञा दी, "आप आज ही तफसीर हुसैनी ले आइये। सिरदार-अग्रगण्य सखी सकुमार की मंजिल तक पहुँचने की हमें बड़ी चाह है। कुरान की यह टीका-तफसीर हुसैनी इस कार्य में हमारी बड़ी सहायता करेगी।"

ज. ८५- दयाराम भाई ने श्री प्राणनाथजी की आज्ञा शिरोधार्य करके अपने पड़ोस में रहनेवाले एक मित्र से हुसैनी तफसीर ढूँढ़ने को कहा।

→ मेरे लिए हुसैन साहेब द्वारा लिखी कुरान की टीका तफसीर हुसैनी ढूँढ़कर ले आइये क्योंकि हमारे एक मुसलमान मित्र ने पत्र लिखकर हमसे तफसीर हुसैनी मँगवाई है। उन्होंने बहुत ही विनम्र निवेदन करते हुए यह पुस्तक भेजने का आग्रह किया है।"

→ उनसे कहा, "मैं तुम्हारा यह कार्य अवश्य कर दूँगा।" उसने दयाराम भाई की बात सुनते ही उसी समय तफसीर लाकर उनके हाथ में दे दी।

→ दोस्त ने उसमें से दो रुपये उन्हें वापस कर दिये। दयाराम भाई अत्यंत प्रसन्न हुए। उनका सिर मानो आसमान से जा लगा हो क्योंकि धनी श्रीजी साहेबजी की आज्ञा पूर्ण हुई अर्थात् धनी की चिन्ता दूर हुई।

स. ८९-मित्र के यहाँ से लौटकर दयाराम भाई कहाँ गये? श्रीजी के आगे तफसीर रखते हुए दयाराम भाई ने क्या कहा?

स. ९०-श्रीजी क्या देखकर अत्यंत आनन्दित हुए? श्रीजी ने किसके साथ, किस विषय में बात की?

स. ९१-मौलाना कायम को तफसीर देते हुए श्रीजी साहेब ने उससे क्या कहा?

स. ९२-कायम मुल्ला ने जब तफसीर हुसैनी खोली, तब उसमें कौन-सी सूरत आयी?

स. ९३-उस सूरत में श्री राजजी महाराज द्वारा मोमिनों के लिए कही गयी कौन-सी बात मिली?

ज. ९३- उस सूरत में श्री राजजी महाराज द्वारा मोमिनों के लिए कहे गए →

स. ९४-"इन्ना इन्जुलना" सूरत की बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी क्या विचार करने लगे?

ज. ९४- *"इन्ना इन्जुलना"* सूरत की बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी →

स. ९५-जब मुल्ला ने "इन्ना आतेना" नामक सूरत सुनाई, तब श्रीजी का हाल कैसा हुआ?

ज. ९५- पुनः दूसरी बार जब कायम मुल्ला ने श्रीजी स्वरूप को *"इन्ना* →

स. ९६-कुरान के अन्दर की कौन-कौन-सी सूरत की बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी कितने दिन बिस्तर में पड़े रहे?

ज. ८९- अपने मित्र के यहाँ से लौटकर दयाराम भाई श्रीजी के पास आए। तफसीर श्रीजी के सम्मुख रखकर दयाराम भाई बोले, "आपकी कृपा से यह कार्य सफल हो गया।"

ज. ९०- श्री प्राणनाथजी कुरान की टीका तफसीर हुसैनी देखकर अत्यधिक आनन्दित हुए। सम्मुख बैठे प्रमुख शिष्य लालदास से वे इस विषय में बातचीत करने लगे।

ज. ९१- मौलाना कायम को कुरान की टीका हुसैनी तफसीर देते हुए श्रीजी साहेब ने उनसे कहा, "कुरान के कुछेक रहस्यमय प्रसंग का अभिप्राय इसमें से देखकर हमें बताइये-सुनाइये!"

ज. ९२- कायम मुल्ला ने जब तफसीर हुसैनी खोली, तब उसमें "इन्ना इन्जुलना" सूरत आयी।

→"लैल तुल कद्र के तीन तकरारों" का वर्णन आया। पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने कुरान के अन्दर जो बातें सांकेतिक रूप में लिखवायी थीं, वे सारे सांकेतिक रहस्य स्पष्ट हो गए।

→उस पर विचार करने लगे कि हम ही ब्रज और रास में आये थे। अब यहाँ तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में आये हैं। कुरान में भी वही बातें लिखी हैं, जो निजानन्द स्वामी सद्गुरु ने हमें भेंट के समय संकेत में कही थीं!

→*आतेना"* नामक सूरत पढ़कर सुनायी, तब उन्हें उसके द्वारा श्री यमुनाजी, हौज कौसर ताल और उसके पाल का यथार्थ बोध प्राप्त हुआ। इन वचनों को सुनकर श्री प्राणनाथजी को इतना आनन्द प्राप्त हुआ कि भावविह्वल हो जाने के कारण वे उठने-बैठने में भी असमर्थ हो गये।

ज. ९६- कुरान की टीका हुसैनी तफसीर की *"इन्ना इन्जुलना और इन्ना आतेना"* -इन दो सूरतों-प्रकरणों की बातें सुनकर श्री →

→प्राणनाथजी तीन दिन तक सेज से उठ नहीं पाए। सेज्या पर →

स. ९७- किस बात से श्रीजी को इतनी आनन्ददायी चोट लगी कि वे बिस्तर से उठ ही नहीं सके?

ज. ९७- आत्मानन्द में लीन हो जाने के कारण श्रीजी स्वरूप शारीरिक →

स. ९८- सुन्दरसाथ के बीच बैठकर अब श्री प्राणनाथजी किसकी चर्चा करने लगे?

ज. ९८- अब सुन्दरसाथ के बीच बैठकर श्री प्राणनाथजी कुरान की →

स. ९९- सुन्दरसाथ को किसके द्वारा आनन्द का अनुभव हुआ? साक्षियों के माध्यम से मिलानकर सुन्दरसाथ किन विषयों की पुष्टि करने लगे?

ज. ९९- अपने परमधाम की बातें कुरान की टीका हुसैनी तफसीर द्वारा →

स. १००-सराय रोहिल्ला खाँन की हवेली में हुसैनी तफसीर के अन्दर मिली बातों का संदेशा कहाँ-कहाँ भेजा गया?

स. १०१-उक्त खुशखबरी के साथ-साथ उस ग्रन्थ के विषय में दूसरी कौन-सी बातें सुन्दरसाथ से कही गयीं?

स. १०२-हमारे खेल में अवतरण से पूर्व हमारे लिए श्री राजजी ने क्या किया?

स. १०३-उदयपुर आदि विभिन्न स्थानों के सुन्दरसाथ के पास श्रीजी ने कौन-सा संदेशा देने को कहा?

→ ही पड़े रहे।

→ सुधि भूले रहे। तफसीर हुसैनी में लिखे पूर्णब्रह्म परमात्मा के बचनों में अपनी लीला की बातें सुनकर श्रीजी की भावदशा ऐसी हो गई। यसर्थ बिस्तर से उठ ही नहीं सके।

→ चर्चा करने लगे। साथियों को भी इस प्रसंग द्वारा अत्यन्त आनन्द का अनुभव हुआ। श्रीजी स्वरूप द्वारा चर्चा में बतायी बातों को सुन्दरसाथ साक्षियों से मिलाकर पुष्टि करने लगे।

→ सुनकर सुन्दरसाथ को भी इन प्रसंगों द्वारा अत्यन्त आनन्द का अनुभव हुआ। इधर श्री सद्गुरु द्वारा बताई गई बातें-श्री जमुनाजी, हौज कौसर ताल और पाल की साक्षियाँ मिलने पर कुरान श्री राजजी द्वारा ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के लिए भेजी गई चिट्ठी है, इस विषय की पुष्टि सुन्दरसाथ करने लगे।

ज. १००- सराय रोहिल्ला खाँन की हवेली में कुरान की टीका हुसैनी तफसीर में अपने परमधाम की लीला के सांकेतिक वर्णन मिलने का शुभ समाचार समस्त सुन्दरसाथ के पास जगह-जगह प्रेषित किया गया।

ज. १०१- उक्त खुशखबरी के साथ-साथ उस ग्रन्थ के विषय में सुन्दरसाथ से यह भी कहा गया कि यह कुरान हम ब्रह्ममुनियों-मोमिनों की धरोहर है।

ज. १०२- श्री राजजी की अनन्त अनुकम्पा का वरद् हस्त हमें प्राप्त है, इसलिए उन्होंने हमारे संसार में अवतरण से पूर्व ही कुरान के माध्यम से यह सूचना संसार को दी।

ज. १०३- श्री प्राणनाथजी ने उदयपुर आदि विभिन्न स्थानों के सुन्दरसाथ को पत्र लिखकर यह आदेश देने को कहा कि "आप लोगों को जो समाचार दिया जा रहा है, उसकी सूचना आप अन्य साथियों तक अवश्य पहुँचाएँ।"

स. १०४-पत्र में किन-किन पाँच भाइयों को विशेष रूप से संबोधित कर क्या कहा गया था?

ज. १०४- पत्र में विशेषकर भीम भाई, मुकुन्ददासजी, उद्धव, केशवदास तथा श्यामजी-इन पाँच भाइयों को संबोधित कर कहा गया था कि, "आप सुनिए! मैंने मुहम्मद साहेब द्वारा लाये गए पत्र 'कुरान' को पढ़ा। वह हमारे प्रियतम श्री राजजी द्वारा भेजा →

स. १०५-श्री प्राणनाथजी ने पत्र में अन्य सुन्दरसाथ को सत्य धर्म की प्रतिष्ठा के लिए क्या करने को कहा?

ज. १०५- श्री प्राणनाथजी ने अन्य सुन्दरसाथ को पत्र में यह बात स्पष्ट →

स. १०६-सराय रोहिल्ला खाँन की हवेली में बैठकर उक्त कार्य करते-करते कौन-कौन आ पहुँचे?

ज. १०६- उक्त वातावरण के बीच जब श्रीजी स्वरूप सराय रोहिल्ला →

स. १०७-उक्त तीन जन कहाँ से, किसकी ओर से और क्यों आए थे?

ज. १०७- उक्त तीन जन श्री नवतनपुरी-जामनगर स्थित गादीपति श्री →

स. १०८-उक्त तीनों जन दिल्ली स्थित किस हवेली में आकर श्रीजी स्वरूप से मिले?

स. १०९-उक्त तीनों कैसे थे अथवा किसके ताबे में होकर कौन-सी मान्यता लेकर चलते थे?

ज. १०९- उक्त तीनों गादीपति श्री बिहारीजी के दावेदार तथा वहाँ के →

स. ११०-वे तीनों कौन थे? किसका विरोध करनेवाले थे? इनका महत्त्व कहाँ था?

→ गया हमारे नाम का संदेशा है। उसमें मुझे परमधाम की लीला के संकेत मिले हैं। अपने घर के संकेत हमारे बिना कोई नहीं समझ सकता। ब्रह्मात्माओं के अविनाशी घर-ब्रह्मधाम के अतिरिक्त यदि किसी और का अस्तित्त्व हो, तब न वे इस लीला को समझ सकेंगे। अन्य सब कुछ तो क्षणभंगुर है। कुरान ग्रंथ मुसलमानों का नहीं है, हमारा है। हमारे घर की बातें हमारे धनी ने कुरान में लिखकर हमारे लिए भेजी हैं।"

→ लिखी, "सुन्दरसाथजी! आप लोग हिम्मत और धैर्य से सत्य धर्म की प्रतिष्ठा के लिए दज्जाल से लड़नेवालों के पास अपनी खुशहाली का समाचार भेज दीजिए।"

→ खाँन की हवेली में कार्यरत होकर आगे बढ़ते जा रहे थे, इसी समय जामनगर से गादीपति श्री बिहारीजी की ओर से तीन जन-प्रेमदास, नागजी भाई और संगजी भाई दिल्ली आ पहुँचे।

→ बिहारीजी की ओर से आये थे। ये तीनों गादीपति श्री बिहारीजी की ओर से मंदिर संचालनार्थ कुछ धन-नकद आदि लेने आए थे, जिस प्रकार नलिया में आये थे।

ज. १०८- उक्त तीनों जन दिल्ली स्थित सराय रोहिल्ला खाँ की हवेली में आकर श्री प्राणनाथजी और सुन्दरसाथ से मिले।

→ सुन्दरसाथ में श्री बिहारीजी की ओर से हिन्दू धर्म के हिंदुत्व का पालन करनेवाले थे। वे ईसा-रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी की गादी के ताबेदार श्री बिहारीजी की मान्यताओं को सत्य मानकर चलनेवाले थे।

ज. ११०- ये आये हुए लोग श्री बिहारीजी द्वारा भेजे हुए उनके अनुगामी साथी थे। जिस प्रकार यहूदियों ने पैगम्बर का विरोध किया →

→था, उसी प्रकार ये तीनों बुद्धूजी का विरोध करनेवाले गुरुपुत्र →

स. ११९-ये आये हुए लोग विशेषकर किनके ऊपर आक्रोश रखते थे?

स. ११२-ये लोग किसका नाम और किसके धर्मग्रन्थ की बातें सुनना भी नहीं चाहते थे?

ज. ११२- जामनगर-श्री नवतनपुरी से आये ये तीनों ही भाई मुहम्मद →

स. ११३-इनके मन में किस-किस के प्रति श्रद्धा के बदले अश्रद्धा भरी हुई थी?

ज. ११३- इनके मन में रसूल-परमात्मा के संदेशवाहक-मुहम्मद साहेब →

स. ११४-उक्त तीनों भाई जब दिल्ली पहुँचे, तब वहाँ किनके सिवाय अन्य किसी की चर्चा ही नहीं थी?

स. ११५-दिल्ली में उक्त भाइयों को आश्चर्यवत् किन आत्माओं की महिमा मिली?

स. ११६-ये गुजरात से आये साथी श्रीजी के सम्मुख आते ही कैसी बातें करने लगे?

स. ११७-दिल्ली पहुँचते ही उक्त साथियों को क्या अनुभव होने लगा?

ज. ११७- दिल्ली पहुँचकर श्रीजी के सम्मुख होते ही नवतनपुरी से आए →

→ के समुदाय में थे। इनकी दृष्टि में गादी का महत्त्व अधिक था।

ज. ११३- ये आये हुए लोग विशेषकर सत्य धर्म पर समर्पित हो जानेवालों से आक्रोश रखते थे।

→ साहेब के नाम और उनके धर्मग्रन्थ कुरान शरीफ एवम् हदीसों का नाम मात्र भी सुनना नहीं चाहते थे। ये कट्टर हिन्दुत्व का पालन करनेवाले थे।

→ के धर्मग्रंथ कुरान की बातों जैसे 'खुदा-परमात्मा एक हैं, मुहम्मद साहेब के कथन सत्य एवम् श्रेष्ठ हैं' के प्रति श्रद्धा के बदले अश्रद्धा भरी हुई थी।

ज. ११४- उक्त तीनों भाई जब दिल्ली पहुँचे, तब वहाँ मोमिनों-ब्रह्मसृष्टियों तथा मुहम्मद साहेब के बिना अन्य कोई चर्चा ही नहीं थी।

ज. ११५- दिल्ली आकर वहाँ चल रही महत्त्वपूर्ण चर्चा में उक्त भाइयों को परब्रह्म परमात्मा की आत्माओं-खुदा के जात की महिमा दिखायी दी।

ज. ११६- गुजरात-श्री नवतनपुरी से आये ये साथी महाप्रभु श्री प्राणनाथजी के सम्मुख आते ही बड़े आवेश में भरकर जोशपूर्ण बातें करने लगे।

→ तीनों लोगों को ऐसा अनुभव हुआ कि उनके और श्री प्राणनाथजी के बीच का पर्दा हट गया है। परन्तु उनका यह अनुभव क्षणिक था। उन्हें जागृत का ज्ञान नहीं था।

स. ११८-श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने चर्चा द्वारा उन्हें किन स्वरूप की पहचान करा दी? पुनः मुहम्मद साहेब के प्रति क्या कर दिया?

स. ११९-श्रीजी की चर्चा द्वारा उन्होंने कौन-सी बात सिद्ध कर समझ ली?

ज. ११९- श्रीजी की चर्चा द्वारा उन तीनों ने यह बात सिद्ध कर समझ ली →

स. १२०-किन दोनों के ज्ञान का मिलान कर देखें, तो किस धर्म की प्रतिष्ठा होती है?

स. १२१-उक्त तीनों भाइयों ने क्या, किसमें, किसके एकाकार का अनुभव किया? अब उनमें किस-किस के विषय में भेद नहीं रहा? किसकी आत्मा जागृत होने लगी?

ज. १२१- उक्त तीनों भाइयों ने श्री प्राणनाथजी में ईसा-रूह अल्लाह →

स. १२२-श्री प्राणनाथजी की रोचक अथवा ओजमय चर्चा सुनकर और उनके आवेश को देखकर श्री नवतनपुरी से आए भाइयों को क्या हुआ?

स. १२३-मुहम्मद साहेब के विरोधी यहूदियों के समान धर्म विरोधी भावना रखनेवालों का क्या हुआ?

स. १२४-श्री प्राणनाथजी के प्रति विश्वास प्रकट करते हुए उक्त तीनों भाइयों ने क्या कहा?

ज. १२४- अपने वचनों द्वारा महाप्रभु के प्रति विश्वास प्रकट करते हुए →

ज. ११८- श्री प्राणनाथजी ने चर्चा करके उन्हें निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी के स्वरूप की पहचान करा दी और मुहम्मद साहेब के प्रति उनमें विश्वास उत्पन्न कर दिया।

→ कि ईसा-रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी ने जो ब्रह्मज्ञान दिया है, वेही बातें (ज्ञान) मुहम्मद साहेब ने भी कुरान में कही हैं। दोनों की समझ एक ही है।

ज. १२०- ईसा-रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी तथा मुहम्मद साहेब के ज्ञान का मिलान कर देखें, तो एक ही अर्थात् सत्य आत्म धर्म - हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म की प्रतिष्ठा होती है।

→ श्री देवचन्द्रजी तथा रसूल मुहम्मद साहेब के ज्ञान के एकाकार का अनुभव किया। अब उनमें कलमा और तारतम के विषय में भेद नहीं रहा। उनके दिल का सारा अविश्वास और सन्देह मिट गया। उन तीनों की आत्मा जागृत होने लगी।

ज. १२२- महामति श्री प्राणनाथजी के रोचक एवम् ओजपूर्ण वचनों को श्रवण करके और उनके आवेश को देखकर श्री नवतनपुरी से आये भाइयों के मन में उत्साह की लहर उठ पड़ी।

ज. १२३- मुहम्मद साहेब के विरोधी यहूदियों के समान धर्म विरोधी संकीर्ण भावना रखनेवालों की भावनाओं का दमन हो गया।

→ तीनों भाइयों ने कहा, "हमें आपके स्वरूप की पहचान हो गयी है। आपके स्वरूप में हमें निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी के दर्शन मिले हैं।"

स. १२५-श्रीजी स्वरूप के श्री मुख से चर्चा सुनकर उक्त तीनों भाइयों को किस विषय में शंका न रही?

ज. १२५- श्रीजी स्वरूप के श्री मुख से चर्चा सुनकर उक्त तीनों भाइयों →

स. १२६-श्रीजी द्वारा कलश वाणी की सनंधें सुनते ही वे दोनों भाई कैसी बातें कहने लगे?

स. १२७-उन्होंने श्री प्राणनाथजी को किसके वास्तविक प्रचार में सक्षम एवम् समर्पित देखा?

ज. १२७- उन भाइयों ने श्रीजी स्वरूप को सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के यथार्थ →

स. १२८-उन्होंने किन सुन्दरसाथ को तथा किस विषय में पत्र लिखने को कहा?

ज. १२८- उन भाइयों ने अपने सभी सुन्दरसाथ को इस प्रकार पत्र लिखा →

स. १२९-पुनः उन्हें श्रीजी के रूप में क्या मिला? उन्होंने किनके अंदर किसके दर्शन किये और क्या घोषणा कर दी?

ज. १२९- पुनः उन्हें श्रीजी के रूप में सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की कृपा →

स. १३०-उक्त प्रकार की चिट्ठी लिख-लिखकर तीनों भाइयों ने कहाँ-कहाँ पहुँचायी?

स. १३१-श्रीजी के सामने अद्वैत भाव में परिणत होकर दोनों भाइयों ने क्या-क्या किया?

ज. १३१- यहाँ तीन भाइयों में से संगजी और नागजी भाई ने श्री प्राणनाथजी के सामने अद्वैत भाव में परिणत होकर अपने पक्ष →

→ को इस बात में कोई शंका न रही कि ब्रह्म-परमात्मा एक हैं और उनका सन्देश लानेवाले मुहम्मद साहेब उनके श्रेष्ठ रसूल हैं।

ज. १२६- श्रीजी द्वारा कलश वाणी की सनंधें सुनते ही उन्होंने कहा, "यह वाणी सबके अनुकूल और उपयुक्त है।"

→ मार्ग निजानन्द धर्म के वास्तविक प्रचार करने में सक्षम एवम् समर्पित देखा और अन्य सुन्दरसाथ को भी इस निश्चयता की खबर देने की बात कही।

→ कि, "अभी तक हम भूले हुए थे। यहाँ आकर अब हमने ब्रह्मसृष्टियों के श्रेष्ठ तथा सही सिद्धान्तों को प्राप्त किया।"

→ मिली और उन्होंने श्रीजी स्वरूप के अन्दर सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के दर्शन किये तथा घोषणा कर दी कि जो भी सुन्दरसाथ जहाँ भी हों, वे हमारी इन बातों पर अवश्य पूर्ण निष्ठा से विश्वास करें कि सद्गुरु स्वरूप श्रीजी के अंदर विराजमान हैं।

ज. १३०- उन तीनों ने उक्त प्रकार की चिट्ठी विधिवत् नाम और पता सहित जगह-जगह पर बिखरे अपने पक्ष के साथियों के पास पहुँचा दी।

→ के जगह-जगह पर फैले सभी सुन्दरसाथ को पत्र लिखा। शेख बदल भाई के साथ एक ही थाली में भोजन कर एकात्म हुए। इस प्रकार सबके साथ एक अद्वैत भाव से बातचीत, खान-पान करके एकाकार हो गये।

स. १३२-किनके मन के कपट-भाव दूर होते ही विभिन्न विषयों की शंका-उपशंकाएँ मिट गईं?

स. १३३-वे तीनों भाई श्रीजी के प्रति कैसे विश्वास ले आये? उनमें क्या जागी?

स. १३४-उक्त प्रकार से ये तीनों भाई श्री प्राणनाथजी के सत्संग में कितने दिन रहे?

स. १३५-प्रेमदास ने अपने उभय भाइयों को कैसी भावना से देखा? वे कहाँ रहे?

ज. १३५- उक्त तीनों भाइयों में से सीधे सादे, भोले भाले भाई प्रेमदास ने →

स. १३६-प्रेमदास भाई ने उक्त दोनों भाइयों को किस विषय में और क्या कहा?

ज. १३६- प्रेमदास भाई ने दोनों भाइयों-संगजी और नागजी से कहा, →

स. १३७-अन्त में उन तीनों भाइयों में से कौन-कौन वापस लौट गये और कौन वहीं रह गये?

स. १३८-वे दोनों अपना क्या काम सिद्ध कर वापस चले? उन्होंने क्या परख लिया?

ज. १३८- वे दोनों गादीपति श्री बिहारीजी की तरफ से पैसा-नगद विषय →

स. १३९-जब दोनों भाई दिल्ली से वापस चले और उन्हें कलियुग ने घेर लिया, तो क्या हुआ?

ज. १३९- जब दोनों भाई दिल्ली से वापस चलने लगे, तभी उन्हें →

ज. १३२- उक्त तीनों भाइयों के मन के कपट-भाव दूर होते ही उनके अन्दर की विभिन्न विषयों की शंका-उपशंकाएँ दूर हो गयीं।

ज. १३३- वे तीनों भाई एक ब्रह्म के सिद्धान्त को समझकर पूर्णब्रह्म परमात्मा श्रीजी के स्वरूप पर विश्वास ले आये। एक धर्म की प्रतिष्ठा के प्रति उनमें आस्था जाग उठी।

ज. १३४- उक्त प्रकार से ये तीनों भाई दिल्ली स्थित सराय रोहिल्ला खाँन की हवेली में श्री प्राणनाथजी के सत्संग में बाईस दिन तक रहे।

→ अपने दोनों साथियों की विचलित भावना को परखा। उन्हें उनका विश्वास मात्र बनावटी प्रतीत हुआ। अतः प्रेमदास भाई वापस नवतनपुरी नहीं गये। दिल्ली में ही रह गये।

→ "हमसे आप अविश्वासपूर्ण बातें कर रहे हैं। हमारे ही सामने महाप्रभु के स्वरूप पर आपको विश्वास हो गया था। वह विश्वास अब कहाँ चला गया?"

ज. १३७- उक्त तीनों भाइयों में से नागजी और संगजी-ये दोनों नवतनपुरी वापस लौट गये तथा प्रेमदास भाई तो यहीं श्री प्राणनाथजी के साथ ही रह गये।

→ श्रीजी को प्रबोधने की जो आस लेकर आये थे, वह आस पूरी करके कुछ लेकर चले गये। उन्होंने 'सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी कहाँ बैठकर अपना कार्य कर रहे हैं'-इस बात को परख तो लिया, परंतु पुनः वैसे के वैसे ही रहे।

→ कलियुगरूपी शैतान ने आ घेरा। उस शैतान ने उनके मन में कपट की भावना जागृत कर दी। आसुरी वृत्तियों ने उनके विश्वास को छीन लिया।

स. १४०-दज्जाल ने उन भाइयों के मन पर क्या कर दिया और उनका क्या छीन लिया?

ज. १४०- आसुरी वृत्तियों से ग्रस्त होने तथा उनके दिल को कलियुगरूपी →

स. १४१-वे दोनों भाई दिल्ली से श्री नवतनपुरी जाते समय रास्ते में मिले साथियों से कैसी बातें करने लगे?

ज. १४१- वे दोनों भाई दिल्ली से श्री नवतनपुरी जाते समय रास्ते में →

स. १४२-रास्ते में सुन्दरसाथ द्वारा पूछने पर वे दोनों भाई क्या जवाब देते हुए जाने लगे?

स. १४३-श्री नवतनपुरी स्थित अपने मित्र गादीपति श्री बिहारीजी के पास पहुँचकर उक्त दोनों भाइयों ने क्या कहा?

स. १४४-इन दोनों भाइयों ने दिल्ली में किनके अन्दर स्वामी श्री देवचन्द्रजी को देखा, ऐसा जवाब महंत श्री को दिया?

स. १४५-पुनः उक्त दोनों भाइयों ने अपने मित्र से 'संसार में एक धर्म करने का कार्य' सद्गुरु स्वरूप ने किसे सौंपा है, ऐसा कह दिया?

स. १४६-कौन-सी बात सुनकर श्री नवतनपुरी के महंत गादीपति गादी छोड़कर भाग गये?

ज. १४६- "सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को हमने श्री प्राणनाथजी के अन्दर →

→ दज्जाल द्वारा घेर लेने के कारण उनके मन में श्रीजी के प्रति जो पूर्ण विश्वास आया था, वह सब बदल गया। पुनः वे पहले की ही तरह दुविधाजनक बातें करते-करते नवतनपुरी पहुँचे।

→ मिलनेवाले साथियों से दुविधाजनक बातें करने लगे। मिलनेवाले साथी जब उनसे पूछते कि वे लोग वहाँ से वापस क्यों जा रहे हैं? तब वे लोग उनसे कुछ और संदेह उत्पन्न करनेवाली बातें कह देते।

ज. १४२- रास्ते में सुन्दरसाथ द्वारा पूछने पर वे दोनों भाई कहते, "श्री देवचन्द्रजी के अतिरिक्त अन्य कोई श्रेष्ठ सद्गुरु नहीं है।" इस प्रकार की दुविधाजन्य बातें ही कहते हुए जाने लगे।

ज. १४३- श्री नवतनपुरी में अपने मित्र गादीपति श्री बिहारीजी के पास पहुँचकर उक्त दोनों भाई कहने लगे, "अरे! श्री देवचन्द्रजी के समान हमें अन्य किसी से कोई आशा नहीं है।"

ज. १४४- इन दोनों भाइयों-नागजी और संगजी ने गादीपति महन्त श्री बिहारीजी से कहा, "हमने निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी को श्री प्राणनाथजी के अन्दर देखा है।"

ज. १४५- पुनः उक्त दोनों भाइयों ने अपने मित्र श्री बिहारीजी से कह दिया, "सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने सम्पूर्ण संसार में एक धर्म की स्थापना करने का कार्य श्री प्राणनाथजी को ही सौंपा है।"

→ देखा है और संसार में एक धर्म की स्थापना का कार्य सद्गुरु स्वरूप ने श्री प्राणनाथजी को ही सौंपा है।"-इतनी बात सुनते ही गादीपति-मुखिया श्री बिहारीजी चर्चा से उठकर गादी छोड़कर भाग गये।

स. १४७-मुखियाजी क्या कहते हुए भाग गये? यहाँ की स्थिति कैसी बन गयी?

ज. १४७- मुखियाजी कहने लगे, "अब आप लोगों के पास हम कदापि →

स. १४८-गादीपति महन्त श्री के पीछे-पीछे उन्हें राज़ी करने कौन दौड़े?

ज. १४८- महन्त श्री बिहारीजी को राज़ी करने के लिए उनके शिष्य उनके →

स. १४९-जब किसी भी प्रकार से गादीपति बिहारीजी वापस आने को नहीं माने, तब दोनों भाइयों ने क्या किया?

स. १५०-गादीपति श्री बिहारीजी जब नहीं माने, तब नाराज़ होकर कहाँ जाकर बैठ गये?

स. १५१-उक्त प्रकार से महन्त श्री गादीपतिजी एकान्त स्थान में कितने दिन बैठे रहे?

ज. १५१- सुन्दरसाथ में अग्रगण्य साथियों के समझाने पर भी महन्त श्री →

स. १५२-अन्य कौन-कौन सुन्दरसाथ महन्त श्री को दुःखी देखकर बहुत दुःखी हुए?

ज. १५२- महन्त श्री को दुःखी देखकर सभी सुन्दरसाथ बहुत दुःखी हुए। →

स. १५३-सुन्दरसाथ मिलकर श्री बिहारीजी को किस तरह समझाकर वापस घर ले आये?

ज. १५३- सुन्दरसाथ तरह-तरह से समझा-बुझाकर आजिज़ी के वचन →

→ नहीं रहेंगे।" इस प्रकार विवाद की स्थिति खड़ी कर गादीपति श्री बिहारीजी भाग गये। गादीपति के प्रति श्री नवतनपुरी में भूकम्प-सा हो गया।

→ पीछे-पीछे दौड़े। वे किसी भी तरह मनाने पर वापस लौटने को तैयार नहीं हुए। तब सबने उनसे चरणों में झुककर प्रार्थना की और बोले, "हमने भूलकर ऐसी बातें कह दी थीं।"

ज. १४९- जब किसी भी प्रकार से मनाने पर गादीपति श्री बिहारीजी वापस आने को नहीं माने, तब उन दोनों भाइयों ने माफी माँगते हुए कहा, "हमने भूलकर ऐसी बातें कही हैं।"

ज. १५०- गादीपति श्री बिहारीजी जब किसी भी तरह नहीं माने और नाराज हो गए, तब अन्यत्र एकान्त में जाकर बैठ गये।

→ बिहारीजी राज़ी नहीं हुए और न ही उन्होंने किसी की कोई बात ही सुनी। इस तरह नाराज़ होकर तीन दिन तक एकान्त स्थान में बैठे रहे।

→ गादीपति श्री बिहारीजी किसी की भी बातों को अपने कानों से सुनना तक नहीं चाहते थे। इन साथियों के मन में भी अपने अविश्वास के कारण श्री बिहारीजी को पहुँचे दुःख को देखकर बहुत संताप हुआ।

→ कहकर श्री बिहारीजी को घर वापस ले आये। इनके मन में श्री प्राणनाथजी की चर्चा सुनकर उनके प्रति जो श्रद्धा उत्पन्न हुई थी, वह दब गई।

स. १५४-महन्त श्री गादीपतिजी के इस प्रकार रूठ जाने और अत्यन्त दुःखी होने का कारण क्या था?

ज. १५४- श्री प्राणनाथजी के सच्चे धर्म-मार्ग के प्रति अपने जनों में श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होना श्री बिहारीजी के स्वार्थ का निर्मूल →

स. १५५-किन्हें और कैसा पत्र जगह-जगह में बसे सुन्दरसाथ को लिखकर भेजना पड़ा?

ज. १५५- दोनों भाई-संगजी और नागजी को जगह-जगह में बसे अपने →

स. १५६-कौन-सी राह पर चलते-चलते बीचों-बीच कौन-सी घटना हुई?

स. १५७-अब इसके उपरान्त बीतककार किसके साथ हुए महत्त्वपूर्ण संघर्ष का वर्णन करेंगे?

स. १५८-बीतककार श्री लालदासजी महाराज सुन्दरसाथ के बीच घटी उक्त घटनाओं का कारण क्या बता रहे हैं?

ज. १५८- बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ सुन्दरसाथ को याद →

स. १५९-जो भी घटनाएँ यहाँ घटी हैं, उनके इसी तरह घटने के विषय में कहाँ लिखा है?

ज. १५९- यहाँ खेल में सुन्दरसाथ के बीच जो-जितनी भी घटनाएँ घट →

→ होना था। वे अपने गादी के अभिमान में फूले नहीं समाते थे। सुन्दरसाथ और धर्म-सिद्धान्त के आचरण आदि से उन्हें मतलब ही नहीं था। वे तो 'कहीं मेहराज मेरी गादी न छीन ले'-इसी डर के मारे डरते-डरते जीवन व्यतीत कर रहे थे। इसी कारण से वे रूठे और अत्यन्त दुःखी हुए थे।

→ पक्ष के सुन्दरसाथ को पुनः पत्र लिखना पड़ा। उन पत्रों में अपने विचारों में परिवर्तन आ जाने की बात इस प्रकार लिखी गयी थी, "पहले लिखे पत्र के अनुसार कोई भी अपने मन में श्रीजी के प्रति श्रद्धा-विश्वास न लाना।"

ज. १५६- जागनी-अभियान की राह पर चलते-चलते बीचों-बीच श्री नवतनपुरी से तीन जन आ पहुँचे। उक्त जनों की दुविधा के कारण बीतक प्रसंग में उपरोक्त घटना भी घुस गई।

ज. १५७- अब इसके उपरान्त बीतककार सुलतान औरंगजेब के साथ होनेवाले अत्यंत महत्त्वपूर्ण संघर्ष का वर्णन करेंगे।

→ करा रहे हैं कि संसार के बीच जो कुछ भी हो रहा है, वे सभी घटनाएँ परब्रह्म परमात्मा ने तीसरी भोम में प्रेम-संवाद के समय आद-अनाद की समय-सारिणी बताते हुए कही थीं। अतः सभी घटनाओं का कारण तीसरी भोम का प्रेम-संवाद है।

→ रही हैं, ऐसी घटनाएँ ब्रह्मात्माओं के बीच घटनेवाली हैं, यह बात कुरान और हदीसों में हजार साल पूर्व ही लिख दी गयी थी।

- (प्रकरण ३९, सवाल-जवाब नं. १५९, कुल सं. १९१०+१५९ =२०६९)।

❖ नलुआ पत्रों का वृत्तान्त ❖

स. १- श्री प्राणनाथजी ने रोहिल्ला खाँन की सराय-हवेली में बैठकर किस विषय में सुन्दरसाथजी के साथ विचार-विमर्श किया?

स. २- रज़वी खाँ के घर मोमिन कितने दिन भटकते रहे? वहाँ किस विषय की चर्चा होती थी?

ज. २- श्रीजी स्वरूप ने जिन साथियों को काज़ी रज़वी खाँ के घर पैगाम →

स. ३- शेख निज़ाम काज़ी के घर मोमिन कब तक चक्कर लगाते रहे और उसे अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए किस विषय की बातें समझाते रहे?

स. ४- मोमिनों का शेख निज़ाम के घर जाने का मुख्य उद्देश्य क्या था?

स. ५- अपनी उद्देश्यपूर्ति हेतु मोमिनों ने उसे किन-किन विषय की बातें सुनायी थीं?

स. ६- एक दिन मोमिनों ने काज़ी शेख निज़ाम को कौन-सी बात कही?

स. ७- एक दिन मोमिनों ने अचानक किसकी अथवा कैसी बातें सुनीं? मोमिन किस लिए उसके घर गये थे?

ज. ७- एक दिन अचानक मोमिनों ने शेख वाज़िद के बारे में सुना कि →

❖ नलुआ पत्रों का वृत्तान्त ❖

ज. १- महामति श्री प्राणनाथजी ने दिल्ली स्थित रोहिल्ला खाँन की सराय-हवेली में बैठकर, "अब आगे श्री राजजी की आज्ञा से उनका संदेश सुलतान औरंगजेब के पास पहुँचाने के लिए क्या करना चाहिए?"- इस विषय में सुन्दरसाथजी के साथ विचार-विमर्श किया।

→ देने भेजा था, वे दस-बीस दिन तक रज़बी खाँ के घर जाते रहे । उनके साथ रसूल साहेब के प्रसंग को लेकर चर्चा भी होती रही। वहाँ उनके आगे हिन्दू पक्ष के देवादि एवम् जगदीश की उपासना विषयक बातें रखने की किसी को कोई आस ही नहीं रही।

ज. ३- बादशाह के पासवान काज़ी शेख निज़ाम के घर मोमिन एक मास तक चक्कर काटते रहे। अपना कर्त्तव्य (धर्म) पूरा करने के उद्देश्य से मोमिनों ने उन्हें कयामत से सम्बन्धित अनेकों बातें समझायीं।

ज. ४- मोमिनों का काज़ी शेख निज़ाम के घर जाने का मुख्य उद्देश्य यही था कि वह काज़ी दीन इसलाम के लक्ष्य-कयामत एवम् मोमिनों के अवतरण की बातें सुनकर समझ ले।

ज. ५- अपनी उद्देश्यपूर्ति हेतु मोमिनों ने उन्हें इमाम और मोमिनों के अवतरण, पुनः कयामत के समय में होनेवाले निशानों के विषय में भी संकेत दिये।

ज. ६- एक दिन मोमिनों ने काज़ी शेख निज़ाम से यह बात कही, "आप सबका ध्यान सांसारिक ऐश्वर्यों की ओर है, इसलिए आप धर्म की बातें नहीं सुन पाते।"

→ शेख वाज़िद नामक फकीर खुदा की ओर विशेष ध्यान और महत्त्व रखनेवाला है। यह जानकर ब्रह्मात्माएँ-मोमिन दस बार उसके घर गये कि "शायद वह कयामत की बात सुन लेवे।"

स. ८- सागरमल के घर ब्रह्मात्माएँ कितने बार भटके? उसे मोमिनों ने क्या सुनाया?

ज. ८- सागरमल नामक हिन्दू भाई से सत्संग करने के लिए सत्य मार्ग →

स. ९- सागरमल कैसा आदमी था? क्या उसे धर्म-चर्चा का रस लगा?

स. १०-सागरमल के माध्यम से मोमिन किसके घर पहुँचे और उसे क्या समझाया?

स. ११-मोमिन अपना फर्ज अदा करने हेतु कहाँ-कहाँ भटके? परंतु किसी ने नहीं सुनी, पुनः क्यों नहीं सुनी?

स. १२-अब तक मोमिन इमाम का पैगाम देने के लिए क्रमशः कितने दिन और किस-किसके घर गये?

ज. १२- अब तक मोमिन- ब्रह्मात्माएँ इमाम का संदेश देने के लिए क्रमशः →

स. १३-तत्पश्चात् एक स्थान पर बैठकर श्रीजी क्या विचार करने लगे?

ज. १३- तत्पश्चात् एक स्थान पर बैठकर श्रीजी विचार करने लगे, "यहाँ →

स. १४-किसके प्रकटीकरण का संदेशा पहुँचाने का दायित्व मूल में किस पर है?

स. १५-कौन-किस पर विश्वास करेगा, तो वह धर्म-राह पर समर्पित हो सकेगा?

→ पर समर्पित मोमिन उनके घर दस बार गये और उन्हें परमधाम की चर्चा एवम् ब्रह्मसृष्टियों की अवतरण लीला का वृत्तान्त कह सुनाया। किन्तु वह अपना अभिमान छोड़कर तनिक भी द्रवित नहीं हुआ।

ज. ९- सागरमल अभिमान का सागर स्वरूप ही था। उसे धर्म के विषय में हाथी का कान प्राप्त था। वह धर्म-चर्चा का पात्र नहीं, बल्कि कुपात्र था। धर्म-चर्चा की उसे छींट तक नहीं लगी।

ज. १०- सागरमल के माध्यम से मोमिन बख्तावर भाई के घर पहुँचे और परमधाम की चर्चा करके उसे तरह-तरह से समझाने का प्रयास किया ।

ज. ११- उक्त प्रकार मोमिनों ने अनेक घरों में जा-जाकर श्रीजी का संदेश दिया। जन जागरण के लिए मोमिन जगह-जगह बहुत भटके। परन्तु जिनके शुष्क मन में निष्ठा एवम् विश्वास की गन्ध तक न हो, उनके लिए कोई कर भी क्या सकता है?

→ रज़वी खाँ काज़ी, काज़ी शेख निज़ाम, फकीर शेख बाजिद, सागरमल और बख्तावर-इन पाँच-पाँच जनों के घर कइयों दिन तक भटकते रहे, परन्तु सोचा हुआ कार्य नहीं बन पाया।

→ तो दज्जाल की शक्तियों का प्रभाव एवम् निरंकुश औरंगजेब का शासन चल रहा है। यहाँ हमारी आवाज सुननेवाला कोई दिखाई नहीं देता।"

ज. १४- इमाम मेहदी के प्रकटीकरण और कयामत का संदेशा पहुँचाने का दायित्व मूल में हम मोमिनों पर है।

ज. १५- जो लोग इन हादी की बातों पर विश्वास करेंगे, वे ही दीन-इसलाम की राह पर समर्पित हो सकेंगे।

स. १६-ब्रह्मात्माओं को जागृत करने के लिए उन्हें क्या अवश्य ही पहुँचाना पड़ेगा?

स. १७-किस प्रकार बादशाह के कर्मचारियों तक संदेश-पत्र पहुँचाया जाय, तो बादशाह हमारी बात सुनेगा, इस विषय में श्रीजी स्वरूप ने क्या विचार किया?

स. १८-रोहिल्ला खाँन की हवेली में कितने समय रहने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप मोमिनों सहित कहाँ आकर, क्या करने लगे?

स. १९-चाँदनी चौक स्थित दुलीचन्द की हवेली में क्या हुआ? क्यों वह हवेली छोड़नी पड़ी?

ज. १९- चाँदनी चौक से आकर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी सुन्दरसाथ सहित →

स. २०-चाँदनी चौक में लोग श्रीजी के विरुद्ध क्यों खड़े हुए? श्रीजी को जमात सहित एक स्थान पर टिककर बैठते क्यों नहीं बना?

ज. २०- चाँदनी चौक स्थित दुलीचन्द की हवेली में कलियुगी प्रवृत्तिवालों →

स. २१-ऐसी स्थिति में पुनः श्रीजी स्वरूप क्या विचार करने लगे?

ज. २१- सामने उक्त परिस्थिति खड़ी होने पर श्रीजी स्वरूप एक स्थान →

स. २२-श्रीजी स्वरूप ने पत्र के माध्यम से किस-किस के पास कयामत के सात निशान भेजने का निश्चय किया?

ज. १६- ब्रह्मात्माओं को जागृत करने के लिए जन-जन में इमाम मेहदी के प्रकटीकरण का संदेशा अवश्य ही पहुँचाना होगा।

ज. १७- अपना दायित्व निभाने के लिए पत्र लिखकर उस पत्र को बाँस की पोर-नलुआ में बन्द करके औरंगजेब के कर्मचारियों तक पहुँचाया जाय, तभी बादशाह हमारी बात सुनेगा, ऐसा श्रीजी स्वरूप ने विचार किया।

ज. १८- दिल्ली स्थित रोहिल्ला खाँन की सराय-हवेली में चार महीने रहने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप जमात सहित वहाँ से चाँदनी चौक में आकर औरंगजेब के पास संदेश पहुँचाने के उपायों पर विचार करने लगे।

→ दुलीचन्द की हवेली में रहने लगे। किंतु यहाँ मुसलमान गुण्डे श्रीजी के विरोधी हुए और कोलाहल मचाने लगे। अतः वह हवेली भी छोड़नी पड़ी।

→ ने श्रीजी के विरुद्ध झगड़ने के लिए लोगों को बहुत बहकाया। दज्जाल के रूप में विरोधी लोग तरह-तरह के उलटे-उलटे प्रचार करने लगे। अतः श्रीजी स्वरूप को जमात सहित कहीं भी एक स्थान पर टिककर बैठते नहीं बन पाया।

→ पर बैठकर परामर्श करने लगे, "अब हमें औरंगजेब बादशाह अथवा उसके मित्रों के पास पत्रों द्वारा कयामत के सात निशानों के विवरण आदि संदेश भेजने चाहिए।"

ज. २२- श्रीजी स्वरूप ने औरंगजेब बादशाह के पासवान उन काज़ियों के पास पत्र के माध्यम से कयामत के सात निशान भेजने का निश्चय किया, जो राज्य-संचालन करने में कर्मचारियों के रूप →

→ में बादशाह की मदद करते थे। उन कर्मचारियों में काज़ी शेख →

स. २३-श्रीजी स्वरूप ने किस एकान्त स्थान में बैठकर पाँच पत्र तैयार किए?

स. २४-उन पाँचों पत्रों में किस-किस के प्रकटीकरण के विषयों की घोषणा की गयी थी?

स. २५-उन पाँच पत्रों में ईसा-रूह अल्लाह स्वरूप के प्रकट होने के साथ अन्य किसकी वास्तविकता लिखी थी?

स. २६-ब्रह्मसृष्टियों की मदद के लिए किस-किस का अवतरण हुआ है तथा किस-किस के युद्ध की बातें उस पत्र में लिखी गईं?

ज. २६- ब्रह्मसृष्टियों की मदद के लिए अक्षर की जागृत बुद्धि असराफील →

स. २७-उन पत्रों में कयामत के समय के किन सात निशानों की बातें लिखी गयी थीं?

ज. २७- उन पत्रों में कालरूपी आजूज-माजूज (दिन-रात) के प्रकट होने →

स. २८-परब्रह्म परमात्मा-खुदा ताला को प्राप्त करने का कौन-सा मार्ग बताया है?

स. २९-रसूल मुहम्मद साहेब ने आखर जमाने में अर्थात् कयामत के समय क्या-क्या होने को कहा था?

→ इसलाम, शेख निज़ाम, रज़वी खाँ, आकल खाँ और सिद्दी पोलाद नामक काज़ी हैं।

ज. २३- श्रीजी स्वरूप ने कामा पहाड़ी नामक एकान्त स्थान में बैठकर पाँच नलुए तैयार किए।

ज. २४- उन पाँचों पत्रों में कयामत के सात निशानों का यथार्थ विवरण लिखा हुआ था। पुनः इमाम मेहदी स्वरूप की पहचान एवम् स्पष्टीकरण तथा उनके प्रकटीकरण की घोषणा भी उन पत्रों में की गयी थी।

ज. २५- उन पाँच पत्रों में ईसा-रूह अल्लाह स्वरूप श्री देवचन्द्रजी के प्रकट होने तथा यथार्थ मार्ग दीन इसलाम-निजानन्द धर्म की वास्तविकता लिखी थी।

→ तथा परब्रह्म परमात्मा के आवेश-जबराईल अर्श-परमधाम से अवतरित हुए हैं। कलियुगी वृत्तिवाले दज्जालों से परमधाम से आए असराफील और जबराईल के बीच के युद्ध की सभी बातें उन पत्रों में लिखी गयी थी।

→ और पश्चिम से बिना रोशनी के सूर्य के उदय होने की पहचान लिखी थी। पुनः पशु प्रकृतियुक्त मानव अर्थात् दाभतुलअर्ज सहित कयामत के अन्य सभी निशानों का भी स्पष्टीकरण किया गया था।

ज. २८- परब्रह्म परमात्मा-खुदा ताला को प्राप्त करने का सरलतम-सीधा मार्ग बताया गया है।

ज. २९- रसूल मुहम्मद साहेब ने आखर जमाने अर्थात् कयामत के समय में पुनः आने का वचन दिया था। पुनः कल के दिन अर्थात् हजार वर्ष बाद कयामत के प्रकटीकरण का वादा किया था।

स. ३०-कौन-सी बातें कुरान में प्रमाण सहित लिखी हैं? पुनः किस धर्म पर समर्पित होने को कहा है?

स. ३१-कुरान एवम् इसलाम के अनुकूल बातों को अस्वीकार करनेवाले कौन हैं?

स. ३२-उन पाँचों पत्रों में लिखी बातों के लिए किस-किस के द्वारा साक्षियाँ दी गईं? पुनः इमाम द्वारा मोमिनों पर क्या आज्ञा हुई?

स. ३३-उन नलुओं को बादशाह के मुख्य काज़ियों के पास पहुँचाने की जिम्मेदारी किसने ली?

ज. ३३- उन पाँचों नलुओं को बादशाह के मुख्य-मुख्य काज़ियों →

स. ३४-अन्य दो साथियों को कान्हजी भाई के पीछे क्यों लगाया गया?

ज. ३४- शराअ के कट्टर शैतान लोग किसी को जीजान से मारने में पीछे →

स. ३५-पाँचों काज़ियों में से इन बातों की पहचान किसे जल्दी होगी, यह जानने के लिए किन तीन काज़ियों को नलुए पहले दिये गये?

स. ३६-चौथा और पाँचवाँ नलुआ किन-किन काज़ियों के पास पहुँचाया गया?

स. ३७-उक्त दोनों काज़ियों को नलुए देकर ऊपर से क्या समझाया गया?

ज. ३०- उक्त सभी बातें कुरान में प्रमाण सहित लिखीं हैं। पुनः सभी को एक ही सत्य निजानन्द-आत्म धर्म पर प्रतिष्ठित एवम् समर्पित होने को कहा है।

ज. ३१- ब्रह्मज्ञान-खुदाई इलम के उक्त बचनों को कुरान में पढ़कर अथवा कुरान एवम् इसलाम के अनुकूल पाकर भी अस्वीकार करनेवाले काफ़िर हैं।

ज. ३२- उन पाँचों पत्रों में लिखी हुई बातों के लिए कुरान और हदीसों द्वारा साक्षियाँ दी गईं। पुनः इमाम द्वारा मोमिनों पर उन पत्रों को यथास्थान पहुँचाकर अपना कर्त्तव्य पूरा करने की आज्ञा हुई।

→ (कर्मचारियों) के हाथों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी कान्हजी भाई ने ली। वह कार्य कान्हजी भाई के हाथ में सौंपकर नलुए उनके हाथ में दिये गये।

→ नहीं हटते। यसर्थ कान्हजी भाई जिस घर में गये, वहाँ से वापस लौटे या नहीं लौटे, इन बातों की जानकारी रखने के लिए कान्हजी भाई के पीछे दो गुप्तचरों को लगाया गया।

ज. ३५- पाँचों काज़ियों में से इन बातों की पहचान किसे जल्दी होगी, यह जानने के लिए सर्वप्रथम एक नलुआ काज़ी शेख इसलाम को, दूसरा नलुआ रज़बी खाँ को तथा तीसरा नलुआ शेख निज़ाम को दिया गया।

ज. ३६- चौथा नलुआ काज़ी आकिल खाँ के पास और पाँचवाँ नलुआ काज़ी सिद्दी पोलाद के पास पहुँचाया गया।

ज. ३७- उक्त दोनों काज़ियों को नलुए देकर ऊपर से यह भी समझाया गया कि "इस पत्र में कयामत सम्बन्धी बातों सहित आपके घर की मूल बातों अथवा आपकी बुनियाद का भी बयान है।"

स. ३८-किस काज़ी ने नलुआ (पत्र) लेकर किसका परिचय पूछा?

स. ३९-काज़ी शेख इसलाम द्वारा उक्त प्रकार से फकीर का परिचय पूछे जाने पर कान्हजी भाई ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. ३९- काज़ी शेख इसलाम द्वारा उक्त प्रकार से फकीर का परिचय पूछे →

स. ४०-काज़ी शेख इसलाम ने कान्हजी भाई को जाने की अनुमति देते हुए क्या कहा? पुनः अन्य काज़ियों के पास से उत्तर लाने को क्यों कहा?

ज. ४०- काज़ी शेख इसलाम ने कान्हजी भाई को पूछा, "क्या यह पत्र किसी और के नाम भी है अथवा केवल मेरे लिए ही है?" तब →

स. ४१-काज़ी शेख निज़ाम के घर पैगाम देकर कान्हजी भाई ने उनसे क्या कहा?

ज. ४१- काज़ी शेख इसलाम के घर से चलकर कान्हजी भाई काज़ी शेख →

स. ४२-शेख निज़ाम काज़ी कान्हजी भाई को घर के भीतर बुलाकर उनसे क्या जानना चाहता था? अतः क्या पूछा?

स. ४३-शेख निज़ाम काज़ी ने घर के भीतर बुलवाकर जब कान्हजी भाई से फकीर का नाम पूछा, तब कान्हजी भाई ने क्या कहा?

ज. ३८- काज़ी शेख इसलाम ने नलुआ (पत्र) लेकर फकीर का परिचय जानना चाहा कि "वे फकीर कहाँ रहते हैं? पुनः तुम्हारी जाति और धर्म कौन-सा है?"

→ जाने पर कान्हजी भाई ने उनसे कहा, "हम तो पत्रवाहक हैं। अपना पेट पालने के लिए रुपये लेकर यह कार्य करते हैं। हम उन फकीर की मजदूरी करते हैं। वे हमें इसका पारिश्रमिक देते हैं। वे फकीर पहाड़ पर रहते हैं। उन्होंने हमें आपके पास संदेश पहुँचाने के लिए भेजा है।"

→ कान्हजी भाई ने कहा, "हम इसी तरह के और चार पत्र लाये हैं, जो हमें काज़ी शेख निज़ाम, आकिल खाँ, रज़बी खाँ तथा सिद्दी पोलाद को देने हैं। यह संदेश पहुँचाने के लिए हम उनके भी निवास स्थान पर जा रहे हैं।" तब काज़ी ने जाने की अनुमति देते हुए कहा, "आप उन्हें पत्र पहुँचाने जाइये तथा उनके उत्तर लेकर आइये। देखें, वे लोग कैसा उत्तर देते हैं। अल्लाह का जैसा हुकम होगा, उसी अनुसार कार्य भी होगा।"

→ निज़ाम के घर आये। घर के अन्दर नलुआ भेजा और कहा, "हम इमाम का संदेश लेकर आये हैं। इस पत्र का उत्तर देकर इस कार्य को पूरा कीजिये।"

ज. ४२- शेख निज़ाम काज़ी ने कान्हजी भाई को घर के भीतर बुलाकर वास्तविकता जानना चाहता था। अतः उसने पूछा, "तुम्हें क़यामत के समय की बातें लिखकर हमें देने के लिए किसने हमारे पास भेजा है?"

ज. ४३- उक्त प्रकार से काज़ी शेख निज़ाम द्वारा घर के भीतर बुलबाकर पूछने पर कान्हजी भाई ने जवाब दिया, "हमें जिन फकीर ने यहाँ भेजा है, उन फकीर का नाम है, सैयद मुहम्मद इबन इसलाम।"

स. ४४-पुनः उस काज़ी ने कान्हजी भाई को पत्र के विषय में क्या पूछा?

स. ४५-उक्त प्रश्न का कान्हजी भाई ने क्या जवाब दिया?

स. ४६-कान्हजी भाई ने उन पाँच काज़ियों का नाम बताने के बाद काज़ी शेख निज़ाम से क्या कहा?

ज. ४६- कान्हजी भाई ने उन पाँच काज़ियों का नाम बताने के बाद काज़ी →

स. ४७-कान्हजी भाई की उपरोक्त बातें सुनकर काज़ी शेख निज़ाम ने उनसे क्या कहा?

स. ४८-काज़ी शेख निज़ाम के बाद कान्हजी भाई किसके पास गये? उसने क्या किया?

ज. ४८- काज़ी शेख निज़ाम के बाद कान्हजी भाई काज़ी आकिल खाँ के →

स. ४९-कुरान में कैसे लोगों के लिए लानत लिखी हुई है?

स. ५०-कैसे लोग अथवा कैसे आदमी भली बातें सुन नहीं सकते?

स. ५१-जब कान्हजी भाई ने काज़ी रज़वी खाँ को नलुआ दिया, तब काज़ी रज़वी खाँ ने कान्हजी भाई से किस विषय की कैसी बातें पूछीं?

ज. ४४- पुनः उस काज़ी ने कान्हजी भाई से पत्र के बिषय में पूछा, "क्या आप और भी किसी के नाम पत्र लाये हैं या केवल हमारे ही लिये है?"

ज. ४५- उक्त प्रश्न के जवाब में कान्हजी भाई ने कहा, "ऐसे पत्र पाँच लोगों के नाम लिखे गये हैं।"

→ शेख निज़ाम से कहा, "मैंने एक पत्र काज़ी शेख इसलाम को दे दिया है। अब मैं अन्य लोगों के घर यह संदेशा पहुँचाने जा रहा हूँ। "

ज. ४७- कान्हजी भाई की उक्त बातें सुनकर काज़ी शेख निज़ाम ने कहा, "तुम शीघ्र ही शेष पत्रों को यथास्थान पहुँचा आओ, ताकि हम सब मिलकर इन महत्त्वपूर्ण घोषणाओं का उत्तर देकर तुम्हें यहाँ से विदा करें।"

→ पास गये। उन्होंने तो पत्र लेने से ही इनकार कर दिया और कहा, "इस नलुए पर तो मेरा नाम ही नहीं लिखा है!" इस प्रकार वह खुदा की बातें सुनकर भी सावधान नहीं हो पाया।

ज. ४९- आकिल खाँ काज़ी, जिसने पत्र ही लौटा दिया, ऐसे ही अवज्ञाकारी लोगों के लिए कुरान में लानत लिखी हुई है।

ज. ५०- संसार में महाज्ञानी हो जाने का अभिमान करनेवाले लोगों के कानों पर मोहर लगी रहती है। अतः ऐसे लोग किसी की भली बातों को सुन नहीं सकते।

ज. ५१- कान्हजी भाई ने जब काज़ी रज़वी खाँ के यहाँ जाकर उसके हाथ में नलुआ दिया, तब काज़ी ने कान्हजी भाई से पूछा, "तुम कितने लोगों के लिए ऐसे पत्र लाये हो?"

स. ५२-उक्त प्रकार से पूछने पर कान्हजी भाई ने काज़ी रज़वी खाँ को क्या जवाब दिया?

ज. ५२- उक्त प्रकार से पूछने पर कान्हजी भाई ने काज़ी रज़वी खाँ से →

स. ५३-इस पर काज़ी ने पुनः कान्हजी भाई से अपने नलुए के विषय में क्या कहा?

स. ५४-काज़ी रज़वी खाँ के बाद कान्हजी भाई नलुआ पहुँचाने किसके घर पहुँचे?

स. ५५-कान्हजी भाई ने काज़ी सिद्दी पोलाद से क्या कहा और काज़ी सिद्दी पोलाद ने क्या जवाब दिया?

ज. ५५- कान्हजी भाई ने काज़ी सिद्दी पोलाद से कहा, "आप मेरी बात →

स. ५६-पाँचों जगह नलुए पहुँचाकर कान्हजी भाई कहाँ गये और सारा वृत्तान्त किसे सुनाया?

स. ५७-पाँचों काज़ियों के पास नलुए पहुँचा देने का सन्देश कान्हजी भाई कहाँ पहुँचाने गए?

ज. ५७- वापस लौटकर कान्हजी भाई ने श्रीजी स्वरूप को उक्त पाँचों नलुओं को पाँचों काज़ियों के पास यथास्थान पहुँचा देने की →

स. ५८-दूसरे दिन कान्हजी भाई कहाँ गये और क्यों? क्या उन काज़ियों ने नलुओं का जवाब दिया?

→ कहा, "मैं तीन जगह जाकर ऐसे तीन नलुए तीन जन को दे आया हूँ। एक पत्र सिद्दी पोलाद काज़ी को देना बाकी है। अब वहीं जा रहा हूँ।"

ज. ५३- उक्त जवाब सुनकर कान्हजी भाई से काज़ी रज़बी खाँ ने कहा, "तुम वह पत्र पहुँचा आओ। खुदा का जैसा हुकम होगा, उसी तरह हम तुम्हारे पत्र का उत्तर अवश्य देंगे।"

ज. ५४- काज़ी रज़बी खाँ के पश्चात् कान्हजी भाई वहाँ से सीधे काज़ी सिद्दी पोलाद के घर पहुँचे। काज़ी सिद्दी पोलाद के हाथ में पत्र देते हुए कान्हजी भाई ने उन्हें भी सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया।

→ सुनने की कृपा करें। आप मुझे शीघ्र ही पत्र में लिखी हुई बातों का उत्तर दें।" तब काज़ी सिद्दी पोलाद ने कहा, "आप पहले अन्य लोगों से उत्तर ले आइये।"

ज. ५६- उपरोक्त प्रकार से पाँचों जगह नलुए पहुँचाकर कान्हजी भाई वापस लौट आये और सुन्दरसाथ से मिलकर उक्त पाँचों लोगों की जानकारी दी तथा नलुओं का सारा वृत्तान्त कह सुनाया।

→ वस्तुस्थिति से अवगत कराने के लिए एक भाई को श्रीजी के पास दौड़ाया। उन भाई ने जाकर नलुओं के सम्पूर्ण विस्तृत वृत्तान्त सहित अब तक जो भी घटा, वह सब कुछ महाप्रभु श्री प्राणनाथजी को सुना दिया।

ज. ५८- दूसरे दिन प्रातः कान्हजी भाई उन पाँचों काज़ियों के पास नलुओं का जवाब लेने पुनः गये। परन्तु किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। उत्तर देने में विभिन्न बहाना करते हुए सभी काज़ी एक-दूसरे के सिर पर डालते रहे।

स. ५९-उत्तर देने के समय उन काज़ियों ने कान्हजी भाई को क्या-कैसा जवाब दिया?

ज. ५९- सभी काज़ी अपने नलुओं का जवाब देने के विषय में दूसरे के →

स. ६०-उक्त प्रकार प्रत्युत्तर लेने के लिए कान्हजी भाई उन काज़ियों के घर कितने दिन भटके?

ज. ६०- उक्त प्रकार नलुओं का प्रत्युत्तर लेने के लिए कान्हजी भाई →

स. ६१-काज़ी शेख निज़ाम के पास जाकर एक दिन कान्हजी भाई ने झुककर क्या कहा?

ज. ६१- एक दिन काज़ी शेख निज़ाम के पास जाकर कान्हजी भाई ने →

स. ६२-काजी शेख निज़ाम ने कान्हजी भाई से नलुए के जवाब के विषय में क्या कहा?

ज. ६२- काज़ी शेख निज़ाम ने कान्हजी भाई से नलुए के जवाब के विषय →

स. ६३-पुनः काज़ी शेख निज़ाम पत्र का जवाब देने के लिए क्या-क्या करने को कहने लगा?

ज. ६३- पुनः काज़ी शेख निज़ाम पत्र का जवाब देने के लिए कहने लगा, →

स. ६४-काज़ी शेख निज़ाम के घर से निकलकर कान्हजी भाई किस काज़ी के घर जवाब लेने गये?

स. ६५-काज़ी शेख इसलाम ने नलुए का जवाब देने के विषय में कान्हजी भाई से क्या कहा?

→ जवाब का इंतजार करते रहे और कहते रहे, "पहले आप दूसरों से जवाब ले आइये। बाद में हम भी जवाब देंगे।" सभी काज़ी इस प्रकार की बातें ही करते रहे। परन्तु जवाब किसी ने नहीं दिया।

→ काज़ियों के घर-घर पन्द्रह दिनों तक भटकते रहे। ब्रह्ममुनियों के अतिरिक्त किसी में विश्वास की गन्ध नहीं होती। इसलिए उनमें से कोई भी धर्मार्थ कार्य पर समर्पित नहीं हुआ।

→ झुककर नम्रतापूर्वक कहा, "आप मुझे पत्र का उत्तर अवश्य दीजिए।" तब काज़ी ने उत्तर दिया, " यह कार्य उतावली का नहीं है।"

→ में कहा, "यह तो आप इमामत-धर्म के नेतृत्व का अधिकार लेकर आए हैं। इसका उत्तर देने का अधिकार तो बादशाह को है। इस पत्र का हम क्या उत्तर दें?"

→ "हम पाँचों लोग मिलकर एक स्थान पर बैठेंगे और नलुओं का जवाब लिखेंगे। इमाम और क़यामत की बात सुनने और समझने के लिए तो यहाँ पूरी जनता ही एकत्र हो जायेगी। यह कार्य शीघ्रता से हो भी नहीं सकता।"

ज. ६४- काज़ी शेख निज़ाम के घर से निकलकर कान्हजी भाई काज़ी शेख इसलाम के घर गये और नलुए का उत्तर पाने की आकांक्षा व्यक्त की।

ज. ६५- काज़ी शेख इसलाम ने नलुए का जवाब देने के विषय में कान्हजी भाई से कहा, "अकेले इस नलुए का उत्तर देना मेरे बस की बात नहीं। अभी मैं इस नलुए का उत्तर कैसे दे सकता हूँ? ये बातें तो →

→ विशेष महत्त्व की हैं। इस नलुए में तो तुम क़यामत के समय का →

स. ६६-किस काज़ी ने ऐसा कहा कि "जब हम पाँचों मिलकर जवाब देंगे, तब तुम हमारा जवाब फकीर को दे देना?"

स. ६७-कान्हजी भाई ने काज़ी सिद्दी पोलाद के आगे कैसे जवाब की इच्छा प्रकट की?

स. ६८-कान्हजी भाई की उक्त बातें सुनकर काज़ी सिद्दी पोलाद ने क्या कहा?

स. ६९-सिद्दी पोलाद काज़ी की उक्त बातें सुनते ही कान्हजी भाई ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. ६९- सिद्दी पोलाद काज़ी की उक्त बातें सुनकर कान्हजी भाई ने उनसे →

स. ७०-कान्हजी भाई की बातों का जवाब देते हुए काज़ी सिद्दी पोलाद ने उन्हें क्या डर बताया?

ज. ७०- कान्हजी भाई की उक्त बातों का जवाब देते हुए काज़ी सिद्दी पोलाद ने कहा, "हमारी इतनी हिम्मत कहाँ कि हम बादशाह के →

स. ७१-वहाँ से लौटकर कान्हजी भाई ने किसके घर पहुँचकर जवाब देने के लिए कहा?

स. ७२-'आनन्ददायी समाचार लेकर आया हूँ, जिसे सुनकर दिल में उमंग उठनी चाहिए।' कान्हजी भाई के ऐसा कहने पर काज़ी रज़वी खाँ ने क्या जवाब दिया?

→ दावा लेकर आये हो। मैं पत्र पढ़-पढ़ कर परेशान हो गया । वह पत्र पढ़कर मैंने एक तरफ डाल दिया है।"

ज. ६६- काज़ी शेख इसलाम ने कान्हजी भाई से ऐसा कहा, "हम पाँचों जब इकट्ठे बैठेंगे, तब इन पत्रों का उत्तर लिखेंगे। फिर तुम जाकर फकीर को सभी समाचार दे देना।"

ज. ६७- कान्हजी भाई ने काज़ी सिद्दी पोलाद के घर जाकर विनम्रतापूर्वक कहा, "कृपया आप मुझे नलुए का जवाब अवश्य दे दीजिए। मैं गरीब हूँ। फकीर मुझे पारिश्रमिक नहीं दे रहे हैं।"

ज. ६८- कान्हजी भाई की उक्त बातें सुनकर काज़ी सिद्दी पोलाद ने उत्तर दिया, "यह कार्य काज़ी और मुल्लाओं का है। मैं कुरान में लिखी दीन इसलाम की हकीकत-वास्तविकता से अनभिज्ञ हूँ। मैं इनका भेद क्या जानूँ?"

→ कहा, "आप हमारा यह समाचार बादशाह तक पहुँचा दीजिए। वे स्वतः ही इस पत्र का उत्तर दे देंगे। उन्हें इन सभी बातों की सही जानकारी है।"

→ पास जाकर ये बातें करें? उनके सम्मुख हमारे मुख से एक शब्द भी नहीं निकलेगा। कदाच कहने का साहस करें भी और यदि मुख से भूलचूकसे कोई गलत शब्द निकल जाय, तो बहुत दुःख सहन करने पड़ेंगे।"

ज. ७१- काज़ी सिद्दी पोलाद के घर से लौटकर कान्हजी भाई काज़ी रज़बी खाँ के यहाँ गये और उसके आगे पुकारकर कहा, "हे दीवान साहेब! कृपया मेरे पत्र का उत्तर दीजिए!"

ज. ७२- "मैं आपके पास इमाम मेहदी के आगमन एवम् क़यामत का शुभ-आनन्ददायी समाचार लेकर आया हूँ। इन बचनों को सुनकर आपके दिल में उमंग उठनी चाहिए।" कान्हजी भाई की →

→ ये बातें सुनकर दीवान रज़वी खाँ ने कान्हजी भाई से कहा, "हम क्या खुशी मनायें? आप तो आज ही क़यामत का समाचार लेकर आये हो! हमारा तो दिल करता है कि हम आपको मार →

स. ७३-पुनः जब कान्हजी भाई ने काज़ी रज़वी खाँ से दो शब्द लिखकर देने को कहा, जिससे उन्हें उनका पारिश्रमिक मिल जाय, तब काज़ी रज़वी खाँ ने क्या कहा?

ज. ७३- पुनः जब कान्हजी भाई ने काज़ी रज़वी खाँ से दो शब्द लिखकर →

स. ७४-उक्त प्रकार से सभी काज़ियों के पास बारी-बारी से चक्कर काटकर लाचार हो जाने पर कान्हजी भाई ने श्रीजी के पास आकर क्या कहा?

स. ७५-बीतककार श्री लालदासजी अब इसके आगे किस विषय का वर्णन करने को कह रहे हैं?

ज. ७५- बीतककार श्री लालदासजी महाराज अपने धाम के साथियों से →

❖ मंत्रणा ❖

स. १- वे कौन भाई थे, जिनके घर मोमिन जागनी का संदेश लेकर गये थे?

स. २- उन्हें जागृत करने के लिए मोमिन उनके पीछे तो पड़े, परन्तु उनमें क्या कमी थी?

ज. २- मोमिनों ने उनके घर जाकर उनसे बहुत ज्ञान चर्चा की। उन्हें →

→ डालें!! अरे, आपको क्या मालूम? अभी हमारे मन में सांसारिक सुख भोगने की अभिलाषा शेष है। आपकी क़यामत की बात मानने से पत्नी, पुत्र, परिवार आदि सारे बन्धन छूट जाते हैं!"

→ देने को कहा, जिससे उन्हें उनका पारिश्रमिक मिल जाय, तब काज़ी रज़वी ख़ाँ ने कहा, "जिस नलुए का जवाब पाँच व्यक्तियों से माँगा गया है, उस नलुए का जवाब देना मुझ अकेले के बूते के बाहर की बात है। फिर यह दावा बहुत बड़ा है। ये सारे प्रश्न इसलाम धर्म से सम्बन्धित हैं।"

ज. ७४- उक्त प्रकार से सभी काज़ियों के पास बारी-बारी से चक्कर काटकर लाचार हो जाने पर कान्हजी भाई ने श्रीजी के पास आकर कहा, "पत्र पहुँचाकर उत्तर पाने के लिए मैं बहुत भटका, किन्तु कोई भी उत्तर नहीं देता।"

→ कहते हैं, " हे मेरे प्यारे सुन्दरसाथजी! अभी नलुए पहुँचाने का वृत्तान्त सुनाया गया। अब इसके आगे औरंगज़ेब के पास संदेश पहुँचाने के लिए जो मंत्रणा हुई, उसका वर्णन करेंगे।"

- (प्रकरण ४०, सवाल-जवाब नं. ७५, कुल सं.२०६९+७५=२१४४)।

❖ मंत्रणा ❖

ज. १- वे रामचन्द्र भाई नामक एक वकील थे, जिनके घर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी के साथी-मोमिन जागनी का संदेश लेकर गए थे।

→ जागृत करने के लिए मोमिन बहुत पीछे पड़े, किन्तु उनके अन्दर ब्रह्ममुनियों का अंकुर दिखाई नहीं दिया। उनमें मूल अंकुर की ही कमी थी।

स. ३- किस भाई ने श्री प्राणनाथजी की थोड़े दिन मनोनुकूल सेवा की?

स. ४- किस भाई को आत्मीय सुख के बदले सांसारिक सुख में आराम मिला?

स. ५- सुन्दरी नामक जो संन्यासिनी श्रीजी स्वरूप को रेतीली राह पर मिली थी, वह कौन थी?

ज. ५- सुन्दरी नाम की जो संन्यासिनी श्रीजी स्वरूप को रणभूमि सदृश →

स. ६- वे किनके दर्शनार्थ आई थीं? क्या उन्हें वहाँ उपस्थित अन्य जनों ने भी देखा?

स. ७- मोमिनों को नलुए पहुँचाकर जवाब प्राप्त करने के प्रयास में कितना समय लगा?

स. ८- उक्त नलुओं में किस विषय की बातों का निर्णय करने की सूचना थी?

स. ९- समाज से दूर एकान्त स्थान पर एकत्रित होकर श्रीजी स्वरूप साथियों सहित क्या करने लगे?

स. १०- यहाँ एकत्रित समाज में कौन-कौन हैं और श्रीजी स्वरूप सबको एकत्रित कर क्या मंत्रणा करने लगे?

ज. १०- यहाँ एकत्रित समाज में कुछ दिल्ली के स्थानीय साथी और कुछ →

स. ११- "अब उपरान्त बादशाह औरंगजेब को पैगाम के माध्यम से संदेश पहुँचाने के विषय में आगे क्या करना है?"- ऐसा किसने पूछा?

ज. ३- गंगाराम भाई के बड़े भाई उद्धवदास गोड़िया ने थोड़े दिन महाप्रभु श्री प्राणनाथजी की मनोनुकूल सेवा की।

ज. ४- उद्धवदास भाई को आत्मीय सुख के बदले संसार के सुखों में ज्यादा आराम प्रतीत हुआ। यसर्थ उनकी आत्मा जागृत नहीं हो सकी।

→ बीरान रेतीली राह में मिली थी, जो श्रीजी स्वरूप के दर्शन कर वापस चली गई थी, वे गंगाजी थीं। वे संन्यासिनी का भेष धारणकर श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ आई थी ।

ज. ६- वे अक्षरातीत स्वरूप श्री प्राणनाथजी के दर्शनार्थ संसार में उतरी थीं। अतः मूल में प्राप्त वरदान को सार्थक कर लौट गयी। श्रीजी स्वरूप के अलावा उन्हें वहाँ उपस्थित अन्य किसी ने नहीं देखा।

ज. ७- नलुओं के माध्यम से आध्यात्मिक जागनी-क़यामत के समय के प्रकटीकरण की घोषणा और इमाम मेहदी के संदेश को बादशाह औरंगजेब तक पहुँचाने के प्रयास में मोमिनों को दो माह लग गये।

ज. ८- उक्त नलुओं में इमाम मेहदी के प्रकट होने की और क़यामत के समय के निर्णय करने की सूचना थी।

ज. ९- समाज से दूर किसी एकान्त स्थान में बैठकर श्री प्राणनाथजी स्वरूप साथियों से विचार-विमर्श करने लगे कि अब आगे क्या कदम उठाया जाये?

→ महाजर अर्थात् घरबार त्यागकर श्रीजी स्वरूप के साथ रहनेवाले साथी हैं। इन सबको एकत्रित कर श्रीजी एक बाग में बैठकर यह मंत्रणा करने लगे कि "औरंगजेब तक क़यामत की सूचना कैसे पहुँचायी जाये?"

ज. ११- "अब उपरान्त बादशाह औरंगजेब को पैगाम के माध्यम से संदेश पहुँचाने के विषय में आगे क्या करना है?"- ऐसा श्री प्राणनाथजी ने पूछा।

स. १२-बाग की एकान्त बैठक में कौन-कौन उपस्थित थे?

स. १३-इस समय बाग में एकत्रित सुन्दरसाथ में से संघर्ष में जूझते हुए भाइयों से श्री प्राणनाथजी ने क्या कहा?

ज. १३- इस समय बाग में एकत्रित सुंदरसाथ में से संघर्ष में जूझते हुए →

स. १४-किसने अपनी आनन्दस्वरूप श्री श्यामाजी को हादी बनाकर किनके लिए भेजा है?

स. १५-इसके पूर्व हजरत मुहम्मद साहेब के माध्यम से कुरान किसने और किसके लिए भेजा था?

स. १६-कौन कुरान के संदेश को अपना जानकर अपनायेंगे? कुरान में किसकी लीला है?

ज. १६- कुरान के अन्तर्गत लिखे संदेश ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के लिए हैं। →

स. १७-कुरान के अन्दर लिखे रहस्यों के अर्थ किसकी समझ में आयेंगे?

स. १८-सामर्थ्यशाली परमात्मा श्री राजजी ने किसके प्रति कृपा-दया की है?

स. १९-किसका संदेश किस तक पहुँचाते समय कोई मोमिनों को कुछ नहीं कर सकता?

स. २०-बादशाह तक इमाम का पैगाम पहुँचाने के लिए यदि भेष भी बदलना पड़े, तो क्या करना चाहिए?

ज. २०- अपने धाम का वादा पूर्ण करने अर्थात् बादशाह तक इमाम का →

ज. १२- बाग की एकान्त बैठक में दिल्ली के स्थानीय साथी और श्रीजी के पास रहनेवाले घरबार त्यागी महाजर लोग थे।

→अपने साथियों से महामति श्री प्राणनाथजी ने कहा, "आजतक की बीतक-आपबीती घटनाओं को देखते हुए मुझे यह तो विश्वास है ही कि प्रियतम परमात्मा श्री राजजी की कृपा-छत्र-छाया आप पर अवश्यमेव है।"

ज. १४- अक्षरातीत परमात्मा श्री राजजी ने अपनी आनन्द अंग श्यामा-ईसा स्वरूप रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी को हादी बनाकर अपनी प्यारी ब्रह्मात्माओं के लिए भेजा है।

ज. १५- इसके पूर्व भी हजरत मुहम्मद साहेब के माध्यम से परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने कुरान द्वारा अपने वचन अपनी रूहों-मोमिनों के लिए ही भेजे थे।

→अतः ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के बिना उन वचनों को अन्य कोई अपना नहीं सकेगा। उस संदेश पत्र में भी हम ब्रह्मात्माओं की लीला के वृत्तान्त द्वारा हमारा ही मार्गदर्शन किया गया है।

ज. १७- कुरान के अन्दर लिखे रहस्यमयी संकेतों के रहस्य-बातुनी अर्थ ब्रह्मात्माओं के अतिरिक्त किसी और के समझ में नहीं आ सकेंगे।

ज. १८- आदेशपत्ररूपी कुरान शरीफ के माध्यम से सामर्थ्यशाली कृपालु परमात्मा श्री राजजी ने ब्रह्ममुनियों के प्रति अपार कृपा-दया की है।

ज. १९- प्रियतम परमात्मा-श्री राजजी का संदेश बादशाह औरंगजेब तक पहुँचाते समय कोई मोमिनों को कुछ नहीं कर सकता।

→पैगाम पहुँचाने के लिए यदि भेष भी बदलना पड़े, तब भी कदापि पीछे नहीं हटना चाहिए। भेष बदलकर भी पैगाम तो पहुँचाकर ही छोड़ना चाहिए।

स. २१-कदाच पैगाम पहुँचाने के लिए हमें मरना भी पड़े, तब भी हम कहाँ उठेंगे?

ज. २१- कदाच धाम में किया हुआ वादा पूर्ण करने जाते अर्थात् पैगाम →

स. २२-धाम में दिया हुआ वचन पालन करते समय मरना अच्छा है या उस वचन को ठुकराकर जीना अच्छा है?

स. २३-धर्म-कार्य करते हुए यदि वे शैतान हमें मार भी डालें, तब भी क्या हमें डरना चाहिए?

ज. २३- धर्म-कार्य करते समय यदि वे शैतान हमें मार भी डालें अथवा →

स. २४-तत्पश्चात् महामति श्री प्राणनाथजी ने बाग में उपस्थित सुन्दरसाथजी को दृढ़ बनाकर हिम्मत बँधाने के लिए किन वचनों से संबोधित किया?

ज. २४- तत्पश्चात् महामति श्री प्राणनाथजी ने बाग में उपस्थित सुन्दरसाथजी को दृढ़ बनाकर हिम्मत बँधाने के लिए विवेकशील वचनों से संबोधित करते हुए कहा, "यहाँ हमें संदेश पहुँचाने में जो जोखिम होगा, उसके प्रति सचेत होने की आवश्यकता है। जिस किसी के भी मन में कोई आशंका या प्रतिकूल विचार हों, वे उन पर विचार करके उन्हें यहीं प्रकट कर दें। अपनी मानसिक स्थिति के अनुरूप ही हमारे साथ चलने का प्रण लेना। बाद में →

स. २५-संबोधित करते हुए अन्य दूसरी कौन-सी बात श्रीजी स्वरूप ने बाग में उपस्थित ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के आगे रखी?

ज. २५- तत्पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने बाग में उपस्थित ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के आगे दूसरी बात रखते हुए कहा, "दूसरी बात यह भी निश्चित →

→ पहुँचाने का धर्म-कार्य करते समय यदि हमें कोई मार भी डाले, तब भी हमें मरने से डरना नहीं है क्योंकि हम यदि यहाँ मर भी गये, तब भी हम सीधे मूल मिलावे में उठेंगे।

ज. २२- धाम में श्री राजजी के सामने दिया हुआ वचन अथवा किया हुआ वादा पालन करते-करते मरने में श्रेय है न कि उस वादे से विमुख होकर अपने धर्म को ठुकराकर जीने में श्रेय है।

→ हमें मरना भी पड़े, तब भी हमें चिंता नहीं करनी चाहिए। हमें तो यही माँगना चाहिए कि "हमारा जीवन धाम का धर्म पालन करते-करते ही क्यों समाप्त न हो?" अतः हमें इस विषय में कायर बनकर पीछे नहीं हटना चाहिए ।

→ कोई भी यह मत कहना कि "हमसे सलाह नहीं ली थी।" अतएव इस सम्बन्ध में कोई भी कुछ भी कहना चाहते हों, वे अपने विचार अभी बता दें। पीछे काम बिगड़ने पर या सुधरने पर कोई ऐसा न कहना, "हमें तो किसी ने पूछा ही नहीं या मुझे तो जाना ही नहीं था, परन्तु जाना पड़ा और जाने पर ऐसा हाल हुआ।" उक्त प्रकार की बातें किसी के दिल में न रहें। अपने दिल के विचार अभी प्रकट कर दो कि "हमारा यह विचार है।" हम सब आज यहाँ प्रियतम श्री राजजी की आज्ञा से बैठकर सलाह-मशविरा कर रहे हैं। इसमें किंचित् भी संदेह नहीं है कि पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी कभी भी ब्रह्मप्रियाओं का अहित न होने देंगे!"

→ है कि औरंगजेब में ब्रह्मात्मा सकुमारबाई का अंश-अंकुर है। उसमें भी हम ब्रह्ममुनियों के संस्कार विद्यमान हैं। इस बात में शंका की कोई गुञ्जाइश ही नहीं है। अतः पैगाम पहुँचाने पर बादशाह धाम का अंकुर-संस्कार अवश्य ही दिखायेगा। पैगाम पहुँचाने पर वह हमारे साथ कठोर अथवा अमानवीय व्यवहार कदापि नहीं करेगा क्योंकि कभी परमधाम में हम सब इकट्ठे भी तो रहे थे।"

स. २६-सामूहिक बैठक में एकत्रित सुन्दरसाथ ने पैगाम पहुँचाने के विषय में क्या निष्कर्ष निकाला?

ज. २६- सामूहिक बैठक में एकत्रित सुंदरसाथ ने पैगाम पहुँचाने के लिए मंत्रणा कर यह निष्कर्ष निकाला, "जैसे भी हो, पैगाम तो पहुँचाना →

स. २७-बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ सुन्दरसाथ को सम्बोधित करते हुए क्या कहते हैं?

ज. २७- बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ सुन्दरसाथ को सम्बोधित करते हुए कहते हैं "हे धामस्थ सुन्दरसाथजी! यह →

❖ क्यों ए रुक्का आइया ❖

स. १- उक्त प्रकार एकान्त बाग में विचार-विमर्श करने के पश्चात् सुन्दरसाथ कहाँ गये?

स. २- एक दिन पहले रात को साथियों ने दूसरे दिन सुबह क्या करने के विषय में निश्चय किया?

ज. २- जिन-जिन मोमिनों ने पैगाम पहुँचाने की जिम्मेदारी सिर पर उठायी →

स. ३- दूसरे दिन सुबह उठकर पैगाम पहुँचाने के पीछे पड़े साथी कहाँ गये?

स. ४- मोमिन किस प्रकार सनंध गाने लगे और क्यों?

ज. ४- जामा मसजिद की सीढ़ी पर पहुँचकर मोमिन जोशीले स्वर में सनंध की वाणी गाने लगे। आवेश एवम् उमंग में भरे हुए साथी →

→ ही है। चाहे मरना ही क्यों न पड़े! हम ब्रह्मात्माओं को अपना जीवन धाम में धनी के आगे परस्पर दिए-किए हुए वादे को पूर्ण करने में ही अर्पण करना चाहिए। ब्रह्मात्मा कहलाकर भी यदि हम ही अपने धर्म से विमुख हुए, तो दूसरा कौन धर्म के सम्मुख होकर धर्म पर समर्पित होगा?"

→ हमारी-आपकी अपनी आत्मकथा है। अब आगे के प्रकरण में संदेश पहुँचाने के लिए जो अन्य प्रयास किए गए, उसकी चर्चा करेंगे।"

- (प्रकरण ४१, सवाल-जवाब नं. २७, कुल सं. २१४४+२७=२१७१)।

❖ क्यों ए रुक्का आइया ❖

ज. १- उक्त प्रकार एकान्त बाग में विचार-विमर्श करने के पश्चात् सभी सुन्दरसाथ अपने-अपने घर लौट गये।

→ थी, उन्होंने रात्रि में एक साथ मिलकर यह निश्चय किया कि सुबह उठते ही हम दिल्ली की जामा मसजिद की सीढ़ियों पर बैठकर वाणी गायन करेंगे। ऐसा निश्चित कर अपने-अपने घर जाकर सो गये।

ज. ३- दूसरे दिन प्रातः उठकर पैगाम पहुँचाने के पीछे पड़े मोमिन दिल्ली स्थित जामा मसजिद की सीढ़ियों पर बैठकर वाणी गायन करने लगे।

→ अपनी ही धुन में दुनिया के साधारण लोगों की चर्चा एवम् विरोधी जनों की शत्रुता की परवाह किये बिना यह सोचकर जोश में वाणी गाने लगे कि "कोई-न-कोई तो इस वाणी को सुनकर आयेगा! कुछ-न-कुछ तो पूछेगा!!"

स. ५ - मोमिन भाई प्रतिदिन कहाँ जाते थे और क्या करते थे?

स. ६- किस विषय में मोमिनों के मन में तनिक-सा भी संदेह नहीं है?

स. ७- मोमिन पैगाम पहुँचाने के विषय में कैसे-किस प्रकार से काम कर रहे थे?

स. ८- किन्हें परात्पर पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी का आवेश और आश्रय प्राप्त है?

स. ९- किनकी दृष्टि में किसका कुछ भी महत्त्व नहीं है?

स. १०-वे सनंध की कैसी चर्चा करते थे? उन्हें किसकी तनिक भी परवाह नहीं है?

स. ११-इसी बीच कौन भाई आये और किसके तथा कैसे शिष्य बन गये?

ज. ११- उक्त प्रकार के हलचलपूर्ण वातावरण में एक भाई आये, जिनका →

स. १२-उक्त भाई को किनके परमात्मा स्वरूप की पहचान हो गई थी? अतः वे क्या करते थे?

स. १३-कौन यहाँ नित्य प्रति अपने पुत्र सहित श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ आते थे?

ज. ५- मोमिन भाई पैगाम पहुँचाने की चिंता में न सोते थे, न खाते थे। उनके अन्दर बेचैनी-सी छाई रहती थी। ऐसे मोमिन प्रतिदिन जामा मसजिद की सीढ़ियों पर बैठकर वाणी गाते थे।

ज. ६- इन मोमिनों के मन में अपनी सुरक्षा एवम् सफलता के प्रति तनिक-सा भी संदेह नहीं है।

ज. ७- ये मोमिन-ब्रह्मात्माएँ बादशाह औरंगजेब के कानों तक पैगामरूपी संदेश पहुँचाने के विषय में स्वयं समर्पित थे। वे उस कार्य को अपने सिर पर लेकर अपने ढंग से कार्य करते हुए आगे बढ़ रहे थे।

ज. ८- इन मोमिनों को परात्पर पूर्णब्रह्म परमात्मा का आवेश और आश्रय प्राप्त है।

ज. ९- इन मोमिनों की दृष्टि में संसार का थोड़ा-सा भी महत्त्व नहीं है। संसार की किसी भी चीज़ के प्रति भय विषयक बातें न उनके दिल में हैं और न कभी दिमाग में ही आती हैं।

ज. १०- मोमिन मसजिद की सीढ़ियों पर बैठकर बेधड़क होकर सनंध की चर्चा करते थे। उन्हें संदेश पहुँचाने के सिवाय अन्य किसी भी बात की तनिक भी परवाह नहीं है।

→ नाम है-नन्दलाल घड़ियालची। वे अपने परिवार सहित पूर्ण निष्ठा के साथ श्री प्राणनाथजी के शिष्य बन गये और सुन्दरसाथ जमात में शामिल हो गये।

ज. १२- भाई नन्दलाल घड़ियालची को महाप्रभु श्री प्राणनाथजी के परमात्मा स्वरूप की पहचान हो गई थी। इसलिए वे दैनिक महाप्रभु श्री प्राणनाथजी की सेवा में प्रस्तुत रहते थे।

ज. १३- मेरता के धर्मप्रेमी राजाराम भाई अपने पुत्र शिवराम भाई सहित नित्य प्रति श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ आते थे।

स. १४-वे श्री प्राणनाथजी के मुखारविन्द से चर्चा सुनकर क्या करते थे?

स. १५-बादशाह को पैगाम पहुँचाने के लिए संघर्ष कर रहे साथियों ने क्या योजना बनायी?

ज. १५- बादशाह औरंगजेब के पास पैगाम पहुँचाने के लिए समर्पित →

स. १६-वह रुक्का कौन ले जाकर दरबार में कहाँ चिपका देंगे?

स. १७-उस रुक्के में क्या लिखा था और किसके लिए लिखा था?

ज. १७- उस रुक्के में लिखा था कि जो कोई भी मुसलमान हैं, उन्हें इस →

स. १८-उक्त रुक्के में किन बातों पर विश्वास कर उन्हें स्वीकार करने को कहा था?

ज. १८- उस रुक्के में लिखा था कि "कुरान में हादी मुहम्मद साहेब के कहे प्रमाण रूह अल्लाह-पूर्णब्रह्म परमात्मा के आनन्द अंश श्यामाजी स्वरूप श्री देवचन्द्रजी के रूप में मोमिनों-ब्रह्ममुनियों के साथ अर्श-परमधाम से संसार में अवतरित हुई हैं। पुनः रसूल →

स. १९-मुसलमान भाइयों को पत्र पढ़कर क्या हो जाने की सूचना दी गई थी?

स. २०-म्याराज के दौरान खुदा-परमात्मा ने मुहम्मद साहेब से क्या कहा था? कहे प्रमाण क्या हुआ?

ज. १४- वे श्री प्राणनाथजी के श्री मुख से तारतम सम्बन्धी चर्चा सुनकर आत्मीय सुख का अनुभव करते थे।

→ संघर्षरत साथियों ने मिलकर यह योजना बनायी कि एक रुक्का तैयार कर उस रुक्के द्वारा सीधे बादशाह को अपनी बात सुनायी जाये।

ज. १६- वह रुक्का (पत्र) भाई नन्दलाल घड़ियालची ले जाकर दरबार के बाहर स्थित पैर धोनेवाले गुसलखाने-स्नानगृह के द्वार पर चिपका देंगे।

→ रुक्के के माध्यम से यह सूचना दी जा रही है कि वे इस पत्र में लिखी हुई बातों पर विश्वास करके उन्हें स्वीकार करें। ये बातें दीन इसलाम के प्रति सच्चे मुसलमानों के लिए लिखी गई हैं।

→ साहेब ने दूसरी बार संसार में आने का जो वचन दिया था, उसे पूरा करने के लिए वे भी साथ आये हैं। अक्षर धाम-नूर मकान से फरिश्ता-असराफील के साथ परब्रह्म परमात्मा का आवेश-जबराईल भी अपने स्वामी के संग अर्श अजीम-दिव्य परमधाम से धरती पर उतर आया है। इन बातों पर विश्वास कर आप सब इन्हें स्वीकार करें।"

ज. १९- मुसलमान भाइयों को उक्त पत्र पढ़कर अज्ञानता में ही न झूलते हुए उक्त बातों पर विश्वास कर मोमिनों के साथ जमात में शामिल हो जाने की सूचना दी गई थी।

ज. २०- म्याराज के दौरान मुहम्मद साहेब से हक ताला खुदा-परमात्मा ने फर्दा रोज अर्थात् कल के दिन आने का वचन दिया था। अतः कहे प्रमाण वे श्री प्राणनाथजी के रूप में आये हैं।

स. २१-उक्त रुक्के को पढ़े बिना बादशाह के दरबार में जानेवालों के लिए रुक्के में क्या लिखा था?

ज. २१- उक्त रुक्के को बिना पढ़े अथवा सुने, जो दरबार में प्रवेश करेगा, →

स. २२-रुक्के द्वारा धर्म-संदेश भेजकर मोमिन क्या कर रहे हैं ?

स. २३-रुक्का पढ़कर उससे अधिक जानने की चाह रखनेवालों को रुक्के में क्या करने को कहा था?

स. २४-रुक्के में उक्त प्रकार की बातें लिखकर मोमिनों ने वह रुक्का किसके हाथ में और किस लिए दिया?

स. २५-भाई नन्दलाल घड़ियालची ने मोमिनों की आज्ञा शिरोधार्य कर क्या किया?

स. २६-किस कार्य में किसने तनिक भी ढील या लापरवाही नहीं की?

स. २७-दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही राजदरबार में किस विषय की बात फैल गई?

स. २८-कौन लोग राजदरबार में आते समय क्या करते चले जा रहे थे?

स. २९-उक्त प्रकार से सभी लोग कितने बजे से कितने बजे तक रुक्का पढ़ते-पढ़ते राजदरबार के अन्दर गये?

→ उसे परमात्मा खुदा की ओर से फिटकार अथवा धिक्कार मिलेगी। वह परमात्मा-खुदा के चरणों में कदापि नहीं पहुँच पाएगा। ऐसा उस रुक्के में लिखा था।

ज. २२- रुक्के द्वारा धर्म-संदेश भेजकर मोमिन अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहे हैं।

ज. २३- रुक्का पढ़कर उससे अधिक जानने की चाह रखनेवालों को रुक्के में मोमिनों को ढूँढ़ लेने के लिए कहा था।

ज. २४- रुक्के में उक्त प्रकार की बातें लिखकर मोमिनों ने वह रुक्का भाई नन्दलाल घड़ियालची के हाथ में उसे राजदरबार के गुसलखाने में चिपका देने के लिए दे दिया।

ज. २५- भाई नन्दलाल घड़ियालची ने मोमिनों की आज्ञा शिरोधार्य करके रात्रि के समय निर्भय होकर उस रुक्के को यथास्थान गोंद लगाकर चिपका दिया।

ज. २६- मोमिनों की आज्ञा पालन करने में नन्दलाल घड़ियालची भाई ने तनिक-सी भी ढील या लापरवाही नहीं की।

ज. २७- दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही गुसलखाने में लगे रुक्के विषय की बात राजदरबार में फैल गई।

ज. २८- राजदरबार के जो भी कर्मचारी दरबार में प्रवेश करने जाते थे, वे गुसलखाने के द्वार पर लगे रुक्के को पढ़-पढ़कर आश्चर्यचकित होकर दरबार में प्रविष्ट होते थे।

ज. २९- उक्त प्रकार से प्रातः छः बजे से नौ बजे तक सभी लोग रुक्का पढ़ते-पढ़ते राजदरबार के अन्दर गये।

स. ३०-धीरे-धीरे राजदरबार में रुक्के के विषय में कैसा शोर मचने लगा?

स. ३१-अन्त में रुक्के के विषय की बात किसके कानों में पहुँची?

स. ३२-वह बात सुनते ही बादशाह ने क्या किया? वह रुक्का पढ़ते ही बादशाह को क्या जानकारी मिली?

स. ३३-उस समय जनता के प्रार्थना-पत्र बादशाह तक पहुँचाने की सेवा किसे दी गयी थी? गुसलखाने के द्वार पर लगा रुक्का पढ़कर बादशाह ने क्या समझ लिया?

स. ३४-बादशाह औरंगजेब किससे और क्यों अत्यंत नाराज़ हुआ?

ज. ३४- काज़ी शेख सलेमान की लापरवाही का नतीजा प्रत्यक्ष होते ही बादशाह औरंगजेब उसके प्रति अत्यधिक अप्रसन्न हुआ और →

स. ३५-बादशाह ने राजदरबार में किस तरह काज़ी शेख सलेमान पर अपना रोष प्रकट किया?

ज. ३५- बादशाह औरंगजेब ने सभी कर्मचारियों के बीच काज़ी शेख सलेमान पर अपना रोष प्रकट करते हुए पूछा, "शेख सलेमान ! यह रुक्का इस प्रकार क्यों आया है? अवश्य ही तुमने हमें पहले इस बात की सूचना नहीं दी। इस पत्र द्वारा हमें यह प्रतीत होता है कि यह याचिका तुम्हारी लापरवाही के विरुद्ध फरियाद के रूप में भेजी गयी है। अरे! तुम बोलो!! क्या यह रुक्का तुम्हारी →

स. ३६-"तुम इस सेवा के योग्य नहीं हो। हम तुम्हें इस नौकरी से बाहर करते हैं।" -ऐसा किसने, किससे कहा?

ज. ३०- एक पहर के दौरान अनेकों लोगों ने उस असाधारण रुक्के को पढ़ा। अतः राजदरबार के कर्मचारियों में रुक्के के विषय में बड़ा भारी शोर मचने लगा।

ज. ३१- प्रातः छः बजे से लेकर नौ बजे तक शोर होते-होते अन्त में रुक्के के विषय की बात बादशाह औरंगजेब के कानों तक पहुँच गयी।

ज. ३२- वह बात सुनते ही बादशाह ने गुसलखाने के द्वार पर लगे रुक्के को मँगवाकर पढ़ लिया और तब उन्हें स्वयं ही सभी बातों की जानकारी हो गयी।

ज. ३३- उस समय जनता के प्रार्थना-पत्र बादशाह तक पहुँचाने की सेवा काज़ी शेख सलेमान को दी गयी थी। गुसलखाने के द्वार पर लगा रुक्का पढ़कर बादशाह ने काज़ी शेख सलेमान की लापरवाही समझ ली।

→ उस पर अपना रोष प्रकट किया। बादशाह ने जनता की प्रार्थना रुक्के के माध्यम से स्वयं तक पहुँचाने के लिए ही शेख सलेमान को वेतन देकर रखा था। किंतु सौंपे गये कार्य में शेख सलेमान ने मनमानी करके जनता को सताया, यह देखकर उसके प्रति बादशाह अत्यंत नाराज़ हो गया।

→ सेवा की वफादारी का नतीज़ा है? यह तुम्हारी ईमानदारी का प्रमाण है या बेईमानी का? क्या ये प्रार्थी पहले तुम्हारे घर में फरियाद लेकर कई बार नहीं भटके थे? जब तुमने उनकी एक न सुनी, तब निराश होकर उन्होंने यह हिम्मत की, नहीं? अरे नादान शेख सलेमान ! तुमसे निराश हुए बिना यह रुक्का इस प्रकार नहीं चिपकाया गया है !! तुम क्यों नहीं बोल देते कि तुम इस सेवा के काबिल नहीं हो? हमने तुम्हें किस कार्यार्थ नियुक्त किया था? क्या तुम्हारी ईमानदारी का यही प्रमाण है?"

ज. ३४- *"तुम इस सेवा के योग्य नहीं हो। हम तुम्हें इस नौकरी से बाहर करते हैं।"*- ऐसा बादशाह औरंगजेब ने काज़ी शेख सलेमान से कहा।

स. ३७-काज़ी शेख़ सलेमान को उक्त पद के लिए कितने रुपये मिलते थे? वे रुपये भी काटते हुए बादशाह औरंगजेब ने काज़ी शेख़ सलेमान से क्या कहा?

स. ३८-शेख़ सलेमान को नौकरी से निकालकर बादशाह ने क्या करवाया?

स. ३९-बादशाह औरंगजेब ने शहर में ढिंढोरा पिटवाकर क्या घोषणा करवा दी?

स. ४०-अच्छा! काज़ी शेख़ सलेमान को नौकरी से निकालकर बादशाह ने उस जगह पर किसे रखा?

स. ४१-औरंगजेब बादशाह कब, किस दिन नमाज़ पढ़ने महल से बाहर जाता था?

स. ४२-उस दिन काज़ी शेख़ सलेमान की जगह पर प्रार्थना-पत्र बटोरने कौन आया?

ज. ४२- बादशाह औरंगजेब के नमाज़ पढ़ने जाते समय काज़ी शेख़ →

स. ४३-बादशाह उस समय खड़े होकर क्या देख रहा था और किसे देख रहा था?

स. ४४-उस दिन वहाँ पैगाम लेकर कौन-कौन गये थे?

स. ४५-अब्दुल्ला ने सबके साथ मोमिनों का भी प्रार्थना-पत्र लेकर क्या किया?

ज. ३७- उक्त मुनासिब पद के लिए काज़ी शेख सलेमान को वेतन के रूप में दो सौ रुपये मिलते थे। वे दो सौ रुपये भी काटते हुए बादशाह औरंगजेब ने काज़ी शेख सलेमान से कहा, "तुममें बिलकुल अक्ल नहीं है!"

ज. ३८- शेख सलेमान को नौकरी से निकालकर बादशाह ने शहर में ढिंढोरा पिटवाकर घोषणा करवा दी।

ज. ३९- बादशाह औरंगजेब ने शहर में ढिंढोरा पिटवाकर यह घोषणा करवा दी कि "मेरे पास फरियाद भेजनेवाले प्रार्थी, जब मैं जुम्मे की नमाज़ पढ़ने जाऊँ, तब मेरे सामने अवश्य आयें।"

ज. ४०- नादान शेख सलेमान की नौकरी छीनकर बादशाह ने उस जगह पर उस सेवा के लिए काज़ी शेख निज़ाम के पुत्र अब्दुल्ला को नियुक्त किया।

ज. ४१- औरंगजेब बादशाह शुक्रवार-जुम्मे के दिन नमाज़ पढ़ने महल से बाहर जाता था।

→ सलेमान की जगह प्रार्थना-पत्र बटोरने की सेवा के लिए नियुक्त किया गया अब्दुल्ला नामक कर्मचारी आया और सबके रुक्के बटोरने लगा।

ज. ४३- उस समय बादशाह स्वयं खड़े होकर घोड़े पर से ही देख रहा था कि अनेकों लोग विनय-पत्र अब्दुल्ला के हाथ में दे रहे हैं।

ज. ४४- उस दिन वहाँ अपने तरफ की फरियाद-विनय-पत्र लेकर लालदासजी और निर्मलदासजी भी गये थे। उन्होंने भी अपना एक रुक्का अब्दुल्ला की ओर बढ़ा दिया।

ज. ४५- अब्दुल्ला ने सबके साथ लालदासजी और निर्मलदासजी द्वारा आगे किया हुआ रुक्का भी ले लिया। किन्तु उसने उसे वहीं पढ़कर तुरन्त ही फाड़ भी दिया।

स. ४६-मोमिनों द्वारा दिये हुए रुक्के को पढ़कर क्या कहते हुए अब्दुल्ला ने वह रुक्का फाड़ दिया?

स. ४७-रुक्का फाड़कर अब्दुल्ला ने क्या किया और क्या कहा?

स. ४८-लालदास और निर्मलदासजी ने जब अब्दुल्ला को रुक्का फाड़ते हुए देखा, तब उन दोनों ने उसे क्या-क्या कहा?

ज. ४८- जब लालदास और निर्मलदासजी ने अब्दुल्ला को रुक्का फाड़ते हुए देखा, तब दोनों ब्रह्ममुनियों ने अब्दुल्ला के आगे बहुत ही →

स. ४९-"रुक्का फाड़ने जैसा अनुचित कर्म क्यों करते हो?"- ऐसा किसने, किससे कहा?

स. ५०-अब्दुल्ला जैसे लोगों के लिए कुरान में क्या लिखा है?

स. ५१-उक्त प्रकार अब्दुल्ला को भला-बुरा कहते हुए मोमिन कहाँ तक उसके पीछे-पीछे गये?

स. ५२-उक्त प्रकार के जोखिम भरे और असफल प्रयास का समाचार मोमिनों ने कहाँ भेजा?

ज. ५२- उक्त प्रकार के जोखिम भरे असफल प्रयास का समाचार एक →

स. ५३-उक्त समाचार के साथ मोमिनों ने श्री प्राणनाथजी को अन्य क्या समाचार लिखा?

ज. ५३- उक्त समाचार के साथ मोमिनों ने श्री प्राणनाथजी को पत्र में →

ज. ४६- मोमिनों द्वारा दिये हुए रुक्के को पढ़कर अब्दुल्ला ने कहा, "मैं यह विनय कानों से सुनना तक नहीं चाहता।"-ऐसा कहकर रुक्का फाड़ दिया।

ज. ४७- अब्दुल्ला ने मोमिनों का रुक्का फाड़कर अपने जेब में रख लिया और कहा, "यह तो मोमिनों के प्रकटीकरण की बातें हैं। मुझे इन्हें अवश्य ही छिपाना है।"

→ पुकार की। किन्तु अब्दुल्ला ने किसी भी तरह कुछ भी नहीं सुना। तब ब्रह्ममुनियों ने कहा, "देखो! बादशाह हमारे लिए ही खड़े हैं। हम लोगों ने ही गुसलखाने के द्वार पर रुक्का चिपकाया था। हमारे कारण ही बादशाह शेख सलेमान से नाराज़ हुए थे।"

ज. ४९- *"रुक्का फाड़ने जैसा अनुचित कर्म क्यों करते हो?"*- ऐसा मोमिनों ने अब्दुल्ला से कहा।

ज. ५०- अब्दुल्ला जैसे लोगों के लिए कुरान में लिखा है कि ऐसे लोगों के मन और आँखों पर ताला पड़ा है। अतः सत्य बात को समझने की बुद्धि उन्हें कैसे प्राप्त हो सकती है ?

ज. ५१- उक्त प्रकार अब्दुल्ला को भला-बुरा कहते हुए मोमिन उसके पीछे-पीछे एक-दो तीर की दूरी तक घिसटते हुये गये। तब मोमिनों ने विचार किया, "यह निर्दयी हमारी बातें किसी तरह भी नहीं सुनेगा।"

→ पत्र में लिखकर श्री प्राणनाथजी की सेवा में भेजा गया। उसमें यह भी लिखा था, "संदेश पहुँचाने में हमारी ओर से किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं रही।"

→ यह भी लिखा था, "अब हम यहाँ क्या करें? दज्जाल-आसुरी एवम् अवज्ञाकारी प्रवृत्तियों का यहाँ बड़ा दबदबा होने के कारण हम लोग कुछ भी नहीं कर पाये।"

स. ५४-मोमिनों ने अपनी सफलता के बदले असफलता का कारण किस तरह चिट्ठी में रख दिया?

स. ५५-मोमिन जिस तरह बादशाह के पास अपनी याचिका पहुँचाने की तैयारी में थे, उस याचिका के विषय में मोमिनों ने श्रीजी को कैसे सूचित किया?

स. ५६-पुनः बादशाह तक पैगाम पहुँचाकर ही छोड़ने के विषय में मोमिनों ने पत्र में क्या लिखा था?

स. ५७-मोमिनों ने अपनी आन्तरिक उत्साहवर्धक साहसपूर्ण बातों की जानकारी धनी को कैसे कराई?

ज. ५७- मोमिनों ने अपनी आन्तरिक उत्साहवर्धक साहसपूर्ण बातों की जानकारी धनी को पत्र के माध्यम से कराते हुए लिखा, "हे प्रियतम! अब आप हमारा धर्म पर बलिदान होनेवाला एक और प्रबल एवम् संघर्षमयी प्रयास देखेंगे। हम आपकी आज्ञा और आपकी कृपा से बादशाह तक संदेश पहुँचाने का कार्य अवश्य ही कर सकेंगे। अब हमने किसी के भी माध्यम से बादशाह तक →

स. ५८-उक्त प्रकार का आवेशयुक्त पत्र किसके द्वारा और किसे भेजा गया? वह पत्र श्रीजी स्वरूप के हाथ में किसने अर्पित किया?

स. ५९-उपरोक्त प्रकार का जोशभरा पत्र मिलते ही श्री प्राणनाथजी ने क्या किया?

ज. ५४- मोमिनों ने अपनी असफलता के कारण विषय चिट्ठी में लिखा था, "हम लोगों ने जो सोचा था, उसमें हमें सफलता मिलती थी। परन्तु किसी ने हमारी बात ही नहीं सुनी। सभी लोग कलियुग के वशीभूत होकर दज्जाल के दास बने हैं।"

ज. ५५- मोमिन जिस तरह अपनी याचिका बादशाह के पास पहुँचाने गये थे, उसका सम्पूर्ण वृत्तान्त उन्होंने पत्र में लिखकर श्रीजी स्वरूप के पास भेज दिया।

ज. ५६- पुनः बादशाह तक पैगाम पहुँचाकर ही छोड़ने के विषय में मोमिनों ने पत्र में लिखा था, "परब्रह्म स्वामी श्री राजजी ! आपका वरद् हस्त हमारे सिर पर है। आपके आशीर्वाद से हम लोग अब बादशाह तक संदेश पहुँचाकर ही दम लेंगे।"

→ पहुँचने की आशा का परित्याग कर दिया है। अब हम सम्राट औरंगजेब से सीधे धर्मयुद्ध करने जा रहे हैं। आप वहाँ सतर्क रहिये। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप परमात्मा स्वरूप, सामर्थ्यवान्, पालनहार स्वामी हमारी रक्षार्थ सदा तत्पर हैं। अरे ! बादशाह औरंगजेब हमारा क्या बिगाड़ सकता है? हमने तो आपके चरणों को पकड़ रखा है। अब हम उसे परास्त करेंगे। हममें से कोई भी एक क्षण के लिए भी पीछे नहीं हटेगा। हमें केवल आपका आशीर्वाद चाहिए।"

ज. ५८- उक्त प्रकार का आवेशयुक्त पत्र मोमिनों द्वारा परब्रह्म परमात्मा स्वरूप श्री प्राणनाथजी के पास भेजा गया। वह पत्र कान्हजी भाई ने ले जाकर श्रीजी स्वरूप के हाथ में अर्पित किया।

ज. ५९- उपरोक्त प्रकार का जोशभरा पत्र मिलते ही महामति श्री प्राणनाथजी ने वह पत्र पढ़कर तुरन्त उत्तर लिखकर कान्हजी भाई के हाथों भेज दिया।

स. ६०-उस पत्र में श्री प्राणनाथजी ने विशेषकर मोमिनों को क्या लिखा था?

स. ६१-श्री प्राणनाथजी की पत्री आने के पूर्व मोमिनों ने पुनः विशेष क्या कार्य किया?

ज. ६१- श्री प्राणनाथजी की पत्री आने के पूर्व ही मोमिनों ने सभी साथियों →

स. ६२-श्री प्राणनाथजी की चिट्ठी पढ़ने के पश्चात् मोमिन किसके इंतज़ार में रहे?

स. ६३-अब आगे मोमिनों को किससे लोहा लेना है? इस कार्य विषय उन्हें किसका आदेश चाहिए था?

स. ६४-उक्त प्रकार आदेश की आस में बैठे मोमिनों से मिलने कौन आ पहुँचे?

ज. ६४- उक्त प्रकार से सभी सुंदरसाथ वहाँ बैठकर महाप्रभु श्री प्राणनाथ →

स. ६५-श्रीजी स्वरूप दिल्ली में आकर कहाँ, किस जगह अथवा किसकी हवेली में ठहरे?

स. ६६-कहाँ, कौनसी हवेली में साहसपूर्ण कार्य की योजना बनायी गयी? वहाँ कौन रहती थीं?

स. ६७-अभी दिल्ली में श्रीजी स्वरूप से सर्वप्रथम कौन आकर मिलीं? सब किसे और क्यों घेरकर बैठ गए?

ज. ६७- दिल्ली में सर्वप्रथम लालबाई ही श्रीजी से मिलीं क्योंकि वे उसी →

ज. ६०- उस पत्र में श्री प्राणनाथजी ने लिखा था, "आप लोग उतावली न करना। मैं यथाशीघ्र ही वहाँ आपके पास आ रहा हूँ। मुझसे मिलने के उपरान्त ही आप इस कार्य को आगे बढ़ाना।"

→ से मंत्रणा (सलाह-मशविरा) करने के लिए सभी को एक स्थान पर एकत्रित किया और संदेश पहुँचाने के विषय में पुनः सबसे सलाह ली।

ज. ६२- श्री प्राणनाथजी की चिट्ठी पढ़ने के पश्चात् सुन्दरसाथ सहित बारह मोमिन श्री महामति स्वरूप के इंतज़ार में रहे कि धनी कब दिल्ली पधारें!

ज. ६३- अब आगे मोमिनों को बादशाह औरंगजेब से लोहा बाँधकर भिड़ना है। यसर्थ उन्हें श्री राजजी स्वरूप श्री प्राणनाथजी का आदेश और आशीर्वाद चाहिए था।

→जी के आगमन की प्रतिक्षा करने लगे। उक्त प्रकारेण आदेश और दर्शन की आस रखनेवाले मोमिनों से मिलने दूसरे ही दिन महाप्रभु श्री प्राणनाथजी आ पहुँचे।

ज. ६५- दिल्ली के सुन्दरसाथ-मोमिनों से मिलने के लिए महाप्रभु श्री प्राणनाथजी दिल्ली शहर के चाँदनी चौक में स्थित एक क्षत्रिय की हवेली में आकर ठहरे।

ज. ६६- चाँदनी चौक स्थित क्षत्रिय की हवेली में ही आगामी साहसपूर्ण कार्य की योजना बनायी गयी। उसी हवेली में लालबाई रहती थी।

→हवेली में रहती थी। समस्त साथ यहाँ कार्य विषय पुनः सलाह-मशविरा हेतु महाप्रभु श्री प्राणनाथजी को चारों ओर से घेरकर बैठ गए।

स. ६८-जब मोमिन चारों ओर से श्रीजी स्वरूप को घेरकर बैठ गए, तब श्रीजी स्वरूप ने उनसे किस विषय की चर्चा की?

ज. ६८- जब मोमिन चारों ओर से श्रीजी स्वरूप को घेरकर बैठ गए, तब →

स. ६९-श्रीजी के प्रश्न का जवाब देते हुए मोमिनों ने अपने आगामी कार्यक्रम के विषय में श्रीजी से क्या कहा?

ज. ६९- श्रीजी के उक्त प्रश्न का जवाब देते हुए मोमिनों-ब्रह्ममुनियों ने आवेश एवम् उमंग के साथ उत्तर दिया, "हम इस धर्मकार्य में अपने आपको टूक-टूककर बलिदान देने के लिए तत्पर हैं। हमारे →

स. ७०-उक्त प्रकार से जोश में कहते-कहते मोमिनों ने यह तन कहाँ अर्पित करने को कहा?

स. ७१-इस समय श्रीजी स्वरूप किस लिए अत्यन्त प्रसन्न हुए?

स. ७२-पुनः क्या देखकर श्रीजी स्वरूप ने ब्रह्ममुनियों को सान्त्वना दी?

स. ७३-श्रीजी ने मोमिनों के हिम्मतपूर्ण समर्पित भाव को देखकर क्या कहा?

ज. ७३- यहाँ मोमिनों की हिम्मत, निजानन्द धर्म पर समर्पित उनकी →

स. ७४-हर्ष, उमंग और उत्साह से भरे मोमिन कैसी बातें कर रहे थे?

→ श्रीजी साहेब ने उनके अभियान के लिए प्रश्न किये और उनके प्रश्नों के उत्तर दिये। पुनः मोमिनों से यह भी पूछा, "बादशाह औरंगजेब को पैगाम पहुँचाने के लिए अब आप सब आगे क्या करना चाहते हैं?"

→ मन में इस कार्य के लिये किसी प्रकार की चिन्ता या किसी प्रकार का भय नहीं है। जिसे इस कार्य के प्रति भय लगता हो, वे अभी से हमसे पृथक होकर एक ओर हट जाये। हम सब तो केवल एक आपकी आज्ञा की प्रतिक्षा में हैं। आप हमारे पालनहार प्रियतम परमात्मा हैं। इसके अतिरिक्त हम अन्य कुछ नहीं जानते ।"

ज. ७०- उक्त प्रकार से जोश में कहते-कहते मोमिनों ने यहाँ तक कह दिया कि वे अपना तन एक आत्म धर्म-निजानन्द धर्म पर समर्पित करना चाहते हैं।

ज. ७१- इस समय मोमिनों की इच्छा और उनका साहस देखकर श्रीजी स्वरूप अत्यन्त प्रसन्न हुए।

ज. ७२- पुनः ब्रह्ममुनियों को उनकी वास्तविक आत्मदशा में भावविह्वल देखकर श्रीजी स्वरूप ने उन्हें सान्त्वना दी।

→ प्रेममयी भावना एवम् दीवानगी देखकर श्रीजी स्वरूप ने कहा, "आपको परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की ओर से इस कार्य को सम्पन्न करने का गौरव-वरदान प्राप्त हुआ है। जोखिम भरा यह दायित्व आपके सिवाय और कोई नहीं निबाह सकता।"

ज. ७४- यहाँ धाम का वचन पालन करने के लिए हर्ष, उमंग और उत्साह में भरकर सभी मोमिन एक से बढ़कर एक सारयुक्त बातें कर रहे थे।

स. ७५-मोमिन धर्म-संदेश पहुँचाने के लिए किस तरह हँस-हँसकर बलिदान देने की बातें कर रहे थे?

स. ७६-भोजन तैयार कर किसने, किसे अर्पण किया? कौन आकर श्रीजी के चरणों में लगे?

स. ७७-भोग के समय घर-घर से सुन्दरसाथ किसके लिए और क्या-क्या लाए?

स. ७८-मोमिन यहाँ उक्त प्रकार से प्रसन्न-प्रफुल्लित मन द्वारा किसे भोजन करा रहे हैं?

स. ७९-यहाँ उपस्थित सभी सुन्दरसाथ ने श्रीजी स्वरूप से प्रार्थना कर क्या कहा?

स. ८०-विशेषकर बारह मोमिनों ने प्रसाद के साथ आशीर्वाद प्राप्त कर श्री राजजी को क्या किया?

स. ८१-बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ सुन्दरसाथ को सम्बोधित करते हुए कौन-सी बीतक श्रवण करने का आग्रह कर रहे हैं?

ज. ८१- बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ सुन्दरसाथ को →

ज. ७५- मोमिन धर्म-संदेश पहुँचाने के अपने धर्म में इतने मग्न थे कि वे हँस-हँसकर अपने बलिदान देने की विधियों का बखान कर रहे थे।

ज. ७६- भोजन तैयार कर सुन्दरसाथ ने श्रीजी स्वरूप को अर्पण किया। इसी समय श्यामबाई तथा रामराय ने आकर श्रीजी स्वरूप के चरणों में प्रणाम किया।

ज. ७७- श्री राजजी को भोग आरोगाने के समय कोई अपने घर से मिठाई लाये, तो किसी अन्य ने दूसरी सामग्री लाकर महामतिजी की सेवा में प्रस्तुत की।

ज. ७८- मोमिन यहाँ उक्त प्रकार से प्रसन्न-प्रफुल्लित मन द्वारा श्री राजजी स्वरूप-श्री प्राणनाथजी को भोजन करा रहे हैं।

ज. ७९- यहाँ उपस्थित सभी सुन्दरसाथ सहित बारह मोमिनों ने प्रफुल्लित मन से श्री प्राणनाथजी से प्रार्थना करते हुए कहा, "अब आप यहाँ से प्रस्थान कर अन्यत्र- एकान्त स्थान में विराजमान हो जाइये।"

ज. ८०- विशेषकर बारह मोमिनों ने प्रसाद के साथ कार्य में सफलता-प्राप्ति का आशीर्वाद प्राप्त कर श्री राजजी को विदा करते हुए प्रार्थना की, "अब आप वहीं से हमारे इस अभियान का नेतृत्व कीजिए।"

→सम्बोधित करते हुए कहते हैं, "हे मेरे धाम के साथजी! यह अब तक के कार्य की हकीकत अथवा वृत्तान्त है। श्री राजजी की आज्ञा और कृपा से आगे जो कुछ भी होगा, उसे श्रवण कीजिए।"

- (प्रकरण ४२, सवाल-जवाब नं. ८१, कुल सं. २१७१+८१=२२५२)।

❖ सम्राट औरंगजेब से भेंट ❖

स. १- धर्म-संदेश पहुँचाये बिना चैन की नींद न सोनेवाले मोमिनों ने क्या किया?

स. २- सभी मोमिनों ने परस्पर सलाह-मशविरा करके क्या करने का निर्णय लिया?

स. ३- बादशाह की आत्मा को जागृत करने के लिए मोमिनों ने क्या करने का दृढ़ निश्चय किया?

स. ४- बुरी नीयतवाले अविश्वसनीय कायरों के मन में क्या हुआ?

स. ५- कौन अथवा कैसे लोग दिखावे के लिए बहुत बढ़ा-चढ़ाकर मात्र बातें ही करते रहे?

स. ६- मायावी नीयतग्रस्त लोग क्या कभी समय पर कार्यशील होकर आगे आयेंगे?

स. ७- धर्म-पालन करने के प्रति जीवन उत्सर्ग करने की चाह रखनेवाले मोमिन कैसे थे?

स. ८- कैसे लोग अपनी आत्मा महामति को दान कर चुके थे?

❖ सम्राट औरंगजेब से भेंट ❖

ज. १- निजानन्द धर्म-आत्म धर्म की राह पर समर्पित मोमिन पुनः एक घर में एकत्रित हुए और सलाह करने लगे कि "अब कल उठने के बाद हमें क्या करना है?"

ज. २- सभी मोमिनों ने परस्पर सलाह-मशविरा करके यह निर्णय लिया कि, "हमें अब वही करना है, जिससे सुलतान औरंगजेब को क़यामत एवं इमाम मेहदी के प्रकट होने की घड़ी आ गई है, इस बात पर विश्वास हो जाय।"

ज. ३- "अपनी आत्मा का बलिदान किये बिना बादशाह की आत्मा को जागृत करने का कोई उपाय नहीं है।"-ऐसा सोचकर मोमिनों ने मन में बलिदान देने का दृढ़ातिदृढ़ निश्चय कर लिया।

ज. ४- बुरी नीयतवाले अविश्वसनीय कायरों के मन में बड़ा डर बैठ गया और दिल में हलचल-सी मच गयी।

ज. ५- बुरी नीयतवाले अविश्वसनीय स्वार्थी लोग केवल दिखावे के लिए बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बातें मात्र करते रहे। काम करने के समय वे सदैव पीछे दिखाई देते थे।

ज. ६- मायावी नीयत-बुद्धिग्रस्त लोग दूसरों को तो बढ़ा-चढ़ाकर आगे लगाते हैं, किंतु धर्मवीर कहलानेवाले ऐसे स्वार्थी लोग स्वयं कभी भी परीक्षा की घड़ी में आगे नहीं आयेंगे।

ज. ७- धर्म-पालन करने के प्रति जीवन उत्सर्ग करने की चाह रखनेवाले धर्मप्रेमी मोमिन सबसे आगे चलकर सर्वस्व बलिदान करने के लिए तत्पर थे।

ज. ८- उक्त धर्मप्रेमी मोमिनों के पीछे-पीछे उनकी आज्ञा में चलनेवाले दूसरे ऐसे भी प्रेमी थे, जो धर्म के लिए अपनी आत्मा महामति को दान कर चुके थे।

स. ९- कुछ धर्मवीर मोमिनों ने कुरबानी का नाम सुनते ही क्या किया?

स. १०-धर्म के नाम पर समर्पित होनेवालों में अग्रगण्य दो जन कौन-कौन थे?

स. ११-वे कौन-कौन-सी धर्मवीर आत्माएँ हैं, जिन्हें यह कार्य किये बिना चैन ही नहीं पड़ता था?

स. १२-श्रीजी के प्रति ऊपरी पहचान रखनेवाले वे कौन भाई थे, जो नानिया सम्प्रदाय को मानते थे?

स. १३-घर-परिवार छोड़कर श्रीजी के अंग-संग होकर रहनेवाले सूरत के कौन भाई थे?

स. १४-वे कौन भाई थे, जो कोई भी कार्य करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे और धर्म पर सदैव पक्के रहते थे?

स. १५-कहाँ के रहनेवाले वे कौन भाई थे, जो दिल्ली आकर सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुये थे?

स. १६-वे कौन भाई थे, जो अपने कुटुम्ब-परिवार का परित्याग कर सूरत से दिल्ली आये थे?

स. १७-उक्त भाई के मन में किनकी सेवा के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था?

ज. ९- कुछएक धर्मवीर-धर्मप्रेमी मोमिन ऐसे भी थे, जिन्होंने कुरबानी का नाम सुनते ही पालनहार प्रियतम श्रीजी स्वरूप पर अपना तन, मन न्योछावर कर दिया।

ज. १०- धर्म के नाम पर समर्पित होनेवालों में जो दो अग्रगण्य भाई थे, उनमें से एक हैं-लक्ष्मण सेठ और दूसरे हैं-शेख बदल भाई।

ज. ११- वे धर्मवीर आत्माएँ हैं-लक्ष्मण सेठ और शेख बदल भाई, जो बादशाह के पास संदेश पहुँचाने के लिए बहुत ही उतावले थे। उक्त दोनों भाइयों को यह कार्य किये बिना चैन ही नहीं पड़ता था।

ज. १२- श्रीजी के प्रति ऊपरी पहचान रखनेवाले और नानिया सम्प्रदाय को माननेवाले भाई थे-कायम मुल्ला। वे भी इन मोमिनों में से ही थे। वे पैसों के लिए काम करते थे।

ज. १३- घर-परिवार छोड़कर सूरत से ही श्रीजी के अंग-संग होकर साथ-साथ रहनेवाले भाई थे-भीम भाई। वे भी बारह मोमिनों में शामिल थे।

ज. १४- वे भीम भाई थे, जो हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म मार्ग पर बलिदान हो चुके थे और धर्म में सदैव बहुत ही पक्के रहते थे। वे कोई भी कार्य करने के लिए तैयार रहते थे।

ज. १५- खम्भात के रहनेवाले सोमजी भाई दिल्ली आकर सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुये थे।

ज. १६- वे नागजी भाई थे, जो अपने कुटुम्ब-परिवार का परित्याग कर सूरत से ही श्री प्राणनाथजी की सेवार्थ उनके संग चले थे।

ज. १७- उक्त नागजी भाई के मन में परब्रह्म परमात्मा स्वरूप श्री प्राणनाथजी की सेवा के अतिरिक्त और कोई चाह शेष नहीं थी।

स. १८-कौन भाई बुन्देलखण्ड से किस पर पूर्ण विश्वास लेकर दिल्ली आये थे?

स. १९-कौन भाई ने कब और किसमें पूर्ण विश्वास होने पर तन, मन और धन से क्या किया?

स. २०-दिल्लीवाले किस भाई का किसमें जोशपूर्ण विश्वास था?

स. २१-दयाराम भाई ने श्रीजी स्वरूप की कैसी सेवा की? पुनः किस कार्य के प्रति उन्होंने कभी असावधानी नहीं दिखाई?

स. २२-कौन भाई, कहाँ और किस पर विश्वास लेकर धर्म में शामिल हुए थे?

स. २३-किन्हें महाप्रभु श्री प्राणनाथजी की पूर्ण पहचान हुई थी, जिसके कारण उन्होंने तन, मन, धन से श्रीजी की सेवा की थी?

स. २४-विश्वास के साथ सेवा करनेवाले कौन भाई श्री प्राणनाथजी में एकाकार हो गये थे?

स. २५-कौन भाई अपनी दुकान में रहकर पूर्ण विश्वास के साथ सदैव श्रीजी स्वरूप की सेवा में तत्पर रहते थे?

स. २६-कौन भाई सुन्दरसाथ के पोषण के लिए क्या एकत्र करते थे ? श्रीजी को क्या पहचानकर वे इस सेवा में तत्पर हुए थे?

ज. १८- खिमाई भाई बुन्देलखण्ड से धर्म पर पूर्णात्पूर्ण विश्वास लेकर दिल्ली आये थे।

ज. १९- उक्त खिमाई भाई ने श्रीजी स्वरूप की पूर्ण पहचान हो जाने पर दिल्ली आकर तन, मन और धन से श्रीजी स्वरूप की सेवा की।

ज. २०- दिल्ली निवासी दयाराम भाई को भी धर्म और श्री प्राणनाथजी के प्रति पूर्ण विश्वास था। वह विश्वास भी पूर्ण जोश भरा था।

ज. २१- दयाराम भाई ने बड़े उत्साह के साथ श्रीजी स्वरूप की सेवा की। धर्म के सेवा-कार्य के प्रति उन्होंने कभी ढील या असावधानी नहीं दिखाई।

ज. २२- ठट्ठा नगर के चिन्तामणि भाई भी निजानन्द सिद्धांत पर पूर्णात्पूर्ण विश्वास लेकर धर्म में शामिल हुये थे।

ज. २३- चिन्तामणि भाई को महाप्रभु श्री प्राणनाथजी की पूर्ण पहचान हो चुकी थी। इसलिए उन्होंने तन, मन, धन से महाप्रभु श्री प्राणनाथजी की सेवा की थी।

ज. २४- चंचल भाई बड़े विश्वास के साथ श्रीजी स्वरूप की सेवा में संलग्न रहते थे। कुटुम्ब-परिवार की आस छोड़कर वे परब्रह्म परमात्मा स्वरूप श्री प्राणनाथजी में एकाकार हो गये थे।

ज. २५- गंगाराम भाई अपनी दुकान में रहकर पूर्ण विश्वास के साथ सदैव श्रीजी की सेवा करते थे। किसी भी सेवा-कार्य के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे।

ज. २६- नया-नया विश्वास लेकर आनेवाले बनारसी भाई सुन्दरसाथ के पोषण के लिए अन्न और धन एकत्र करने की सेवा करते थे। वे श्रीजी स्वरूप को परब्रह्म स्वरूप मानकर इस सेवा में तत्पर हुए थे।

स. २७-उक्त भाई के अलावा अन्य कितने सुन्दरसाथ दिल्ली में आकर मिले?

स. २८-यहाँ दिल्ली में आनेवाले सुन्दरसाथ में श्रीजी स्वरूप के प्रति कैसा-कैसा विश्वास और भाव रखनेवाले थे?

स. २९-ये साथी परब्रह्म परमात्मा का संदेश किसके पास पहुँचाने की मंत्रणा करने बैठे थे?

स. ३०-मोमिनों ने परस्पर सलाह-मशविरा कर क्या निर्णय लिया?

ज. ३०- मोमिनों ने परस्पर सलाह-मशविरा कर यह निर्णय लिया कि →

स. ३१-मोमिनों ने कहाँ-किस मसजिद में जाकर कौन-से ग्रन्थ के प्रकरणों को गाने का निश्चय किया?

स. ३२-क्या विचार कर मोमिन उक्त वाणी गाने लगे?

ज. ३२- मोमिन यह विचार कर उक्त वाणी गाने लगे कि "हमारे सनंध →

स. ३३-जब बादशाह मोमिनों को बुलायेंगे, तब क्या होगा-ऐसा मोमिन विचार करने लगे?

स. ३४-उक्त प्रकार से सलाह-मशविरा कर बारह जन कहाँ गये?

स. ३५-वहाँ जाकर बारह मोमिन आवेश में भरकर कैसे और क्या गाने लगे?

स. ३६-मसजिद के अन्दर से कौन व्यक्ति ऊपर से उतरकर नीचे आ गया? वह किसके पास आया?

ज. २७- उक्त बनारसी भाई के अतिरिक्त अन्य बहुत से सुन्दरसाथ दिल्ली आकर महामति श्री प्राणनाथजी से मिले।

ज. २८- यहाँ दिल्ली में आनेवाले सुन्दरसाथ में से कितने तो श्रीजी स्वरूप के प्रति पूर्ण विश्वास लेकर आये थे तथा अच्छा भाव रखनेवाले थे, तो कइयों का विश्वास मात्र दिखावे के लिए था।

ज. २९- यहाँ एकत्रित साथी परब्रह्म परमात्मा का संदेश बादशाह औरंगजेब के पास पहुँचाने की मंत्रणा करने बैठे थे।

→ "पैगाम तो पहुँचाना ही है। बादशाह जुम्मे-शुक्रवार के दिन नमाज़ के लिये जायेगा। वहाँ मसजिद में जाकर सनंध ग्रंथ के प्रकरणों को पढ़ेंगे, जिन में रसूल मुहम्मद साहेब की प्रशंसा है ।"

ज. ३१- मोमिनों ने दिल्ली की जामा मसजिद में जाकर सनंध ग्रन्थ के उन प्रकरणों को गाने का निश्चय किया, जिसमें रसूल मुहम्मद साहेब की प्रशंसा है।

→ की वाणी सुनकर मुसलमान लोग आपस में चर्चा अवश्य करेंगे। पुनः जब बादशाह को मालूम पड़ेगा, तो वह स्वयं ही हमें बुलायेगा।"

ज. ३३- "जब बादशाह हमारी बात सुनकर हमें बुलायेंगे, तब हम अपना संदेश उनके कानों तक पहुँचा देने में अवश्य ही सफल हो जायेंगे।"- ऐसा मोमिन विचार करने लगे।

ज. ३४- उक्त प्रकार से सलाह-मशविरा करके धर्मवीर बारह मोमिन दिल्ली की जामा मसजिद के पास जा पहुँचे।

ज. ३५- वहाँ जाकर धर्म के प्रति समर्पित प्रेमी धर्मवीर मोमिन बड़े आवेश में भरकर उच्च स्वर में सनंधें गाने (अलापने) लगे।

ज. ३६- जब मसजिद के इमाम-उपदेशक ने उच्च स्वर में गायी जानेवाली वाणी सुनी, तो वह ऊपर से उतरकर नीचे मोमिनों के पास आ गया।

स. ३७-इमाम ने मोमिनों के मुख से गायी हुई कौन-सी वाणी सुनी?

स. ३८-वह इमाम किन स्वरूप के प्रकटीकरण की बात सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ?

स. ३९-मसजिद के इमाम ने मोमिनों के मुखमण्डल पर क्या देखा ?

ज. ३९- मसजिद के इमाम ने मोमिनों के मुखमण्डल पर तेजस्वी नूर देखा। →

स. ४०-मोमिनों का उक्त रूप देखकर इमाम ने आसमान की ओर नज़र उठाकर खुदा से क्या कहा?

स. ४१-पुनः मोमिनों की ओर फिरकर इमाम ने मोमिनों से क्या कहा?

स. ४२-इमाम किस प्रकार मोमिनों को राजदरबार में ले गया?

स. ४३-इमाम ने मोमिनों का हाथ पकड़कर उन्हें राजदरबार में ले जाकर कहाँ खड़ा कर दिया?

स. ४४-राजदरबार के अन्दर बादशाह के महल में जाकर इमाम ने बादशाह से क्या कहा?

ज. ४४- राजदरबार के अन्दर बादशाह के महल में जाकर इमाम ने बादशाह →

स. ४५-इमाम द्वारा उक्त सूचना सुनते ही बादशाह ने क्या किया?

ज. ३७- इमाम ने मोमिनों के मुख से पालनहार सर्वेश्वर परमात्मा-ख़ुदा की प्रशंसावाली वाणी सुनी।

ज. ३८- मसजिद का इमाम तो इमाम मेहदी के प्रकटीकरण की बात सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ।

→उनकी भाव-दशा में पूर्ण आवेश स्पष्ट दिखाई दे रहा था। इस प्रकार इमाम को मोमिनों के मुख पर धर्म के चमकते हुए सितारों की तरह तेजस्वी स्वरूप दिखाई दिया।

ज. ४०- मोमिनों का उक्त रूप देखकर इमाम ने आसमान की ओर नज़र उठाकर दुआ माँगी, "या ख़ुदा! परमात्मा की अपार कृपा उतरी है। ख़ुदा ख़ैर करे! ख़ुदा ख़ैर करे !!"

ज. ४१- पुनः मोमिनों की ओर फिरकर इमाम ने उनसे कहा, "मैं स्वयं आपको साथ ले जाकर सुलतान से मिलवा दूँगा।"

ज. ४२- "आपकी बात मैं बादशाह के सामने कहूँगा।"- इस प्रकार कहते हुए इमाम स्वयं मोमिनों का हाथ पकड़कर उन्हें अपने संग लेकर चल पड़ा।

ज. ४३- इमाम ने मोमिनों का हाथ पकड़कर उन्हें राजदरबार के महल के बाहर चबूतरे के नीचे खड़ा कर दिया और स्वयं महल के अन्दर चला गया।

→से कहा, "इमाम मेहदी के प्रकट होने का संदेश आया है। मैं उनके लोगों को अपने साथ लेकर आया हूँ। आप उनसे मिलने के लिए बाहर आने की कृपा करें।"

ज. ४५- इमाम की उक्त बातें सुनते ही बादशाह अपने महल से बाहर निकल आया और चबूतरे पर आकर खड़ा हुआ। उसके हाथ में आसा था। उसे टेककर वह बात सुनने के लिए तत्पर हो गया।

स. ४६-उस समय मोमिन कहाँ थे और बादशाह से कितनी दूरी पर खड़े थे?

स. ४७-इस स्थिति में बीतककार ने "जो लिखा लोमोफूज में" -ऐसा क्यों कहा?

ज. ४७- इस स्थिति में बीतककार द्वारा *"जो लिखा लोमोफूज में"*-

स. ४८-"औरों भई खट पट "- इस वाक्यांश द्वारा किस ओर की अनबन का इशारा किया गया है?

स. ४९-मोमिनों के निकट चबूतरे पर खड़े बादशाह ने संकेत में उनसे क्या पूछा?

स. ५०-बादशाह के उक्त प्रश्न के उत्तर में मोमिनों ने कलमा द्वारा क्या-क्या कहा?

स. ५१-पुनः सुलतान ने मोमिनों से संकेत द्वारा किन विषयों की बातें पूछीं?

स. ५२-बादशाह द्वारा उक्त प्रकार से पूछे जाने पर मोमिनों ने प्रत्युत्तर में क्या कहा?

स. ५३-मोमिनों की उपरोक्त बातें सुनने के पश्चात् पुनः बादशाह ने क्या कहा?

स. ५४-बादशाह द्वारा कुछ माँगने के विषय में कहने पर मोमिनों ने क्या माँगा?

स. ५५-मोमिनों ने एकान्त-चर्चा के विषय में बादशाह को कैसे स्पष्ट कर कह दिया?

ज. ४६- उस समय मोमिन चबूतरे के नीचे बादशाह के कुछ निकट ही खड़े थे।

→ ऐसा कहने का तात्पर्य यह है कि इस स्थिति के बीच परमात्मा ने लौह महफूज-भविष्य पटल पर इस घटना के सम्बन्ध में जैसा लिखा था, उसी के अनुसार ब्रह्ममुनि कार्य के लिए तत्पर तो हुए, परन्तु बादशाह के पास जानेवालों में से कुछ पीछे रहनेवाले अलग दूर खड़े रहे। उनमें कायरता के कारण अनबन हो गयी।

ज. ४८- *"औरों भई खट पट"*- इस वाक्यांश द्वारा मोमिनों के बीच बादशाह को संदेश पहुँचाने के विषय में हुए मतभेद की ओर इशारा किया गया है।

ज. ४९- मोमिनों के निकट चबूतरे पर खड़े बादशाह ने संकेत में उनसे पूछा, "आपके यहाँ तक आने का उद्देश्य क्या है?"

ज. ५०- बादशाह के उक्त प्रश्न के जवाब में मोमिनों ने मुख से कलमा सुनाते हुए स्पष्ट कह दिया, "इस कलमा का वास्तविक भेद हम जानते हैं।"

ज. ५१- पुनः सुलतान ने मोमिनों से संकेत द्वारा पूछा, "आप अपने यहाँ आने का अभिप्राय कहिये, क्या है?"

ज. ५२- बादशाह द्वारा उक्त प्रकार से पूछे जाने पर मोमिनों ने प्रत्युत्तर में कहा, "हम लोग सच्चे दीन इसलाम के प्रेमी हैं।"

ज. ५३- मोमिनों की उपरोक्त बातें सुनकर बादशाह ने पूछा, "आप लोग अपना यहाँ आने का आशय बताइये और मुझसे कुछ माँगिए।"

ज. ५४- बादशाह द्वारा कुछ माँगने के विषय में कहने पर मोमिनों ने कहा, "हम लोग आपसे एक ही बात माँगते हैं कि आप हमसे आमने-सामने बैठकर एकान्त में धर्म-चर्चा कीजिए।"

ज. ५५- मोमिनों ने एकान्त-चर्चा के विषय में बादशाह से कहा, "हम आपसे एकान्त चर्चा करना चाहते हैं। हमारी और आपकी →

→ बातचीत के बीच अन्य कोई न आये। आप हमसे प्रश्न पूछिये →

स. ५६-बादशाह ने पुनः मोमिनों से क्या अथवा कैसे प्रश्न पूछे?

स. ५७-जब बादशाह ने मोमिनों से कुछ लौकिक वस्तु देने को कहा, तब मोमिनों ने उसे क्या-कैसा जवाब दिया?

ज. ५७- जब बादशाह ने मोमिनों से कुछ लौकिक वस्तु देने की बात कही, →

स. ५८-मोमिनों द्वारा उक्त प्रकार का जवाब सुनते ही बादशाह ने कितनी बार क्या किया?

स. ५९-बादशाह द्वारा आसा चूमने के बाद मोमिनों ने आवेश के साथ क्या कहा?

स. ६०-मोमिनों ने बादशाह को संदेश पहुँचाने के विषय में क्या-क्या सुनाया?

ज. ६०- मोमिनों ने बादशाह को संदेश पहुँचाने के विषय में बताया, "हमने आप तक संदेश पहुँचाने के लिए पाँच नलुए पाँच काज़ियों के पास भेजे थे। उनमें से एक नलुआ काज़ी शेख निज़ाम के पास, →

स. ६१-उस समय बादशाह के पास कौन काज़ी था और वह क्या कर रहा था?

स. ६२-काज़ी शेख सलेमान किस कारण से काँप रहा था?

ज. ६२- काज़ी शेख सलेमान ने मोमिनों द्वारा नलुआ पहुँचाने पर भी →

→ और हमसे उसका उत्तर सुनिये। हम अपनी बात आपके अतिरिक्त अन्य किसी को सुनाना नहीं चाहते।"

ज. ५६- सुलतान औरंगजेब ने यहाँ पुनः मोमिनों से पूछा, "आप अपने यहाँ आने का कोई और विशेष कारण बताइये।"

→ तब मोमिनों ने जवाब दिया, "आपसे हमने पहले ही अपनी बात कह दी है। हमें सांसारिक मृत तुल्य किसी भी वस्तु की चाह नहीं है।"

ज. ५८- इमाम मेहदी द्वारा भेजे गए मोमिनों की ओर से जैसा जवाब मिलना चाहिए था, वैसा ही जवाब पाकर बादशाह औरंगजेब ने हाथ में ली हुई आसा को तीन बार चूमा।

ज. ५९- जब बादशाह औरंगजेब ने आसा चूमा, तब ब्रह्ममुनियों ने आवेश में भरकर कहा, "रुक्का चिपकाकर आप तक अपनी बात पहुँचानेवाले हम ही हैं।"

→ दूसरा काज़ी रज़बी खाँ के पास, पुनः तीसरा काज़ी शेख इसलाम के पास, चौथा काज़ी सिद्दी पोलाद के पास और पाँचवाँ काज़ी आकिल खाँ के पास भेजा था, उसने नलुआ स्वीकार किया ही नहीं। ये सभी नलुए काज़ियों के पास हमने अपनी बात आप तक पहुँचाने के लिए भेजे थे। अतः हे बादशाह! अब आप ही हमारी बात सुनने की कृपा करें।"

ज. ६१- उस समय बादशाह के समीप काज़ी शेख सलेमान खड़ा था। वह डर के मारे थर-थर काँप रहा था और सोच रहा था कि "कहीं ये लोग अब मेरी भी शिकायत न कर दें।"

→ उनकी बात नहीं सुनी थी। उसने मोमिनों को दुःख-कष्ट देकर पैगाम के विषय में बहुत हैरान किया था। इसलिए वह डर के मारे स्वयं ही काँप रहा था।

स. ६३-अन्तिम में बादशाह ने मोमिनों से किस विषय में और क्या पूछा?

स. ६४-बादशाह के उक्त प्रश्न के उत्तर में मोमिनों ने क्या कहा?

स. ६५-पुनः बादशाह ने मोमिनों से और जोर देकर क्या पूछा?

स. ६६-बादशाह के उक्त प्रश्न के जवाब में मोमिनों ने बादशाह से क्या कहा?

ज. ६६- बादशाह के उक्त प्रश्न के जवाब में मोमिनों ने कहा, "हमें कुछ →

स. ६७-इस समय मोमिन बादशाह के साथ किस प्रकार से वार्तालाप कर रहे थे?

स. ६८-बादशाह के दूर खड़े कर्मचारी भी क्यों काँप रहे थे?

स. ६९-इस समय बादशाह के आगे खड़े मोमिनों में से कितने हिन्दू और कितने मुसलमान थे?

स. ७०-तत्पश्चात् बादशाह ने मोमिनों को कहाँ भेजने का संकेत किया?

स. ७१- बादशाह औरंगजेब के किस इशारे से मोमिन सशंक हुए?

स. ७२-तत्पश्चात् बादशाह के पास कौन कर्मचारी आया और उसने किससे तथा क्या कहा?

ज. ६३- अन्तिम में बादशाह ने मोमिनों से पूछा, "क्या आप लोगों के पास कोई प्रामाणिक पुस्तक है? जिसके द्वारा यह सिद्ध हो सके कि इमाम मेहदी आये हैं और कयामत का समय यही है!"

ज. ६४- बादशाह के उक्त प्रश्न के जवाब में मोमिनों ने कहा, "हम शीघ्र ही मँगवाकर ला देते हैं।"

ज. ६५- पुनः बादशाह ने मोमिनों से और जोर देकर पूछा, "आप लोग कुछ और माँगना चाहते हैं?"

→ नहीं चाहिए। हम एक मुहम्मद साहेब के दीन को चाहनेवाले हैं। उसी के विषय में कुछ चर्चा करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त हमें कुछ नहीं चाहिए।"

ज. ६७- इस समय मोमिन बादशाह के साथ आवेश में बोल रहे थे, जिससे बादशाह के मन में भी भय व्याप्त हो गया।

ज. ६८- मोमिनों के कठोर-सीधी चोट करनेवाले शब्दों को सुनकर बादशाह के दूर खड़े कर्मचारी भी काँप रहे थे।

ज. ६९- इस समय बादशाह के आगे खड़े बारह मोमिनों में से दस जन हिन्दू और दो जन मुसलमान थे।

ज. ७०- मोमिनों की उक्त सारी बातें सुनने के पश्चात् बादशाह ने संकेत द्वारा अपने कर्मचारियों से कहा, "इन लोगों को कोतवाल सिद्दी पोलाद खाँ के पास भेज दो।"

ज. ७१- जब बादशाह औरंगजेब ने मोमिनों को कोतवाल सिद्दी पोलाद खाँ के पास भेजने का इशारा किया, तब यह जानकर मोमिन कुछ सशंक हुए।

ज. ७२- तत्पश्चात् बादशाह के पास निवृत्त कर्मचारी गुरजबरदार आया। उसने बादशाह से भी बढ़कर कोतवाल से कहा, "क्या तुमने इन लोगों के विचारों और बचनों को सुना?"

स. ७३-ऐसा किसने, किससे कहा कि, "आज तक ऐसा कोई नहीं हुआ, जो बादशाह के सामने इतने कठोर शब्द कह सके?"

स. ७४-सुलतान शाहजहाँ के शासनकाल की कौन-सी बात गुरजबरदार ने दरबारियों के आगे कही?

स. ७५-जब ब्रह्ममुनि जोश में सुलतान बादशाह को बातें समझा रहे थे, तब उनकी दृष्टि में क्या था?

स. ७६-ब्रह्मात्मा तो बादशाह से भयभीत नहीं हुए, परंतु उनके बदले कौन भयभीत होकर काँप उठे?

स. ७७-बादशाह क्या करके राजमहल के अन्दर लौट गया?

स. ७८-बादशाह ने संकेत से किसे मोमिनों की बातें सुनने और जानकारी लेने का आदेश दिया?

स. ७९-मोमिनों के रहन-सहन की व्यवस्था के विषय में बादशाह ने किसे और क्या संकेत किया?

ज. ७९- मोमिनों के रहन-सहन की व्यवस्था के विषय में बादशाह ने →

स. ८०-उक्त प्रकार की आज्ञा देते हुए बादशाह ने कोतवाल से मोमिनों के प्रति और क्या कहा?

ज. ८०- उक्त प्रकार की आज्ञा देते हुए बादशाह ने कोतवाल सिद्दी पोलाद →

स. ८१-आत्मा समर्पित करनेवाले इन मोमिनों की कैसी बातें दिल्ली शहर में फैल गई?

ज. ७३- ऐसा बादशाह औरंगजेब के निवृत्त कर्मचारी गुरजबरदार ने दरबारियों से कहा कि, *"आज तक ऐसा कोई नहीं हुआ, जो बादशाह के सामने इतने कठोर शब्द कह सके।"*

ज. ७४- गुरजबरदार सुलतान शाहजहाँ के शासनकाल के विषय में कहने लगा, "सुलतान शाहजहाँ के मुँह पर ऐसा कहने की हिम्मत आज तक किसी में नहीं हुई।"

ज. ७५- जब ब्रह्ममुनि-मोमिन जोशभरे शब्दों में सुलतान औरंगजेब को बातें समझा रहे थे, तब उनकी दृष्टि में परमात्मा-खुदाताला के अतिरिक्त और कोई नहीं था।

ज. ७६- ब्रह्मात्मा-मोमिन तो बादशाह से भयभीत नहीं हुए, परन्तु उनकी बातें सुनकर उलटा सारी सृष्टि के लोग भयभीत होकर काँपने लगे।

ज. ७७- बादशाह औरंगजेब सिद्दी पोलाद को आदेश देकर राजमहल के अन्दर वापस लौट गया।

ज. ७८- बादशाह ने संकेत से कोतवाल सिद्दी पोलाद को मोमिनों की बातें सुनने और उनके जीवन की आरंभ से लेकर अब तक की भली प्रकार जानकारी लेने का आदेश दिया।

→ कोतवाल सिद्दी पोलाद को संकेत में यह सूचना दी कि 'इन मोमिनों को अच्छी तरह रखना और इनके खान-पान की उचित व्यवस्था कर देना।'

→ से मोमिनों के प्रति कहा, "इनकी अच्छी सेवा करना, जिससे ये किसी भी तरह दुःखी न हों। मैंने इन लोगों को तुम्हारे हाथों सौंप दिया है।"

ज. ८१- आत्मा समर्पित करनेवाले इन आत्मदानी धर्मवीर मोमिनों के नज़रकैद में पड़ जाने की बात समस्त दिल्ली शहर में फैल गयी।

स. ८२-दिल्ली के साथियों के घर-घर में क्या हुआ? किनके सम्बन्धी भयभीत हो उठे?

स. ८३-किसके परिवारवालों को क्या सुनकर बहुत दुःख हुआ?

स. ८४-दयाराम भाई के परिवारवाले दयाराम के बदले में क्या करने को तत्पर हुये?

स. ८५-कोतवाल ने मोमिनों से खाने-पीने के विषय में क्या बात पूछी?

स. ८६-कोतवाल के उक्त प्रश्न के प्रत्युत्तर में मोमिनों ने क्या कहा?

स. ८७-मोमिनों ने किस विषय में कोतवाल को एकरूप होकर जवाब दिया?

स. ८८-पुनः काज़ी ने कितने प्रकार के भोजन की व्यवस्था की?

स. ८९-सायंकाल के समय मोमिनों के विषय में कोतवाल को क्या विदित हुआ?

स. ९०-बारह मोमिनों के बीच परस्पर किस-किस विषय की एकरूपता की खबर किसे हुई?

स. ९१-किसने और किसे अदालत में बुलवाया? पुनः क्यों और क्या बात पूछी?

स. ९२-सत्य वस्तु को छिपाने के लिए किसने, किसके अन्दर संदेह उत्पन्न कर दिया?

ज. ८२- दिल्ली के सुन्दरसाथ के घर-घर में हलचल मच गयी। नज़रकैद बारह मोमिनों के सम्बन्धी तो अत्यधिक भयभीत हो उठे।

ज. ८३- दयाराम भाई के परिवारवालों को जब यह ज्ञात हुआ कि वे पकड़ लिए गए हैं, तब उन सबको बहुत दुःख हुआ।

ज. ८४- दयाराम भाई के परिवारवाले दयाराम भाई के बदले किसी दूसरे व्यक्ति को देने के लिए तत्पर हो गये।

ज. ८५- कोतवाल ने मोमिनों से खाने-पीने के विषय में पूछा, "आप लोगों के खाने-पीने के लिए कैसे भोजन का प्रबन्ध किया जाय?"

ज. ८६- कोतवाल के उक्त प्रश्न के प्रत्युत्तर में मोमिनों ने मन ही मन विचार कर कहा, "हम परस्पर सलाह करके बतायेंगे।"

ज. ८७- यहाँ बारह मोमिनों में से दस हिन्दू और दो मुसलमान भाई होते हुए भी बारह मोमिनों ने एकरूप होकर खान-पान के विषय में एक ही प्रकार के भोजन की माँग की।

ज. ८८- पुनः काज़ी सिद्दी पोलाद ने मोमिनों के लिए एक ही प्रकार के भोजन की व्यवस्था की।

ज. ८९- सायंकाल के समय मोमिनों का यह एकत्व भावयुक्त विचार कोतवाल सिद्दी पोलाद को विदित हुआ।

ज. ९०- बारह मोमिनों की वेश-भूषा, खान-पान विषय की एकरूपता का समाचार दूसरे ही दिन काज़ी शेख इसलाम को मिला।

ज. ९१- काज़ी शेख इसलाम ने बारह मोमिनों को अदालत में बुलवाकर उनसे विभिन्न विषय की बातें पूछीं।

ज. ९२- सत्य वस्तु अर्थात् इमाम मेहदी अथवा खुदा-परमात्मा तत्त्व को छिपाने के लिए काफ़िरों ने बादशाह के विश्वास भरे मन में विभिन्न संदेह उत्पन्न कर दिये।

स. ९३-किसने, किससे कहा कि, "आपको इन मोमिनों से बात नहीं करनी चाहिये!"

स. ९४-बादशाह के दिल में शंकाएँ उत्पन्न करते हुए काज़ियों ने क्या-क्या कहा?

ज. ९४- बादशाह के दिल में विभिन्न शंकाएँ उत्पन्न करते हुए बादशाह को भटकाने के लिए काज़ियों ने सुलतान से कहा, "क्या पता आपके किसी शत्रु ने इन्हें कोई षड्यन्त्र रचने के लिए यहाँ भेजा हो ! अतः आपका इनसे बातचीत करना ठीक नहीं है। आप अपने किसी सेवक को इस कार्य के लिए आज्ञा दीजिए। वह आकर आपको उनकी सम्पूर्ण यथार्थता बता देगा। जब उनका मन्तव्य ज्ञात हो जाएगा, तब हम उन्हें देख लेंगे। ये किसी हिन्दू →

स. ९५-क्या सुलतान औरंगजेब को हमेशा से ही इमाम मेहदी के आगमन की चिन्ता थी?अतः उसने क्या किया?

ज. ९५- उक्त प्रकार से अनर्थकारियों ने मोमिनों के प्रति बादशाह को विभिन्न →

स. ९६-मोमिनों के विरुद्ध काज़ियों द्वारा अनेकों प्रकार से उकसाने के बाद भी बादशाह ने उनकी क्यों नहीं सुनी अथवा न सुनने का क्या कारण था?

स. ९७-सुलतान बादशाह ने चुगली करनेवालों की कौन-सी एक बात मान ली और क्यों?

ज. ९७- सुलतान बादशाह ने अपने चुगली करनेवाले कर्मचारियों की विभिन्न बातों में से मोमिनों से आमने-सामने बातें न करने की →

स. ९८-बादशाह ने जिस काज़ी को मोमिनों की वास्तविकता जानने की आज्ञा की, वह व्यक्ति कौन था और बाद में कैसा निकला?

ज. ९३- निवृत्त काज़ी गुरजबरदार ने बादशाह से कहा, *"आपको इन लोगों से इस तरह आमने-सामने होकर बात नहीं करनी चाहिये!"*

→ राजा द्वारा भेजे हुए षड्यन्त्रकारी भी हो सकते हैं। कहीं ये क़यामत और इमाम मेहदी जाहिर हुए-ऐसा बहाना कर आपको धोखा देने तो नहीं आये हैं? क्योंकि भारत में आपके दुश्मन राजाओं की कहाँ कमी है? ये उनकी कोई षड्यन्त्रकारी चाल भी हो सकती है। अरे! शाहजहाँ के शासनकाल में कोई इस प्रकार की उद्दण्डता दिखाता, तो वह तुरन्त उसकी गर्दन काट देता था। वह कभी अपने कानों से उसकी बात नहीं सुनता। अरे! आप ही कहिये!! क्या बादशाह शाहजहाँ आपकी तरह आसा लेकर उनकी बात सुनने बैठते थे? वे उसी समय दस के बीस टुकड़े नहीं कर देते?"

→ प्रकार से उकसाते हुए उलटी-उलटी ही सलाहें दीं। किन्तु बादशाह औरंगजेब को सदैव इमाम मेहदी के आगमन एवम् दर्शन की चिन्ता थी। अतः उसने उक्त प्रकार की सभी सलाहें ठुकरा दीं।

ज. ९६- उक्त प्रकार से काज़ियों द्वारा मोमिनों के प्रतिकूल भटकाने-उकसाने के कई उपाय करने पर भी बादशाह औरंगजेब ने किसी की नहीं सुनी क्योंकि उसे इमाम मेहदी की प्रतीक्षा थी।

→ सलाह मान ली क्योंकि राजनीति क्षेत्र में सत्ता पलटने और राज्यशासक को फँसानेवाले राजा के अनेक विरोधी होते हैं। अतः अपनी सुरक्षा के लिए औरंगजेब बादशाह ने मोमिनों से एकांत में रू-बरू बातें न करने की अपने कर्मचारियों की सलाह मान ली।

ज. ९८- बादशाह ने जिस काज़ी को मोमिनों की वास्तविकता जानने की आज्ञा की थी,वह सिद्दी पोलाद नामक काज़ी था, जो बहुत ही क्रूर अथवा दुष्ट और धूर्त निकला।

स. ९९- किसके व्यवहार से मोमिन स्वयं सशंक हुए और क्यों? वह क्या पता लगाने लगा?

स. १००-उस विषय में मोमिनों ने क्या किया? मोमिनों ने काज़ी को किस प्रकार जवाब दिया?

ज. १००- उस विषय में मोमिनों ने श्री प्राणनाथजी के स्थान की सूचना →

स. १०१-जब काज़ी शेख इसलाम और मोमिनों के बीच वार्तालाप हुआ, तब मोमिनों ने उससे क्या कहा?

ज. १०१- जब काज़ी शेख इसलाम और मोमिनों के बीच वार्तालाप हुआ, तब मोमिनों ने उससे कहा, "आप हमारी बातों को ध्यानपूर्वक सुनकर उन्हें समझकर उत्तर दें। जो मोमिन इमाम का पैगाम →

स. १०२-मोमिनों द्वारा उक्त प्रकार का वार्तालाप सुनकर काज़ी शेख इसलाम क्यों रो पड़ा?

स. १०३-काज़ी रोते-रोते क्या सोचने लगा?

स. १०४-शेख इसलाम काज़ी ने रोने के पश्चात् क्या किया?

स. १०५-मोमिनों ने उस रोनेवाले काज़ी से पुनः क्या बात कही?

ज. १०५- मोमिनों ने उस रोनेवाले काज़ी शेख इसलाम से पुनः कहा, "न हमने किसी का धन लिया है और न चरित्रहीनता का ही →

ज. ९९- धूर्त काज़ी सिद्दी पोलाद द्वारा किए गए व्यवहार से मोमिन स्वयं बड़े सशंक और सावधान हो गए। वह काज़ी श्री प्राणनाथजी के स्थान के बारे में पूछताछ करने लगा।

→ से काज़ी को अवगत नहीं कराया। उस काज़ी की नीयत अच्छी नहीं थी। अतः मोमिनों ने उसी प्रकार सावधानी से काज़ी को जवाब दिया।

→ लेकर आयेंगे, उनके प्रति क्या हमारे पैगम्बर मुहम्मद साहेब ने आपसे ऐसा ही व्यवहार करने का उपदेश दिया है? उन्हें सताना, दुःख-कष्ट पहुँचाना, ऐसा ही आदेश दिया है? जो खुदा-परमात्मा और उनके संदेशवाहक रसूल मुहम्मद साहेब पर विश्वास करे, उसे खूब कष्ट पहुँचाओ, क्या कुरान शरीफ में ऐसा ही लिखा गया है? क्या आपने कलमा सुनकर यही सीख प्राप्त की है?"

ज. १०२- उपरोक्त प्रकार से ब्रह्मात्माओं-मोमिनों ने जब काज़ी को हृदयस्पर्शी मर्मभेदी बातें सुनायीं, तब विशेषकर "हमारे पैगम्बर" यह शब्द सुनकर काज़ी रो पड़ा ।

ज. १०३- धूर्त काज़ी शेख इसलाम मन ही मन सोचने लगा, "ये लोग तो हमारे रसूल मुहम्मद साहेब को अपना बताते हैं !"

ज. १०४- शेख इसलाम काज़ी ने रोने के पश्चात् मोमिनों को सख्त कैद से छुड़वाकर उन्हें इज्ज़त और सम्मान के साथ अच्छे कार्यों में लगा दिया।

→ कोई कार्य किया है। पुनः हमने चोरी भी नहीं की है। तब भी हमारे साथ ऐसा कष्टदायी, निन्दनीय व्यवहार क्यों किया गया?"

स. १०६-मोमिनों ने काज़ी के आगे किस बात के लिए नकार दिया?

ज. १०६- मोमिनों ने काज़ी के आगे कहा, "अरे, काज़ी साहेब! हमारी →

स. १०७-मोमिनों ने उस काज़ी को खुश करने के लिए क्या कहा?

स. १०८-उस समय काज़ी शेख इसलाम ने मोमिनों से कौन-सी सूरत का अर्थ पूछा?

स. १०९-उक्त सूरत का स्पष्टीकरण मोमिनों ने काज़ी के आगे किस प्रकार से किया?

स. ११०-उक्त स्पष्टीकरण से शेख इसलाम काज़ी को क्या अथवा कैसा लगा?

स. १११-उपरोक्त बातें सुनकर शेख इसलाम काज़ी ने मोमिनों के विषय में बादशाह से क्या कहा?

स. ११२-शेख इसलाम काज़ी की उक्त बातें सुनते ही बादशाह ने उससे क्या कहा?

स. ११३-किनके दिल की कैसी आस टूट गई और क्यों?

ज. ११३- उक्त प्रकार से काज़ी पर हुई बादशाह की आज्ञा सुनकर मोमिनों के दिल में जो आस थी, वह टूट गई क्योंकि उन्हें उम्मीद थी →

स. ११४-बादशाह ने इसी समय मोमिनों के लिए क्या आज्ञा दी?

→ क्या गलती थी, जिसके लिए हमें ऐसे कष्ट दिए गए। हम लोग बादशाह से मिले, यही गलती हुई न? यदि आप नहीं चाहते, तो हम बादशाह से आमने-सामने चर्चा करने नहीं जायेंगे।"

ज. १०७- मोमिनों ने उस काज़ी को खुश करने के इरादे से कहा, "हम लोग आपके ही पास रहेंगे। आप ही हमारा संदेश भली प्रकार सुन लीजिए।"

ज. १०८- उस समय काज़ी शेख इसलाम ने मोमिनों से कुरान की "इन्ना इन्जुलना" नामक सूरत का अर्थ पूछा।

ज. १०९- उक्त सूरत का स्पष्टीकरण करते हुए मोमिनों ने काज़ी के आगे "लैल तुल कद्र" के तीन तकरारों का पूर्णतः खुलासा कर दिया।

ज. ११०- उक्त स्पष्टीकरण को सुनकर काज़ी शेख इसलाम मोमिनों के ज्ञान एवम् प्रस्तुतीकरण के कौशल पर बड़ा प्रसन्न हुआ।

ज. १११- मोमिनों की उक्त बातें सुनने के पश्चात् काज़ी ने सुलतान से प्रार्थना की, "मैं मोमिनों की सेवा करना चाहता हूँ। आप मेरी इस प्रार्थना पर ग़ौर कीजिए।"

ज. ११२- शेख इसलाम काज़ी की उक्त बातें सुनते ही बादशाह औरंगजेब ने काज़ी को यह आज्ञा दी "तुम इन्हें अपने घर ले जाओ और इनकी अच्छी तरह से सेवा करना।"

→ कि काज़ी द्वारा, "ये सच्चे इमाम का पैगाम लेकर आनेवाले मोमिन हैं"- ऐसा सुनने पर तो बादशाह उन्हें बुलवाकर चर्चा सुनना चाहेगा। किंतु वह आस भंग हो गई।

ज. ११४- बादशाह औरगंजेब ने इसी समय मोमिनों के लिए यह भी आज्ञा दी, "इन मोमिनों को बढ़िया आहार जैसे चूरमा-मलीदा आदि खिलाओ। देखना कि ये कभी दुःखी होने न पायें।"

स. ११५-पुनः बादशाह ने काज़ी शेख इसलाम को मोमिनों की सुख-सुविधा के विषय में क्या कहा?

ज. ११५- पुनः बादशाह ने काज़ी शेख इसलाम को मोमिनों की सुख- →

स. ११६-बादशाह की आज्ञा मिलने के बाद काज़ी शेख इसलाम ने क्या किया?

स. ११७-इस समय से मोमिनों के ऊपर कैसी नजर-दृष्टि रखी जाती थी?

ज. ११७- इस समय से मोमिनों पर निगाह रखने के लिए नाम मात्र का →

स. ११८-जिस दिन काज़ी शेख इसलाम मोमिनों को सख्त कैद से छुड़वाकर अपने घर ले गया, उसके दूसरे दिन उसने क्या किया?

स. ११९-उस दिन काज़ी शेख इसलाम ने मोमिनों से जो जितनी भी बातें पूछीं, उनका मोमिनों ने कैसा जवाब दिया?

स. १२०-एक दिन मोमिन काज़ी शेख इसलाम के भाई के घर किस लिए गये थे? वहाँ जाने पर क्या हुआ?

स. १२१-वहाँ शेख बदल भाई को आवेश क्यों आ गया? शेख बदल भाई का आवेश देखकर कौन भाग गया?

ज. १२१- काज़ी शेख इसलाम के भाई ने अपने तरह का भोजन तैयार →

स. १२२-तीसरे दिन काज़ी के बुलवाने पर मोमिनों ने उसे क्या दिया? उसमें क्या था?

→ सुविधा के विषय में कहा, "इनकी भली प्रकार से सेवा करते रहना। यह ध्यान रहे कि ये लोग हमसे तनिक भी दुःखी न होने पावें।"

ज. ११६- बादशाह की आज्ञा मिलते ही काज़ी शेख इसलाम मोमिनों को अपने घर ले आया। पुनः मोमिनों के रहने की उसने अच्छी व्यवस्था भी कर दी।

→ पुलिस का पहरा रहता था। पहले के सारे सख्त प्रबन्ध हटा दिये गये। अब तो मोमिन नज़रकैद में भी सुख-सुविधापूर्वक अर्थात् जिस तरह जमाई अपने ससुराल में रहते हैं, उसी प्रकार रहने लगे।

ज. ११८- जिस दिन काज़ी शेख इसलाम मोमिनों को सख्त कैद से छुड़वाकर अपने घर ले गया, उसके दूसरे ही दिन उसने मोमिनों को अपने पास बुलवाया और उनसे बातचीत की।

ज. ११९- उस दिन काज़ी ने मोमिनों को बुलवाकर उनसे जो जितनी भी बातें पूछीं, मोमिनों ने अच्छी प्रकार से उनका स्पष्टीकरण करके काज़ी को समझा दिया।

ज. १२०- एक दिन मोमिनों को काज़ी शेख इसलाम के भाई ने अपने घर आने का आमंत्रण दिया था। घर जाने पर उसने मोमिनों का बड़ा आदर-सत्कार किया और भोजन कराने का प्रबन्ध किया।

→ किया था। इस बात की जानकारी शेख बदल भाई को हुई। सामिष भोजन का पता चलते ही शेख बदल भाई को आवेश आ गया। शेख बदल भाई का आवेश देखकर काज़ी शेख इसलाम का भाई घर के अन्दर भाग गया और छिप गया।

ज. १२२- तीसरे दिन जब काज़ी ने ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को अपने पास बुलवाया, तब मोमिनों ने काज़ी के हाथ में एक हदीस की किताब दी, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रसंगों की चर्चा थी।

स. १२३-हदीस को देखकर काज़ी ने मोमिनों से उस पुस्तक के विषय में क्या कहा?

स. १२४-काजी द्वारा उक्त प्रकार से कहने पर उसके जवाब में मोमिनों ने क्या कहा?

ज. १२४- जब उस पुस्तक के विषय में काज़ी ने मोमिनों से उक्त प्रकार से कहा, तब मोमिनों ने उत्तर दिया, "पुस्तक बदलने का काम हम नहीं करते। आप तो स्वयं समझदार हैं। इस बात को कहने से पहले आपने विचार क्यों नहीं किया? आपने पुस्तक देखकर यह क्यों नहीं पूछा कि यह पुस्तक कहाँ मिलती है? आप इसे →

स. १२५-मोमिनों द्वारा उक्त प्रकार का जवाब मिलने पर काज़ी क्या करने लगा?

ज. १२५- मोमिनों द्वारा उक्त प्रकार से सही जवाब मिलने पर काज़ी →

स. १२६-काज़ी ने अपने घर में बैठकर मोमिनों द्वारा कौन-कौनसे प्रकरण की चर्चा सुनी?

स. १२७-कौन-से प्रकरण की चर्चा सुनकर काज़ी शेख इसलाम अत्यधिक प्रसन्न हुआ?

स. १२८-वह काज़ी मोमिनों को बार-बार कौन-सी सनंध गाने को कहता था? पुनः उस समय वहाँ कौन खड़ा था?

ज. १२८- वह काज़ी बारम्बार मोमिनों से मुहम्मद साहेब की प्रशंसावाली →

स. १२९-शेख इसलाम काज़ी ने उस बैतुलमाल के दरोगा से क्या कहा?

ज. १२३- उस हदीस को देखकर-पढ़कर काज़ी मोमिनों से कहने लगा, "यह पुस्तक जो हम पढ़ रहे हैं, उसे आप स्वयं ने लिखा है। इसलिए इसमें आपकी ही सभी बातें लिखी हैं।"

→ कहाँ से लाये? हमें भी उस दुकान में पहुँचा दो। इस प्रकार आप क्यों नहीं बोल सके? अच्छा जी! यह बात छोड़ दीजिए। अब कहिये, क्या आपको उस दुकान तक जाना है? यदि हाँ, तो चलिए। हम यह पुस्तक उर्दू बाज़ार से हदिया (मूल्य) देकर लाए हैं। क्या आपको उस पुस्तक विक्रेता के पास जाना है? वह पुस्तक विक्रेता बाज़ार में प्रत्यक्ष बैठा है। आप उससे जाकर पूछ सकते हैं। चलिए!"

→ शेख इसलाम मुख बन्द करके बैठ गया। कुछ बोल नहीं सका। वह बात छोड़कर वह अन्य बातें पूछने लगा कि "आप हमें पहले दिन का शेष वर्णन अर्थात् ब्रह्मात्माओं के संसार में अवतरण का प्रसंग समझाकर कहो।"

ज. १२६- काज़ी शेख इसलाम ने अपने घर के अन्दर बैठकर मोमिनों द्वारा एकान्त में एक तो *"बिना एक महम्मद"* की तथा दूसरी *"नेक कहूँ दोजख की"*-ये दो सनंधें सुनीं।

ज. १२७- काज़ी शेख इसलाम मुहम्मद साहेब की प्रशंसा की सनंध सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हुआ।

→ सनंध गाने का आग्रह करता था। उस समय वहाँ बैतुलमाल-सार्वजनिक कोष का दरोगा-निरीक्षक था, जो नागर जाति का हिन्दू भाई था, वह खड़ा था।

ज. १२९- शेख इसलाम काज़ी ने प्रेमपूर्वक उस बैतुलमाल के दरोगा से कहा, "तुम ध्यान से सुनो! तुम्हारी जाति के ही ये लोग किस तरह इसलाम धर्म पर विश्वास लाए हैं!!"

स. १३०-वह बैतुलमाल का दरोगा काज़ी शेख इसलाम की बातें सुनकर क्या सोचते हुए भाग गया?

ज. १३०- काज़ी शेख इसलाम की बातें सुनकर बैतुलमाल का दरोगा →

स. १३१-वह बैतुलमाल का दरोगा वहाँ से मन में बड़ा ही दुःखी होकर कहाँ भाग गया और क्यों?

स. १३२-उस दरोगा को काज़ी ने क्यों नहीं रोका?

ज. १३२- काज़ी के दरोगा को न रोकने का मुख्य कारण यह था कि →

स. १३३-इस समय काज़ी शेख इसलाम ने मोमिनों से क्या पूछा?

ज. १३३- इस समय काज़ी शेख इसलाम ने मोमिनों से पूछा, "क़यामत →

स. १३४-शेख इसलाम काज़ी के उक्त प्रश्नों के जवाब में मोमिनों ने क्या कहा?

ज. १३४- शेख इसलाम काज़ी के उक्त प्रश्नों के जवाब में मोमिनों ने →

स. १३५- क़यामत की शुरूआत कब से होगी और समाप्ति कब कही है?

स. १३६-उक्त बातों को कौन हादी समझायेंगे, ऐसा मोमिनों ने कहा? मोमिनों ने किस हादी की ओर इशारा किया?

ज. १३६- मोमिनों ने काज़ी शेख इसलाम से कहा, "अरे काज़ी शेख →

→ लज्जित होकर डर के मारे यह सोचते हुए भाग गया, "मेरे सामने यह अनर्थ हो रहा है। इन लोगों से मैं क्या कहूँ?" अतः वह इस प्रकार भागा कि मानो भूमि फट जाए और वह उसमें समा जाए।

ज. १३१- वह बैतुलमाल का दरोगा वहाँ से मन में बहुत ही दुःखी होकर अपने घर की ओर भाग गया क्योंकि वहाँ बहुत ही कोलाहल मच रहा था।

→ काज़ी के कहने पर ही दरोगा डर के मारे हिन्दू धर्म के रक्षार्थ वहाँ से भागा था। पुनः बिना समझाये इस तरह कहने की काज़ी की गलती के कारण ही वहाँ कोलाहल मचा हुआ था।

→ कैसे होगी? आप हमें यह भी बतलाइए कि आप दसवीं, ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी में क़यामत का प्रसंग किस सूत्र-प्रमाण के आधार पर घटित होना बताते-मानते हो?"

→ कहा, "क़यामत की यह बात सत्य-सिद्ध है। इन महान् तथ्यों को संकेतों के माध्यम से कुरान में इस प्रकार लिखा है कि "दसवीं, ग्यारहवीं एवम् बारहवीं शताब्दी के अन्तर्गत क़यामत-सामूहिक आत्म-जागृति होगी।"

ज. १३५- क़यामत की शुरूआत ग्यारहवीं सदी से है और तेरहवीं शताब्दी तक क़यामत के समय को प्रमाणित एवम् निश्चित रूप से बताया गया है।

→ इसलाम साहेब! हमारे हादी-सद्गुरु श्री प्राणनाथजी से चर्चा सुनिए। वे आपके आगे यथार्थ भेद खोलकर आपको भली-भाँति समझा देंगे। आखरी खाविन्दरूपी इमाम मेहदी ही हादी हैं।" यहाँ मोमिनों ने उन्हीं की ओर इशारा किया है।

स. १३७-उस समय वहाँ कौन-कौन उपस्थित थे, जो एक-दूसरे का मुँह ताकते रह गये?

स. १३८-उन्होंने मुँह ताकने के पश्चात् किस विषय में और क्या कहा?

स. १३९-उन मुसलमानों में से एक व्यक्ति ने मोमिनों से नमाज़ के विषय में क्या अथवा कैसा प्रश्न किया?

स. १४०-उक्त प्रश्नों का जवाब मोमिनों ने किस प्रकार दिया?

ज. १४०- उस व्यक्ति के उक्त प्रश्न के समाधान हेतु मोमिनों ने उत्तर दिया, "हमारी नमाज़-ईश्वरीय प्रार्थना कभी बन्द ही नहीं →

स. १४१-मोमिनों की नमाज़ क्या करने से भंग होती है?

स. १४२-परमात्मा के प्रति समर्पित मोमिनों की नमाज़ के विषय में कुरान में क्या कहा है?

ज. १४२- परमात्मा के प्रति समर्पित मोमिनों की नमाज़ के बिषय में कुरान में कहा है, "मोमिन तो सत्य धर्म-दीन इसलाम के लिए →

स. १४३-मोमिनों द्वारा उक्त प्रकार का जवाब मिलने पर मुसलिम लोगों के बीच क्या बातें हुई?

स. १४४-मोमिनों का जवाब सुनकर वहाँ उपस्थित काज़ी शेख इसलाम सहित अन्य मुसलमान भाइयों की दशा कैसी हुई?

ज. १३७- उस समय वहाँ काज़ी शेख़ इसलाम और अन्य मुसलिम भाई उपस्थित थे। वे सब के सब एक-दूसरे का मुँह ताकते रह गये।

ज. १३८- उन्होंने मुँह ताकने के कुछ देर पश्चात् कहा, "मोमिनों के समुदाय में आख़री दिन-क़यामत के दावे का प्रसंग बड़ा महत्त्वपूर्ण है।"

ज. १३९- उन मुसलमानों में से एक व्यक्ति ने मोमिनों से नमाज़ के विषय में प्रश्न किया, "आपको दीन-धर्म पर समर्पित हुए इतने दिन हो गए, किन्तु आप लोग नमाज़ क्यों नहीं पढ़ते?"

→ होती। हम यदि कोई सांसारिक कार्य करें अथवा स्वार्थ की भावना से कोई कार्य करें, तब तो हमारी नमाज़-प्रार्थना भंग हो। हम रात-दिन नमाज़ ही तो करते हैं।"

ज. १४१- यदि मोमिन मृततुल्य सांसारिक वस्तुओं में लिप्त रहें, तो उनकी नमाज़-प्रभु पूजा भंग होती है।

→ परमात्मा ख़ुदा के प्रति ही समर्पित होकर केवल उन्हीं का कार्य करते हैं। उनकी नमाज़-प्रभु प्रार्थना में कभी हानि नहीं होती। वे उठते-बैठते, चलते और बातें करते हुए भी ख़ुदा का ही कार्य करते हैं। उनके इन सब कार्यों को भी नमाज़ ही समझना चाहिए।"

ज. १४३- मोमिनों द्वारा उक्त प्रकार का जवाब मिलने पर मुसलिम भाई एक-दूसरे से कहने लगे, "अब इनके प्रश्न का उत्तर दो!"

ज. १४४- मोमिनों का जवाब सुनकर वहाँ उपस्थित काज़ी शेख़ इसलाम सहित अन्य मुसलमान भाई अवाक् रह गये।

स. १४५-मोमिनों द्वारा दिया हुआ जवाब कुरान की आयतों के अनुकूल होने पर क्या हुआ?

स. १४६-काज़ी शेख इसलाम ने पुनः मोमिनों को कौन-से दिन बुलवाकर क्या कहा?

स. १४७-काज़ी ने कौन-सी सनंधें सुनने की उत्कट इच्छा प्रकट की?

स. १४८-लक्ष्मण सेठ और भीम भाई ने काज़ी को कौन सी सनंध सुनायी, जिसकी समझ उसे नहीं पड़ी?

स. १४९-इमाम के मिलाप की सनंधें काज़ी को क्यों समझ नहीं आयी?

ज. १४९- दोनों मोमिनों ने काज़ी को समझाने की अनेकों कोशिशें कीं, →

स. १५०-किस-किस का मिलाप होने पर श्री प्राणनाथजी को महामति की उपाधि मिली, ऐसा कुरान में स्पष्ट कहा है?

स. १५१-संसार में कौन प्रकट हुए? किसे, किसका साक्षात्कार हुआ?

स. १५२-मोमिनों की उक्त बातें सुनते ही शेख इसलाम काज़ी ने मोमिनों से क्या कहा?

ज. १४५- मोमिनों द्वारा दिया हुआ जवाब कुरान की आयतों के अनुकूल - प्रामाणिक होने पर कुरान की उन आयतों पर विचार करते हुए मुसलिम भाई खड़े ही रह गये। कुछ बोल नहीं पाये।

ज. १४६- काजी शेख इसलाम ने पुनः तीसरे दिन मोमिनों को बुलवाकर उनसे समाचार पूछा और कहा, "हमें वे सनंधें सुनाइए, जिससे हम अपने ब्रह्मात्माओं के समुदाय में शामिल हो सकें।"

ज. १४७- काज़ी ने मोमिनों के आगे इमाम मेहदी के मिलाप की सनंधें सुनने की उत्कट इच्छा प्रकट की।

ज. १४८- लक्ष्मण सेठ और भीम भाई ने काज़ी को इमाम मेहदी के मिलाप की सनंध सुनायी। परन्तु काज़ी को उनकी कोई भी बात जरा-सी भी समझ नहीं आई।

→ परन्तु शेख इसलाम काज़ी के कुछ भी समझ में न आने का कारण था कि वह उस विषय में पात्र नहीं था। दिल के अंधे और बिवेकहीन होने के कारण इमाम के मिलाप की सनंधें वह नहीं समझ पाया।

ज. १५०- सद्ग्रन्थ कुरान में स्पष्ट ही कहा है, "जब हादी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से श्रीजी का आन्तरिक मिलाप हुआ, तब उन्हें महामति की उपाधि मिली।"

ज. १५१- महामति स्वरूप संसार में प्रकट हुए। तब महामति के माध्यम से सृष्टि की सर्वात्माओं को परमधाम का साक्षात्कार हुआ।

ज. १५२- काज़ी शेख इसलाम ने जब मोमिनों द्वारा उक्त बातें सुनीं, तब उसने कहा, "आप अपनी सनंध की यह किताब रख दीजिए।"

स. १५३-काज़ी ने मोमिनों को वह किताब रखने के विषय में कितनी बार कहा?

स. १५४-मोमिनों की किन बातों को काज़ी ने स्वीकार कर कबूल किया?

स. १५५-काज़ी ने "कौनसे महान् सत्य के प्रकट होने की आस लेकर बैठे हैं"-ऐसा कहा?

स. १५६-परन्तु काज़ी ने किन स्वरूप के प्रकट होने की बात गुप्त रखने को कहा?

ज. १५६- काज़ी शेख इसलाम के अनुसार इमाम मेहदी के प्रकट होने →

स. १५७-पुनः काज़ी शेख इसलाम ने कब इमाम मेहदी के चरण ग्रहण करने को कहा?

ज. १५७- पुनः काजी शेख इसलाम ने कहा, "जब इमाम स्वयं प्रकट →

स. १५८-मोमिन कैसे हैं और उनमें कितना बल है? क्यों?

स. १५९-सिंह की-सी गर्जना (अभिमान) कौन करते हैं? उनके आगे मोमिन कैसे हैं?

ज. १५९- सांसारिक शराअ के भूत ज्ञान के अभिमान में चूर होकर सिंह →

स. १६०-ये उक्त सारी बातें कहाँ की हैं और बीतककार श्री लालदासजी महाराज आगे किन बातों को रखना चाहते हैं?

ज. १५३- काज़ी शेख इसलाम ने उस समय सनंध किताब रखने की बात पुनः-पुनः तीन बार कही क्योंकि इमाम और मेहदी के मिलाप के रहस्य के जाहिर होने से उन्हें खतरा था।

ज. १५४- काज़ी शेख इसलाम ने "इमाम और मेहदी का मिलाप हुआ, यह बात अपने-आप में श्रेष्ठ-उत्तम है और एक महान् सत्य है।"-इस बात को स्वीकार कर कबूल किया।

ज. १५५- काज़ी शेख इसलाम ने कहा, "हम लोग भी इमाम मेहदी के प्रकट होने की आस लेकर बैठे हैं। हमारी इस धारणा-मान्यता में लेश मात्र भी सन्देह नहीं है।"

→ की बात जितनी सत्य है, उतनी ही खतरनाक भी! अतः उसने मोमिनों से इमाम मेहदी के प्रकट होने की इस बात को गुप्त रखने को कहा।

→ होंगे अर्थात् जब वे सूर्य की तरह झलझलाकार रूप में आसमान से उतरेंगे, तब हम विश्वास करके उनके चरणों को अवश्य ग्रहण करेंगे।"

ज. १५८- मोमिन-ब्रह्मसृष्टि तो गरीब हैं। उनमें बकरी जितना बल है अर्थात् उनमें भी बकरी के समान शारीरिक बल का अभाव है क्योंकि वे तो विनम्र और सात्विक स्वभाववाले हैं।

→ के समान हिंसक जानवर की-सी गर्जना करते हैं अर्थात् अभिमान में चूर होकर गरजते हुए बोलते हैं। उनके आगे मोमिन निर्मल मन-चरित्रवाले, धर्मवीर, सीधे-सरल, क्षमाशील और आत्मीय ज्ञान के अभिमान से रहित हैं।

ज. १६०- बीतककार स्वामी श्री लालदासजी महाराज कहते हैं, "हे सुन्दरसाथजी! यह हकीकत काज़ी शेख इसलाम के घर की है। अब इसके उपरान्त मैं आप लोगों के समक्ष सद्गुरु श्रीजी →

→ स्वरूप की बातें करता हूँ, जिन्हें हमारा बहुचर्चित समाचार →

❖ अवज्ञाकारियों पर रोष ❖

स. १- कान्हजी भाई कब दिल्ली से कामा पहाड़ी स्थित श्रीजी स्वरूप के पास मोमिनों की खबर लेकर पहुँचे?

स. २- श्री प्राणनाथजी स्वरूप कौन-सी खबर सुनकर किस पर बहुत नाराज़ हुए?

स. ३- मोमिनों का दुःखदायी समाचार सुनने के बाद श्री प्राणनाथजी ने उन अवज्ञाकारियों के प्रति क्या कहा?

ज. ३- मोमिनों का दुःखदायी समाचार सुनने के बाद महामति श्री प्राणनाथजी ने अवज्ञाकारियों के प्रति कहा, "हमने परमधाम का सम्बन्ध जानकर जिन ब्रह्ममुनियों को आत्म-ज्ञान का सन्देश देकर भेजा था, पुनः *"इमाम का पैगाम लेकर आए हैं"* ऐसा सुनते ही जिन मोमिनों के प्रति आभार प्रकट कर उनका आदर- →

स. ४- किस-किसको, किस अपराध का, कैसा दोष लगेगा?

स. ५- परमात्मा-खुदा के संदेशवाहकों को कष्ट देना किसे कष्ट देने जैसा है?

→ सुनकर मन में अत्यंत रोष हुआ ।"

- (प्रकरण ४३, सवाल-जवाब नं. १६०, कुल सं. २२५२+१६० =२४१२)।

❖ अवज्ञाकारियों पर रोष ❖

ज. १- जिस दिन श्रीजी स्वरूप को मोमिनों की सुलतान से मिलाप होने की खबर मिली, उसी दिन कान्हजी भाई मोमिनों का पत्र लेकर कामा पहाड़ी स्थित प्रभु श्री प्राणनाथजी के पास पहुँचे।

ज. २- श्री प्राणनाथजी स्वरूप मोमिनों के बादशाह औरंगजेब से मिलने के बाद बादशाह द्वारा मोमिनों को हिरासत में ले लेने की बात सुनकर बादशाह औरंगजेब पर बहुत ही नाराज़ हुए।

→ सत्कार करना चाहिए था, इसके बदले उलटे उन्हीं पर शंका कर बादशाह के यहाँ उन्हें घोर कष्ट दिया गया? अब देखें ये बादशाह और उसके कर्मचारी सदृश अवज्ञाकारी लोग भागकर कहाँ जाते हैं? अब इन आततायियों को हम अपनी इस बात के इशारे से अर्थात् अपने वचनों के बल से ही समाप्त कर देंगे। अब ये सबके सामने प्रकट होंगे। हमनें मोमिनों को अपना संदेशा देकर उनके पास भेजा था। ऐसे सीधे सादे लोगों को दोषी ठहराकर उनके प्रति शंका कर उन्हें कष्ट दिया गया?"

ज. ४- अब बादशाह औरंगजेब और उसके उद्दंड सेवकों को उनके द्वारा किए गए अपराध का ऐसा दोष लगेगा कि उनके इस अपराध से उनकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं होगा।

ज. ५- ये मोमिन पैगम्बर हैं। परमात्मा-खुदा के इन पैगम्बरों-सन्देशवाहकों को कष्ट देना और दोषी ठहराना, परमात्मा को ही कष्ट देने और दोषी ठहराने के समान है।

स. ६- किसके सामने इन अवज्ञाकारियों को अपने अपराध के लिए क्या-क्या करना पड़ेगा?

स. ७- ऐसे शराअ के शैतानों पर दुनिया के लोग क्या कहेंगे, ऐसा कुरान में कहा है?

स. ८- हादी मुहम्मद साहेब के वचनों को ठुकराकर ये अवज्ञाकारी लोग क्या हुए और दीन इसलाम के क्या बने?

स. ९- इन अवज्ञाकारियों के भविष्य पटल-लोमोफूज (लौह महफूज) में खुदा ने क्या लिख दिया है?

ज. ९- इन हतभागी-अवज्ञाकारियों के भविष्य पटल-लोमोफूज (लौह →

स. १०-नसीब में लिखे मुताबिक ही अक्ल-सूझ यहाँ किसे आयी?

ज. १०- इन शराअ के शैतानों-सुलतान और उसके कर्मचारियों को उनके →

स. ११-उक्त प्रकार शराअ के लोगों का स्पष्ट वर्णन कुरान में कहाँ और तफसीर के कितनवें पन्ने पर लिखा हुआ है?

स. १२-खुदा-परमात्मा का संदेशा ठुकरानेवाले चाहे कोई भी हों, वे कैसे हैं?

स. १३-खुदा-परमात्मा कैसे लोगों को अपना दोस्त नहीं बनाते?

ज. ६- आम दुनिया के सामने इन अवज्ञाकारियों को अपने इस अपराध के लिए बड़ा पश्चाताप करना पड़ेगा। काला-नीला मुँह लटकाये बेइज्जत होना पड़ेगा।

ज. ७- ऐसे बेईमान और अविश्वसनीय शराअ के शैतानों को दुनिया के आम लोग बार-बार धिक्कारेंगे। अल्लाह कलाम अर्थात् कुरान के अन्दर लिखे परमात्मा-खुदाई बचन इस तरह कहते हैं।

ज. ८- अपने हादी मुहम्मद साहेब के बचनों को ठुकराकर ये अवज्ञाकारी लोग अपने ही हादी से बिमुख हुये अर्थात् उनकी नज़र में मुनकर साबित हुये और अपने ही दीन इसलाम-सत्य धर्म के घातक अपराधी बने।

→ महफूज) में खुदा-परमात्मा एवम् भावी ने उक्त प्रकार होना ही लिख दिया है। अतः वही हो रहा है । अर्थात् उनकी दया के बिना किसी को कुछ नहीं सूझ सकता।

→ नसीब में लिखे मुताबिक ही अक्ल-सूझ आई। ये कर्महारे दज्जाल रूप बनकर जीवन में लाभ प्राप्त करने के समय नुकसान में पड़ गये। उनके नसीब ने उन्हें कहाँ से कहाँ पटक दिया।

ज. ११- उक्त हतभागी शराअ के शैतानों की स्पष्ट हकीकत कुरान में पहले सिपारे के बासठवें पृष्ठ पर और हुसैनी तफसीर-अनुवाद के चौदहवें पन्ने पर लिखी हुई है।

ज. १२- खुदा-ब्रह्म-परमात्मा के संदेश को ठुकरानेवाले काफिर चाहे कतेब-किताबों को पढ़नेवाले हों या बहुदेव पूजक हों, उन पर खुदा-परमात्मा की तरफ से कभी भलाई नहीं होगी।

ज. १३- खुदा-ब्रह्म-परमात्मा के संदेश को ठुकरानेवाले या अस्वीकार करनेवाले काफिरों को परमात्मा-खुदा कभी अपना दोस्त नहीं बनाते।

स. १४-किसने परमात्मा-ख़ुदा के वास्तविक स्वरूप को छिपाना चाहा?

स. १५-कैसे लोगों को और क्या करनेवालों को परदे के पीछे डाल दिया गया?

ज. १५- जिन लोगों ने ख़ुदा-परमात्मा के स्वरूप को छिपाने की कोशिश →

स. १६-कुरान के अनुसार कैसे लोग, कहाँ और किनके बीच प्रकट हो चुके हैं?

स. १७-वास्तव में काफ़िर कौन हैं? मोमिनों को किसने और क्यों भेजा था?

स. १८-ख़ुदा ने कहाँ उतरने की आज्ञा की? वही आज्ञा किस धर्म के नाम पर जाहिर हुई?

स. १९-कौन, किन्हें और किसके समान ख़ुदा से विमुख कहते हैं? हिन्दुओं में प्रकट होने के लिए ख़ुदा ने क्या भेजा?

स. २०-उक्त कार्य किनके लिए शुभातिशुभ है? किनके द्वारा किसे और क्या मिलेगा?

स. २१-किनके अंग के संग सदैव कौन रहते हैं?

स. २२-क़यामत के समय के लिए मुहम्मद साहेब की क्या शुभेच्छा थी?

ज. १४- सुलतान औरंगजेब के पासवान शराअ के काज़ियों ने रातों-रात रद्दबदल करके बादशाह को भ्रमित करके परमात्मा खुदा के वास्तविक स्वरूप को छिपाना चाहा।

→ की, लोगों की नज़र में सत्य खुदा-परमात्मा के ज्ञान के प्रति परदा डालना चाहा, वे लोग सदा के लिए परदे के पीछे डाल दिए गये। अब उन्हें कोई नहीं जानता-पहचानता।

ज. १६- कुरान के अनुसार कुरान सद्ग्रन्थ के उत्तराधिकारी-वारिस हिन्दुओं के बीच प्रकट हो चुके हैं।

ज. १७- मोमिनों को काफ़िर कहनेवाले शराअ के शैतान ही वास्तव में बेईमान और काफ़िर हैं। मोमिनों को तो खुदा-परमात्मा ने पैगाम पहुँचाने के लिए भेजा था ।

ज. १८- खुदा ने यहूदियों पर अपना हुकम नाज़िल किया अर्थात् फरमाया और वही हुकम इसलाम के नाम से सारे संसारवालों के लिए नेकी, सच्चाई और भलाई के रूप में जाहिर हुआ।

ज. १९- शराअ के शैतान यहूदियों के समान हिन्दुओं को भी खुदा के विमुख कहते हैं। हिन्दुओं में प्रकट होने के लिए खुदा ने इसलाम पर समर्पित होने का पैगाम भेजा।

ज. २०- संसार के लोगों के लिए उक्त कार्य शुभातिशुभ है। ब्रह्ममुनियों-मोमिनों द्वारा सारे संसार के लोगों को सत्य परमात्मा-खुदा प्राप्ति की राह मिलेगी।

ज. २१- मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के अंग के संग सदैव परमात्मा-खुदा रहते हैं।

ज. २२- क़यामत के समय के लिए मुहम्मद साहेब की यही शुभेच्छा थी कि क़यामत के समय वे स्वयं ब्रह्ममुनियों-मोमिनों के संग आयें, जिनकी पवित्र कुरान दृढ़तापूर्वक साक्षी देता है।

स. २३-किन रब्बानी कलाम के वचनों में समस्त ईश्वरीय वचनों का सार संग्रहीत है?

स. २४-खुदा-परमात्मा की ओर लगनेवाले किन यहूदियों को वे काफ़िर-अवज्ञाकारी कहते हैं?

स. २५-सद्ग्रन्थ कुरान के वारिसदार कौन हैं? किसके बिना, किसका आधिपत्य किसी में नहीं है?

स. २६-कैसे यहूदियों की तरह हिन्दू लोग भी किससे झगड़ते हैं?

स. २७-पुनः किसका पालन करनेवाले मुसलमान भी उन ब्रह्ममुनियों-मोमिनों से लड़ते हैं? श्रीजी स्वरूप अब क्या नहीं छोड़ने के लिए कह रहे हैं?

ज. २७- पुनः शरीअत का पालन करनेवाले मुसलमान भी इमाम का पैगाम →

स. २८-यह झगड़ा किसके और किस विषय के दायित्व का प्रश्न है?

स. २९-कैसे लोग, किस बात का दावा लेते हैं? पुनः उन्होंने क्या अपना रखा है?

स. ३०-कैसे लोग धर्म के किन-किन मर्मों को समझ नहीं पाते?

स. ३१-परमात्मा के समान दूसरों को माननेवालों-मुशरिकों की क्या इच्छा थी?

ज. ३१- परमात्मा के समान दूसरों को माननेवालों के मन में कुछ और ही →

ज. २३- रब्बानी कलाम-कुरान शरीफ के वचनों में समस्त धर्मग्रन्थों एवम् ईश्वरीय वचनों का सार संग्रहीत है।

ज. २४- खुदा-परमात्मा की ओर लगनेवाले ब्रह्मनिष्ठ हिन्दुओं को वे अवज्ञाकारी-काफ़िर कहते हैं।

ज. २५- मोमिन-ब्रह्ममुनि ही कुरान शरीफ के वारिसदार हैं। मोमिनों के बिना किसी में भी कतेब धर्मग्रन्थ का आधिपत्य नहीं है।

ज. २६- कर्मकांडी और मूर्तिपूजक यहूदियों की तरह हिन्दू लोग भी ब्रह्ममुनियों-मोमिनों से झगड़ते हैं।

→ लानेवाले मोमिनों से लड़ाई करते हैं। किन्तु श्रीजी स्वरूप कहते हैं, "मैंने अब मुहम्मद साहेब की विशेषताओं को अपना लिया है। इसलिए मैं कुरान ग्रन्थ कदापि नहीं छोडूँगा क्योंकि कुरान हमारे लिए आया है।"

ज. २८- यह झगड़ा तो हकीकी दीन-सत्य धर्म और उसके पैगम्बर-ईशदूत की गद्दी विषय के दायित्व का प्रश्न है।

ज. २९- कुरान का जाहिरी अर्थ करनेवाले कुरान के विद्वान लोग इमाम मेहदी होने का दावा लेते हैं। इन लोगों ने कुरान के शब्दार्थ एवं शराअ का बाह्य रूप लेकर नकल को अपना रखा है।

ज. ३०- बाह्य आडम्बर से भरे धर्म के प्रति जाहिरी दृष्टि रखनेवाले लोग कुरान आदि सद्धर्मग्रन्थों के मर्मों को नहीं समझ पाते।

→ प्रबल इच्छा थी। वे अवज्ञाकारी तो परमात्मा का संदेश देनेवाले पैगम्बर का उत्तराधिकारी किसी वलीद-अल्पज्ञ, मुगीर-अनाधिकारी को बनाना चाहते थे।

स. ३२-किसका चाहा हुआ होता है? खुदा किस पर अथवा कैसे पर दयावान् होते हैं? किसे रोका नहीं जा सकता?

स. ३३-परमात्मा-खुदा अपनी पूँजी एवम् पैगम्बरी जिसे देना चाहते हैं, उसमें किसका अवतरण होता है?

स. ३४-अल्लाह-परमात्मा की कैसी निशानियाँ हैं? वे सबमें से कैसे हैं?

स. ३५-परमात्मा कैसे हैं? वे जिसे चाहें, उसे क्या कर देते हैं?

स. ३६-खुदा जिसे चाहें, उसे क्या बनाकर कैसी शोभा और कैसी शक्ति दे सकते हैं?

स. ३७-किसका बड़प्पन, किसकी महिमा एवम् विशेषताओं का पार ही नहीं है अर्थात् शब्दातीत है?

स. ३८-खुदा-परमात्मा कुरान की जिन आयतों को रद्द कर देते एवम् भूला देते हैं, पुनः उसके बदले वे किसके लिए और क्या ले आते हैं?

स. ३९-कुरान में मुहम्मद साहेब का उक्त विषय में क्या कथन है?

ज. ३९- कुरान में मुहम्मद साहेब का उक्त विषय में यह कथन है, "कुरान →

स. ४०-आवश्यकता अथवा युगानुसार मुहम्मद साहेब उन आयतों को किस प्रकार, किसके मन से निकाल देते हैं?

ज. ३२- ख़ुदा-परमात्मा जो चाहते हैं, वही होता है। अल्लाह जिस पर रहम-दया करना चाहते हैं, उसी पर दयावान् होते हैं। उनकी कृपा-दया को कोई रोक नहीं सकता।

ज. ३३- परमात्मा-ख़ुदा अपने वचनों की पूँजी एवम् पैगम्बरी अर्थात् संदेश लाने का विशेष कार्य जिसे देना चाहते हैं, उस पर ख़ुदा की वाक्-शक्ति का अवतरण होता है।

ज. ३४- अल्लाह-परमात्मा की बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं। वे सभी चीज़ों को पैदा करनेवाले अर्थात् सबसे महान् हैं।

ज. ३५- परमात्मा-ख़ुदा सर्वश्रेष्ठ स्वामी हैं। वे जिसे चाहें, उसे तिरस्कृत कर देते हैं।

ज. ३६- ख़ुदा-परमात्मा जिसे चाहें, उसे संदेशवाहक बनाने की शोभा प्रदान कर सकते हैं। अपनी अलौकिक शक्ति प्रदान कर वे जिसे चाहें, उसे शोभा और श्रेष्ठता प्रदान कर सकते हैं।

ज. ३७- ख़ुदा-परमात्मा का बड़प्पन असीम-अपार है। उनकी महिमा एवम् विशेषताओं का पारावार ही नहीं है। उनकी कृपा शब्दातीत है।

ज. ३८- ख़ुदा-परमात्मा कहते हैं, "कुरान की जिन आयतों को मैं रद्द कर देता हूँ अथवा भूला देता हूँ, उसके बदले में मैं पुनः उससे भी बढ़िया आयतें तुम मोमिनों के लिए ले आता हूँ।"

→ की जिन आयतों का गूढ़ार्थ लेकर मैं उन्हें निरस्त कर देता हूँ, उन्हीं पर संसार के लोग परस्पर सलाह अथवा विचार-विमर्श एवं चर्चा करेंगे।"

ज. ४०- आवश्यकता अथवा युगानुसार मुहम्मद साहेब उन आयतों को भुलवाकर अथवा निरस्त करके लोगों के मन से निकाल भी देते हैं।

स. ४१-ये अवज्ञाकारी लोग किनके प्रति कैसे बनकर उन्हें सर्वथा भूल जाते हैं?

स. ४२-यहाँ किस विषय में एक दृष्टांत दिया गया है? पुनः उसे कैसे सुनना है?

ज. ४२- खुदा-परमात्मा मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के लिए निरस्त की हुई →

स. ४३-दृष्टांत के अनुसार बारह गाज़ी-धर्मयोद्धाओं को खुदा-परमात्मा ने क्या और किस ध्येय से किया था?

ज. ४३- दृष्टांत के अनुसार बारह गाज़ी-धर्मयोद्धाओं को, जिनमें से दस जन एक खिल्के-समुदाय के और दो जन दूसरे खिल्के-समुदाय के थे, कुरान ग्रन्थ के निकट पहुँचाने के लिए खुदा-परमात्मा ने →

स. ४४-सद्धर्म ग्रन्थ कुरान में किस विषय का एक किस्सा आता है? उस किस्से का तात्पर्य क्या है?

ज. ४४- सद्धर्म ग्रन्थ कुरान में नमाज़ से संबंधित एक किस्सा आता है। →

स. ४५-बाद में उस स्थान पर किस ओर नमाज करने का आदेश हुआ?

स. ४६-शराअ के कट्टर लोगों ने क्या नहीं समझा?

स. ४७-किन लोगों ने भी यदि इमाम का पैगाम नहीं सुना अथवा ठुकरा दिया, तो उनका भी मुँह कैसा होगा?

स. ४८-किनके मुँह पर क्या नहीं होने से क्या होगा?

ज. ४१- ये अवज्ञाकारी लोग उन आयतों के प्रति अचेत होकर उन्हें सर्वथा भूल जाते हैं।

→ आयतों के बीच से किस तरह गूढ़ार्थ लेकर बढ़िया आयतें ले आते हैं, इस विषय में यहाँ एक दृष्टांत दिया गया है, उसे चित्त लगाकर ध्यान से सुनना है।

→ दस जनों को उन दो के बराबर किया था। खुदा-परमात्मा ने ऐसा इस ध्येय से किया था, ताकि वे दस जन भी कुरान के अधिकारी-वारिस बने। उन दो की तरह अन्य दस जन अर्थात् सभी को कुरान पर विश्वास करनेवाला बनाकर अन्य सभी को निरस्त कर देने के लिए ही खुदा ने ऐसा किया था।

→ उस किस्से का तात्पर्य यह है कि लोगों के प्रति हितवर्धक दृष्टि से खुदा ने नमाज़ पढ़ने के स्थान को बदलकर बेतुल मुकद्दस को नमाज़ का स्थान बनाया था।

ज. ४५- बाद में उस स्थान पर मक्का की ओर नमाज़ करने का आदेश हुआ।

ज. ४६- शराअ के कट्टर लागों ने यह नहीं समझा कि इनकार करनेवाले तबाह और बरबाद हो जायेंगे।

ज. ४७- शराअ के शैतान काज़ियों ने भी यदि इमाम का पैगाम नहीं सुना अथवा ठुकरा दिया, तो इनका मुँह भी काला होगा।

ज. ४८- इन शराअ के शैतान स्वयं को मोमिन कहनेवाले काज़ियों के मुँह पर नूर न रहने से उनका चेहरा पीला पड़ जायेगा और उन्हें पश्चात्ताप की अग्नि में झुलसना पड़ेगा।

स. ४९-यहूदियों को क्या करने के लिए वे अवज्ञाकारी लोग उन्हें क्या कहकर उनसे लड़ते थे?

स. ५०-ऐसे अवज्ञाकारी बाद में क्या होंगे? परमात्मा ऐसे लोगों के प्रति क्या नहीं करते?

स. ५१-यह किसकी युक्ति अथवा किसकी करनी है? बादशाह ने किस पर विचार नहीं किया?

स. ५२-कैसे लोगों को कयामत के समय अपनी करनी का फल-कष्ट भोगना पड़ेगा?

स. ५३-कौन लोग, किस समय अमरत्व का फल प्राप्त करने से वंचित रहेंगे?

स. ५४-सद्ग्रन्थ कुरान में खुदा-परमात्मा ने इन अवज्ञाकारियों को क़यामत के समय क्या करनेवाला कहा है?

स. ५५-किसकी बात इनकार कर ये अवज्ञाकारी उलटे लड़ने के लिए तत्पर हुए?

स. ५६-अवज्ञाकारी लोग किनकी शक्ति को नहीं जानते? वे कब बरबाद होंगे?

ज. ५६- ये शराअ के शैतान अवज्ञाकारी लोग खुदा-परमात्मा की शक्ति →

स. ५७-निःशंक अल्लाह किस पर सामर्थ्य रखनेवाले हैं?

स. ५८-कैसे अथवा क्या करनेवालों को खुदा-परमात्मा क्या करेंगे?

ज. ४९- यहूदियों को बरबाद करने के लिए वे अवज्ञाकारी लोग उन्हें काफ़िर कहकर उनसे लड़ते थे।

ज. ५०- ऐसे अवज्ञाकारी लोग बाद में शर्मिन्दा होंगे। पुनः परमात्मा ऐसे लोगों की परवाह नहीं करते।

ज. ५१- यह परमात्मा की युक्ति है। यह प्रभु ने ही किया है। परमात्मा-ख़ुदा की आज्ञा के प्रति बादशाह ने विचार नहीं किया ।

ज. ५२- ख़ुदा के पैगाम के प्रति लापरवाह और अवज्ञाकारी लोगों को कयामत के समय अपनी करनी का फल भोगना पड़ेगा। वे बड़ा कष्ट पायेंगे।

ज. ५३- लापरवाही के सम्राट कयामत के समय अमरत्व का फल प्राप्त करने से सर्वथा वंचित रहेंगे।

ज. ५४- सद्ग्रन्थ कुरान में ख़ुदा-परमात्मा ने इन अवज्ञाकारियों के प्रति कहा है, "ये काफ़िर लोग क़यामत के समय सच्चाई को भूलनेवाले होंगे।"

ज. ५५- संदेशवाहक मोमिनों की बातों को इनकार कर ये अवज्ञाकारी उलटे उनसे लड़ने के लिए तत्पर हुए।

→को नहीं जानते। अब इस घड़ी अर्थात् क़यामत के समय वे ख़ुदा के हुकम से बरबाद हो जायेंगे। तब उन्हें ख़ुदा की शक्ति का एहसास होगा।

ज. ५७- निःशंक अल्लाह ख़ुदा-परमात्मा हर चीज़ पर कुदरत-सामर्थ्य रखनेवाले हैं।

ज. ५८- पैगाम को ठुकराने और न माननेवाले नास्तिकों को ख़ुदा-परमात्मा बरबाद-नष्ट कर देंगे।

स. ५९-खुदा-परमात्मा कब से प्रत्येक चीज़ों को बनाने में कैसे हैं?

स. ६०-परमात्मा चाहें, तो कैसे को भी क्या कर सकते हैं और चाहें तो कैसे को भी क्या कर सकते हैं?

स. ६१-खुदा-परमात्मा सबसे कैसे हैं?

स. ६२-इनसान कहाँ-कहाँ ध्यान नहीं देते? बेशक वे किसने बनाये हैं?

स. ६३-ब्रह्मात्मा-मोमिन किसका समर्थन करनेवाले हैं? पुनः परमात्मा किनके पास हैं?

स. ६४-कुरान, पुराण आदि सद्ग्रन्थों में आदिकाल से ही क्या लिखा है अर्थात् किसमें योग्यता है, ऐसा कहा है?

स. ६५-खुदा-परमात्मा कहाँ-कहाँ के बादशाह हैं? पुनः कौन-से साम्राज्य के योग्य हैं?

स. ६६-कौन जैसा चाहें, वैसा कर सकते हैं? उन्हें कोई क्या नहीं कर सकता?

स. ६७-कौन मदद करनेवाले और सच्चे दोस्त भी हैं?

स. ६८-परमात्मा-खुदा किसके अतिरिक्त किसी के दोस्त नहीं होते?

स. ६९-कौन लोग धर्म को लाभ पहुँचाते हैं और कैसे लोगों को ढूँढ़ने पर भी मिलना दुर्लभ है?

ज. ५९- ख़ुदा-परमात्मा आदिकाल से ही सभी चीज़ों को बनाने में पूर्ण सामर्थ्यशाली सिद्ध हैं।

ज. ६०- परमात्मा चाहें, तो किसी को भी नष्ट कर सकते हैं और जिसे चाहें, उसे पैदा ही न करें।

ज. ६१- ख़ुदा-परमात्मा सबसे श्रेष्ठातिश्रेष्ठ और सामर्थ्यशाली हैं। जैसा चाहें, वैसा करने की शक्ति उनमें है।

ज. ६२- इनसान ज़मीन और आसमान पर ध्यान नहीं देते कि वे किसने बनाये हैं ? बेशक वह अल्लाह-परमात्मा ने ही बनाये हैं।

ज. ६३- ब्रह्मात्मा-मोमिन सच्चाई का समर्थन करनेवाले हैं। निःसन्देह परमात्मा उन्हीं के पास हैं।

ज. ६४- कुरान, पुराण आदि सद्ग्रन्थों में आदिकाल से ही लिखा है कि परमात्मा में सब कुछ करने की योग्यता है।

ज. ६५- ख़ुदा-परमात्मा ज़मीन और आसमान के बादशाह हैं और वे इसी साम्राज्य के योग्य हैं।

ज. ६६- ख़ुदा-परमात्मा जैसा चाहें, वैसा कर सकते हैं। उन्हें कोई रोकनेवाला नहीं है।

ज. ६७- बेशक वे ख़ुदा-परमात्मा ही मदद करनेवाले हैं। वे ख़ुदा ही हमारे सच्चे दोस्त भी हैं।

ज. ६८- परमात्मा-ख़ुदा ब्रह्ममुनि-मोमिनों के अतिरिक्त किसी के दोस्त नहीं होते।

ज. ६९- ब्रह्मनिष्ठ मोमिन धर्म को लाभ पहुँचाते हैं। ऐसे ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को ढूँढ़ने पर भी मिलना दुर्लभ होता है।

स. ७०-बीतककार यहाँ किसकी साक्षी के विषय में क्या कहते हैं?

ज. ७०- बीतककार स्वामी श्री लालदासजी महाराज यहाँ कहते हैं, "यहाँ →

स. ७१-किसमें, किसके और किस प्रकार संसार में प्रकट होने की बातें लिखी हैं?

❖ लैल तुल कद्र ❖

स. १- कैसी अनेकों साक्षियाँ, कहाँ, किस अथवा कैसी भाषा में लिखी हैं?

स. २- उन साक्षियों में किसकी हकीकत है? किसकी समझ आने पर लोगों को क्या होगा?

स. ३- कुरान के कौनसे सिपारे से लेकर कहाँ-किस सिपारे तक मोमिन-ब्रह्ममुनियों का समाचार है?

स. ४- कुरान ग्रन्थ का आखरी सिपारा और सूरत कौनसे हैं, जहाँ कुरान ग्रन्थ समाप्त होता है ?

स. ५- सद्ग्रन्थ कुरान में कहाँ-से-कहाँ तक किस समय में किसके साथ होनेवाली घटनाओं का ब्योरा है?

→ कुरान की साक्षी दी है। जो कार्य हुए हैं अथवा जो घटना घटी है, वे कुरान में पहले से ही लिखी हुई थीं। इस बात की साक्षियाँ यहाँ रखी गई हैं।"

ज. ७१- सद्ग्रन्थ कुरान शरीफ़ में ब्रह्मसृष्टियों-मोमिनों के संसार में इसी प्रकार प्रकट होने के विषय में अनेक प्रसंग सांकेतिक भाषा में लिखे हैं।

- (प्रकरण ४४, सवाल-जवाब नं. ७१, कुल सं. २४१२+७१=२४८३)।

❖ लैल तुल कद्र ❖

ज. १ - ब्रह्मात्माओं के खेल में आने की अनेकों साक्षियाँ सद्ग्रन्थ कुरान के अन्दर सांकेतिक भाषा में लिखी हुई हैं।

ज. २ - उक्त सभी साक्षियों में ब्रह्मनिष्ठ मोमिन आत्माओं की हकीकत है। उक्त हकीकत के खुल जाने से अब सभी लोग इसलाम के रहस्यों को वास्तविक रूप में समझ सकेंगे।

ज. ३ - कुरान सद्ग्रन्थ के पहले सिपारे- *"अलिफ लाम मीम"* से लेकर अन्तिम- *"आम सिपारे"* तक मोमिनों-ब्रह्मसृष्टियों का ही समाचार भरा पड़ा है।

ज. ४ - कुरान ग्रन्थ के आखरी तीसवें सिपारे की छत्तीसवीं सूरत (अध्याय) में कुरान ग्रन्थ समाप्त होता है। "कुल अऊजो-बेरब्बिनास"-इस आयत में कुरान ग्रंथ समाप्त होता है ।

ज. ५ - सद्ग्रन्थ कुरान के पहले सिपारे की पहली आयत से लेकर अन्तिम-आम सिपारे तक मोमिनों के साथ क़यामत के समय तक होनेवाली घटनाओं का ब्योरा है।

स. ६- किस सूरा लैल में लिखा है कि मुहम्मद साहेब ने चर्चा करते समय बनी असराईल के विषय को जाहिर किया था? पुनः मुहम्मद साहेब ने क्या कहा था?

स. ७- धर्म-मार्ग पर चलनेवाला वह व्यक्ति अपने आपको किस राह पर पुनः कितने महीनों तक न्योछावर करते भी नहीं थका?

स. ८- किसे, किस लिए और कौन-सी रात्रि दी गई अर्थात् उस रात्रि का नाम क्या है और उस रात्रि का वर्णन कहाँ मिलता है?

स. ९- कुरान में लिखी उक्त बातें सुनकर किसे आश्चर्य हुआ?

स. १०-तब मुहम्मद साहेब के यारों ने मुहम्मद साहेब से क्या पूछा और मुहम्मद साहेब ने क्या जवाब दिया?

स. ११-तब मुहम्मद साहेब के यारों ने उनसे पुनः क्या पूछा? उक्त प्रश्न के जवाब में मुहम्मद साहेब ने क्या कहा?

ज. ११- तब मुहम्मद साहेब के यारों ने उनसे पुनः पूछा, "बनी असराईल →

स. १२-स्पष्ट रूप से किसने और क्या प्रकट किया? यह स्पष्टीकरण किस रात्रि में किया गया है?

स. १३-वह रात कैसी है, जिसमें खुदा ने अमूल्य ब्रह्मज्ञान को उतारा ?

ज. ६- *"इन्ना इन्जुलना"*-सूरा लैल में लिखा है कि चर्चा करते समय मुहम्मद साहेब ने अपने असहाबों-यारों से बनी असराईल के विषय में कहा था कि *'बनी असराईल में से एक व्यक्ति धर्म-मार्ग पर चलेगा।'*

ज. ७- धर्म-मार्ग पर चलनेवाला वह व्यक्ति अपने आपको खुदा-परमात्मा की राह पर एक हजार महीनों तक न्योछावर करते भी नहीं थका।

ज. ८- उक्त धर्म-मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति हजार महीनों तक संघर्ष करते, परमात्मा की राह पर न्योछावर होते भी नहीं थका, इसीलिए उसे एक ऐसी रात्रि दी गई, जिसका नाम है-शबे कद्र। इस रात्रि का वर्णन "सूरे कद्र" में मिलता है।

ज. ९- कुरान में लिखी उक्त बातें सुनकर मुहम्मद साहेब के यारों-साथियों को आश्चर्य हुआ।

ज. १०- तब मुहम्मद साहेब के यारों ने मुहम्मद साहेब से पूछा, "एक हजार महीनों से अधिक धर्म-कार्य करनेवाले व्यक्ति कौन हैं?" तब मुहम्मद साहेब ने जवाब दिया, "असराईल के एक पुत्र।"

→ में से एक ऐसा कौन होगा, जिसे इतना बड़ा दर्जा होगा?" उक्त प्रश्न के जवाब में रसूल साहेब ने कहा, "वह जबराईल द्वारा लाया गया सूरे कद्र था।"

ज. १२- खुदा-परमात्मा ने कुरान की आयत को प्रकट-नाज़िल किया। यह स्पष्टीकरण शबे कद्र की रात्रि में किया गया है।

ज. १३- खुदा ने मुहम्मद साहेब को यह बताया था कि, "वह रात बहुमूल्य है, जिसमें हमने अमूल्य ब्रह्मज्ञान को उतारा।"

स. १४-कौन-सी रात हजार महीनों से भी बढ़कर है? इस रात में खुदा ने किसे, किसके साथ उतारा?

स. १५-यह रात कैसी है? जागनेवालों के लिए यह आनन्दमयी यात्रा कितनी अधिक है?

स. १६-आनन्दमयी यात्रा की यह रात किससे भरी हुई है और कब तक भरी रहेगी?

स. १७-किसने शबे कद्र-महिमावान् रात्रि में किसे, कहाँ-से और कैसे में उतारा?

स. १८-किस रात्रि के प्रथम दो तकरारों में मोमिनों ने किस रूप में और कौन-कौन-सी अथवा कैसी लीलायें कीं?

स. १९-क्या अनुभव न कर पाने पर कौन, किसके तीसरे भाग (ब्रह्माण्ड) में अवतरित हुईं ?

स. २०-किस ब्रह्माण्ड में श्री देवचन्द्रजी ने ब्रह्मात्माओं को ज्ञान द्वारा इश्क-ईमानरूपी हथियार दिये?

स. २१-कलिकालरूपी दज्जाल किसके द्वारा निर्मूल होंगे और एक सच्चे खुदा-परमात्मा प्रकट होंगे?

स. २२-हजार महीनों के कितने वर्ष और कितने महीने हुए? पुनः इससे भी बेहतर लीला कब तक होगी?

स. २३-उक्त बेहतर अवधि के आगे क्या होने को कहा है? पुनः उस अवधि-काल में कौन जागने के लिए मेहनत करेंगे?

ज. १४- शबे कद्र की रात हजार महीनों से भी बढ़कर है। इस रात में ईश्वर-खुदा ने अपने फरिश्तों को जबराईल फरिश्ते के साथ उतारा है।

ज. १५- यह पूरी रात आनन्दमयी और बरकत की रात है, जो जागनेवालों के लिए एक हजार महीनों से भी अधिक है।

ज. १६- आनन्दमयी यात्रा की यह रात खुदा की रहमतों से भरी हुई है और तब तक भरी रहेगी, जब तक सुबह न हो जाये।

ज. १७- खुदा-परमात्मा ने शबे कद्र-महिमावान् रात्रि में ब्रह्मसृष्टियों के साथ ईश्वरी फरिश्तों को अर्श अजीम-अखण्ड परमधाम से नश्वर संसार में उतारा।

ज. १८- लैल तुल की रात्रि के प्रथम दो तकरारों-चरणों में मोमिनों-ब्रह्मात्माओं ने गोपियों के रूप में ब्रज और रासलीला जैसी अखण्डानन्दमयी क्रीड़ायें कीं।

ज. १९- दुःख का अनुभव न कर पाने पर ब्रह्मात्माएँ लैल तुल कद्र के तीसरे भाग-जागनी के ब्रह्माण्ड में अवतरित हुईं।

ज. २०- तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में एक हजार महीनों तक श्री देवचन्द्रजी ने तारतम ज्ञान द्वारा ब्रह्मात्माओं को इश्क और ईमानरूपी हथियार प्रदान किये।

ज. २१- कलिकालरूपी दज्जाल तारतम ज्ञानरूपी शस्त्र द्वारा निर्मूल होंगे और एक सच्चे खुदा-परमात्मा प्रकट होंगे।

ज. २२- हजार महीनों के ८३ वर्ष और ४ महीने हुए। पुनः इससे भी बेहतर-बढ़कर ब्रह्मलीला महाप्रलय तक इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार के रूप में होगी।

ज. २३- उक्त बेहतर अवधि के आगे ब्रह्मज्ञान (तारतम ज्ञान) के द्वारा प्रभात होने को कहा है। इस प्रभातरूपी जागनी की लीला में मोमिन रूहें-ब्रह्मात्माएँ जागने का उपाय करेंगी।

स. २४-कौन, किनकी आज्ञा से एक सौ बीस वर्ष तक किससे लोहा बाँधेंगे?

स. २५-अक्षर-अक्षरातीत अर्श से संसार में कितने प्रकार की आत्माएँ अवतरित हुईं?

स. २६-मलायकी फरिश्ते कौन हैं? वे खेल में कहाँ से और क्यों आए?

स. २७-मोमिन रूहों के समूह ने किस धाम से, कहाँ आकर, क्या किया?

ज. २७- उक्त जमात से भी विशिष्ट खासल-खास दूसरे मोमिन रूहों- →

स. २८-कुरान की भाषा में कौन-कौनसे तीन श्रेष्ठ स्वरूप अग्रगण्य हुए?

ज. २८- प्रत्यक्ष प्रमाणरूपी सद्ग्रन्थ कुरान की भाषा में अलिफ-मुहम्मद →

स. २९-बसरी स्वरूप के कूच करने के कितने वर्ष, कितने मास के पश्चात् कौन स्वरूप प्रकट हुए?

ज. २९- बसरी स्वरूप अर्थात् हजरत मुहम्मद साहेब के कूच करने के नौ →

स. ३०-सद्गुरु श्री देवचंद्रजी ने कब से कब तक पुनः किसके साथ संघर्ष किया?

स. ३१-उक्त लड़ाई किस-किसके बीच हुई?

स. ३२-इस लड़ाई में ब्रह्मनिष्ठ मोमिन किनके प्रति विश्वास लेकर लड़े?

ज. २४- मोमिन-ब्रह्ममुनि परमात्मा की आज्ञा से एक सौ बीस वर्ष तक दज्जाल की कलियुगी प्रवृत्तियों से लोहा बाँधेंगे।

ज. २५- अक्षर-अक्षरातीत अर्श-परमधाम से संसार में दो प्रकार की विशिष्ट धर्मवीर आत्माएँ अवतरित हुईं।

ज. २६- संसार में अवतरित दो प्रकार की विशिष्ट आत्माओं में से एक मलायकी फ़रिश्ते-ईश्वरी आत्माएँ हैं,जो नूर-अक्षर धाम से अवतरित हुए हैं।

→ ब्रह्मसृष्टियों के समूह ने अर्श अजीम-अक्षरातीत परमधाम से संसार में आकर खेल देखा और खेल देखने के प्रमाण रूप जीवों का उद्धार किया।

→ साहेब अर्थात् बसरी स्वरूप, लाम-ईसा रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी अर्थात् मलकी स्वरूप और मीम-इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी अर्थात् हकी स्वरूप श्रेष्ठ अग्रगण्य हुए।

→ सौ नब्बे वर्ष और नौ महीने व्यतीत होने के पश्चात् सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी अर्थात् मलकी स्वरूप (वि. सं. १६३८-ई. स. १५८१) प्रकट हुए।

ज. ३०- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने वि. सं. १६३८ से लेकर वि. सं. १७५८ तक अर्थात् एक सौ बीस वर्ष तक कलियुगरूपी दज्जाल के वशीभूत लोगों से संघर्ष किया।

ज. ३१- उक्त लड़ाई कलियुगरूपी दज्जालों-अवज्ञाकारी लोगों और संयमी ब्रह्ममुनियों-मोमिनों के बीच हुई।

ज. ३२- इस धर्मयुद्धरूपी लड़ाई में ब्रह्मनिष्ठ मोमिन परमात्मा-ख़ुदा के प्रति दृढ़ विश्वास लेकर लड़े।

स. ३३-परब्रह्म परमात्मा ने ब्रह्ममुनियों के इस संघर्ष के विषय में कहाँ लिखा था?

स. ३४-किन विषयों का स्पष्टीकरण स्वयं परमात्मा के तीनों स्वरूप करेंगे?

स. ३५-उक्त तीनों स्वरूपों के समष्टि रूप चौथे कौनसे स्वरूप हैं? क्या ये चारों एक स्वरूप हैं?

ज. ३५- परमात्मा के तीनों स्वरूपों में से पहले स्वरूप-रसूल मुहम्मद →

स. ३६-उक्त चारों स्वरूप किस स्वरूप में एकाकार हुए हैं?

स. ३७-किनका सम्पूर्ण ज्ञान दीन इसलाम में समाहित है?

स. ३८-किन-किन स्वरूपों से पृथक रहें, तो उन्हें अवज्ञाकारी कहा जायेगा?

स. ३९-जो मोमिनों से संघर्ष करे, वह किसका स्वरूप है?

स. ४०-किनकी आज्ञानुरूप मोमिन श्री परमधाम से संसार में उतरे?

स. ४१-परब्रह्म परमात्मा ने सत्य धर्म के शासन एवम् आदेश का अधिकार किसे दिया है?

ज. ३३- मोमिन-ब्रह्मात्माओं के इस संघर्ष का वृत्तान्त खुदा-परब्रह्म परमात्मा ने सद्ग्रन्थ कुरान में पहले से ही भविष्यवाणी के रूप में लिख दिया था।

ज. ३४- उक्त धर्मयुद्ध और धर्मवीरों के प्रति लिखकर भेजे हुए विषयों का स्पष्टीकरण स्वयं हक परमात्मा के तीनों स्वरूप करेंगे।

→ साहेब, दूसरे-रूह अल्लाह-परमात्मा की आनन्द अंग श्यामाजी अवतार श्री देवचन्द्रजी तथा तीसरे-श्री श्यामजी के मंदिर में तारतम देनेवाले स्वरूप हैं। पुनः इन तीनों के समष्टि रूप इमाम-श्री प्राणनाथजी स्वरूप हैं। ये चारों एक स्वरूप हैं।

ज. ३६- उपरोक्त चारों स्वरूप श्री इन्द्रावती आत्मा में एकाकार हुए हैं।

ज. ३७- चौथे स्वरूप इमाम-श्री प्राणनाथजी के सम्पूर्ण समाहित ज्ञान का नाम हकीकी दीन इसलाम-श्री निजानन्द सिद्धान्त है।

ज. ३८- ब्रह्मनिष्ठ धर्मवीर मोमिनों तथा इमाम मेहदी स्वरूप श्री प्राणनाथजी से जो पृथक रहे अथवा उन्हें न माने, वे अवज्ञाकारी कहे जायेंगे।

ज. ३९- सद्ग्रन्थ कुरान में कहा है कि मोमिनों-ब्रह्मात्माओं से संघर्ष करनेवाले निःसंदेह ही दज्जाल के स्वरूप हैं।

ज. ४०- श्री अक्षरातीत-नूर तजल्लाह के खुदा-परमात्मा की आज्ञा से ब्रह्मात्माओं का समूह श्री परमधाम से इस खेल में अवतरित हुआ।

ज. ४१- परब्रह्म परमात्मा-खुदा ने इसलाम-सत्य धर्म का पवित्र शासन एवम् आदेश देने का कुल अधिकार ब्रह्मनिष्ठ धर्मवीर मोमिनों को दिया है।

स. ४२-जब तक ब्रह्मात्माओं का हुकम चलेगा, तब तक क्या होता रहेगा?

स. ४३-ये ब्रह्मात्माएँ संसार के बीच कैसी रात्रि को दूर कर क्या करके धाम जायेंगी?

स. ४४-इस सम्मानित रात्रि के लिए कौन लोग अनुमान लगाकर क्या करते आये हैं?

स. ४५-कौन-कौन उक्त ब्रह्मरात्रि को आज तक ढूँढ़-ढूँढ़कर परेशान हुए, परंतु पा नहीं सके?

स. ४६-किसके कृपा-प्रसाद से, किसने उक्त शबे कद्र का रहस्य सबके आगे खोल दिया?

स. ४७-इन ब्रह्मात्माओं ने कौन-सा तत्त्व प्रदान कर सबको कहाँ-किनके चरणों में पहुँचा दिया?

स. ४८-जगजीवों के लिए ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों ने क्या कर दिया?

स. ४९-किन स्वरूप के प्रकटीकरण की बातें सुनते ही लोग टिड्डियों की भाँति कहाँ दर्शनार्थ दौड़ आये?

स. ५०-टिड्डियों की भाँति दौड़कर आनेवालों को क्या-क्या मिला?

स. ५१-यह किसकी और कैसी महिमा है? यह महिमा सुनने की ताकत किसमें नहीं है?

ज. ४२- जब तक ब्रह्मात्माओं-मोमिनों का हुकम संसार में चलता रहेगा, तब तक सांसारिक जीवों को अखण्ड मुक्तिधाम में मोक्ष-फल मिलता रहेगा।

ज. ४३- ये ब्रह्मात्माएँ संसार के बीच अज्ञानान्धकार रूपी रात्रि को दूर कर अखण्ड ज्ञान की सुबह करके अपने धाम में अपनी मूल परात्मा में लौट जायेंगी।

ज. ४४- इस सम्मानित रात्रि के विषय में चौदह लोक ब्रह्माण्ड के सभी विज्ञजन अनुमान लगा-लगाकर ढूँढ़ते चले आये हैं।

ज. ४५- उक्त ब्रह्मरात्रि-म्याराज की रात्रि को सृष्टि के आदि से लेकर सभी ऋषि, महर्षि, त्रिगुण आदि सभी देवी-देवता, पुनः खोजी लोग भी ढूँढ़ते आए, परेशान हुए, परंतु आज तक पा नहीं सके।

ज. ४६- परमात्मा-खुदा की कृपा से ब्रह्मनिष्ठ धर्मवीर मोमिनों ने उक्त शबे कद्र-रहस्यमयी अमूल्य रात्रि का रहस्य सबके आगे खोल दिया।

ज. ४७- इन ब्रह्मात्माओं-मोमिनों ने सबको तारतम ज्ञान प्रदान कर परमात्मा के चरणों में पहुँचा दिया।

ज. ४८- जगत् के जीवों के लिए ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों-ब्रह्मात्माओं ने बेहद भूमिका में स्थित बहिश्त-मुक्तिधामों के द्वार खोल दिये।

ज. ४९- आखर जमाने के खाविन्द-इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी स्वरूप के प्रकटीकरण का समाचार पाते ही लोग टिड्डियों की भाँति दौड़ते हुए उनके दर्शनार्थ पन्ना में आये।

ज. ५०- उक्त टिड्डियों की भाँति दौड़कर आनेवालों को पालनहार परमात्मा के दर्शन-पर्शन प्राप्त हुए।

ज. ५१- यह मोमिन-ब्रह्मसृष्टियों की इस नश्वर जिह्वा से कही न जा सकनेवाली महिमा है। संसार के लोगों में यह महिमा सुनने का सामर्थ्य नहीं है।

स. ५२-बादशाह अब क्या देखेगा? संसार के लोग पुकार-पुकारकर क्या कहेंगे?

स. ५३-अब कुरान के मुँह पर से क्या उठ गया है? ब्रह्ममुनि क्या कर रहे हैं?

स. ५४-दज्जाल स्वरूप ने किन्हें और क्या किया?

स. ५५-मुनकरों ने किनके साथ क्या किया? क्या ये बातें छिपी रहेंगी?

स. ५६-बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ ब्रह्मात्माओं से क्या कह रहे हैं?

स. ५७-अब इसके उपरान्त बीतककार कौन-सी कथा सुनाने जा रहे हैं, जिसे सावधान होकर सुनने को कहते हैं?

❖ पैगाम ढाँप्या गिरोह ने ❖

स. १- इस प्रकरण की शुरूआत में बीतककार सुन्दरसाथजी से क्या सुनने को कह रहे हैं?

स. २- हम बारह जन कहाँ-किसकी कैद में पड़े थे और वहाँ कैसे रहे थे?

ज. ५२- बादशाह अब मोमिनों की उक्त महिमा की बातें अपनी आँखों से देखेगा। समस्त संसार के लोग पुकार-पुकारकर मोमिनों की महिमा की ही बातें कहेंगे।

ज. ५३- अब कुरान के मुँह पर से परदा उठ गया है। ब्रह्ममुनि सबके लिए कुरान के रहस्यों का स्पष्टीकरण कर रहे हैं।

ज. ५४- बादशाह के दज्जाल स्वरूप अवज्ञाकारी कर्मचारियों ने इमाम मेहदी के मित्र-बारह मोमिनों को कष्ट पहुँचाया।

ज. ५५- मुनकरों ने परमात्मा के प्रेमियों के साथ युद्ध किया। ये बातें छिपी नहीं रहेंगी। इसे सभी लोग जान जायेंगे।

ज. ५६- बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ ब्रह्मात्माओं से कह रहे हैं, "हे ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों! इस विषय में कुरान की थोड़ी-सी साक्षी आप सबके समक्ष प्रस्तुत की गयी है।"

ज. ५७- अब इसके उपरान्त बीतककार अपनी आत्मकथा सुनाने जा रहे हैं। सभी सुन्दरसाथ से वे उस पर विचार कर सावधान होकर सुनने को कहते हैं।

- (प्रकरण ४५, सवाल-जवाब नं. ५७, कुल सं. २४८३+५७=२५४०)।

❖ पैगाम ढाँप्या गिरोह ने ❖

ज. १- इस प्रकरण की शुरूआत में बीतककार सुन्दरसाथजी से कहते हैं, "हे ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों! अब आप अपना वृत्तान्त सुनिये, जो हम आपको सुनाने जा रहे हैं।"

ज. २- हम बारह साथी बादशाह औरंगजेब की नजरकैद में पड़े थे। वहाँ हम एक जगह इकट्ठे रहते थे।

स. ३- उस समय दज्जालवत् वृत्तियों से ग्रस्त लोगों से मोमिनों ने कैसे संघर्ष किया?

स. ४- संकीर्ण विचारों से ग्रस्त शराअ-शासन के अधिकारियों के पास मोमिन क्या लेकर गये थे?

स. ५- शराअ के लोगों ने इमाम मेहदी के अवतरण को क्या कर दिया अथवा क्या होने नहीं दिया?

स. ६- कैसे लोगों को खुदा-परमात्मा दिल से निकाल कर तिरस्कृत कर देते हैं?

स. ७- परमात्मा द्वारा तिरस्कृत लोगों के प्रति अन्य कौन-कौन, क्या करते हैं? क़यामत के समय उनका क्या हाल होगा?

स. ८- इसलाम के कैसे लोगों ने इमाम के पैगाम-खुदा के संदेश को ठुकरा दिया?

स. ९- उक्त गुणवाले लोगों को संसार के सभी लोग क्या करते हैं?

स. १०-हादी-इमाम अथवा खुदा से बेईमानी करनेवालों का अन्त में कैसा हाल होगा?

स. ११-इस विषय में कुरान के किस सिपारे में और क्या लिखा है?

ज. ३- उस समय दज्जालवत् वृत्तियों से ग्रस्त लोगों से मोमिनों ने धर्म के प्रति पूरी तरह समर्पित होकर धाम में उठने के लिए तैयार होकर संघर्ष किया।

ज. ४- संकीर्ण विचारों से ग्रस्त कर्मकाण्ड पर आधारित शराअ-शासन के अधिकारियों के पास मोमिन परमात्मा-खुदा का संदेश लेकर गये थे।

ज. ५- शराअ के लोगों ने इमाम मेहदी के अवतरण को छिपाने का प्रयास किया। उन्हें समाज में प्रकट होने नहीं दिया।

ज. ६- स्वधर्म विमुख होकर धर्म का पतन करनेवाले शैतान लोगों को खुदा-परमात्मा धिक्कार कर दिल से निकाल कर तिरस्कृत कर देते हैं।

ज. ७ - खुदा-परमात्मा द्वारा तिरस्कृत लोगों के प्रति फरिश्ते-ईश्वरी सृष्टि तथा धर्मवीर मोमिन-ब्रह्ममुनि भी लानत-फटकार देते हैं। कयामत के समय ऐसे तिरस्कृत लोगों का बहिष्कार होगा।

ज. ८ - ईस-इसलाम के प्रतिष्ठित, ज्ञानी लोगों ने बिना सोचे-विचार किये इमाम के पैगाम-खुदा के संदेश को ठुकरा दिया और इमाम मेहदी से विमुख हुए।

ज. ९ - उक्त गुणयुक्त लोगों को अथवा संदेश को स्वीकारने से इनकार करनेवाले लोगों को संसार के सभी लोग धिक्कारते हैं।

ज. १०- हादी-इमाम अथवा खुदा से बेईमानी करनेवाले धर्महंता बेईमान लोग अन्त में परस्पर झगड़कर नष्ट हो जायेंगे और जनसाधारण के बीच बेइज्जती के पात्र साबित होंगे।

ज. ११- इस विषय में कुरान के सयकूल नामक दूसरे सिपारे में लिखा है, "दज्जाल लोगों के दिलों पर बैठकर उन्हें यथार्थ दीन इसलाम-निजानन्द धर्ममार्ग से विचलित कर देगा।"

स. १२-शराअ के कट्टर लोग यदि खुदा का संदेश न लौटाते, तो क्या होता था?

स. १३-शराअ के कट्टरपन्थी यदि खुदा का पैगाम न ठुकराते, तो जगत्-संसार के सभी लोगों को किसके दर्शन होते थे? किसने ऐसा होने नहीं दिया?

स. १४-पैगाम को ठुकरानेवाले लोगों के कान और आँखों पर क्या लगा हुआ है?

स. १५-पैगाम को ठुकरानेवाले अवज्ञाकारियों के दिल में कौन बैठा है? अतः वे कैसी बातें सुनने को तैयार नहीं होते?

स. १६-किन्होंने अपना कैसा कर्तव्य पूरा किया?

स. १७-मोमिनों के उक्त साहसपूर्ण कार्य-कर्तव्य पालन की बातें किस-किसने सुनी ?

स. १८-दज्जाल के वशीभूत लोगों ने विचार-विवेक कर क्या नहीं देखा?

स. १९-दज्जाल के वशीभूत हुए अवज्ञाकारियों को मक्का के इमाम ने बेत-अल्लाह (खुदा के घर) से आये परोक्ष सूचनारूपी चार वसीयतनामे क्यों भेजे?

स. २०-इन अवज्ञाकारियों ने किस स्वार्थ के वशीभूत होकर इसलाम की सच्चाइयों को ठुकरा दिया?

ज. १२- शराअ को कट्टरता से माननेवाले लोग यदि इमाम के संदेश को न लौटाते, तो संसार के अन्य सभी लोगों को धर्म का पवित्र मार्ग मिलता था।

ज. १३- शराअ के कट्टरपन्थी अवज्ञाकारी यदि इमाम का पैगाम न ठुकराते, तो जगत् के सभी लोगों को इमाम मेहदी के दर्शन हो जाते। किन्तु थोथे ज्ञान के प्रति अभिमानी लोगों ने यह काम होने नहीं दिया।

ज. १४- पैगाम को ठुकरानेवाले लोगों के कानों को कुरान में बहरे कहे हैं। पुनः इनकी आँखों पर भी मुहर लगी है, ऐसा कहा है।

ज. १५- पैगाम को ठुकरानेवाले अवज्ञाकारियों के दिल में दज्जालरूपी इबलीस बैठा है। अतः इन दिल के अंधों के लिए कितनी भी पुकार की जाय, परन्तु वे सत्य बातें सुनने को तैयार नहीं होते।

ज. १६- ब्रह्मनिष्ठ धर्मवीर मोमिनों-ब्रह्मात्माओं ने बादशाह औरंगजेब के पास संदेश पहुँचाने का अपना कर्तव्य पूरा किया।

ज. १७- मोमिनों के उक्त साहसपूर्ण कार्य-कर्तव्य पालन की बातें पूर्व और पश्चिम अर्थात् पूर्व के हिन्दू और पश्चिम के मुसलिम-दोनों समाज के सभी लोगों ने सुनी।

ज. १८- इतनी पुकारों के बावजूद भी दज्जाल के वशीभूत लोगों ने यह विचार नहीं किया कि, "हमारे पास क्या बचा और हमने क्या खो दिया है?" अर्थात् ये लोग समय पर सावधान नहीं हो सके।

ज. १९- दज्जाल के वशीभूत हुए अवज्ञाकारियों को मक्का के इमाम ने बेत-अल्लाह (खुदा के घर) से आये परोक्ष सूचनारूपी चार-वसीयतनामे इसलिए भेजे, ताकि वे इमाम की पहचान और कयामत के समय होनेवाले फल-प्राप्ति से हाथ न धो बैठें।

ज. २०- इन अवज्ञाकारियों ने सांसारिक स्वार्थ के वशीभूत होकर इसलाम धर्म की सच्चाइयों को ठुकरा दिया।

स. २१-सांसारिक सुख के स्वाद में लिप्त होकर ये अवज्ञाकारी किससे विमुख हो बैठे?

ज. २१- सांसारिक सुख के स्वाद में लिप्त होकर, खुदा का संदेश ठुकराकर →

स. २२-संदेश लेकर आनेवाले कौन थे? अवज्ञाकारियों ने क्या करने के बदले क्या किया?

ज. २२- खुदा-परमात्मा का संदेश लेकर आनेवाले परमात्मा के ही अंग →

स. २३-धर्मयुद्ध के समय इन अवज्ञाकारियों ने बादशाह को कैसे भ्रमित कर दिया?

स. २४-जिस समय धर्मवीर बारह मोमिन कैद में थे, उस समय किसने और किस प्रकार उन्हें सांत्वना दी?

स. २५-आत्मीय धामस्थ साथजी को कौन-सा विवरण ध्यान से सुनने के लिए कहा गया है?

ज. २५- आत्मीय धामस्थ साथजी को हादी श्रीजी स्वरूप द्वारा नजरकैद →

स. २६-महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने पत्र में मोमिनों के कष्ट को निर्मूल करने के लिए कैसी महत्त्वपूर्ण बातें लिखी थीं?

ज. २६- जब बारह ब्रह्मनिष्ठ मोमिन कोतवाल की हवालात में कष्ट सहन कर रहे थे, तब महाप्रभु ने साथियों के कष्ट को निर्मूल करने के लिए पत्र में सांत्वना प्रदान करनेवाली महत्त्वपूर्ण बातें लिख भेजी थीं, जिससे कोई भी मोमिन दुःखी न हों। जैसे-"खुदा-परमात्मा का संदेश लेकर तुम्हें धर्म के कार्य पर इमाम मेहदी ने पुनः हादी →

स. २७-मोमिनों के सिर पर किनकी कृपादृष्टि है?

→ ये अवज्ञाकारी पैगम्बर-परमात्मा का सन्देश लानेवाले महाप्रभु और मोमिनों से विमुख हो बैठे और सांसारिक कार्यों में तन्मय होकर लिप्त रहे।

→ अर्थात् ब्रह्ममुनि थे। बादशाह के अवज्ञाकारी कर्मचारियों ने खुदा का पैगाम स्वीकार कर मोमिनों का आभार प्रकट करने के बदले उन्हें कई प्रकार से कष्ट पहुँचाया।

ज. २३- धर्मयुद्ध के समय इन अवज्ञाकारियों ने रातों-रात रदबदल करके रू-बरू बातें करने के तथ्य को राजनीतिक षड्यन्त्र का नाम देकर बादशाह को भ्रमित कर दिया।

ज. २४- जिस समय धर्मवीर बारह मोमिन बादशाह औरंगजेब की कैद में थे, उस समय हादी सद्गुरु श्री मेहराज ठाकुर ने उन्हें सांत्वना दिलाकर हिम्मत बँधाने के लिए पत्र लिखकर भेजा।

→ में पड़े मोमिनों को भेजे गए पत्र का यथार्थ विवरण ध्यान से श्रवण करने के लिए कहा गया है, जिसका यहाँ थोड़ा-सा परिचय दिया गया है।

→ मुहम्मद साहेब द्वारा कुरान में कथित समय पर-कयामत के समय इमाम मेहदी के प्रकटीकरण के विषय के प्रति सावधान करने के लिए भेजा था। उक्त महत्त्वपूर्ण संदेश को बादशाह के कर्मचारियों ने बादशाह तक पहुँचाए बिना ही ठुकरा दिया। अतः इन अवज्ञाकारी लोगों को हर तरफ से धिक्कार और फिटकार मिली और मिलती रहेगी। ये लोग भविष्य में दुनिया के बीच शर्मिंदा होंगे।इन्हें पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ेगा और नर्क की यातनाएँ भोगनी पड़ेंगी।" आदि.....

ज. २७- प्रिय मोमिनों के सिर पर हादी-सद्गुरु की कृपादृष्टि है।

स. २८-परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी किसके सहायक हैं और सदैव किनके समीप हैं?

स. २९-कौन मूल मिलावे में प्रियतम श्री राजजी की आज्ञा में हैं?

स. ३०-श्री राजजी किन्हें क्षण भर के लिए भी दूर नहीं करते? पुनः कौन, किसकी परात्म के साथ अब भी बातचीत कर रहे हैं?

स. ३१-प्रेम-संवाद के फलस्वरूप इस खेल में कौन, किसकी परीक्षा ले रहे हैं?

स. ३२-इस तरह मोमिनों की परीक्षा लेकर श्री राजजी उन्हें किस लिए तैयार कर रहे हैं?

स. ३३-मोमिनों द्वारा बादशाह को संदेश पहुँचाते समय बादशाह के कर्मचारियों के साथ किए हुए संघर्ष का समाचार कहाँ फैलेगा?

स. ३४-मोमिन कौन हैं? वे किसके अन्दर की, किस विषय की शंकाओं को दूर करने गये हैं?

स. ३५-सुलतान औरंगजेब और उसके सहयोगी कौन-सी दृष्टि के कारण मोमिनों को देखकर भी भूल रहे हैं?

स. ३६-अवज्ञाकारी शराअ के शैतानों को इबलीस को बहिस्त से निष्कासित करने का कौन-सा कारण मालूम नहीं है?

ज. २८- परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी सदैव मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के सहायक बनकर उनके समीप ही रहते हैं।

ज. २९- बारह मोमिन परमधाम के मूल मिलावे में प्रियतम परमात्मा के पास उनकी आज्ञा में हैं।

ज. ३०- श्री राजजी एक क्षण के लिए भी मोमिनों-ब्रह्मात्माओं को अपने से दूर नहीं करते। ब्रह्मात्माओं की परात्म के साथ वे सदैव की तरह ही अब भी बातचीत कर रहे हैं।

ज. ३१- धाम के बीच हुए प्रेम-संवाद के फलस्वरूप मायावी संसार दिखाकर प्रियतम धनी ब्रह्मात्माओं-मोमिनों की परीक्षा ले रहे हैं।

ज. ३२- श्री राजजी मोमिनों की इस तरह परीक्षा लेकर दुःख एवम् कसालों से निकालकर कयामत के दावे के लिए तैयार कर रहे हैं।

ज. ३३- हादी और खुदा-परमात्मा ने कुरान ग्रन्थ में दिए समय के प्रमाण ही बादशाह को कयामत का संदेश पहुँचाते समय उसके कर्मचारियों के साथ मोमिनों ने जो संघर्ष किया, उसका समाचार चौदह लोकों में फैलेगा।

ज. ३४- मोमिन इमाम के लशकर हैं। वे शराअ के काज़ियों के अन्दर की कयामत के निशान और इमाम के जाहिर होने के विषय की शंकाओं को दूर करने गये हैं।

ज. ३५- सुलतान औरंगजेब और उसके सहयोगी बाह्य अर्थात् चमड़ी की दृष्टि के कारण मोमिनों को हिन्दू भेष एवम् मानव तन में देखकर भूल रहे हैं।

ज. ३६- अवज्ञाकारी शराअ के शैतानों को यह बात मालूम नहीं है कि इबलीस ने क्या भूल की थी ? उन्हें यह बात याद ही नहीं है कि ऊपरी दृष्टि के कारण इबलीस ने आदम को नमन नहीं किया था, जिसके फलस्वरूप उसे बहिश्त से निष्कासित कर दिया गया था।

स. ३७-इबलीस ने क्या देखा था? वास्तव में उसे क्या देखना चाहिए था?

ज. ३७- इबलीस ने ऊपरी दृष्टि के परवश होकर आदम के स्वरूप को →

स. ३८-जिस प्रकार इबलीस ने आदम को न पहचानने की भूल की, उसी तरह की भूल यहाँ किसने की?

ज. ३८- जिस प्रकार ऊपरी दृष्टि के कारण इबलीस ने आदम को न →

स. ३९-शराअ के शैतानों की उक्त भूल के फलस्वरूप अब आगे उनकी क्या दशा होगी?

ज. ३९- शराअ के शैतान अपनी भूल के कारण असावधान रहे। आदम →

स. ४०-इन अवज्ञाकारियों के मन पर बादशाह बनकर बैठा दज्जालरूपी शैतान कौन है?

स. ४१-किसकी प्रेरणा के परवश होकर किन्होंने परमात्मा का पैगाम लौटा दिया?

स. ४२-किसकी, किससे अनादि काल से शत्रुता है? कौन, किसे बहकाता है?

स. ४३-जानते-समझते हुए भी यदि कोई अपना अहित कर बैठता है, तो यह काम वास्तव में किसका है?

स. ४४-उस शैतान ने कैसे लोगों के अन्दर से धर्म के प्रति के विश्वास को नष्ट कर दिया?

स. ४५-लौह महफूज में क्या लिखा हुआ है?

→ देखा। परन्तु आदम के अन्दर हक-परमात्मा ने रूह फूँककर आत्मा को प्रविष्ट किया था, जिसे इबलीस ने अनदेखा किया था। उसे वास्तव में खुदा द्वारा फूँकी हुई रूह-आत्मा को देखना चाहिए था।

→ पहचानने की भूल की, उसी प्रकार यहाँ बादशाह और उसके कर्मचारियों ने खुदा-इमाम और मोमिनों के शरीर को देखा। यही भूल हुई।

→ के मानव रूप पर सन्देह करने के कारण जिस प्रकार इबलीस धिक्कारा गया, उसी प्रकार आगे जाकर सारी दुनिया इन अवज्ञाकारियों को धिक्कार का पात्र समझकर धिक्कारेगी।

ज. ४०- इन अवज्ञाकारियों के मन पर भी वह इबलीस-दज्जालरूपी शैतान ही बादशाह बनकर बैठा है।

ज. ४१- शराअ के कट्टरपन्थी बादशाह के कर्मचारियों ने इबलीस की प्रेरणा से ही परमात्मा का पैगाम लौटा दिया।

ज. ४२- इबलीस की आदम से अनादि काल से शत्रुता है। इबलीस सदैव ही आदम को बहकाते रहता है। यहाँ भी काजियों के मन को उसी ने बहका दिया।

ज. ४३- जानते-समझते हुए कोई अपना अहित नहीं चाहता। यदि ऐसे में कोई अपना अहित कर डालता है, तो यह काम मन पर बैठे शैतान इबलीस का है।

ज. ४४- मन में बैठे इबलीसरूपी शैतान ने धर्म के प्रति समर्पित होनेवाले धर्मप्रेमी वीर लोगों के अन्दर से धर्म के प्रति के विश्वास को नष्ट कर दिया।

ज. ४५- लौह महफूज में लिखा है कि इबलीस ने आदम को नमन नहीं किया। उसने अपने आपको आदम से भी बड़ा फरिश्ता माना।

स. ४६-उसी इबलीस ने धरती पर किस प्रकार से खुदा को नमन किया था?

स. ४७-खुदा की आज्ञा ठुकराने पर इबलीस को क्या किया गया?

स. ४८-यहाँ क्या विचार करने को कहा है?

ज. ४८- यहाँ विचार-विवेक लगाकर यह निर्णय करने को कहा है कि कौन आदम है और कौन इबलीस है? श्री प्राणनाथजी आदम हैं →

स. ४९-इबलीस ने किस धरती पर नमन किया था? "दो अंगुल जमीन भी शेष न बचने" का तात्पर्य क्या है?

ज. ४९- इस सृष्टि में *"जलं विष्णुः थलं विष्णुः"* होकर सृष्टि विस्तार →

स. ५०-मन में क्या विचार करके देखना चाहिए?

स. ५१-शराअ के शैतान-इबलीस की औलादों ने भी क्या नहीं किया? पुनः उन्होंने किसके पैगाम को ठुकरा दिया?

ज. ५१- शराअ के अवज्ञाकारी शैतानों और बादशाह-इबलीस की औलादों →

स. ५२-बीतककार श्री लालदासजी महाराज के अनुसार यह किस-किसके बीच का कैसा वृत्तान्त है?

स. ५३-किस समय शराअ के शैतानों का मुँह काला रहेगा? सबके सामने उनकी क्या दशा होगी?

ज. ५३- कयामत के दौर में शराअ के शैतानों का मुँह काला रहेगा। सबके →

ज. ४६- अन्यथा पहले तो उसी इबलीस (अजाजील) ने संसार की सम्पूर्ण धरती पर खुदा को चेतन रूप में व्यापक होकर दण्डवत् नमन किया था। जरा-सी भी जमीन शेष नहीं छोड़ी थी।

ज. ४७- आदम को सेजदा-नमन करने के बदले खुदा की आज्ञा ठुकराने के कारण इबलीस के आज तक के सारे सेजदे रद्द कर दिए गए और वह तिरस्कार का पात्र बना।

→ या शराअ के शैतान लोग हैं ? इन दोनों में से कौन इबलीस स्वरूप हैं ? इमाम स्वरूप-आदम का पैगाम ठुकराना ही आदम को नमन नहीं करना है।

→ की आज्ञा का पालन करना ही इबलीस का नमन करना है। *'दो अंगुल जमीन भी शेष न बचने'* का तात्पर्य सृष्टि में चेतन रूप में व्यापक होना है।

ज. ५०- मन में यह विचार करके देखना चाहिए कि आज इस युग में खुदाई पैगाम लानेवाले इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी स्वरूप के अतिरिक्त भी क्या कोई आदम हो सकता है?

→ ने भी आदम को नमन नहीं किया। पैगाम को ठुकराना ही इमाम मेहदीरूपी आदम को नमन नहीं करना है। उन्होंने अपने ही धर्मग्रन्थ के हादी-खुदा की ओर से आए हुए पैगाम को ठुकराकर खुदा की आज्ञा का उल्लंघन किया।

ज. ५२- बीतककार श्री लालदासजी महाराज के अनुसार यह शराअ की कट्टरता और खुदा की इमामत के बीच हुए संघर्ष का वृत्तान्त है।

→ सामने उन्हें लज्जित होना पड़ेगा। सारी दुनिया-आम जनता की ओर से भी वे धिक्कारे जायेंगे।

- (प्रकरण ४६, सवाल-जवाब नं. ५३, कुल सं. २५४०+५३=२५९३)।

❖ बड़ी पत्री ❖

स. १- शरीअत अर्थात् कर्मकाण्ड की कट्टरता पर आधारित शासन कैसा था? वे लोग कैसे धर्मार्थी थे?

स. २- ब्रह्मनिष्ठ धर्मवीर मोमिन ऐसी परिस्थिति में शासन संचालक के पास क्या साबित करने गये थे?

स. ३- धर्मराह का संदेश पहुँचाने गए धर्मवीर मोमिनों-ब्रह्मसृष्टियों की क्या दशा हुई?

स. ४- अवज्ञाकारियों के उलटे कर्तव्य का समाचार सुनकर सद्गुरु-श्रीजी स्वरूप ने क्या किया? क्यों?

ज. ४- मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के प्रति शंका-उपशंका करने जैसी अनुचित →

स. ५- उस समय सद्गुरु श्री प्राणनाथजी ने मोमिनों को जो पत्री लिखी, उस पत्री में कैसी-कैसी बातें थीं?

ज. ५- मोमिनों का दुःखद समाचार सुनने के पश्चात् हादी श्रीजी स्वरूप →

स. ६- उक्त पत्री के पत्रवाहक कौन-कौन थे? अन्य मोमिन कहाँ पड़े थे?

ज. ६- उक्त प्रकार के सान्त्वनादि पत्रों को श्रीजी के पास से मोमिनों के →

स. ७- सत्य धर्म के लिए संघर्ष करने जाने का प्रतिफल क्या हुआ?

ज. ७- हादी की आज्ञानुसार तथा धर्मग्रन्थानुसार खुदा की तरफ से →

❖ बड़ी पत्री ❖

ज. १- सत्रहवीं शताब्दी के शरीअत अर्थात् कर्मकाण्ड की कट्टरता पर आधारित मुगल शासन से जनता त्रस्त थी और त्रस्त जनता के त्राहि-त्राहि की पुकार चारों ओर गुञ्जायमान् थी।

ज. २- ब्रह्मनिष्ठ धर्मवीर मोमिन ऐसी परिस्थिति में शासन संचालक के पास धर्मग्रन्थ से प्रमाणित हादी का भविष्य-क़यामत के समय को प्रमाणित करने के लिए गये थे।

ज. ३- उन आततायियों के पास संदेश पहुँचाने गये धर्मवीर मोमिनों-ब्रह्मसृष्टियों को अनेक प्रकार के कष्ट एवम् कसौटियों का सामना करना पड़ा।

→ व्यवहार-दृष्टि रखने के कारण अवज्ञाकारियों की अज्ञानता पर अफसोस जताते हुए अपने मोमिनों को सान्त्वना देने के लिए सद्गुरु-श्रीजी स्वरूप ने मोमिनों को पत्र लिखा।

→ ने कैद में पड़े ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को जो पत्री लिखकर सान्त्वना दी थी, उस पत्री में सभी प्रकार की शिक्षा, आदेश और मार्गदर्शनयुक्त ज्ञान से भरी बातें थीं। वह पत्री ध्यानपूर्वक जागृत मन से श्रवण करने योग्य है।

→ पास एवम् मोमिनों के पास से श्रीजी के पास पहुँचाने के लिए पत्रवाहक के रूप में कान्हजी भाई और शेख बदल भाई कार्य कर रहे थे। अन्य दस मोमिन बादशाह की आज्ञा से कर्मचारियों की कैद में थे।

→ आए क़यामत के संदेश को शराअ के कट्टरपंथियों तक पहुँचाने गए ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को धर्म-संघर्ष में सफलता मिलने के बदले उलटे विपक्षी दल को सफलता मिली।

स. ८- अवज्ञाकारियों की उलटी नीयत के कारण क्या हुआ?

स. ९- उक्त असोच्य घटना घटने पर श्रीजी स्वरूप को पत्र द्वारा क्या करना पड़ा?

ज. ९- उक्त असोच्य घटना घटने पर मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के निर्मल →

स. १०-उक्त पत्री किसने, किसे, कहाँ से और कैसी अवस्था में लिखी थी?

ज. १०- उक्त पत्री महामति श्री प्राणनाथजी ने अपने अभिन्न अंग →

स. ११-महामति श्री प्राणनाथजी ने पत्री की शुरूआत में मोमिनों को कैसे शब्दों द्वारा सम्बोधित कर लिखा था?

ज. ११- महामति श्री प्राणनाथजी ने पत्री की शुरूआत में ब्रह्मनिष्ठ धर्मवीर →

स. १२-मोमिन धामधनी श्रीजी स्वरूप के प्रेम में क्या थे? पत्री में उन्हें श्रीजी स्वरूप ने कौन-कौनसे गुण का प्रतीक कहा?

स. १३-वे बारह मोमिन किस जमात को तथा किन विषयों का मार्गदर्शन करनेवाले हैं?

स. १४-श्रीजी स्वरूप ने बारह मोमिनों को निःसंदेह ही किसके निकट अतः चरणों में बैठा हुआ बताया?

ज. १४- धर्मवीर ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को (जो धर्म पर समर्पित होकर कष्ट →

स. १५-किसने विराट के प्राणियों-जातियों को संधि-संधि से बाँध रखा है? उसे किसने, किस तरह ठुकरा दिया?

ज. १५- तीनों मर्यादाओं ने संसार के प्राणियों-जातियों के अंग-प्रत्यंग →

ज. ८- शराअपंथी अवज्ञाकारियों की उलटी नीयत के कारण निर्मल-पवित्र परमार्थी दिलवाले मोमिनों के दिल को आघात लगा।

→ परमार्थी दिल पर जो जख्म हुआ था, उस पर हादी श्रीजी स्वरूप को पत्र के माध्यम से सदुपदेशरूपी मलहम-पट्टी करनी पड़ी और उन्हें पुनः उत्साह तथा हिम्मत बँधाना पड़ा।

→ ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को कामा पहाड़ी से उस अवस्था में लिखी थी, जब ब्रह्मनिष्ठ मोमिन अन्धे बादशाह और उनके अवज्ञाकारी कर्मचारियों की सख्त कैद में कष्ट सहन कर रहे थे।

→ मोमिनों को *"मेरे प्राणों के प्रियतम" "मेरे सिरदार साथियों" "मेरी आत्मा के आधार" "मेरे जीव के जीवनजी"* और *"मेरे प्राणों के स्वरूप"*- ऐसे प्रेम-रस से ओतप्रोत धैर्यदायी एवम् सुन्दर शब्दों द्वारा सम्बोधित कर लिखा था।

ज. १२- मोमिन धामधनी श्रीजी स्वरूप के प्रेम में आकण्ठ डूबे हुये थे। पत्री में हादी श्रीजी स्वरूप ने अपने अभिन्न अंग स्वरूप मोमिनों को धैर्य एवम् शौर्य का ज्वलन्त प्रतीक कहा।

ज. १३- वे बारह मोमिन समस्त ब्रह्मात्माओं को स्वधर्म मार्ग पर चलने के लिए हिम्मत, उत्साह, विश्वास एवम् दिशा का मार्गदर्शन करनेवाले हैं।

→ सहन कर रहे थे) श्रीजी स्वरूप ने निःसंदेह ही प्रभु-श्री राजजी के निकट अतः उनके चरणों में निरन्तर रूप से वर्तमान में भी बैठे हुए हैं, ऐसा बताया।

→ को संधि-संधि "जो बंध हता संसार" रूप में बाँध रखा है। जिससे कोई भी निकल नहीं पाते, उन तीनों मर्यादाओं को बारह मोमिनों ने पहचानकर ठुकरा दिया।

स. १६-उक्त मर्यादाओं का सिर किसने, किससे तोड़ दिया? किसकी पहचान कराई?

ज. १६- उक्त दज्जालरूपी मायावी बन्धनों-मर्यादाओं का सिर ब्रह्मनिष्ठ →

स. १७-इस शुभ अवसर पर धर्मराह पर कदम भरकर मोमिनों ने किसे गौरवान्वित किया?

ज. १७- इस शुभ अवसर पर मोमिनों ने आत्मीय धर्ममार्ग के आगे मायावी →

स. १८-निःसन्देह ही मोमिनों-ब्रह्मात्माओं ने धर्म-रक्षार्थ क्या किया?

स. १९-बारह मोमिन किस प्रकार से सम्मान और शोभा के योग्य तथा शिरोमणि हैं?

स. २०-मायावी गुणयुक्त धरती-वैराट के बीच में भी मोमिनों ने आगे बढ़कर क्या किया?

स. २१-समस्त जनों के बीच में लक्ष्मण सेठ-श्री लालदासजी के साथ अन्य चार जन कौन-कौन हैं?

स. २२-चंचलदास भाई से लेकर कौन-कौन दस जन बादशाह की नजर में थे?

ज. २२- चंचलदास भाई से लेकर दस जन जो बादशाह की नजर में थे, वे →

स. २३-उक्त धर्मवीरों के अतिरिक्त अन्य कौन-कौन वीरयोद्धा धर्मयुद्ध में शामिल थे?

स. २४-उक्त चार अन्य वीरयोद्धा किनकी देख-रेख रखनेवाले तथा किनके निकट में रहते हैं?

→ बारह मोमिनों ने तारतम ज्ञान की समझ द्वारा तोड़ दिया। आत्मा-परमात्मा के मिलन में ये मर्यादा बाधक रूप हैं, इस बात की पहचान कराई।

→ जात-पात, वर्णादि भेदों की वास्तविकता को समझकर धर्मराह पर कदम भरकर ब्रह्मात्माओं के जमात के नाम को गौरवान्वित किया। आगे चलकर उनके धर्ममार्ग का अनुकरण अन्य सभी लोग करेंगे।

ज. १८- इस संसार के बारह मोमिनों ने निःसन्देह ही धर्म-रक्षार्थ अपना आत्मदान अथवा अपना जीवन समर्पण किया।

ज. १९- उक्त प्रकार के साहसपूर्ण कार्य में अग्रगण्य भूमिका निभाने के कारण बारह धर्मवीर मोमिन सर्व सम्मान तथा शोभा के योग्य हैं एवम् ब्रह्मात्मा-जमात के शिरोमणि हैं।

ज. २०- मायावी गुणयुक्त भोगमयी धरती के बीच में भी मोमिनों ने निरन्तर आगे बढ़कर धर्मकार्य के मार्ग को प्रज्वलित किया।

ज. २१- लक्ष्मण सेठ श्री लालदासजी के साथ समस्त सुन्दरसाथ के बीच अन्य चार भाइयों में भीम भाई, नागजी भाई, चिन्तामणि भाई और चौथे भाई हैं-श्री दयाराम भाई।

→ निम्नलिखित हैं। जैसे-लक्ष्मण भाई, दयाराम भाई, नागजी भाई, गंगाराम भाई, खिमाई भाई, चिन्तामणि भाई, बनारसी भाई, चंचलदास भाई, सोमजी भाई और भीम भाई।

ज. २३- उपरोक्त बारह धर्मवीरों के अतिरिक्त इस धर्मयुद्ध में अनन्तराम भाई, लालबाई, श्यामबाई और रामराय भाई भी शामिल थे।

ज. २४- उक्त चार अन्य वीरयोद्धा बादशाह की नजरकैद में रहनेवाले मोमिनों की देख-रेख रखनेवाले तथा उनके निकट इस छोर पर रहते हैं।

स. २५-महामति श्री प्राणनाथजी कामा पहाड़ी से दिल्ली पत्र द्वारा किन-किन को अपनी शुभकामनाएँ भेज रहे हैं?

स. २६-पत्र में किन्हें श्री राजजी महाराज के चरण तले, पुनः कैसे रहने के लिए कहा है?

स. २७-"पूर्णब्रह्म श्री राजजी महाराज की आप लोगों के प्रति अटूट कृपादृष्टि है।"- ऐसा किसने, किसे कहा है?

स. २८-पत्र में किन्हें हमेशा किनके अनुकूल, निश्चिन्त और प्रसन्नचित्त रहने को कहा है?

स. २९-पत्र के माध्यम से किसने, किसे क़यामत के समय घटित होनेवाली घटनाओं की नींव रूप कहते हुए सान्त्वना एवम् शुभकामनाएँ भेजी हैं?

स. ३०-पत्र में किसकी वासना, किसे और क्या लिख रही है?

स. ३१-श्री इन्द्रावती की वासना मोमिनों से क्या स्वीकार करने को कह रही हैं तथा उन्हें किनकी छत्र-छाया में निरन्तर रहने की सीख दे रही हैं?

स. ३२-किनकी कृपा से आगे सभी सुन्दरसाथ पुनः एक स्थान पर एकत्र होंगे?

स. ३३-जब समस्त साथ पुनः एक स्थान पर एकत्रित होंगे, तब सब सुन्दरसाथ क्या अनुभव करेंगे?

ज. २५- उक्त संघर्ष में शामिल रहनेवाले और धर्मयुद्ध में भाग लेने की इच्छा रखनेवाले समस्त साथियों के प्रति महामति श्री प्राणनाथजी कामा पहाड़ी से दिल्ली पत्र द्वारा अपनी शुभकामनाएँ भेज रहे हैं।

ज. २६- पत्र में उक्त समस्त साथ को परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी महाराज के चरण तले उनकी शरण में, पुनः सदैव आरोग्य एवम् आनन्द-मंगल में रहने के लिए कहा है।

ज. २७- *"पूर्णब्रह्म श्री राजजी महाराज की आप लोगों के प्रति अटूट कृपादृष्टि है।"*- ऐसा श्रीजी साहेबजी ने बारह धर्मवीर मोमिनों से कहा है।

ज. २८- पत्र में बारह मोमिनों को हमेशा एवम् सदैव श्री राजजी के अनुकूल, निश्चिन्त और प्रसन्नचित्त रहने को कहा है।

ज. २९- श्री प्राणनाथजी ने कामा पहाड़ी से पत्र के माध्यम से बारह धर्मवीर मोमिनों को क़यामत के समय घटित होनेवाली प्रत्येक घटनाओं की नींव रूप कहकर सम्बोधित करते हुए सान्त्वनापूर्ण शुभकामनाएँ भेजी हैं।

ज. ३०- पत्र में श्री इन्द्रावती की वासना बारह मोमिनों सहित अन्य समस्त ब्रह्मात्माओं को कोटान-कोट प्रणाम लिख रही हैं।

ज. ३१- श्री इन्द्रावती की वासना-श्री मेहराज समस्त मोमिनों से अपना अभिवादन-प्रणाम स्वीकार करने को कह रही हैं तथा उन्हें सदैव श्री राजजी की छत्र-छाया में रहने की सीख दे रही हैं।

ज. ३२- परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की कृपा से आगे शीघ्र ही समस्त साथ पुनः एक स्थान पर एकत्र होंगे।

ज. ३३- जब समस्त साथ पुनः एक स्थान पर एकत्रित होंगे, तब सभी सुन्दरसाथ अत्यन्त आनन्द और संतोष का अनुभव करेंगे कि श्री राजजी ने कृपा-दया कर उनके हाथ थाम लिये हैं।

स. ३४-इस पत्र के जवाब में कौन और किनके आनन्द-मंगल के आकांक्षी हैं?

स. ३५-दिल्ली में नजरबन्द मोमिनों की तरफ का समाचार श्रीजी को कामा पहाड़ी में किनके द्वारा विदित हुआ, ऐसा पत्री में लिखा है?

स. ३६-शेख बदल भाई ने श्रीजी स्वरूप को मोमिनों की कब-से-कब तक की खबर सुनायी?

स. ३७-श्रीजी स्वरूप ने किन बातों को अवगत किया? मोमिनों और दज्जालों के बीच होनेवाले इस युद्ध के विषय में किसने, कब और कहाँ कहा था?

ज. ३७- शेख बदल भाई द्वारा लाए समाचार के माध्यम से मोमिनों की →

स. ३८-कुरान में कयामत का संघर्ष समाप्त होने के पश्चात् क्या होने को कहा है?

स. ३९-कुरान और हदीसों में क़यामत के समय मोमिनों-ब्रह्मात्माओं द्वारा क्या होने को लिखा है?

ज. ३९- क़यामत के समय अवज्ञाकारी लोग मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के सच्चे →

स. ४०-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को कौन-सी वास्तविक बात नहीं भूलने के लिए समझा रहे हैं?

ज. ४०- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को एक और बात की वास्तविकता नहीं →

स. ४१-पुनः माया के गुण के कारण हम क्या सोचने लगते हैं?

ज. ३४- इस पत्र के जवाब में श्रीजी स्वरूप सर्व मोमिनों के सुख-सन्तोष और आनन्द-मंगल के आकांक्षी हैं।

ज. ३५- दिल्ली में बादशाह औरंगजेब की कैद में नजरबन्द मोमिनों की तरफ का समाचार कामा पहाड़ी में श्रीजी स्वरूप को शेख बदल भाई के माध्यम से विदित हुआ, ऐसा स्वयं श्रीजी साहेबजी ने पत्री में लिखा है।

ज. ३६- शेख बदल भाई ने कामा पहाड़ी में श्रीजी स्वरूप को मोमिनों की आरम्भ से लेकर जिस दिन तक वे मोमिनों के साथ थे, तब तक की सम्पूर्ण खबर सुनायी।

→ बातें सुनकर शराअ के शैतान काज़ियों ने मोमिनों पर क्या-क्या जुल्म किया, उन सभी बातों को श्रीजी स्वरूप ने अवगत किया। मोमिनों और धर्मविरोधी दज्जालों के बीच होनेवाले इस युद्ध के विषय में रसूल मुहम्मद साहेब ने हजार वर्ष पहले कुरान में कहा था।

ज. ३८- रसूल साहेब ने धर्मग्रन्थ कुरान में ऐसा लिखा है कि क़यामत का संघर्ष समाप्त होने के बाद मोमिनों का कथन सबके ऊपर माना जायेगा। पुनः हदीसों के वचन भी यही कहते हैं।

→ धर्म को दबाने का प्रयास करेंगे। अपने सत्य धर्म की स्थापना के लिए मोमिन संघर्ष करेंगे और अंत में मोमिन सच्चे धर्म की स्थापना करेंगे, ऐसा रसूल मुहम्मद साहेब ने कुरान-हदीसों में लिखा है।

→ भूलने के लिए समझा रहे हैं कि 'जागनी का कार्य जल्दी से क्यों नहीं होता?'-ऐसा हम लोग माया से अत्यन्त दुःखी और बेजार होकर सोचते हैं।

ज. ४१- हम लोग संसार में माया के गुण के कारण यह सोचने लगते हैं कि सब एक साथ मिलकर धर्म-मार्ग पर चलने को तैयार क्यों नहीं हो जाते?

स. ४२-परन्तु श्रीजी स्वरूप मोमिनों को किस कार्य के विषय में "आप इस कार्य को बहुत बड़ा जानना" इस तरह से समझा रहे हैं?

स. ४३-श्रीजी स्वरूप बारह मोमिनों को उनके वीरतापूर्ण कार्य के प्रति कैसे सावचेत कर रहे हैं?

ज. ४३- श्रीजी स्वरूप बारह मोमिनों को उनके वीरतापूर्ण कार्य के प्रति →

स. ४४-उक्त शोभायोग्य कार्य कराकर बारह मोमिनों को किसने शोभा प्रदान की है? क्या उनकी आज्ञा बिना ऐसा महान् कार्य हो सकता था?

स. ४५-पुनः कौन-सा महत्त्वपूर्ण कार्य हो गया, जिसका महत्त्व मोमिनों को भी अभी अनुभव नहीं हो रहा है?

ज. ४५- शराअ के कट्टरपंथी काज़ियों और बादशाह के आगे अपना →

स. ४६-"आप सब इस कार्य को साधारण ही समझ रहे हो!"- ऐसा कौन, किससे कह रहे हैं? पुनः किस कार्य विषय में?

स. ४७-किसके प्रयासों ने संसार में ब्रह्मात्माओं के प्रकटीकरण का प्रमाण दे दिया है?

स. ४८-आज तक इस संसार में लोग किसके प्रकटीकरण का दावा एवम् नाम लेने से भी डरते थे?

स. ४९-लोग क्यों और किसका नामोच्चारण करने से अपनी गर्दन के उड़ जाने के विषय में डरते थे?

ज. ४९- शराअ के कट्टर बादशाह औरंगजेब के कठिन शासन के कारण →

ज. ४२- परन्तु श्रीजी स्वरूप मोमिनों को इस जागनी के कार्य के विषय में समझा रहे हैं कि *"आप इस कार्य को बहुत बड़ा जानना* क्योंकि जिस दिन जैसा होगा, वह सब ज्यों का त्यों पहले ही लिखा हुआ है। जिसके लिए जैसा लिखा है, उसे वैसी ही पहचान होगी।"

→ सावचेत करते हुए कह रहे हैं, "आप बारह साथियों ने बहुत शूर-वीरता से कार्य किया है। किन्तु यह कभी न सोचना कि यह कार्य आपने किया है।"

ज. ४४- उक्त शोभायोग्य कार्य को करने का बल-हिम्मत देकर परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने ही इस कार्य की शोभा बारह मोमिनों को दी है। उनकी आज्ञा के बिना यह महान् कार्य कदापि नहीं हो सकता था ।

→ सिद्धान्त स्थापित करने जैसा एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य हो गया, जिसका महत्त्व अभी मोमिन (इमाम के लशकर में शामिल) आत्माओं को भी नहीं हो रहा है।

ज. ४६- "आप सब इमाम को प्रकट करने पुनः कयामत की घड़ी जाहिर करने जैसे महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ कार्यों को साधारण ही समझ रहे हो।" -ऐसा श्रीजी साहेबजी बारह धर्मवीर मोमिनों से कह रहे हैं।

ज. ४७- बारह शूरवीर मोमिनों के प्रयासों ने संसार में मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के प्रकटीकरण का प्रमाण दे दिया है।

ज. ४८- आज तक इस संसार में लोग कयामत के प्रकटीकरण का दावा एवम् इमाम मेहदी का नाम लेने से भी डरते और काँपते थे।

→ लोग क़यामत और इमाम मेहदी का नामोच्चारण करते भय से काँपते थे कि इन विषयों की चर्चा करने से कोई उनकी गर्दन ही न काट दे।

स. ५०-ये बारह मोमिन छिप-छिप कर घूमते हुए संदेश पहुँचाने का कार्य क्यों करते थे?

ज. ५०- औरंगजेब के कठोर शराअ के शासन में हिन्दुओं द्वारा इमाम अथवा →

स. ५१-अब कौन और कहाँ प्रकट हो चुके हैं? किस नाम से किनकी सेना के प्रकट होने का शोर संसार को सुनाई दे रहा है?

स. ५२-किनके बनकर, कौन, किनके अन्दर प्रविष्ट हो चुके हैं?

स. ५३-किनके गढ़-मसजिद में किसका झण्डा गाड़ा जा चुका है?

स. ५४-किसने अपने ब्रह्मसृष्टियों के समूह के अवतरण की बातें कहाँ प्रकट कर दीं?

स. ५५-किसके तेज का प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ते-बढ़ते जायेगा? पुनः कहाँ तक पहुँचेगा?

ज. ५५- दिल्ली में सुलतान तक इमाम का पैगाम पहुँचाने के संघर्ष में डटे →

स. ५६-अब ब्रह्मात्मा समूह के अवतरण की बातें कहाँ-कहाँ और किन-किन के जानने में आयेंगी?

स. ५७-पुनः परमात्मा-खुदा की राह में बाधा उत्पन्न करनेवाले दज्जालों का क्या होगा?

→ कुरान विषय नाम लेना तथा कुरान पढ़ना उनकी कट्टरता के खिलाफ था। यसर्थ ये बारह मोमिन छिप-छिपकर घूमते हुए संदेश पहुँचाने का कार्य करते थे।

ज. ५१- इमाम के लशकर मोमिन अब प्रकट हो चुके हैं। मुहम्मद इमाम साहेब-महाप्रभु श्री प्राणनाथजी की सेना के नाम से इमाम मेहदी की सेना-ब्रह्ममुनियों के प्रकट होने का शोर संसार को सुनाई दे रहा है।

ज. ५२- उन काज़ियों के बनकर मोमिन उनके दिल के अन्दर, उनके गढ़ में प्रविष्ट हो चुके हैं।

ज. ५३- बादशाह और काज़ियों की राजधानी गढ़ अर्थात् मसजिद में इमाम मेहदी का झण्डा गाड़ा जा चुका है। मोमिन उनके घर के अन्दर बैठे हुए हैं।

ज. ५४- बारह धर्मवीर मोमिनों ने राजधानी दिल्ली में सुलतान बादशाह के आगे अपने ब्रह्मसृष्टियों-मोमिनों के समूह के अवतरण की बातें प्रकट कर दीं।

→ सर्व मोमिनों के तेज का प्रभाव दिन-प्रतिदिन, दिन दूना रात चौगुना बढ़ता जायेगा। उनके ज्ञान का प्रकाश बढ़ते-बढ़ते सम्पूर्ण संसार के लोगों तक पहुँच जायेगा।

ज. ५६- अब ब्रह्मात्मा समूह के अवतरण की बातें गाँव-गाँव, शहर-शहर में, पुनः हिन्दू-मुसलमानों के विभिन्न पीठ, स्थानों, तीर्थों तथा राजतंत्र के गढ़ों तक जानने में आयेंगी।

ज. ५७- पुनः परमात्मा-खुदा की राह को ढाँपनेवाले, उनकी राह में बाधा उत्पन्न करनेवाले आसुरी प्रवृत्तियुक्त दज्जालों का बल दिन-प्रतिदिन, क्षण-प्रतिक्षण घटता-घटता जायेगा।

स. ५८-कैसे लोगों की धूमिल दृष्टि किस तरह अन्त में एकदम नष्ट हो जाएगी?

स. ५९-आखर के समय में समस्त संसार प्रत्यक्ष अपनी आँखों से क्या देख पायेगा?

स. ६०-मायावी कुवृत्तिवाले दज्जालों की संकुचित दृष्टि क्या देखनेवाली होती है?

स. ६१-किसे परमात्मा श्री राजजी ने आंतरिक दृष्टि प्रदान की है?

स. ६२-किसमें अथवा किसके लिए संसार के बीच क्या उतर आया है?

स. ६३-किसके द्वारा कही गयी वाणी अथवा किनका ज्ञान अन्य ज्ञान के आगे अत्यंत उत्तम अथवा श्रेष्ठ है?

स. ६४-"आप लोग सत्य धर्म की स्थापना और आत्म-जागृति के लिए संघर्ष करते रहना। अन्त में जीत आप बारह मोमिनों की ही होगी।"-ऐसा आदेश किसने और किसको दिया है?

स. ६५-किसने, किसे और किसके माध्यम से अनन्त लोचन दिये हैं? क्यों?

ज. ६५- प्यारे बारह मोमिनों को श्री राजजी ने अपनी दया-कृपा के माध्यम →

स. ६६-दज्जाल को काना क्यों कहा है? उसे किस ओर की जानकारी है और किस ओर की नहीं?

ज. ६६- दज्जाल को काना इसलिए कहा गया है क्योंकि दज्जाल की →

ज. ५८- माया को महत्त्व देनेवाले उक्त दज्जालों की संसारी धूमिल दृष्टि दूर होते-होते अन्त में एकदम नष्ट हो जायेगी।

ज. ५९- आखर के समय में समस्त संसार प्रत्यक्ष अपनी नज़रों से जागनी लीला (आत्म-जागृति) के महत्त्व को देख पायेगा।

ज. ६०- मायावी कुवृत्तिवाले दज्जालों की संकुचित दृष्टि बाह्य भेदभाव देखनेवाली तुच्छ होती है।

ज. ६१- धर्म पर न्योछावर होकर अपनी जमात का महत्त्व बढ़ानेवाले बारह मर्द-शूरवीर मोमिनों को परमात्मा श्री राजजी ने आंतरिक दृष्टि सूझ-बूझ प्रदान की है, जिसके द्वारा उन्हें आत्मीय समझ प्राप्त है।

ज. ६२- उक्त बारह धर्मवीरों के लिए ही स्वयं उनके अन्दर अक्षर की जागृत बुद्धि का फरिश्ता-असराफील अवतरित हो आया है।

ज. ६३- अक्षर की जागृत बुद्धि द्वारा कही गई वाणी अथवा कहलाया हुआ ज्ञान संसार के समस्त ज्ञान के आगे अति उत्तम अथवा श्रेष्ठ है।

ज. ६४- *"आप लोग सत्य धर्म की स्थापना और आत्म-जागृति के लिए संघर्ष करते रहना। अन्त में जीत आप बारह मोमिनों की ही होगी।"*- यह आदेश श्रीजी साहेबजी ने कामा पहाड़ी से चिट्ठी द्वारा दिल्ली नजरकैद में स्थित मोमिनों को सलाह-सूचना के रूप में सचेत करते हुए दिया है।

→ से विवेकमय तारतम ज्ञानरूपी अनन्त लोचन प्रदान किये हैं, जिससे कि वे विशाल मन-दिल और दूरदृष्टि रखकर कार्य करते रहें।

→ एक ही आँख होती है, जो सदा सांसारिक विषय भोग की तरफ ही देखती है। उन दज्जाल वृत्तिवालों में ब्रह्मज्ञान की जानकारी नहीं होती। अन्त में उन दज्जालों का नाश हो जाता है।

स. ६७-किसने और किससे अच्छी तरह संघर्ष किया है?

स. ६८-दज्जालों के साथ हुए संघर्ष में उत्तीर्ण होने के पीछे किसकी आज्ञा है?

स. ६९-दज्जालों की लड़ाई में सुअर की-सी चोट करने की सीख कौन और किसको दे रहे हैं?

स. ७०-इन दज्जालों की लड़ाई के विषय में किसका आश्रय अथवा किसकी अनुकम्पा चाहिये?

स. ७१-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दज्जाल पर किस तरह से वार करने की सीख दे रहे हैं?

ज. ७१- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दज्जाल की पहली चोट से अपने- →

स. ७२-सुअर किस कारण से अपनी गरदन को मोड़कर देख नहीं सकता?

स. ७३-सुअर का ही उदाहरण देकर मोमिनों को क्यों सावचेत किया गया है?

स. ७४-आसुरी प्रवृत्तिवाले लोग आत्मा-परमात्मा के विषय में कैसे होते हैं?

स. ७५-उक्त उदाहरण द्वारा समझाकर श्रीजी स्वरूप किनकी पहली चोट से अपना बचाव कर लेने की सीख किन लोगों को दे रहे हैं?

ज. ६७- धर्म के प्रति समर्पित बारह शूरवीर मोमिनों ने एक आँखवाले दज्जाल से अच्छी तरह संघर्ष किया है।

ज. ६८- दज्जालों के साथ हुए संघर्ष में उत्तीर्ण होने के पीछे भी अपने प्रियतम परमात्मा श्री राजजी की ही आज्ञा है।

ज. ६९- दज्जालों की लड़ाई में संघर्ष करते समय सुअर की-सी चोट मारने की सीख श्रीजी साहेबजी बारह धर्मबीर मोमिनों को दे रहे हैं।

ज. ७०- आसुरी प्रवृत्तिवाले दज्जालों से युद्ध के विषय में प्रियतम-परमात्मा का आश्रय और उनकी ही अनुकम्पा चाहिये, जो मोमिनों को प्राप्त ही है।

→ आप को बचाकर पुनः पीछे से उस पर खींचकर वार करने की सीख दे रहे हैं, तब वह सुअररूपी दज्जाल कुछ नहीं कर सकेगा और उसे तुम्हारे वश में होना ही पड़ेगा।

ज. ७२- सुअर के पीठ में पूँछ से लेकर सिर तक की हड्डी एक ही होती है। यसर्थ वह अपनी गरदन को मोड़कर न तो देख सकता है और न किसी तरह से लड़ ही सकता है।

ज. ७३- सुअर का ही उदाहरण देकर मोमिनों को इसलिए सावचेत किया गया है क्योंकि अन्य सभी पशुओं के गले की हड्डी में सन्धि होती है, किन्तु मात्र सुअर के ही गले की हड्डी बिना सन्धि की होती है।

ज. ७४- आसुरी प्रवृत्तियुक्त स्वार्थी लोग आत्मा-परमात्मा के ज्ञान से रहित अर्थात् विवेकहीन अन्धे होते हैं।

ज. ७५- उक्त प्रकार के उदाहरण द्वारा समझाकर श्रीजी स्वरूप धर्मविरोधियों की चोट से अपना बचाव कर लेने की सीख मोमिनों को दे रहे हैं।

स. ७६-किन्होंने, किसकी पहली चोट से किसे सुरक्षित बचा लिया?

स. ७७-कब, कौन और किससे परास्त होकर उनकी चरण-शरण में आयेंगे?

स. ७८-दाभातुल-अर्ज के विषय में कुरान के अन्दर मुहम्मद साहेब ने क्या कहा है?

स. ७९-उक्त नामवाले जानवर की छाती और सींग कैसे अथवा किसके समान होंगे?

स. ८०-उस जानवर की पीठ कैसी होगी और क्यों?

ज. ८०- उक्त जानवर की पीठ गीदड़ के समान कमजोर होगी। ऐसा कहने के पीछे वास्तविकता यह है कि उक्तकथित गीदड़ के समान →

स. ८१-उक्त दाभातुल-अर्ज नामक जानवर के-से लक्षणवाला स्वरूप किसका है?

स. ८२-मोमिनों को किनसे संघर्ष करना है, ऐसा श्रीजी स्वरूप कह रहे हैं?

स. ८३-उक्त प्रकार के लोगों से कैसे अथवा किस प्रकार से टक्कर लेने को कहा है?

स. ८४-उक्त प्रकार की युक्ति श्रीजी साहेब मोमिनों को क्यों बता रहे हैं?

ज. ८४- शराअ के कट्टरपन्थी निर्दयी-कठोर दिलवाले होते हैं। उनमें न →

ज. ७६- शराअ के कट्टरपन्थी राजकर्मचारियों की पहली चोट से बारह शूरवीर धर्मरक्षक मोमिनों ने श्रीजी स्वरूप को भी बचाया और अपने-आप को भी बचा लिया।

ज. ७७- अन्त में वे राजकर्मचारी तारतम ज्ञानरूपी सोंटे द्वारा पराजित होकर श्रद्धापूर्वक मोमिनों की चरण-शरण में आ जायेंगे।

ज. ७८- सद्ग्रन्थ कुरान शरीफ के अन्दर मुहम्मद साहेब ने दाभातुल-अर्ज के विषय में उल्लेख किया है, "पृथ्वी के पाताल से लेकर आसमान तक का एक बड़ा भारी जानवर होगा।"

ज. ७९- जिस जानवर का उल्लेख कुरान में किया गया है, उसकी छाती शेर के समान निर्दयी-कठोर और सींग पहाड़ी बैल की तरह तीखे होंगे।

→ पीठवाले आदमी धर्म-जिम्मेदारी रूपी बोझा नहीं उठा सकेंगे। कर्म के विषय में वे जान की बाजी लगा देंगे, परन्तु धर्म की जिम्मेदारी उठाने की शक्ति उनमें नहीं होगी।

ज. ८१- उक्त दाभातुल-अर्ज नामक जानवर के-से लक्षणवाला स्वरूप संसार के पशु प्रवृत्तिवाले लोगों का ही समझना चाहिए।

ज. ८२- बारह शूरवीर मोमिनों को दाभा जानवर सदृश पशु प्रवृत्तियुक्त शराअ के शैतानों से संघर्ष करना है, ऐसा श्रीजी स्वरूप कह रहे हैं।

ज. ८३- उक्त प्रकार के लोगों अर्थात् पशु प्रवृत्तियुक्त शराअ के काज़ियों से अपना वास्तविक रूप छिपाकर नीतिपूर्वक टक्कर लेने को कहा है।

→ धर्म होता है और न शर्म होती है। दूसरों की जान लेने में वे क्षण भर की भी देरी नहीं करते। यसर्थ उक्त प्रकार की युक्ति श्रीजी साहेबजी मोमिनों को उनके बचाव के लिए समझा रहे हैं।

स. ८५-सर्वप्रथम इन दाभा लक्षणवालों से कैसे बातचीत करने को कहा है?

स. ८६-किसके जैसे होकर उन दज्जालों को अपने वश में करने और पीछे जिज्ञासानुसार उनसे चर्चा करने को कहा है?

स. ८७-श्रीजी स्वरूप किनके बनकर किनके साथ सेवक का -सा व्यवहार करने को कह रहे हैं?

स. ८८-उक्त प्रकार श्रीजी साहेब मोमिनों को संक्षेप में और संकेत द्वारा क्यों कहते हैं?

स. ८९-"आप सर्व बहुत बुद्धिमान् हो।"-उक्त वचन कौन, किससे कह रहे हैं?

स. ९०-श्रीजी साहेबजी किन्हें विभिन्न प्रकार से सेवा-भाव दिखाने को कहते हैं?

स. ९१-दज्जालों के आगे सीधी, सच्ची, वास्तविक बातें कब युक्तिपूर्वक रखने को कहा है?

स. ९२-कदाच शराअ के दज्जाल काज़ी लोग प्रसन्न होकर कुछ देना चाहें, तो श्रीजी स्वरूप मोमिनों से उनसे क्या कहने को कह रहे हैं?

स. ९३-पुनः उस समय उन्हें कैसे बड़ा बनाने की और क्या कहने की सीख दी है?

ज. ८५- सर्वप्रथम इन दाभा लक्षणवालों से उनके रुचता(रुचित) अर्थात् उनके अनुकूल व्यवहार करने को कहा है। पुनः जिससे उन्हें भला लगे, वैसे ही प्रेममय शब्दों में उनसे बातचीत करने को कहा है।

ज. ८६- उन लोगों जैसे ही होकर उन्हें अपने वश में करके और पीछे जितना और जिस प्रकार सुनना चाहें, उतनी ही धर्म-चर्चा करने को कहा है।

ज. ८७- श्रीजी स्वरूप काज़ियों के बनकर उनके साथ उनके अनुकूल सेवक का-सा व्यवहार कर प्रेम से उन्हें वश में करने को कह रहे हैं।

ज. ८८- श्रीजी साहेब धर्मवीर मोमिनों को संक्षेप में और संकेत द्वारा अक्षरातीत के हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म की स्थापना हेतु कह रहे हैं।

ज. ८९- *"आप सर्व बहुत बुद्धिमान् हो।"*-उक्त वचन श्रीजी साहेबजी दिल्ली में बादशाह की नजरकैद में बंध धर्मज्ञ मोमिनों से कह रहे हैं।

ज. ९०- श्रीजी साहेबजी मोमिनों से कहते हैं, "आप लोग शराअ के शैतान काज़ियों के पास हैं। अतः उन्हें विभिन्न प्रकार से सेवा-भाव दिखाना।"

ज. ९१- जब वे दज्जाल सेवा-भाव द्वारा नरम दिलवाले बन जायें, तब अवसर मिलते ही तुरन्त उनके आगे सीधी, सच्ची, वास्तविक बातें युक्तिपूर्वक रख देने को कहा है।

ज. ९२- कदाच शराअ के दज्जाल काज़ी लोग प्रसन्न होकर कुछ देना चाहें, तो श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं, "उनसे कहना बादशाह के पास से जो भी भिक्षा-दान प्राप्त होता है, साधु लोग उसी पर निर्वाह करते हैं।"

ज. ९३- पुनः उस समय उन्हें, "आप ही हमारे पालनहार एवम् अभिभावक-सिरदार हैं। आप जो देंगे, हम उसी पर निर्वाह कर लेंगे।"-

→ ऐसा कहकर उन्हें बड़ा बनाने की सीख श्रीजी स्वरूप मोमिनों →

स. ९४- पुनः श्रीजी स्वरूप किन्हें प्रेमभरे वचनों में क्या कहने की सीख दे रहे हैं?

स. ९५- कदाचित् बादशाह मोमिनों को कुछ देने को कहे, तो क्या माँगने की सलाह श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दे रहे हैं?

ज. ९५- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को कुछ माँगने के विषय में सलाह देते →

स. ९६- श्रीजी स्वरूप बारह मोमिनों से भोजन-सामग्री लेने और कुरान शरीफ़ पढ़ाने के लिए क्या माँगने को कह रहे हैं?

स. ९७- पुनः अन्य सामग्री की माँग करते किसके द्वारा, किसके नाम पर अलग रखे कोष में से माँगने की सलाह श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दे रहे हैं?

ज. ९७- पुनः अन्य सामग्री की माँग करने के विषय में श्रीजी स्वरूप →

स. ९८- उक्त बातों की माँग किससे करने और उन्हें क्या कहने की सीख श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दे रहे हैं?

स. ९९- अर्श-अजीम के वचनों के विषय में क्या बना देने की माँग करने के लिए श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं?

स. १००-शराअ के कट्टरपन्थी लोग कुरान को अपना समझकर मोमिनों को कुरान की तालीम न भी दें, तब भी मोमिनों को क्या नहीं छोड़ने को कहा है?

→ को दे रहे हैं।

ज. ९४- पुनः श्रीजी साहेबजी मोमिनों को सलाह देते हुए सूचित कर रहे हैं कि उन शराअ के कट्टरपन्थी काज़ियों से प्रेमभरे वचनों से कहना, "आपके चरण हम एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ेंगे।"

→ हुए कह रहे हैं, "आपके उक्त व्यवहार से पिघलकर यदि काज़ी लोग बादशाह को संदेश दें और काज़ी लोगों की बातों से बादशाह के मन में कुछ श्रद्धा-विश्वास हो आये तथा यदि बादशाह आपको कुछ देना चाहे, तो आप अलग से रहकर सत्संग करने के लिए एकान्त स्थल में एक हवेली माँग लेना।"

ज. ९६- श्रीजी स्वरूप बारह शूरवीर मोमिनों से भोजन-सामग्री आदि लेते समय आवश्यकतानुसार ही स्वीकार करने और कुरान शरीफ़ पढ़ाने के लिए एक मौलवी की माँग करने को कह रहे हैं।

→ मोमिनों को सलाह देते हुए कह रहे हैं, "यदि तुम्हें अन्य किसी सामग्री की जरूरत पड़े और यदि वे देना चाहे, तो कहना कि, खुदा के याने धर्मादा के नाम पर, मुहम्मद अलेह सलाम ने यदि कुछ अलग रखा हो, तो हमें उस धर्मादा कोष में से दीजिए।"

ज. ९८- उक्त बातों की माँग बादशाह से करने और कुरान की शिक्षा दिलवाने की माँग करने की सीख श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दे रहे हैं।

ज. ९९- अर्श-अजीम के वचनों के विषय में श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं कि सुलतान बादशाह से कहना कि वे उन्हें अर्श-अजीम परमधाम के वचनों से पोषित कुरान शरीफ का आलिम बना दें।

ज. १००- शराअ के कट्टरपन्थी लोग कदाच कुरान को अपना धर्मग्रन्थ समझकर मोमिनों को कुरान की तालीम न भी दें, तब भी मोमिनों को श्रीजी स्वरूप उनकी सेवा न छोड़ने के लिए कह रहे हैं।

स. १०१-श्रीजी साहेब मोमिनों को किनके इच्छानुकूल करने को कह रहे हैं?

स. १०२-श्रीजी स्वरूप किन्हें, किनसे और कैसा आचरण करने के प्रति सचेत कर रहे हैं?

ज. १०२- श्रीजी स्वरूप धर्म की स्थापना करने गए धर्मज्ञ बारह शूरवीर →

स. १०३-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से किसके इशारों पर क्या करने को कहते हैं? पुनः किस बात की प्रार्थना करते रहने को कह रहे हैं?

स. १०४-श्रीजी साहेबजी दिल्ली में नजरबन्द मोमिनों को कैसी बुद्धि से काम न लेने की सलाह दे रहे हैं?

स. १०५-श्रीजी स्वरूप किन्हें सम्मानपूर्ण-आदरसूचक वचनों से सम्बोधित करने को कहते हैं?

ज. १०५- श्रीजी स्वरूप शराअ के कट्टरपन्थी-बादशाह के कर्मचारियों →

स. १०६-तुम बारह मोमिनों को वे आदरपूर्वक सम्बोधित करें, तब भी तुम उन्हें क्या कहना, ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं?

स. १०७-काज़ियों को विनयपूर्वक कैसी बातें सुनाने के विषय में विनय करने की सूचना श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दे रहे हैं?

स. १०८-जब वे काज़ी लोग कुछ बोलना चाहें, तो उन्हें क्या कहकर सम्बोधित करने को कहा है?

ज. १०१- श्रीजी साहेब मोमिनों को उन शराअ के शैतान काज़ियों की जैसी इच्छा हो, बराबर वैसा ही करने को कह रहे हैं।

→ मोमिनों से शराअ के कट्टरपन्थी काज़ियों को जैसा रुचिकर लगे, उस वक्त उसी प्रकार का आचरण करने के प्रति सचेत कर रहे हैं।

ज. १०३- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से सुलतान सम्राट के कर्मचारियों के इशारों पर नाचकर उन्हें भली प्रकार से प्रसन्न करने को कह रहे हैं। पुनः समय मिलने पर उनसे बादशाह से एकान्त में कुछ बातें करने देने की प्रार्थना करते रहने को कह रहे हैं।

ज. १०४- बारह हजार ब्रह्मात्माओं की अग्रगण्य इन्द्रावती में विराजमान श्रीजी साहेबजी दिल्ली में नजरबन्द मोमिनों को व्यवहार में नादानी-बालकबुद्धि से काम न लेने की सलाह दे रहे हैं।

→ के साथ, जब भी वे बुलायें, उन्हें सम्मानपूर्ण तथा आदरसूचक शब्दों से संबोधित करने और सदैव उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करने को कहते हैं।

ज. १०६- तुम बारह मोमिनों को वे यदि आदरपूर्वक सम्बोधित करें, तब भी तुम उनसे कहना, "जिस तरह आप अपने लड़के को बुलाते हैं, हमें भी उसी तरह बुलाइये। हम भी आपके पुत्र के समान ही हैं।"- ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं।

ज. १०७- श्रीजी साहेबजी मोमिनों को सावधानीपूर्वक सचेत करते हुए कह रहे हैं, "हे धर्मज्ञ मोमिनों! काज़ियों से विनयपूर्वक कहना कि यदि आप धर्म-चर्चा करके पुण्य-नफा कमाना चाहते हों, तो हमें विनय करें।"

ज. १०८- जब वे काज़ी लोग कुछ बोलना चाहें, तो उन्हें 'काज़ी साहेब' या 'हज़रत साहेब' कहकर सम्बोधित करने को कहा है।

स. १०९-यदि काज़ी लोग मोमिनों से कुछ पूछना-जानना चाहते हों, तो श्रीजी स्वरूप उन्हें क्या कहने की सलाह मोमिनों को दे रहे हैं?

स. ११०-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को हिन्दू भाइयों के विषय में काज़ियों से क्या कहने को कहते हैं?

ज. ११०- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं कि आप उन काज़ियों से →

स. १११-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को काज़ियों से रसूल मुहम्मद साहेब के विषय में क्या कहने की सीख देते हैं?

ज. १११- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं कि आप उन काज़ियों से →

स. ११२-मोमिन रसूल के प्रति हिन्दुओं में कैसे विश्वास उत्पन्न करेंगे, ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों को काज़ियों से कहने के लिए कह रहे हैं?

ज. ११२- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को काज़ियों से हिन्दुओं में रसूल के →

स. ११३-हिन्दू भाइयों को हकीकी दीन के सिद्धांत पर कब विश्वास हो जाएगा?

ज. ११३- हकीकी-दीन का सिद्धान्त समझने के लिए हिन्दू भाई हमसे →

स. ११४-एक बार जो इसलाम को समझ लेगा, वह स्वयं क्या करने और कहने लगेगा?

स. ११५-पुनः कौन मोमिनों के साथ खाने, पीने, रहने के पश्चात् काज़ियों के पास से न तो कुछ माँगेगा और न ही कोई आस रखेगा?

ज. १०९- यदि काज़ी लोग कदाचित् मोमिनों से कुछ पूछना-जानना चाहते हों, तो श्रीजी स्वरूप उनसे 'हमारी बात आप एकान्त में सुनिये।'- ऐसा कहने की सलाह मोमिनों को दे रहे हैं।

→ हिन्दू भाइयों के विषय में ऐसा कहना, "हमारे पास यदि हिन्दू मतवाला भी कोई व्यक्ति आयेगा, तो उसे भी हम कुरान सम्बन्धी सनंधें ही सुनायेंगे।"

→ कहना "जब हम हिन्दुओं को कुरान की बातें समझायेंगे, तब उन्हें भी रसूल मुहम्मद साहेब पर स्वयं ही विश्वास हो जायेगा। तब वे भी उनके स्वरूप को पहचान लेंगे।"

→ प्रति विश्वास उत्पन्न करने के विषय में यह कहने को कह रहे हैं, "जिस तरह से इमाम मेहदी स्वामीजी ने प्रेमपूर्वक समझाकर कुरान और रसूल साहेब के प्रति हमारे मन में विश्वास उत्पन्न किया है, उसी प्रकार हम भी अपने हिन्दू भाइयों को रसूल की महिमा बताकर सही रूप से इसलाम धर्म का कार्य करेंगे।"

→ मिलें, हमारे साथ खाएँ-पीएँ और रसूल साहेब के प्रति किसी भी प्रकार की शंका न रखें, तब उन्हें इसलाम-हकीकी दीन के सिद्धान्त पर दृढ़ विश्वास हो जायेगा।

ज. ११४- एक बार जो इसलाम को समझ लेगा, वह स्वयं ही अपने मुख से कलमा-अनादि अक्षरातीत ब्रह्म अथवा नूर तजल्लाह के खुदा की महिमा कहने लगेगा।

ज. ११५- उक्त प्रकार से जो हिन्दू भाई मोमिनों के साथ खाने, पीने और रहने लगेंगे, वे उसके पश्चात् काज़ियों के पास से न तो कुछ माँगेंगे और न ही कोई आस रखेंगे।

स. ११६-"भय दिखाकर धर्म में शामिल न करो।"- ऐसा कौन, किनके मुख से, किसके प्रति कहलवाना चाहते हैं?

स. ११७-गोश्त खिलाकर मुसलमान बनाने से क्या होगा?

स. ११८-कौन, किससे कह रहे हैं कि "ऐसा करने पर आपको दूसरों का धर्म भ्रष्ट करने का पाप लगेगा"?

स. ११९-हिन्दू भाइयों को जब इमाम मेहदी की पहचान हो जाएगी, तब वे क्या हो जायेंगे और क्या करने लगेंगे?

स. १२०-किनके, किन वचनों पर आस्था उत्पन्न हो जाने पर, हिन्दू भाई काज़ियों के कहे अनुसार चलने लगेंगे?

स. १२१-"सभी लोग आपकी आज्ञा के अधीन हो जायेंगे।"- ऐसा कौन, किससे कह रहे हैं?

स. १२२-मोमिनों ने सर्वप्रथम किस काज़ी से मिलकर उसे क़यामत के विषय में समझाया था?

स. १२३-किसे मोमिनों की क़यामत की बातों पर विश्वास नहीं आया?

स. १२४-श्रीजी और मोमिनों ने किसके द्वारा बादशाह को क्या संदेश भेजने का सोचा था?

ज. ११६- श्रीजी साहेबजी मोमिनों द्वारा उन काज़ियों के प्रति यह बात कहलवाना चाहते हैं, *"आप लोग इस प्रकार भय दिखाकर हिन्दू भाइयों को इसलाम धर्म में शामिल न करो!"*

ज. ११७- हिन्दू लोगों पर दबाव डालकर, उन्हें गोश्त खिलाकर मुसलमान बनाने का प्रयत्न करेंगे, तो कोई कभी भी काज़ियों के पास नहीं जाएगा।

ज. ११८- शूरवीर मोमिन काज़ियों से कह रहे हैं कि *"हे काज़ी साहेब! जबरदस्ती करके लोगों को इसलाम में शामिल करेंगे, तो दूसरों का धर्म भ्रष्ट करने का पाप आपको लगेगा।"*

ज. ११९- जब हिन्दू भाइयों को इमाम मेहदी की पहचान हो जाएगी, तब वे सब काज़ियों के अधीन हो जायेंगे। फिर काज़ी लोग जैसा कहेंगे, वे वैसा ही करने लगेंगे।

ज. १२०- रसूल साहेब के क़यामत सम्बन्धी वचनों पर आस्था उत्पन्न हो जाने पर, हिन्दू भाई काज़ियों के कहे अनुसार चलने लगेंगे।

ज. १२१- *"सभी लोग आपकी आज्ञा के अधीन हो जायेंगे।"*- ऐसा श्रीजी साहेबजी बारह धर्मज्ञ मोमिनों से कह रहे हैं।

ज. १२२- धर्मज्ञ मोमिन सबसे पहले काज़ी शेख सलेमान से मिले थे। उसे भी इसी प्रकार समझाया था, "हम हिन्दू भाइयों में रसूल और ख़ुदा तथा कुरान के विषय में श्रद्धा-विश्वास उत्पन्न करा देंगे।"

ज. १२३- काज़ी शेख सलेमान को मोमिनों की क़यामत की बातों पर विश्वास नहीं आया। उसने उस पर तनिक-भी ध्यान नहीं दिया।

ज. १२४- श्रीजी साहेब और मोमिनों ने काज़ी शेख सलेमान द्वारा बादशाह के पास यह संदेश भेजने का सोचा था कि बादशाह उनसे उनके हिन्दू भेष में मिले।

स. १२५-काज़ी शेख सलेमान से भेष के विषय में क्या सलाह कर मोमिनों ने बादशाह से मिलवाने को कहा था?

ज. १२५- काज़ी शेख सलेमान से भेष के विषय में मोमिनों ने यह सलाह →

स. १२६-यदि उक्त बातें बादशाह स्वीकार कर लेता, तो मोमिन किन्हें, किस विषय में और क्या समझाते?

स. १२७-उक्त बातों द्वारा यदि लोगों में कुरान के प्रति श्रद्धा-विश्वास उत्पन्न हो जाता, तो क्या होता?

ज. १२७- उक्त बातों द्वारा यदि लोगों में कुरान के प्रति श्रद्धा-विश्वास →

स. १२८-तत्पश्चात् धीरे-धीरे कौन, किसे अस्वीकार नहीं करता?

स. १२९-लोगों को किसकी पहचान हो जाती और तब वे क्या स्वीकार कर लेते?

स. १३०-किन्तु उस समय किसकी बातें, किसने ठुकरा दीं, नहीं मानी?

स. १३१-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को आगे क्या निर्देश दे रहे हैं? क्यों?

ज. १३१- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को आगे यह निर्देश दे रहे हैं, "हे शूरवीर मोमिनों! अब तो आप सुलतान बादशाह से कयामत और इमाम →

स. १३२-कौन, कैसे और किस मार्ग में प्रवेश करने के लिए दौड़ते चले आयेंगे?

→ की थी कि "यदि बादशाह मोमिनों को हिन्दू भेष में मिले और क़यामत तथा इमाम के प्रकट होने की बात सुन ले, तो दुनिया के सभी लोग इस बात पर विश्वास करेंगे।"- ऐसी सलाह कर बादशाह से मिलवाने को कहा था।

ज. १२६- यदि बादशाह उक्त बातें स्वीकार कर लेता, तो मोमिन बहुत से लोगों को कुरान के खुदायी कलाम-ब्रह्मज्ञान समझा देते।

→ उत्पन्न हो जाता, तो संसार के सभी लोग मुख से रसूल मुहम्मद साहेब का कलमा कहकर नूर तजल्लाह के सर्वेश्वर-अक्षरातीत ब्रह्म (खुदा) की बातें करते।

ज. १२८- तत्पश्चात् धीरे-धीरे संसार के लोगों में से कोई भी खुदायी आज्ञा को अस्वीकार नहीं करता।

ज. १२९- लोगों को इमाम मेहदी के स्वरूप की पहचान हो जाती और तब वे दीन इसलाम के एकेश्वर उपासना के सिद्धान्त को स्वीकार कर लेते।

ज. १३०- किन्तु उस समय काज़ी शेख सलेमान ने मोमिनों की बातें बादशाह तक नहीं पहुचायी। मोमिनों की बातों को उसने ठुकरा दिया, नहीं माना।

→ विषय की बातें कह ही दो! क्योंकि उक्त विषयों पर सुलतान बादशाह को यदि विश्वास आ जाय, तो फिर क्या कहना? शराअ के लोग उसके बाद यदि हिन्दुओं को दीन इसलाम से निकालना भी चाहेंगे, तब भी समझकर ग्रहण किए हुए धर्म से हिन्दू भाई पीछे नहीं हटेंगे।"

ज. १३२- समझने के पश्चात् हकीकी दीन इसलाम मार्ग में प्रवेश करने के लिए सभी हिन्दू लोग स्वयं ही दौड़ते चले आयेंगे और आकर खुदा की राह पर आत्म-समर्पण कर देंगे।

स. १३३-सुलतान किसकी और कौन-सी भविष्यवाणी के अनुसार क्या करता, तो क्या होता था?

स. १३४-किसने और किसे रसूल साहेब पर विश्वास दिलाया? उसका प्रतिफल क्या हुआ?

ज. १३४- मोमिनों-ब्रह्मात्माओं को श्री मेहराज स्वामी ने रसूल साहेब के →

स. १३५-काज़ी लोग यदि बादशाह से पूछकर मोमिनों को प्रसन्न करने का प्रयास करें, तो श्रीजी स्वरूप मोमिनों को क्या करने की सलाह दे रहे हैं?

स. १३६-श्रीजी साहेबजी चर्चा में कलमा के विषय में किनसे और क्या पूछने को कह रहे हैं?

स. १३७-बलपूर्वक किसी पर अत्याचार करके कलमा पकड़ाने पर क्या होता है? श्रीजी स्वरूप काज़ियों से क्या न करने को कह रहे हैं?

ज. १३७- बलपूर्वक किसी पर अत्याचार करके उसे मुसलमान बनाने के लिए यदि कलमा पकड़ाया जाय, तो कोई भी हृदय से कलमा →

स. १३८-मोमिन अब और क्या करेंगे, ऐसा काज़ियों से कह रहे हैं? तत्पश्चात् श्री मेहराज आकर क्या करेंगे, ऐसा मोमिनों का कथन है?

स. १३९-"जहाँ खड़े तुम आज अर्थात् आप सब मुसलमान भाई जिस जगह खड़े होकर अपने-आपको धर्मनिष्ठ मान रहे हो।"- ऐसा कौन, किसे और किससे कहने को कह रहे हैं?

ज. १३३- यदि सुलतान बादशाह उस समय रसूल साहेब द्वारा कुरान में कही भविष्यवाणी के अनुसार इमाम मेहदी पर विश्वास कर लेता, तो सभी हिन्दू साथी भी भाग-भागकर उनके संग हो लेते थे।

→ प्रति विश्वास उत्पन्न करा दिया, परन्तु उन मोमिनों को ही कष्ट दिया गया। जिसका प्रतिफल यह हुआ कि सभी हिन्दू भाई पीछे हट गये हैं। अब वे दीन इसलाम पर विश्वास नहीं करेंगे।

ज. १३५- खुद काज़ी लोग यदि बादशाह से पूछकर मोमिनों को मना लें या प्रसन्न करने का प्रयास करें, तब श्रीजी स्वरूप मोमिनों को अपनी समझ के अनुसार उन्हें समझाने की सलाह दे रहे हैं, जिससे वे काज़ी लोग अपने समूह में प्रविष्ट हो जायें।

ज. १३६- श्रीजी साहेबजी चर्चा में कलमा के विषय में मोमिनों द्वारा काज़ी से यह पूछने को कह रहे हैं कि "आपने कलमा कहने-कहलाने के सम्बन्ध में हदीसों में क्या कुछ पढ़ा है?"

→ ग्रहण नहीं करेगा। अतः श्रीजी स्वरूप मोमिनों के माध्यम से काज़ियों को किसी की धर-पकड़ न करने को कह रहे हैं। बल्कि काज़ियों से ऐसा कहने को कह रहे हैं कि "हम स्थान-स्थान पर सभी को भली प्रकार राह बताएँगे। उन्हें कुरान से ही समझाकर परास्त-अधीन करेंगे।"

ज. १३८- "अब हम सबको एक स्थान पर ले आयेंगे ।"-ऐसा मोमिन काज़ियों से कह रहे हैं। तत्पश्चात् फकीर-श्री मेहराज ठाकुर यहाँ आकर अपने ज्ञान से सबके चित्त को स्थिर कर देंगे, ऐसा मोमिनों का कथन है।

ज. १३९- *"जहाँ खड़े तुम आज अर्थात् आप सब मुसलमान भाई जिस जगह खड़े होकर अपने-आपको धर्मनिष्ठ मान रहे हो।"* - ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों को काज़ियों से कहने के लिए कह रहे हैं।

स. १४०-यह निजानन्द धर्म कौन-सा धर्म है? इस धर्म पर कौन दृढ़ रूप से खड़े हैं?

स. १४१-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से काज़ियों के आगे अपनी कौन-सी अभिलाषा व्यक्त करने को कह रहे हैं?

ज. १४१- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से काज़ियों के आगे "आप भी तो मुहम्मद →

स. १४२-कौन सर्व प्रशंसा के योग्य हैं? उनके सामर्थ्य से कौन, क्या कर रहे हैं?

ज. १४२- हक सुभान-परमात्मा सभी प्रकार प्रशंसा के योग्य हैं। उन →

स. १४३-कौन-सा कार्य, किसके द्वारा युक्तिपूर्वक अवश्य पूर्ण होगा?

स. १४४-क्या प्रयोग कर, क्या करने से, किनका मन पवित्र नहीं हो सकता?

स. १४५-बलात् क्या करने से लोग सहमत नहीं होते?

स. १४६-बलात् धर्म-परिवर्तन करने से लोगों के मन में किसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती?

स. १४७-कदाच वे शराअ के शैतान काज़ी लोग मोमिनों का आदर करने लगें, तब भी श्रीजी स्वरूप मोमिनों से क्या करने को कह रहे हैं?

स. १४८-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को काज़ियों से किस प्रकार की बातें करने का मार्गदर्शन कर रहे हैं?

ज. १४८- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं, "यदि वे काज़ी लोग उक्त →

ज. १४०- यह निजानन्द धर्म-दीन मुहम्मदी यथार्थ में दीन इसलाम ही है। इस धर्म पर शूरवीर मोमिन दृढ़ रूप से खड़े हैं।

→ साहेब के धर्म को चाहते हैं। हमारी भी यही अभिलाषा है कि कोई उसे भली प्रकार समझकर ग्रहण करे।" अपनी यह अभिलाषा व्यक्त करने को कह रहे हैं।

→ परमात्मा के सामर्थ्य से फकीर इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी क़यामत के बख्त (आत्म-जागृति के समय) को जाहिर कर रहे हैं।

ज. १४३- क़यामत जाहिर करने का और इमाम मेहदी के प्रकट होने का कार्य हक सुभान-परमात्मा के हुकम से अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर युक्तिपूर्वक अवश्य पूर्ण होगा।

ज. १४४- बल प्रयोग कर किसी को मुसलमान बना लेने से भी उनका मन पवित्र नहीं हो सकता।

ज. १४५- बलात् धर्म-परिवर्तन करने से लोग सहमत नहीं होते। उनका मन इस प्रकार कबूल नहीं करता।

ज. १४६- उक्त प्रकार बलात् धर्म-परिवर्तन करने से लोगों के मन में मोमिनों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न नहीं होती।

ज. १४७- कदाच वे शराअ के शैतान काज़ी लोग मोमिनों का आदर करने लगें, तब भी श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं कि आप उनसे कहना, "आप हमें लड़कों की तरह बुलाइये।"

→ प्रकार से कहने लगें, तब भी आप उन्हें इसी प्रकार की मीठी लगनेवाली बातें कहकर समझाना। अन्यथा तो आप सब चतुर-बुद्धिमान् हो। विवेक से काम लेना और आगे बढ़ना।"

स. १४९-अवसर मिलने पर भी श्रीजी स्वरूप मोमिनों को क्या करने का प्रयास नहीं करने को कह रहे हैं?

स. १५०-समझाने का अवसर मिलने पर भी श्रीजी स्वरूप मोमिनों से काज़ियों को किस प्रकार समझाने को कह रहे हैं?

स. १५१-मोमिन किस तरह बादशाह की नज़र में पहुँचे, यह बहुत ही बड़ी बात हुई?

स. १५२-धर्म का संदेश पहुँचाने का कार्य करते श्रीजी और मोमिनों की कैसी इच्छा थी? वह कार्य क्यों सम्भव नहीं हुआ?

स. १५३-मोमिन किस भेष में होकर कार्य करते, तो उतना नहीं हो सकता था?

स. १५४-किसकी सभा और समाज में, लोग किसके प्रति विश्वास नहीं करते थे और क्यों?

स. १५५-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को उन मुसलमानों के क्या बनकर रहने और उनसे कैसा व्यवहार करने को कहते हैं?

स. १५६-उक्त प्रकार के बनकर रहने और व्यवहार करने से उन मुसलमानों को किन स्वरूप की पहचान होगी?

ज. १४९- अवसर मिलने पर भी श्रीजी स्वरूप मोमिनों को एक ही समय में बहुत कुछ समझाकर काज़ियों को अत्यधिक ज्ञान देने का प्रयास न करने को कह रहे हैं।

ज. १५०- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं, "आपको शराअ के कट्टरपन्थियों को समझाने का सुअवसर यदि मिल जाये, तब भी उन्हें थोड़ा-थोड़ा ज्ञान देकर धीरे-धीरे समझाना। बाद में मैं जैसा लिखूँगा, वैसा ही करना।"

ज. १५१- आत्माधार मोमिन भेष बदलकर बादशाह की नज़र में पहुँचे, यह अपने-आप में एक बहुत बड़ी बात हुई। यह एक बहुत बड़ी विजय है।

ज. १५२- धर्म का संदेश पहुँचाने का कार्य करते श्रीजी साहेब और मोमिनों की अपने ही भेष में होकर कार्य करने की इच्छा थी, परन्तु यह कार्य सुलतान बादशाह के शराअ की कट्टरता के कारण सम्भव नहीं हुआ।

ज. १५३- उक्त कार्य तभी सम्भव हो सकता था, जब बादशाह मोमिनों पर विश्वास कर लेता। किन्तु जितना कार्य मोमिन कर चुके थे, उतना कार्य हिन्दू भेष में कर पाना सम्भव नहीं हो सकता था।

ज. १५४- मुसलमानों की सभा और उनके समाज में हिन्दू भेष के कारण कोई भी मोमिनों के प्रति विश्वास नहीं करता था। हिन्दू भेष में होकर उनकी सभा में बैठने की अनुमति मोमिनों को कदापि नहीं मिलती।

ज. १५५- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को उन मुसलमानों के सेवक बनकर रहने और उनसे मित्रतापूर्ण एकदिली का व्यवहार करने को कहते हैं।

ज. १५६- उक्त कहे प्रमाण बनकर रहने और व्यवहार करने से उन मुसलमानों को हकी सूरत-श्री प्राणनाथजी स्वरूप की पहचान होगी।

स. १५७-कैसे व्यवहार द्वारा और उनके क्या बनकर रहने से मोमिन उन्हें प्रिय लगने लगेंगे?

स. १५८-उक्त प्रकार के युक्तियुक्त व्यवहार से किसकी आत्म-जागृति का कार्य सिद्ध हो जाएगा?

स. १५९-उपरोक्त प्रकार से धैर्य धारण कर व्यवहार करने से कौन लोग धीरे-धीरे, किस धर्म में प्रविष्ट होने लगेंगे?

स. १६०-जब वे काज़ी लोग उक्त बातें स्वीकार कर लें, तब आगे उन्हें क्या कहने और उनके साथ कैसे रहने की सीख श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दे रहे हैं?

स. १६१-श्रीजी साहेबजी किन्हें और किस विषय में संकोच नहीं करने को कहते हैं?

स. १६२-मर्यादा का सिर किसने पहले ही तोड़ दिया है? मोमिन क्या जानते और समझते हैं?

ज. १६२- मोमिनों ने लोक लज्जा, मर्यादा का सिर पहले ही तोड़ दिया है →

स. १६३-हिन्दू भाई मिलें और कुछ पूछें, तो उन्हें क्या, किस विषय में अवगत कराने को कह रहे हैं?

स. १६४-मोमिनों को श्रीजी स्वरूप किसके प्रश्नों का सही जवाब देने को कह रहे हैं? वे आगे किसके द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान कर सकते हैं?

ज. १६४- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को हिन्दू भाइयों के प्रश्नों का सही और →

ज. १५७- प्रेमपूर्ण व्यवहार द्वारा और उनके अभिभावक बनकर रहने से मोमिन उन्हें प्रिय लगने लगेंगे।

ज. १५८- उक्त कथनानुसार व्यवहार करके घुल-मिलकर रहने से बादशाह की आत्म-जागृति का कार्य सिद्ध हो जाएगा।

ज. १५९- उपरोक्त प्रकार से धैर्य धारण कर व्यवहार करने से मुसलमान लोग धीरे-धीरे इस हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म में प्रविष्ट होने लगेंगे।

ज. १६०- जब वे काज़ी लोग इतनी बातें स्वीकार कर लें, तब आगे श्रीजी स्वरूप मोमिनों से उन्हें, "आप हमें लड़के-बच्चे का-सा व्यवहार करके बुलाइए।" इस प्रकार कहने और उनके साथ घुल-मिलकर स्नेहपूर्वक रहने की सीख मोमिनों को दे रहे हैं।

ज. १६१- श्रीजी साहेबजी मोमिनों से हिन्दू भेष बदल देने के विषय में संकोच न करने को कहते हैं।

→ और भेदभाव छोड़ दिया है। मोमिन स्वयं जानते और समझते हैं कि जात-पाँत, भेदभाव, मर्यादा आदि में कुछ भी सार नहीं है।

ज. १६३- हिन्दू भाई मिलें और कुछ पूछें, तो उन्हें भी इस सत्य से अवगत कराने को कह रहे हैं कि भेष, जाति तथा वर्णों का सार क्या है ?

→ शास्त्रोक्त प्रमाणों के साथ जवाब देने को कह रहे हैं। वे हिन्दू भाई शास्त्रों के प्रमाण देखकर अपनी शंकाओं का समाधान कर सकते हैं कि उनमें लोक लज्जा, मर्यादा के विषय में क्या लिखा है?

स. १६५-तीन काण्ड के अन्तर्गत क्या-क्या है? श्रीजी स्वरूप तीनों के विवरण को क्या करने को कहते हैं?

स. १६६-अन्य किसके सिद्धान्तों पर भी भलीभाँति विचार करने-कराने को कहते हैं?

स. १६७-पुनः तीसरा किसका प्रमाण आगे रखने को कहा है? चौथे किसके रहस्य के प्रति विचार-विवेक कर ध्यानपूर्वक, क्या करने को कहते हैं?

स. १६८-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को किस-किस के अनुरूप, क्या करने को कह रहे हैं?

स. १६९-श्रीजी स्वरूप अन्य सभी धर्म-सिद्धान्तों के साथ किस धर्म की तुलना करने को कहते हैं?

ज. १६९- श्रीजी स्वरूप समस्त धर्म शास्त्रों के साथ मुहम्मद साहेब के →

स. १७०-किस जमात को कौन-सा प्रकरण सुनाकर उन्हें यथार्थ लक्ष्य का बोध कराना है?

स. १७१-नबी और नारायण प्रकरण की चर्चा द्वारा क्या होगा?

स. १७२-हिन्दू और मुसलमान के बीच क्या लड़ता है अर्थात् किस बात का टकराव है? क्यों?

स. १७३-दोनों पक्षों के मन में बैठा क्या उन्हें परस्पर लड़वा रहा है?

ज. १६५- तीन काण्ड के अन्तर्गत कर्म, उपासना और ज्ञान का विवरण है। श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं कि वे हिन्दू भाइयों से कहें कि भेष-जाति, वर्णादि विषय में वेद-वेदान्त में क्या विवरण दिया गया है, देखें।

ज. १६६- श्रीजी साहेबजी मोमिनों से हिन्दुओं को वल्लभाचार्यजी के सिद्धान्तों पर भी भलीभाँति विचार-विवेक करने-कराने को कहते हैं।

ज. १६७- श्रीजी साहेब मोमिनों से कहते हैं कि उनके आगे तीसरा प्रमाण शंकराचार्यजी का रखना। उन्होंने वेश-भूषा के विषय में क्या कहा है ? वे अद्वैतवाद का वर्णन करके गये। पुनः चौथे गीता के रहस्य पर ध्यानपूर्वक विचार करके देखने के लिए कहना।

ज. १६८- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को आदित्य पुराण, भागवत में जैसा लिखा है, उसके अनुरूप आचरण करके निजानन्द धर्म का अनुसरण करने को कह रहे हैं।

→ कुरान के सिद्धान्तों की तुलना करके विचार करने को कह रहे हैं कि कौन-सा सिद्धान्त अधिक अच्छा है और कौन-सा कम? तत्पश्चात् निर्णय करें कि कौन-सा सिद्धान्त ग्रहण करने योग्य है ?

ज. १७०- यदि हिन्दू लोग देवपूजा की महानता-श्रेष्ठता प्रतिपादित करें, तो नबी और नारायण की सनंध सुनाकर उन्हें यथार्थ लक्ष्य का बोध कराना है।

ज. १७१- नबी और नारायण प्रकरण की चर्चा सुनकर हिन्दू लोग स्वयं ही लज्जित हो जायेंगे।

ज. १७२- संसार में हिन्दू और मुसलमान के बीच रीति-रिवाज लड़ते हैं अर्थात् रीति-रिवाजों का टकराव है क्योंकि दोनों में वास्तविकता का ज्ञान नहीं है।

ज. १७३- उक्त दोनों पक्षों के मन अन्तःकरण में बैठा अहंकार उन्हें परस्पर लड़वा रहा है। यह मायाजन्य शैतान-मन की करतूत है।

स. १७४-ऊपरवाले खुदा-परमात्मा ने किसके माध्यम से, क्या स्पष्ट कर दिया है?

स. १७५-सभी लोग कब और क्या होंगे तथा क्यों? पुनः तब उनमें क्या नहीं रह जायेगा?

स. १७६-कौन सबके अन्दर, किस रूप में बैठकर, किस लिए बहकाता है?

स. १७७-सब-के-सब क्या पकड़कर, किस में चूर (निमग्न) हैं?

स. १७८-उक्त लोग भी पीछे क्या प्राप्त कर द्रवित हो जायेंगे और कहाँ का शैतान नष्ट हो जायेगा?

स. १७९-उपरोक्त लोग क्या छोड़कर, किस तरह सिर नीचा करके, किस तरह आने लगेंगे?

स. १८०-अब कौन एकत्रित हो रहे हैं? परन्तु लोगों ने कैसा अर्थ ग्रहण किया है?

स. १८१-इसलाम का द्वार खोलने के लिए किसने, क्या और किसके पास पहुँचा दिया है?

स. १८२-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को यहाँ क्या न करने और किस तरह रहने की हिदायत दे रहे हैं?

स. १८३-कोई किसे दोष नहीं दे सकते? कौन मृतक को क्या करने का दावा लेकर बैठे हैं? मोमिनों को किसके आगे झुकने की आवश्यकता नहीं है?

ज. १७४- सबके मालिक एकेश्वर परवरदिगार परमात्मा ने श्री प्राणनाथजी के माध्यम से कुरान-पुराण के गूढ़ार्थों को खोलकर स्पष्ट कर दिया है।

ज. १७५- जब वेद-कतेब, कुरान-पुराण का गूढ़ार्थ जाहिर होगा, तब सभी लोग लज्जित-शर्मिन्दा हो जायेंगे। पुनः उनमें ज्ञान का झूठा अभिमान नहीं रह जायेगा।

ज. १७६- दज्जाल सबके अन्दर मन रूप में रहकर उनकी छाती पर बैठकर लड़ने-झगड़ने के लिए बहकाता है।

ज. १७७- संसार में सब-के-सब अन्धकाररूपी माया को पकड़कर उसी के अभिमान में चूर हैं। उसी में तल्लीन-निमग्न हो रहे हैं।

ज. १७८- उक्त प्रकार के मायावी कठोर दिलवाले भी पीछे तारतम ज्ञान प्राप्त कर द्रवित-गलित गात हो जायेंगे। उनके अन्दर बैठा हुआ शैतान स्वतः ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा।

ज. १७९- उपरोक्त लोग अपने अभिमान को त्याग कर, लज्जा से सिर नीचा करके, भेड़ों की तरह एक-दूसरे के पीछे आने लगेंगे।

ज. १८०- अब सब मोमिन-ब्रह्ममुनि एकत्रित हो रहे हैं, किन्तु लोगों ने विपरीत अर्थ ग्रहण किया है।

ज. १८१- इसलाम का द्वार खोलने के लिए परब्रह्म परमात्मा ने अपने ब्रह्मज्ञान के खजाने की कुंजी-तारतम मंत्र बारह जन-मोमिनों के पास पहुँचा दिया है।

ज. १८२- श्रीजी स्वरूप बारह मोमिनों को यहाँ अपना सिर ऊँचा रखने, स्वाभिमान न खोने और लज्जित होकर सिर नीचा करके नहीं देखने की हिदायत दे रहे हैं।

ज. १८३- कोई मोमिनों को दोष देना चाहे, तब भी नहीं दे सकता। मोमिन तो मृतक को जीवित करने का दावा 'कुम'-मालिक श्री राजजी की शक्ति लिये बैठे हैं। इसलिए मोमिनों को उन दज्जालों के आगे झुकने की आवश्यकता नहीं है।

स. १८४-यह संसार कैसी नगरी है? इसकी प्रत्येक वस्तु व्यक्ति को क्या करती है?

स. १८५-किसके रहस्य को मोमिन भलीभाँति जानते- समझते हैं?

स. १८६-कौन, किसका अथवा किस जैसे का भी कुछ बिगाड़ नहीं सकी?

स. १८७-श्रीजी साहेबजी उक्त बातें किन्हें संबोधित करते हुए कह रहे हैं?

स. १८८-ये मोमिन एक-दूसरे में कैसे हैं?

स. १८९-यह मायावी संसार किसके समान है? यह मोमिनों का क्या नहीं कर सकेगा?

स. १९०-किसने मोमिनों को, कब इस संसार की प्रकृति के प्रति सावधान कर दिया था?

स. १९१-अभी कितने मोमिन धर्मवीर होकर कुर्बान हुए हैं?

स. १९२-जो भयभीत होकर भाग गये हैं, वे पुनः किसके द्वारा आयेंगे?

स. १९३-भयभीत होकर भागे हुए साथ वापस आकर किसके साथ, क्या करने लगेंगे?

स. १९४-अभी धर्म के नाम पर कुर्बान होनेवाले बारह मोमिन हैं। बाद में संदेश पाकर उनके पीछे कितनी ब्रह्मात्माएँ आएँगी?

ज. १८४- यह संसार गोविंद भेड़ा-माया नगरी है। इसकी प्रत्येक वस्तु व्यक्ति को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

ज. १८५- इस माया नगरी-गोविंद भेड़ारूपी संसार के रहस्य को मोमिन भलीभाँति जानते-समझते हैं।

ज. १८६- मायावी शक्ति पाँच वर्ष के ध्रुव और प्रह्लाद जैसे बालकों का भी कुछ बिगाड़ नहीं सकी।

ज. १८७- श्रीजी साहेबजी-श्री प्राणनाथजी उक्त बातें अपने बारह धर्मज्ञ शूरवीर मोमिनों को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं।

ज. १८८- मोमिन तो सब शिरोमणि एक-दूसरे में सिरदार हैं।

ज. १८९- यह मायावी संसार प्रेत-नगरी के समान है। यह मोमिनों का कुछ भी अहित नहीं कर सकेगा।

ज. १९०- प्रियतम परमात्मा श्री राजजी ने मोमिनों को पहले ही इस संसार की प्रकृति के प्रति सावधान कर दिया था।

ज. १९१- अभी तो बारह मोमिन धर्मवीर होकर धर्म पर कुर्बान हुए हैं।

ज. १९२- जो-जो भयभीत होकर इस समय साथ-समुदाय से भागकर अलग हो गये हैं, वे पुनः परमात्मा की कृपा से आकर मिलेंगे।

ज. १९३- भयभीत होकर भागे हुए साथ वापस आकर मोमिनों के साथ एकाकार होकर कार्य करने लगेंगे।

ज. १९४- अभी धर्म के नाम पर कुर्बान होनेवाले बारह मोमिन हैं। किन्तु मोमिनों से संदेश पाकर उनके पीछे बारह हजार ब्रह्मात्माएँ आएँगी।

स. १९५-आत्म-जागृति होने पर वे आत्माएँ किसकी आज्ञा के अधीन रहेंगी?

स. १९६-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अपनी बातें किस प्रकार प्रकट करने को कह रहे हैं?

स. १९७-अपनी बातों को स्पष्टरूपेण जाहिर कर देने से कुम कहलानेवाली जीवात्माएँ कयामत के समय की जागृत आत्माओं का कौन-सा गुण देख लेंगी?

स. १९८-श्रीजी स्वरूप कयामत के समय किन्हें कब्र से मुर्दे उठने की लीला देखने के लिए कह रहे हैं?

स. १९९-किस ज्ञान के द्वारा आत्मा की पहचान कर, कौन, किसके चरणों की वन्दना करेंगे?

स. २००-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अपने दृष्टिकोण को क्या न होने देने को कह रहे हैं? पुनः किस ओर ध्यान रखने को कह रहे हैं?

स. २०१-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से किस विषय में दिल से विचार कर, क्या बताने को कह रहे हैं?

ज. २०१- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं, "आप सब दिल से विचार →

स. २०२-श्रीजी स्वरूप कहीं अन्यत्र जाकर क्या करने को कह रहे हैं?

स. २०३-पुनः श्रीजी स्वरूप यहाँ दूसरी बार किस तरह चढ़ाई करने के विषय में कहते हैं?

ज. १९५- आत्म-जागृति होने पर वे ब्रह्मात्माएँ मोमिनों से आ मिलेंगी और उनकी आज्ञा के अधीन रहेंगी।

ज. १९६- श्रीजी स्वरूप धाम की अग्रगण्य शूरवीर आत्माओं से अपनी बातें भली प्रकार और स्पष्टरूपेण प्रकट करने को कह रहे हैं।

ज. १९७- अपनी बातों को स्पष्टरूपेण भली प्रकार जाहिर कर देने से कुम कहलानेवाली अथवा शरीररूपी कब्र में मुर्दे के समान नींदग्रस्त हुई जीवात्माएँ कयामत अथवा आत्म-जागृति के समय मोमिनों का जोश और प्रेमरूपी गुण देख लेंगी।

ज. १९८- श्रीजी स्वरूप शराअ के कट्टरपंथी लोगों को क़यामत के समय शरीररूपी कब्र में मुर्दे के समान नींदग्रस्त हुई आत्माओं को उठता अर्थात् जागृत होता हुआ देखने के लिए कह रहे हैं।

ज. १९९- रूह अल्लाह सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के तारतम ज्ञान द्वारा आत्मा की पहचान कर गाँव-गाँव, देश-देश में बसे हिन्दू और मुसलमान भाई मोमिनों के चरणों की वन्दना करेंगे।

ज. २००- श्रीजी स्वरूप धर्मप्राण मोमिनों से अपने दृष्टिकोण को परिवर्तित न होने देने को कह रहे हैं। पुनः अपना ध्यान लक्ष्य की ओर टिकाये रखने को कह रहे हैं।

→ कर मुझे स्पष्ट बताना कि मेरे लिए यह स्थान अनुकूल है या नहीं! कदाचित् मेरे लिये आपको यह स्थान अनुकूल न लगे, तो मैं अन्यत्र प्रस्थान करने का भी विचार करूँ!!"

ज. २०२- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं, "यदि आप सलाह दें, तो मैं अन्यत्र कहीं जाकर आसुरी प्रवृत्तिवाले दज्जालों से संघर्ष करने के लिए कोई और युक्ति निकालकर मोर्चा लूँ"।

ज. २०३- पुनः श्रीजी स्वरूप दूसरी बार दिल्ली आकर परिवर्धित शक्ति से दोबारा युद्ध करने के विषय में कहते हैं।

स. २०४-उक्त प्रकार की योजना का प्रयोग श्रीजी स्वरूप किस स्थिति में करने को कह रहे हैं?

स. २०५-अब कौन, किसके चरणों की वन्दना-प्रार्थना करेंगे?

स. २०६-किसके प्रति, क्या देखकर संपूर्ण जगत् के लोग, किससे और क्या कहेंगे?

स. २०७-मोमिनों के किस गुण को देखकर लोग क्या किये बिना ही मर जायेंगे?

स. २०८-परन्तु जब तक बादशाह मोमिनों की बातें ध्यान से नहीं सुनेगा, तब तक क्या नहीं हो पायेगा?

स. २०९-किसने, किसके संदेश को ध्यान से नहीं सुना और क्यों?

स. २१०-दूसरे, किसका अभिप्राय जानने के लिए बादशाह औरंगजेब को क्या प्राप्त नहीं हो पायी?

स. २११-पुनः बादशाह के दिल में किस विषय का भय समाया हुआ था?

ज. २११- पुनः एक कारण यह भी था कि बादशाह के दिल में इस बात →

स. २१२-औरंगजेब बादशाह के इमाम के संदेश पर ध्यान न देने के कितने कारण थे? तीसरा कारण कौन-सा था, जिसके आधार पर उसने खुदा की ओर से आया हुआ पैगाम ठुकरा दिया?

ज. २०४- उक्त प्रकार की योजना का प्रयोग तो श्रीजी स्वरूप तब लाने को कह रहे हैं, जब ये शराअ के शैतान काज़ी लोग प्रत्यक्ष रूप में मोमिनों के विपरीत होकर लड़ने को तैयार हो जायें।

ज. २०५- अब जल्दी ही जितने भी मुसलमान हैं, वे सब ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों के चरणों की वन्दना-प्रार्थना करेंगे।

ज. २०६- परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के प्रति मोमिनों का प्रेम और विश्वास तथा उनके दृढ़तापूर्ण बचनों को देखकर संपूर्ण जगत् के लोग मोमिनों की भूरि-भूरि प्रशंसा करेंगे और उन्हें धन्य-धन्य कहते हुए उनका ध्यान धरेंगे।

ज. २०७- मोमिनों के आत्मीय आवेश को देखकर लोग बिना मारे ही मर जायेंगे।

ज. २०८- परन्तु जब तक बादशाह मोमिनों की बातें ध्यान से नहीं सुनेगा, तब तक माया-जगत् के अभिमान में चूर लोगों की आत्म-जागृति नहीं हो पायेगी।

ज. २०९- सुलतान औरंगजेब ने इमाम के संदेश को ध्यान से नहीं सुना क्योंकि उसकी दृष्टि शारीरिक और बुद्धि दैहिक थी।

ज. २१०- दूसरे, कुरान का अभिप्राय जानने के लिए बादशाह को आत्म बुद्धि-दिव्य दृष्टि ही प्राप्त नहीं हो पायी।

→ का भी भय समाया हुआ था कि कहीं मोमिनों को किसी ने उसे धोखा देकर उसकी कीर्ति को नष्ट करने के लिए तो नहीं भेजा है अथवा ये कहीं किसी दुश्मन के जालिम दूत तो नहीं हैं ! इसलिये बादशाह अधिक असमंजस में पड़ गया था।

ज. २१२- औरंगजेब बादशाह के इमाम के संदेश पर ध्यान न देने के तीन मुख्य कारण थे। उनमें से तीसरा कारण यह था कि यदि बादशाह इमाम मेहदी का प्रकटीकरण स्वीकार कर लेता, तो शराअ - तोरा अर्थात् कट्टर शराअ पर आधारित उनका शासन उठ →

→ जाता। इसलिए उसने खुदा की ओर से आये हुए पैगाम पर →

स. २१३-बादशाह यदि इमाम द्वारा भेजा हुआ पैगाम स्वीकार कर लेता, तो क्या हो सकता था?

स. २१४-कौन लोग, कैसी बुद्धि से, कुरान के किस प्रसंग का जाहिरी अर्थ करते हैं?

ज. २१४- आलम के आरिफ कहलानेवाले मुसलमान लोग सांसारिक →

स. २१५-जब ईसा, इमाम और दज्जाल मनुष्य तन धारण करेंगे, तब क्या होगा-ऐसी मुसलमान लोगों की मान्यता है?

स. २१६-मुसलमानों की धारणानुसार कौन और कितने काफिरों से तलवार लेकर लड़ेंगे?

स. २१७-उक्त प्रकार का भयानक युद्ध कब-किस समय होने को कहा है तथा उस युद्ध में क्या होगा, ऐसा कहा है?

स. २१८-उक्त लड़ाई के दौरान जगत् में क्या होगा और क्या फैल जायेगा?

स. २१९-यह लड़ाई किसके समान होगी और इस लड़ाई में सब कुछ क्या होकर जमीन खाली मैदान (खलिहान) समान हो जायेगी?

स. २२०-लड़ाई के दौरान खाने-पीने के लिए क्या नहीं रह जायेगा? पुनः भूमि कैसी होगी?

→ ध्यान नहीं दिया, ठुकरा दिया।

ज. २१३- बादशाह यदि इमाम द्वारा भेजा हुआ पैगाम स्वीकार कर लेता, तो उसका राज-शासन उठ जाता। तब वह किस आधार पर शासन करता।

→ बुद्धि से कुरान के अंतर्गत आए क़यामत के समय इमाम मेहदी, ईसा और दज्जाल के जाहिर होने के प्रसंग का जाहिरी अर्थ करते हैं।

ज. २१५- क़यामत के समय जब ईसा, इमाम मेहदी और दज्जाल मनुष्य तन धारण करेंगे, तब हमारी सम्पूर्ण शानशौकत समाप्त हो जायेगी। हमारी यह अवस्था न रह पायेगी, ऐसी मुसलमान लोगों की मान्यता है।

ज. २१६- मुसलमानों की धारणानुसार मोमिन सत्तर हजार काफ़िरों-अवज्ञाकारियों से तलवार लेकर लड़ेंगे।

ज. २१७- उक्त प्रकार का भयानक युद्ध क़यामत के समय मोमिनों और काफ़िरों के बीच होने को कहा है। इस युद्ध में मोमिन काफ़िरों को मारकर नष्ट कर देंगे, ऐसा कहा है।

ज. २१८- उक्त प्रकार क़यामत के समय होनेवाले इस युद्ध में सम्पूर्ण जगत् में भयानक रक्तपात होगा और सर्वत्र लहू फैल जायेगा।

ज. २१९- यह लड़ाई लड़ाकू हाथियों के बीच होनेवाली लड़ाई के समान होगी और इस युद्ध में सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट होकर जमीन खाली मैदान (खलिहान) के समान हो जायेगी।

ज. २२०- लड़ाई के दौरान खाने के लिए भोजन और पीने को पानी तक नहीं रह जायेगा। पुनः उस समय धरती घास रहित हो जायेगी।

स. २२१-कौन उक्त प्रकार के अर्थ में स्वयं ही उलझते रहते हैं?

स. २२२-कैसी बुद्धि होने के कारण, ये मुसलमान लोग किसका जाहिरी अर्थ करते हैं?

स. २२३-क़यामत का अर्थ क्या है? परन्तु क़यामत का नाम सुनते ही ये मुसलमान लोग क्यों डर जाते हैं?

स. २२४-वे शराअ के काज़ी लोग किसको, कैसे समझते हैं और किससे चमत्कार देखना चाहते हैं?

स. २२५-किन्हें इमाम मेहदी स्वरूप के प्रति विश्वास नहीं हुआ? पुनः उक्त प्रकार की भावना के कारण क्या हुआ?

स. २२६-सुलतान किसके वचनों पर विचार-विवेक करेगा? पुनः श्रीजी स्वरूप मोमिनों को सुलतान से कब बात करने की सलाह दे रहे हैं?

स. २२७-श्रीजी स्वरूप कहाँ बैठकर उक्त प्रकार से मोमिनों को सचेत कर रहे हैं?

स. २२८-अब आगे श्रीजी स्वरूप मोमिनों को अवसर मिलते ही कैसी चर्चा करने को कहते हैं?

स. २२९-मोमिनों के वचनों को सुनकर कैसे-कैसे लोग भी क्या करने लगेंगे?

ज. २२१- कुरान का दावा लेनेवाले मुसलमान लोग उक्त प्रकार के जाहिरी अर्थात् बाह्यार्थ में स्वयं ही उलझते रहते हैं।

ज. २२२- सांसारिक-देह बुद्धि होने के कारण ये मुसलमान लोग कुरान का अर्थ उक्त प्रकार से जाहिरी दृष्टि से करते हैं। गूढ़ भावार्थ को नहीं समझ पाते हैं।

ज. २२३- क़यामत का अभिप्राय आत्म-जागृति से है। किन्तु मुसलमानों ने तो क़यामत का अर्थ 'मौत आना' ठान लिया है। यसर्थ मुसलमान भाई क़यामत के नाम से भयभीत हो जाते हैं।

ज. २२४- बे शराअ के शैतान, कट्टरपन्थी काज़ी लोग श्रीजी स्वरूप को साधारण आदमी ही समझते हैं और इमाम मेहदी से कोई बड़ा चमत्कार देखने की भावना रखते हैं।

ज. २२५- शराअ के कट्टरपन्थी काज़ियों को इमाम मेहदी स्वरूप के प्रति विश्वास नहीं हुआ। उक्त प्रकार की भावना के कारण उनके दिल की शंकायें भी दूर नहीं हो सकीं।

ज. २२६- सुलतान मोमिनों द्वारा पहले कहे बचनों पर बिचार-विवेक करेगा। पुनः श्रीजी स्वरूप मोमिनों को अवसर में भी सुअवसर देखकर ही सुलतान से अपनी बात कहने की सलाह दे रहे हैं।

ज. २२७- श्रीजी स्वरूप भलीभाँति बिचार-विवेक से सुअवसर में ही बादशाह के आगे अपनी बात रखने के लिए मोमिनों को बाहर कामा पहाड़ी में रहते हुए पत्र द्वारा जाहिर में सचेत कर रहे हैं।

ज. २२८- अब आगे श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अपनी बातें गुप्त न रखने को कह रहे हैं। बल्कि जहाँ सुअवसर मिले, क़यामत आत्म-जागृति की चर्चा करते रहने को कहते हैं।

ज. २२९- मोमिनों के बचनों को सुनकर बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोग भी उनके अधीन होकर उनसे आत्म-कल्याण की शिक्षा ग्रहण करने लगेंगे।

स. २३०-किन्हें श्रीजी स्वरूप अब आगे की कोई चिंता नहीं करने को कह रहे हैं?

स. २३१-सत धर्म पर प्रतिष्ठित शूरवीर मोमिनों को श्रीजी स्वरूप कैसे विचार मन में नहीं लाने को कह रहे हैं?

स. २३२-किसके साथ चर्चा बन्द नहीं करने की सलाह श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दे रहे हैं?

स. २३३-प्रतिष्ठा प्राप्त कर कौन लोग, कैसे हो रहे हैं? उनकी आँखें खोलने का काम किसका है?

स. २३४-मोमिन कैसा कार्य करने गये थे? अतः श्रीजी स्वरूप उन्हें कैसे कार्य करने को कह रहे हैं?

स. २३५-यदि मोमिन कार्यानुसार आत्मबल धारण कर निडरता से न रहें, तो किन्हें मोमिनों के प्रति शंका होगी?

स. २३६-श्रीजी स्वरूप मोमिनों की उन्नति अथवा सफलता के लिए कैसे खड़े हैं?

स. २३७- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को शराअ के कट्टरपंथियों के बीच रहते हुए क्या भली प्रकार सँभालकर रखने के लिए कह रहे हैं?

स. २३८-किसकी शक्ति-बल से श्रीजी के प्रभाव में वृद्धि होगी और श्रीजी की शक्ति से मोमिनों पर क्या होगा?

ज. २३८- मोमिनों की शक्ति-बल से श्रीजी के प्रभाव में वृद्धि होगी और →

ज. २३०- एक सत ब्रह्म के सत्य धर्म पर प्रतिष्ठित मोमिनों को श्रीजी स्वरूप अब आगे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करने को कह रहे हैं।

ज. २३१- सत धर्म पर प्रतिष्ठित शूरवीर धर्मप्राण स्वरूप मोमिनों को श्रीजी स्वरूप किसी दूसरे प्रकार के विपरीत विचार मन में नहीं लाने को कह रहे हैं।

ज. २३२- काज़ी शेख इसलाम के साथ चर्चा बन्द नहीं करने की सलाह श्रीजी स्वरूप मोमिनों को दे रहे हैं।

ज. २३३- शराअ के राजकर्मचारी प्रतिष्ठा पाकर अभिमान में अंधों की तरह हो रहे हैं। उन अंधों की आँखें खोलना मोमिनों का काम है।

ज. २३४- मोमिन कठिन-जोखिम भरे कार्य पर गये थे। अतः श्रीजी स्वरूप उन्हें उसी प्रकार का आत्मबल बनाए रखने और निडरता से कार्य करने को कह रहे हैं।

ज. २३५- यदि मोमिन कार्यानुसार आत्मबल धारण कर निडरतापूर्वक न रहें, तो बादशाह को उनके प्रति सन्देह होने लगेगा। अतः श्रीजी स्वरूप मोमिनों को यह युक्ति हमेशा ध्यान में रखने के लिए कह रहे हैं।

ज. २३६- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अलग नहीं हैं। वे सर्व मोमिनों की रक्षार्थ एक पाँव पर सतर्क खड़े हैं।

ज. २३७- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को शराअ के कट्टरपंथियों के बीच रहते हुए अपने हिन्दुत्व की ओर भली प्रकार ध्यान देकर उसे सँभालकर रखने के लिए कह रहे हैं।

→ श्रीजी की शक्ति से शराअ के कट्टरपन्थी काज़ी लोग मोमिनों को अधिक मानने तथा उनसे सुदृष्टि से देखने-बोलने अथवा व्यवहार करने लगेंगे।

स. २३९-"आप किसी प्रकार दुःखी और हतोत्साहित नहीं होना।"-ऐसा कौन, किससे कह रहे हैं?

स. २४०-आगे किनकी कृपा से सब भला होगा? कौन-सा बड़ा कार्य हुआ है?

स. २४१-उक्त प्रकार शराअ के लोगों से मोर्चा लेने की शक्ति मोमिनों को किसने प्रदान की?

स. २४२-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को अपने मन में जरा-सा भी क्या नहीं आने देने की सीख दे रहे हैं?

स. २४३-इस धर्मयुद्ध में कैसे जूझना है तथा यह युद्ध किन-किन शस्त्रों द्वारा होनेवाला है?

स. २४४-अब किसका प्रकाश, क्या प्रकाशित करेगा?

स. २४५-किसकी आज्ञा से, तारतम ज्ञान का प्रकाश किस अभियान को पूरा करेगा?

स. २४६-कौन-सा कार्य जल्दबाजी से होनेवाला नहीं है?

स. २४७-यह मायावी संसार कैसा है और इसे किस तरह जीतना पड़ेगा?

स. २४८-संसार में बड़े-बड़े अवतारी पुरुषों ने किसके सहारे धर्मयुद्ध में विजय प्राप्त की थी?

स. २४९-श्रीजी स्वरूप ने किसके ज्ञान के अभिमान को, किस युक्ति से नष्ट किया था?

ज. २३९- *"आप किसी प्रकार दुःखी और हतोत्साहित नहीं होना।"* - ऐसा श्रीजी साहेब मोमिनों से कह रहे हैं।

ज. २४०- आगे परब्रह्म श्री राजजी की कृपा से सब भला होगा। मोमिनों ने शराअ से मोर्चा लिया, यह एक बड़ा कार्य हुआ है।

ज. २४१- उक्त प्रकार शराअ के लोगों से मोर्चा लेने की शक्ति मोमिनों को प्रियतम परमात्मा श्री राजजी ने कृपा करके प्रदान की है।

ज. २४२- श्रीजी स्वरूप अपने प्राणप्रिय मोमिनों को अपने मन में जरा-सा भी संदेह या उद्विग्नता नहीं आने देने की सीख दे रहे हैं।

ज. २४३- इस धर्मयुद्ध में पूर्ण विश्वास के साथ जूझना है। यह धर्मयुद्ध - संघर्ष वचनों अर्थात् ज्ञानपूर्ण शब्दरूपी शस्त्रों द्वारा होनेवाला है।

ज. २४४- अब तारतम ज्ञान का प्रकाश स्वतः ही अपना बल प्रकाशित करेगा।

ज. २४५- अद्वैत ब्रह्म श्री राजजी की आज्ञा से तारतम ज्ञान का प्रकाश मोमिनों के क़यामत-आत्म-जागृति के अभियान को पूरा करेगा।

ज. २४६- यह पैगाम पहुँचाने का कार्य जल्दबाजी से होनेवाला नहीं है। इस कार्य में समय लगेगा।

ज. २४७- यह मायावी संसार छल-कपट से परिपूर्ण है। अतः इसे तो नीति-युक्ति पूर्वक, रूप बदलकर छल से ही जीतना पड़ेगा।

ज. २४८- संसार में बड़े-बड़े विष्णु भगवान श्री कृष्ण जैसे अवतारी पुरुषों ने भी छल के सहारे ही असुरों के साथ हुए धर्मयुद्ध में विजय प्राप्त की थी।

ज. २४९- श्रीजी स्वरूप ने हरजी व्यास के ज्ञान के अभिमान को छलपूर्ण युक्ति से ही नष्ट किया था।

स. २५०-किसने ब्रह्मज्ञान का एक शब्द कहा था, तो श्रीजी स्वरूप ने किस तरह उनसे आगे का ज्ञान पूछा था?

स. २५१-जब अवसर हाथ लगा,तब श्रीजी स्वरूप ने किसे और कैसे पछाड़ा था?

स. २५२-तत्पश्चात् हरजी व्यास ने क्या किया था?

स. २५३-किन्हें शराअ की कट्टरता से, क्या करने का कार्य सौंपा गया है?

स. २५४-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को जैसा बाजा बजे, वैसा ही क्या करने को कह रहे हैं? इसका तात्पर्य क्या है?

स. २५५-श्रीजी स्वरूप यहाँ मोमिनों को कौन-सी मुख्यातिमुख्य बातें बता रहे हैं?

स. २५६-कब और किन्हें सारे रहस्य स्वयं ही खुलते जायेंगे?

स. २५७-उक्त रहस्यपूर्ण बातों को समझने का विवेक धीरे-धीरे कौन प्रदान करेंगे?

स. २५८-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को जो राज्याधिकारी लोग सुचित्त मन से निश्चित होकर बातें सुनने आयें, तो उन्हें कैसे सुनाने के लिए कह रहे हैं?

स. २५९-उक्त प्रकार की चर्चा द्वारा किसके मन में,कैसे वचनों की अमिट छाप पड़ने लगेगी?

ज. २५०- ब्रह्मज्ञानी हरजी व्यास ने ब्रह्मज्ञान का एक शब्द कहा था, तो श्रीजी स्वरूप ने दस बार उनके चरण पकड़कर विनम्रतापूर्वक आगे का ज्ञान पूछा था।

ज. २५१- जब अवसर हाथ लगा, तब श्रीजी स्वरूप ने हरजी व्यास को ज्ञान से ऐसे पछाड़ा था कि वह एकदम निरस्त हो गया और मरणासन्न व्यक्ति के समान अशक्त दशा में पहुँच गया था।

ज. २५२- तत्पश्चात् हरजी व्यास ने पलटकर श्रीजी के चरणों में अपने आप को समर्पित कर दिया था।

ज. २५३- बारह हजार मोमिनों में से चुने गये बारह जनों को, जो धर्म के थंभरूप अग्रगण्य हैं, शराअ की कट्टरता से टकराने का कार्य सौंपा गया है।

ज. २५४- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को जैसा बाजा बजे, वैसा ही नृत्य करने को कह रहे हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जैसी परिस्थितियाँ दिखाई दें, स्वयं को वैसे ही ढाल लें।

ज. २५५- श्रीजी स्वरूप यहाँ मोमिनों को सबसे मुख्यातिमुख्य बात यह बता रहे हैं कि आप बारह जन आपस में हिल-मिलकर एकरस होकर रहना।

ज. २५६- कुछ दिन बाद धीरे-धीरे स्वयं मोमिनों को सारे रहस्य स्वयं ही खुलते जायेंगे।

ज. २५७- उक्त रहस्यपूर्ण बातों को समझने का विवेक धीरे-धीरे परब्रह्म श्री राजजी ही प्रदान करेंगे।

ज. २५८- सर्वप्रथम यदि राज्याधिकारी लोग सुचित्त मन से निश्चित होकर बातें सुनने आयें, तो श्रीजी स्वरूप मोमिनों को उन्हें अपने पास बिठाकर प्रेम से चर्चा सुनाने के लिए कह रहे हैं।

ज. २५९- उक्त प्रकार की चर्चा द्वारा धीरे-धीरे उन शराअ के कट्टरपन्थियों के हृदय-मन में मोमिनों के अकाट्य वचनों की अमिट छाप पड़ने लगेगी।

स. २६०-तब उन शराअ के कट्टरपन्थी राज्याधिकारियों पर क्या असर पड़ेगा?

स. २६१-तब वे लोग किससे और क्या सुनने आयेंगे?

स. २६२-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को पास में आनेवालों के प्रति क्या करने को कह रहे हैं? इससे क्या होगा?

स. २६३-किसके द्वारा, हर किसी को क्या प्राप्त होगा और वह क्या हो जायेगा?

स. २६४- श्रीजी साहेब मोमिनों को सावधानीपूर्वक सूचित करते हुए क्या कह रहे हैं?

स. २६५-मोमिन जिस कार्यार्थ गये थे, वह कार्य किस तरह ही पूरा होना संभव था?

स. २६६-शैतान के वशीभूत हुए कैसे लोग, किस तरह कार्य करते हैं? पीछे उन्हें क्या करना पड़ता है?

स. २६७-सच्चे पथग्राही किस तरह से कार्य करते हैं?

स. २६८-किसने, किन-किन भाई को मोमिनों के पास पत्र लेकर भेजा है? इस पत्र पर कैसे विचार करने को कहा है?

ज. २६०- जब वे शराअ के कट्टरपन्थी राज्याधिकारी लोग उक्त प्रकार से प्रभावित होंगे, तब वे मोमिनों के ज्ञान-बाणों से घायल होकर नम्र हो जायेंगे और उनके मन में दया भाव उत्पन्न हो जायेगा।

ज. २६१- तत्पश्चात् वे लोग ध्यान से मोमिनों की चर्चा-कथा सुनने आयेंगे और अन्य अनेकों लोग भी मोमिनों पर विश्वास करने लगेंगे।

ज. २६२- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को पास में आनेवालों को प्रेम से पास बिठाकर चर्चा सुनाने के लिए कह रहे हैं। इससे हिन्दू-मुसलमान के बीच का अन्तराल मिट जायेगा।

ज. २६३- तारतम ज्ञान द्वारा हर किसी को दिव्य दृष्टि प्राप्त होगी और वह स्वतः ही जागृत हो जायेंगे।

ज. २६४- श्रीजी साहेब शूरवीर धर्मज्ञ मोमिनों को सावधानीपूर्वक सूचित करते हुए कह रहे हैं, "आप लोग उतावली करके, बिना विचार किये उलझ मत जाना।"

ज. २६५- धर्मवीर मोमिन जिस कार्यार्थ गये थे, वह कार्य युक्तिपूर्वक अर्थात् उसी प्रकार की अक्ल-बुद्धि लगाकर अच्छी तरह करने से ही पूरा होना संभव था।

ज. २६६- शैतान के वशीभूत हुए विचार-विवेकहीन लोग उतावली में कार्य करते हैं। पीछे कार्य बिगड़ने पर उन्हें पछताना और रोना पड़ता है।

ज. २६७- परमात्मा के आधारभूत सत्य पथग्राही धैर्यपूर्वक ठण्डे दिमाग-मन से विचार कर कार्य करते हैं।

ज. २६८- श्रीजी साहेब ने शेख बदल और कान्हजी भाई को मोमिनों के पास पत्र देकर भेजा है। इस पत्र पर दृढ़तापूर्वक विचार-विवेक करने को कहा है।

स. २६९-श्रीजी ने मोमिनों को पत्र लाने और ले जाने के लिए अपने पास किसे रखने को कहा है?

स. २७०-मोमिन आज्ञा दें,तो श्रीजी स्वरूप कामा पहाड़ी से निकलकर कहाँ जाना चाहते हैं?

स. २७१-कदाच कौन, किसको यहीं सीमित कर रखना चाहते हों, तब भी स्पष्ट करने के लिए कह रहे हैं? क्यों?

ज. २७१- कदाच ब्रह्मनिष्ठ मोमिन श्रीजी स्वरूप को कामा पहाड़ी की →

स. २७२-कहाँ रहकर श्रीजी स्वरूप मोमिनों की सहायता नहीं कर सकते अथवा उनका पक्ष नहीं ले सकते?

स. २७३-"यहाँ अपनेपन का निर्वाह अर्थात् भोजनादि का प्रबन्ध न कर सकेंगे, तो धर्म-अभियान कैसे पूरा होगा?"-ऐसा कौन, किससे कह रहे हैं?

स. २७४-किसने हिम्मत करके, क्या सिर पर लेकर एक बड़े मोर्चे को जीत लिया?

स. २७५-मोमिनों ने अपने मन को क्या करके, किसका अच्छी तरह से विस्तार किया?

स. २७६-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को सभी परिस्थितियों का सामना किस तरह करने को कह रहे हैं?

स. २७७-कौन, कहाँ जाकर, किन्हें और किससे लड़ने के लिए तैयार करना चाहते हैं?

स. २७८-उक्त प्रकार की तैयारी कर श्रीजी स्वरूप किसके विरुद्ध, क्या छेड़ना चाहते हैं?

ज. २६९- श्रीजी साहेब ने मोमिनों को पत्र लाने और ले जाने के लिए अपने पास कान्हजी भाई को रखने को कहा है।

ज. २७०- मोमिन आज्ञा दें, तो श्रीजी स्वरूप कामा पहाड़ी से निकलकर अन्यत्र कहीं बाहर जाना चाहते हैं।

→ कन्दरा में ही सीमित कर रखना चाहते हों, तो भी स्पष्ट करने के लिए कह रहे हैं-अब श्रीजी के आवास की जानकारी मुसलमानों को हो जायेगी क्योंकि मोमिन अब इमाम के लशकर के रूप में जाहिर हो चुके हैं।

ज. २७२- श्रीजी स्वरूप कामा पहाड़ी की कन्दरा में रहकर मोमिनों की सहायता नहीं कर सकते अथवा उनका पक्ष नहीं ले सकते।

ज. २७३- *"यहाँ अपनेपन का निर्वाह अर्थात् भोजनादि का प्रबन्ध न कर सकेंगे, तो धर्म-अभियान कैसे पूरा होगा?"*- ऐसा श्रीजी साहेब मोमिनों को पत्र द्वारा कह रहे हैं।

ज. २७४- शूरवीर मोमिनों ने हिम्मत करके, स्वयं दायित्व अपने सिर पर लेकर एक बड़ा मोर्चा जीत लिया।

ज. २७५- मोमिनों ने अपने मन को कड़ा करके धर्म-अभियान-कार्य का खूब अच्छी तरह से विस्तार किया।

ज. २७६- धर्मवीर मोमिन जिस उत्साह भरे मन से मसजिद में बाणी गाने गये थे, उसी उत्साह, हिम्मत और लगन से श्रीजी स्वरूप उन्हें सभी परिस्थितियों का सामना करने को कह रहे हैं।

ज. २७७- श्रीजी साहेबजी कामा पहाड़ी से निकलकर अन्यत्र जाकर धर्मांध और अधम औरंगजेब से लड़ने के लिए अन्य राजाओं को तैयार कर मोर्चा बाँधना चाहते हैं।

ज. २७८- उक्त प्रकार की तैयारी कर श्रीजी स्वरूप औरंगजेब के विरुद्ध धर्मयुद्ध छेड़ना चाहते हैं।

स. २७९-उक्त प्रकार की तैयारी कर श्रीजी स्वरूप किसे, किसके सहायतार्थ भेजने की बात कर रहे हैं?

स. २८०-कौन लोग, किससे टक्कर लेकर, किसके प्रकट होने की बात घोषित कर देंगे?

स. २८१-श्री प्राणनाथजी ने कामा पहाड़ी से दिल्ली नजरकैद में स्थित मोमिनों को अपना उद्देश्य प्रकट करते हुए पत्र में क्या लिखा है?

ज. २८१- श्री प्राणनाथजी ने कामा पहाड़ी से दिल्ली नजरकैद में स्थित →

स. २८२-किसके वचनों के प्रति, किसके अन्दर, क्या उत्पन्न करा दिया जाय?

स. २८३-श्रीजी साहेबजी किनसे वे जैसी आज्ञा दें, उसी के अनुसार चलने की आज्ञा माँग रहे हैं?

स. २८४-किसी उचित स्थान पर पहुँचकर श्रीजी स्वरूप क्या करने के लिए कह रहे हैं?

स. २८५-मोमिन यदि इसके उपरान्त श्रीजी साहेब से कुछ कहना चाहते हैं, तो श्रीजी उन्हें किससे अपने दिल की बात कहलवाने को कह रहे हैं?

ज. २८५- मोमिन यदि इसके उपरान्त श्रीजी साहेब से कुछ कहना चाहते →

स. २८६-कैसे लोगों को सीधी राह पर लाने के लिए समय-समय पर क्या हुआ है?

ज. २७९- उक्त प्रकार की तैयारी कर श्रीजी स्वरूप बाहर निकलकर किसी न किसी राजा को जागृत कर मोमिनों के सहायतार्थ भेजने की बात कर रहे हैं।

ज. २८०- उक्त हिम्मती जागृत राजा, महाराजा आदि स्वयं सुलतान औरंगजेब से टक्कर लेकर इमाम मेहदी के प्रकट होने की बात राज्य में घोषित कर देंगे।

→ मोमिनों को पत्र द्वारा अपने उद्देश्य की सूचना देते हुए लिखा है, "हे मोमिनों ! हमारा उद्देश्य यही है कि किसी भी प्रकार अर्थात् युक्तिपूर्वक बल से मुहम्मद साहेब एवम् उनके वचनों के प्रति शहंशाह के मन में पूर्ण विश्वास उत्पन्न करा दिया जाय।"

ज. २८२- मुहम्मद साहेब के भविष्य और कुरान के वचनों के प्रति सुलतान औरंगजेब के मन में श्रद्धा-विश्वास उत्पन्न करा दिया जाय।

ज. २८३- श्रीजी साहेबजी प्राणवल्लभ मोमिनों से वे जैसी आज्ञा दें, उसी के अनुसार चलने की आज्ञा माँग रहे हैं अर्थात् मोमिन आज्ञा दें कि श्रीजी साहेबजी बाहर निकल जाएँ या वहीं रहें!

ज. २८४- किसी उचित स्थान पर पहुँचकर श्रीजी स्वरूप मोमिनों का पक्ष लेकर उनकी कुछ न कुछ सहायता करने के लिए कह रहे हैं।

→ हैं, तो श्रीजी उन्हें अपने दिल की बात संदेशवाहक भाई द्वारा कहलाने को कह रहे हैं। पुनः यदि वे श्रीजी से मिलना भी चाहते हों, तो श्रीजी साहेब दिल्ली आने के लिए भी तैयार हैं। इस तरह श्रीजी साहेब मोमिनों से उनके दिल की बात पूछ रहे हैं।

ज. २८६- धर्म के प्रति अन्धे लोगों को सीधी राह पर लाने के लिए समय-समय पर परमात्मा की कृपा सनंधों के रूप में उतरती रही है।

स. २८७-कौन, किसे और क्या भेजते रहे? कौन लोग, किससे पीछे हट गए और क्यों?

ज. २८७- मोमिन परमात्मा की तरफ का कृपा-प्रसादरूपी ज्ञान शराअ

स. २८८-कौन लोग धर्म के बाह्य रूप पर दिखावे का विश्वास करनेवाले हैं?

स. २८९-श्रीजी स्वरूप किनसे कह रहे हैं कि "आप सब दीन इसलाम पर तो हैं, परंतु रसूल मुहम्मद द्वारा कहे भविष्य के अनुसार ही कार्य में देरी हो रही है, यह समझ नहीं पा रहे हैं?"

स. २९०-किस के द्वारा, कहाँ कहे प्रमाण, कौन-से कार्य में विलम्ब हो रहा है?

स. २९१-क्या कारण है कि बादशाह और उसके सेवकों ने मोमिनों की बातों को ध्यान से नहीं सुना?

स. २९२-पुनः किसकी आज्ञानुसार ही, मोमिन किसके पास जायेंगे?

स. २९३-श्रीजी साहेब यहाँ संकेत में क्या कह रहे हैं?

स. २९४-श्री राजजी यदि किसी को शोभा देना चाहें, तो वे किसे, किसके पास, कहाँ पहुँचा देते हैं?

→ के शैतानों के पास पैगाम के रूप में भेजते रहे। परन्तु शराअ के शैतान लोग उस पैगाम से पीछे हट गए। क़यामत का वास्तविक अर्थ न समझ सकने के कारण उन्होंने इमाम के पैगाम को अपनाने के बदले ठुकरा दिया।

ज. २८८- शराअ के पालनकर्ता, जो पैगाम से पीछे हट गये, वे ही धर्म के बाह्य रूप पर दिखावे का विश्वास करनेवाले अथवा धर्म का जाहिरी मायना लेकर धर्म पर खड़े होनेवाले हैं।

ज. २८९- श्रीजी साहेब मोमिनों को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं, *"आप सुन्दरसाथ यथार्थ दीन इसलाम-सत्य धर्म पर आरूढ़ तो हैं, किन्तु रसूल मुहम्मद साहेब द्वारा कहे भविष्य के अनुसार ही कार्य में देरी हो रही है, यह नहीं समझ पा रहे हैं।"*

ज. २९०- रसूल मुहम्मद साहेब द्वारा कुरान ग्रन्थ में कहे प्रमाण ही जागनी का कार्य जितना जल्दी करना चाहते हैं, उतना ही विलम्ब हो रहा है।

ज. २९१- मुहम्मद साहेब द्वारा कहे भविष्य के कारण ही बादशाह और उसके सेवकों ने मोमिनों की बातों को ध्यान से नहीं सुना।

ज. २९२- अब पुनः उन्हीं रसूल मुहम्मद साहेब की आज्ञानुसार ही मोमिन बादशाह और उसके सेवकों के पास जायेंगे।

ज. २९३- श्रीजी साहेब यहाँ संकेत में यह कह रहे हैं, "सम्पूर्ण शोभा के स्वामी परब्रह्म श्री राजजी शायद किसी और को इस कार्य की शोभा देना चाहते हों।"

ज. २९४- श्री राजजी जिन्हें शोभा देना चाहते हैं, यदि यह बात निश्चित हो, तो वे उसे उस स्थान से अपने पास खींचकर किसी और स्थान पर पहुँचाकर शोभा देते हैं।

स. २९५-धर्मवीर मोमिनों के अन्दर कैसी इच्छा थी और कब से?

स. २९६-उक्त प्रकार की इच्छा के कारण किसने और किसे जगाने का कार्य, किसे सौंप देने का विचार मन में लिया?

स. २९७-सत्य क्या होता है, ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों को उपदेश कर रहे हैं?

स. २९८-अब किसकी कृपा-दया से कौन, किसकी करुण पुकार सुनेंगे और किनकी क्रोधित दृष्टि कहाँ पड़ेगी?

स. २९९-श्रीजी स्वरूप किससे कह रहे हैं कि यदि वे इस अवसर पर कुछ कहना चाहें, तो नि:शंक कह दें?

स. ३००-सभी बातों पर कैसे विचार करके पत्र का जवाब शीघ्रातिशीघ्र भेजने के लिए श्रीजी साहेब मोमिनों से कह रहे हैं?

स. ३०१-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से परिस्थिति के विषय में क्या कह रहे हैं?

स. ३०२-उक्त प्रकार की परिस्थिति होते हुए भी श्री राजजी ने क्या उचित समझा है?

स. ३०३-किस पर, किसका वश नहीं है?

ज. २९५- धर्मवीर एकात्म मोमिनों के अन्दर इस तरह संदेश पहुँचाने की इच्छा जन्म से ही अर्थात् जब से वे धर्म में प्रतिष्ठित हुए, तभी से थी।

ज. २९६- मोमिनों की उक्त प्रकार की इच्छा जानकर ही श्रीजी स्वरूप ने औरंगजेब को जगाने का कार्य मोमिनों को ही सौंप देने का विचार मन में लिया।

ज. २९७- "मोमिनों! सत्य तो वही होता है, जो परब्रह्म परमात्मा अपने चित्त में विचार लेते हैं।"- ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों को उपदेश कर रहे हैं।

ज. २९८- अब श्री राजजी की कृपा-दया से शराअ के शैतान काज़ी लोग मोमिनों की लगनपूर्ण करुण पुकार सुनेंगे और श्री राजजी की क्रोधित दृष्टि क़यामत स्वीकार करने में दलील करनेवाले इन शरे के शैतानों पर पड़ेगी।

ज. २९९- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं कि यदि इस अवसर पर वे कुछ कहना चाहें, तो निःशंक कह दें।

ज. ३००- श्रीजी साहेब धर्मज्ञ सिरदार मोमिनों से उनके द्वारा पत्र में लिखित सभी बातों पर दृढ़ता से सोच-विचार करके पत्र का जवाब शीघ्रातिशीघ्र लिखकर भेजने के लिए कह रहे हैं।

ज. ३०१- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से परिस्थिति के विषय में कह रहे हैं, "हे मोमिनों! आज यहाँ ऐसी परिस्थिति नहीं है कि आपको छोड़कर हम भ्रमण करने अन्यत्र कहीं चले जायें।"

ज. ३०२- उक्त प्रकार की परिस्थिति होते हुए भी श्री राजजी ने श्रीजी स्वरूप का बाहर जाना ही उचित समझा है।

ज. ३०३- श्री राजजी जैसा चाहते हैं, उस पर किसी का कोई वश नहीं है। उनके आगे किसी का जोर नहीं चलता।

स. ३०४-यहाँ बीतककार स्वामी श्री लालदासजी क्या कह रहे हैं?

❖ छोटी पत्री ❖

स. १- बड़ी पत्री के साथ श्रीजी साहेब ने और क्या लिखा तथा क्यों ?

ज. १- श्री प्राणनाथजी ने बड़ी पत्री के साथ एक "पुर्जी-छोटी पत्री" भी लिखी थी क्योंकि बड़ी पत्री मोमिनों के पास भेजने के पश्चात् →

स. २- उस छोटी पुर्जी में क्या समाचार था?

स. ३- कौन, किसके लिए, क्या लिखकर, किसके हाथ से भेज रहे हैं? उसमें क्या लिखा है?

स. ४- किसने, किसकी आत्म-जागृति के सम्बन्ध में पुन: विचार किया?

स. ५- बादशाह का क्या बहुत विस्तृत है? किसका पारावार नहीं है?

स. ६- सुलतान औरंगजेब के आस-पास कैसा पहरा है? कहाँ तक पहुँचकर, क्या नहीं किया जा सकता?

ज. ३०४- यहाँ बीतककार स्वामी श्री लालदासजी कह रहे हैं, "हे सुन्दरसाथजी! पत्र की शेष बातें रह गयीं। उन बातों को यथार्थ रूप से उसी प्रकार आगे प्रकट करेंगे।"

- (प्रकरण ४७, सवाल-जवाब नं. ३०४, कुल सं. २५९३+३०४ =२८९७)।

❖ छोटी पत्री ❖

→ उनके पास जगह-जगह से सुन्दरसाथ के पत्र आए। अतः मोमिनों द्वारा सुन्दरसाथ के पत्रों का जवाब दिलाने के लिए श्रीजी साहेब ने पुनः छोटी पत्री लिखकर मोमिनों के पास भेजी ।

ज. २- उस छोटी पुर्जी में एक और समाचार यह था कि श्रीजी साहेब के पास सूरत, सिद्धपुर, उदयपुर और मेरता से सुन्दरसाथ द्वारा लिखित पत्र आए थे।

ज. ३- श्रीजी स्वरूप मोमिनों के लिए पत्र लिखकर शेख बदल भाई के हाथों भेज रहे हैं। उस पत्र में श्रीजी स्वरूप ने अपने बचनों में कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला है।

ज. ४- श्रीजी साहेब और मोमिनों ने सकुमारबाई-औरंगजेब की आत्म-जागृति के सम्बन्ध में पुनः विचार किया।

ज. ५- बादशाह की बादशाहत और साहेबी-साम्राज्य एवम् अधिकार-पद बहुत ही विस्तृत है। उसके ऐश्वर्य एवम् अखूट कोष-भण्डारों का पारावार नहीं है।

ज. ६- सुलतान औरंगजेब के आस-पास जटिल पहरा है। ठेठ अन्दर तक पहुँचकर उससे चर्चा या मुलाकात नहीं की जा सकती।

स. ७- कैसे में, सुलतान बादशाह किसका संदेश सुन तक नहीं सकता? क्या करना दूर की बात है?

स. ८- बादशाह को संदेश देकर मोमिनों के कहाँ चले जाने पर भी क्या सम्भव नहीं था?

स. ९- किससे घुल-मिलकर, क्या किये बिना प्रभाव नहीं पड़ेगा?

स. १०-आज की वस्तुस्थिति देखकर किसने, किसे पत्र लिखा है? उसमें ब्राह्मणों की कट्टरता के विषय में क्या लिखा था?

स. ११-ब्राह्मण लोग नीच वर्ग को क्या समझकर, क्या नहीं सुनाते?

स. १२-पुनः मुसलमान लोग किस विषय में, किसे क्या समझते हैं?

स. १३-ये शराअ के भूत हिन्दुओं को तो कुरान की बातें सुनाते नहीं, परन्तु स्वयं भी किसकी बातें सुनना नहीं चाहते?

स. १४-उक्त प्रकार की स्थिति में क्या संभव नहीं है?

स. १५-उक्त कारण वश हमें किस-किस को महत्त्व नहीं देना है?

स. १६-इस संसार को किसके समान और कैसा जानना है?

ज. ७- उक्त प्रकार के जटिल पहरेदारों के बीच बादशाह मोमिनों का संदेश सुन तक नहीं सकता। पुनः उस पर विचार करना तो दूर की बात है।

ज. ८- बादशाह को संदेश देकर मोमिनों के अपने घर वापस आ जाने पर भी बादशाह की जागनी सम्भव नहीं थी।

ज. ९- बादशाह के साथ घुल-मिलकर उसे प्रेमपाश में बाँधकर चर्चा सुनाये बिना प्रभाव नहीं पड़ेगा।

ज. १०- आज की वस्तुस्थिति को देखकर श्रीजी ने मोमिनों को पत्र लिखा है । उस पत्र में हिन्दू-ब्राह्मण मंत्र विषयक जैसी कट्टरता दिखाते हैं, उसी प्रकार मुसलमानों में भी शराअ के प्रति जो कट्टरता है, उस विषय में लिखा था।

ज. ११- ब्राह्मण लोग नीच वर्ग-अछूत जाति के लोगों को क्षुद्र समझकर गायत्री मंत्र नहीं सुनाते।

ज. १२- मुसलमान लोग हिन्दुओं को नापाक समझकर, कुरान के अपात्र मानकर कुरान की बातें उन्हें नहीं बताते।

ज. १३- ये मुसलमान लोग-शराअ के भूत हिन्दुओं को तो कुरान की बातें सुनाते नहीं, परन्तु स्वयं भी हिन्दुओं की बातें सुनना नहीं चाहते।

ज. १४- उक्त प्रकार की स्थिति में परस्पर अपने भावों का आदान-प्रदान करके पहचान बढ़ाना संभव नहीं है।

ज. १५- उपरोक्त प्रकार होने से ही हमें जाति-भेद एवम् वेश-भूषा की ऊपरी पहचान को कदापि महत्त्व नहीं देना है।

ज. १६- इस संसार को गोविन्द भेड़ा के समान अर्थात् तदोगत प्रेत नगरी जैसा जानना है।

स. १७-मोमिनों को तो किसकी यथार्थता का ज्ञान है?

स. १८-किसके अनुसार कैसे जनों ने जाति-भेद को उड़ा दिया?

स. १९-संसार के सभी सम्प्रदायों में किस विषय की चर्चा होती है अथवा किस विषय का सदुपदेश दिया जाता है?

स. २०-कुरान खोलकर देखने पर क्या विदित हुआ? उसमें किसके घर की बातें हैं?

स. २१-सद्ग्रन्थ कुरान किसके द्वारा प्रशस्त किये गये, किस धर्म की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है?

स. २२-अब मोमिन किसका सिर तोड़कर नष्ट-भ्रष्ट करना चाहते हैं?

स. २३-बारह मोमिनों ने किसे जागृत करने विषयक महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए, क्या बदला है?

स. २४-बहुत ही विचार करके किस भेष में होकर, कौन और कहाँ प्रविष्ट हुए हैं?

स. २५-अपनी भारी सभा के बीच किसने, किसे धन्य-धन्य कहा?

स. २६-सभासदों सहित मोमिनों को धन्य-धन्य कहने के पश्चात् बादशाह औरंगजेब ने क्या किया? तत्पश्चात् उसके सेवकों ने क्या किया?

ज. १७- मोमिनों को तो इस माया नगरी-संसार की यथार्थता का ज्ञान है। यह भी जानते हैं कि इस जाति-भेद का कोई सार नहीं है।

ज. १८- शास्त्र, वेदान्त और साधु-सन्तों की वाणियों के अनुसार विद्वत जनों ने जाति-भेद को उड़ा दिया।

ज. १९- संसार के सभी सम्प्रदायों-धर्मों में जाति-भेद को उड़ा देने की ही चर्चा होती है अथवा इसी विषय का सदुपदेश दिया जाता है।

ज. २०- कुरान धर्मग्रन्थ को देखने पर यह विदित हुआ कि मुहम्मद साहेब की बातें मुसलमानों के लिए नहीं, हम मोमिनों के लिए हैं। उसमें हमारे घर का ज्ञान है।

ज. २१- सद्ग्रन्थ कुरान हमारे घर के ज्ञान एवम् ब्रह्मसृष्टियों द्वारा प्रशस्त किये गये हकीकी दीन इसलाम-सत्य सनातन निजानन्द धर्म की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

ज. २२- अब मोमिन जाति-भेद का सिर तोड़कर नष्ट-भ्रष्ट कर देना चाहते हैं। इस विषय में उन्हें कोई संकोच नहीं है।

ज. २३- बारह मोमिनों ने धनी की आज्ञा से सकुमारबाई को जागृत करने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए ही भेष बदला है।

ज. २४- बहुत ही सोच-विचारकर बारह मोमिन मुसलिम भेष में औरंगजेब के दरबार में ठेठ अन्दर तक प्रविष्ट हुए हैं।

ज. २५- सुलतान बादशाह औरंगजेब ने अपनी भारी सभा के बीच मोमिनों को साधुवाद देकर धन्य-धन्य कहा।

ज. २६- सभासदों सहित मोमिनों को धन्य-धन्य कहने के पश्चात् सुलतान बादशाह औरंगजेब ने आसा भी चूमा। परन्तु तत्पश्चात् उसके सेवकों ने उसे मोमिनों के प्रति अवगुण दिखला दिया।

स. २७-किन्होंने, किसके मन में कपट भर दिया?

स. २८-उक्त कार्य के प्रतिफल क्या होने लगा?

ज. २८- उक्त कार्य के प्रतिफल रूप बादशाह औरंगजेब को मोमिनों के →

स. २९-बादशाह के सेवकों ने बादशाह के मन में क्या शंका भर दी?

स. ३०-क्या समझकर बादशाह ने किसे, किस लिए, किसके हवाले कर दिया?

स. ३१-किसने, किससे और किसकी भली प्रकार जाँच करने को कहा?

स. ३२-काज़ी ने कोतवाल से क्या पता लगाकर अवगत कराने को कहा?

स. ३३-किसने मोमिनों से बहुत बातें की ? तत्पश्चात् बादशाह को क्या संदेश दिया?

स. ३४-पुनः काज़ी शेख इसलाम ने मोमिनों के विषय में सुलतान को कौन-सी ठोस बात बतायी?

स. ३५-उक्त काज़ी की बातें सुनकर बादशाह ने क्या किया?

ज. २७- बादशाह के सेवकों ने बादशाह के मन में कपट भर दिया।

→ प्रति यह संदेह होने लगा कि "ये हिन्दू लोग इस तरह मुसलमानों का भेष धारणकर क्यों आये हैं?" इस प्रकार वे मोमिनों को षड्यन्त्रकारियों के रूप में देखने लगे।

ज. २९- बादशाह के सेवकों ने बादशाह के मन में यह शंका भर दी, "न जाने ये लोग किस दुश्मन के भेजे हुये हैं! इन लोगों के मन में कुछ न कुछ कपट अवश्य होगा!!"

ज. ३०- उक्त प्रकार सेवकों की शंकापूर्ण बातें सुनकर मोमिनों को षड्यन्त्रकारी समझकर बादशाह ने मोमिनों की जाँच-पड़ताल करने के लिए उन्हें कोतवाल के हवाले कर दिया।

ज. ३१- काज़ी ने भी कोतवाल से बारह मोमिनों की भली प्रकार जाँच करने को कहा।

ज. ३२- काज़ी ने कोतवाल से 'इनकी बातों में कितना सत्य है और कितना झूठ है, पुनः ये लोग कहाँ से आये हैं, इनका परिचय क्या है, ये यहाँ किस मतलब से आये हैं ?'-इन बातों का पता लगाकर अवगत कराने को कहा।

ज. ३३- काज़ी शेख इसलाम ने मोमिनों से बहुत बातें की । तत्पश्चात् बादशाह को यह संदेश दिया, "ये ब्रह्ममुनि झूठे-दगाबाज़ या धोखा देनेवाले नहीं हैं।"

ज. ३४- पुनः काज़ी शेख इसलाम ने मोमिनों के विषय में सुलतान को यह ठोस बात बतायी, "ये परमात्मा-खुदा के प्रति पूर्ण विश्वास रखनेवाले खास मोमिन हैं।"

ज. ३५- उक्त काज़ी की बातें सुनते ही सुलतान बादशाह ने जेल की कोठरी के चारों ओर मोमिनों की जाँच-पड़ताल के लिए जो पहरा लगाया था, उसे हटा दिया।

स. ३६-पुनः बादशाह ने मोमिनों को रहने के लिए क्या देने की आज्ञा दी?

स. ३७-बादशाह के मन में क्या परिवर्तन हुआ?

स. ३८-अब बारह मोमिन किस तरह काज़ियों के बीच रहते हैं और कैसे काम करते हैं?

स. ३९-अब मोमिन बादशाह को किस तरह से समझायेंगे?

स. ४०-किसने, किनके साथ चर्चा करके, क्या कर दिया? यह कैसी बात हुई?

स. ४१-मोमिनों ने अन्य किसके साथ चर्चा की? फलस्वरूप क्या हुआ?

स. ४२-सुलतान बादशाह ने किससे, क्या मँगवाकर अपने पास रख लिया? अतः मोमिन क्या सोच रहे हैं?

ज. ४२- सुलतान बादशाह औरंगजेब ने मोमिनों के संदेश-पत्रों को →

स. ४३-अब सुलतान जितनी बातें लोगों से कहेगा, उतना क्या होता जायेगा?

स. ४४-यदि उक्त प्रकार हुआ, तो किस-किस के प्रकट होने का समाचार फैल जायेगा?

स. ४५-बारह मोमिन श्रीजी स्वरूप को यहाँ क्या सूचित कर रहे हैं?

ज. ३६- पुनः बादशाह औरंगजेब ने मोमिनों-ब्रह्ममुनियों को रहने के लिए एक हवेली देने की आज्ञा दी।

ज. ३७- बादशाह के मन में लोगों ने जो संदेह उत्पन्न कर दिया था, वह स्वतः ही दूर हो गया।

ज. ३८- अब बारह मोमिन निश्चिंत होकर काज़ियों के बीच रहते हैं और उनसे सचेत होकर दृढ़ता से काम करते हैं।

ज. ३९- अब बादशाह जिस प्रकार से समझेगा, मोमिन उसे उसी ढंग से समझायेंगे।

ज. ४०- मोमिनों ने काज़ी से चर्चा करके श्रीजी स्वरूप का मिलाप करा दिया। यह एक महत्त्वपूर्ण बात हुई।

ज. ४१- मोमिनों ने अन्य कोतवाल से भी चर्चा की। फलस्वरूप कोतवाल को भी उनकी जानकारी हो गयी।

→ मँगवाकर अपने पास रख लिया है। अतः मोमिन सोचते हैं कि धीरे-धीरे बादशाह उन संदेश-पत्रों को पढ़ेगा, समझेगा, तो शायद उन्हें बुलायेगा।

ज. ४३- अब सुलतान बादशाह जितनी बातें लोगों से कहेगा, उतनी बातें प्रकट होती जायेंगी।

ज. ४४- यदि उक्त प्रकार हुआ, तो क़यामत और इमाम मेहदी के प्रकट होने का समाचार सब में फैल जायेगा।

ज. ४५- बारह मोमिन श्रीजी को यहाँ यह सूचित कर रहे हैं, "हे धनी! बादशाह जब अन्य बातों की जानकारी हमसे लेना चाहेगा, तब हम आपको पत्र में उसी प्रकार लिखकर भेजेंगे।"

स. ४६-श्रीजी साहेबजी मोमिनों को क्या आदेश करते हैं?

स. ४७-अब तक मोमिन कैसे कार्य करते थे? अब वे किसकी सेना के रूप में जाने जा चुके हैं?

स. ४८-अब मोमिनों ने क्या बनाकर, कहाँ झण्डा गाड़ दिया है?

स. ४९-किसकी जानकारी में, कौन लोग उनके ही यहाँ प्रत्यक्ष होकर बैठे हुए हैं?

स. ५०-किसने मोमिनों की परीक्षा लेकर, उन्हें क्या कर दिया?

स. ५१-बारह मोमिन श्रीजी स्वरूप को किस सम्बन्ध में आवश्यकता होते ही क्या करने को कह रहे हैं?

ज. ५१- बारह मोमिन श्रीजी स्वरूप से कह रहे हैं, "हे धनी ! अब हम →

स. ५२-मोमिन श्रीजी स्वरूप को कब तक वहीं एकान्त में बने रहने के लिए कह रहे हैं?

ज. ५२- जब तक औरंगजेब और उसके सेवकों को मोमिनों की चर्चा →

स. ५३-श्रीजी स्वरूप किनकी आज्ञा से, किन्हें, किस लिए पत्र लिखते रहेंगे, ऐसा कह रहे हैं?

स. ५४-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से साथियों को किस प्रकार पत्र लिखने के लिए कह रहे हैं?

ज. ५४- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से साथियों को इस प्रकार पत्र लिखने के →

ज. ४६- श्रीजी साहेबजी मोमिनों को आदेश करते हैं, "अब आप लोग एकान्त हवेली में बैठे रहिये।"

ज. ४७- अब तक मोमिन छिप-छिपकर कार्य करते थे। अब वे इमाम मेहदी की सेना के रूप में जाने जा चुके हैं।

ज. ४८- अब शूरवीर मोमिनों ने इमाम मेहदी का गढ़ बनाकर उस पर झण्डा गाड़ दिया है।

ज. ४९- धामधनी श्रीजी स्वरूप की दया-कृपा से शूरवीर मोमिन बादशाह औरंगजेब की जानकारी में उनके ही यहाँ प्रत्यक्ष होकर बैठे हुए हैं।

ज. ५०- सुलतान बादशाह और उसके कर्मचारियों ने मोमिनों की परीक्षा लेकर उन्हें कैद से मुक्त कर दिया है।

→ सब भी एक ही कार्य में संलग्न रहेंगे। इस सम्बन्ध में आपके यहाँ न रहते हुए भी यदि हमें आपकी आवश्यकता हुई, तो हम दिल्ली से समाचार भेजेंगे। पुनः यदि आपको कोई भी निर्देश देने की आवश्यकता हुई, तो हम पत्र लिखकर तुरन्त भेज देंगे।"

→ उचित प्रतीत नहीं होगी, तब तक उन्हें निःशंक करने-बनाने तक मोमिन श्रीजी स्वरूप को वहीं एकान्त में बने रहने के लिए कह रहे हैं।

ज. ५३- श्रीजी स्वरूप परमात्मा श्री राजजी की आज्ञा से मोमिनों को सान्त्वना प्रदान करने के लिए जरूर पत्र लिखते रहेंगे, ऐसा कह रहे हैं।

→ लिए कह रहे हैं, जिससे कि साथियों के दिल में जरा-सी भी हीन भावना या दुर्बलता न आने पावे और उनके मन में दुःख की अनुभूति भी न हो। इस प्रकार पत्र में समझाकर लिखने को कह रहे हैं।

स. ५५-कौन, किससे कह रहे हैं कि "आप सब सदैव पालनहार परमात्मा श्री राजजी के सम्मुखीन रहो" ?

स. ५६-श्रीजी स्वरूप किन्हें पत्र द्वारा, किसे प्रेरित करने के लिए कह रहे हैं?

स. ५७-सुन्दरसाथ समाज के बीच ये बारह शूरवीर मोमिन कैसे हैं? वे किसके सम्मुख, किस लिये तत्पर हुए हैं?

स. ५८-कैसी माया के, कैसे मोहरे मोमिनों से टक्कर लेने के लिए उठ खड़े हुए?

स. ५९-किसने, किनकी आज्ञा से, कहाँ एक आदर्श चाल चलकर, क्या किया?

स. ६०-किसने धर्मयुद्ध सदृश महान् कार्य में, किस तरह, क्या निछावर कर दिया?

स. ६१-किसके बीच रहते हुए भी मोमिनों ने क्या कर दिखाया? इस विषय में मोमिन क्या कहे गये हैं?

ज. ६१- छलनी माया के बीच रहते हुए भी मोमिनों ने बड़ा लाभ लिया। →

स. ६२-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कौन-सी बात ध्यान से जाने न देने के लिए कह रहे हैं?

स. ६३-मोमिनों पर किसने, किस रूप में बिना विचार किये प्रहार किये? प्रतिफल मोमिनों ने क्या किया?

ज. ५५- श्रीजी स्वरूप बारह धर्मपरायण शूरवीर मोमिनों से कह रहे हैं कि *"आप सब सदैव पालनहार परमात्मा श्री राजजी के सम्मुखीन रहो।"*

ज. ५६- श्रीजी स्वरूप बारह धर्मपरायण मोमिनों से निःसंकोच स्थान-स्थान पर बसे सुन्दरसाथजी को पत्र लिखकर उन्हें इस धर्म-मार्ग पर प्रेरित करने के लिए कह रहे हैं।

ज. ५७- ये बारह धर्मज्ञ शूरवीर मोमिन सुन्दरसाथ समाज के बीच सर्वश्रेष्ठ, सबके सिरदार और समझदार हैं। वे देश के सुलतान औरंगजेब के सम्मुख धर्म-संघर्ष के लिए कमर बाँधे तत्पर खड़े हैं।

ज. ५८- छलनी माया की शतरंज के बड़े मोहरे अर्थात् सम्राट बादशाह और उसके अधिकारी लोग साहसी धर्मसम्राट मोमिनों से टक्कर लेने के लिए उठ खड़े हुए।

ज. ५९- मोमिनों ने परमात्मा श्री राजजी की आज्ञा से इस धर्म-संघर्ष में ऐसी आदर्श चाल चलकर समस्त साथियों का मार्गदर्शन किया।

ज. ६०- धर्मपरायण शूरवीर मोमिनों ने धर्मयुद्ध सदृश महान् कार्य में निर्भय होकर अपने आपको निछावर कर दिया।

→ इन बारह मोमिनों ने ब्रह्मात्माओं की नाक रख ली। जमात का सिर ऊँचा कर दिखाया। इस विषय में मोमिन धर्म के थंभ रूप कहे गये हैं।

ज. ६२- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से "श्री राजजी ने हाथ पकड़कर उन्हें सहारा दिया है"-यह बात ध्यान से न जाने देने के लिए कह रहे हैं।

ज. ६३- यवन कर्मचारियों ने दज्जाल रूप होकर मोमिनों पर सीधे प्रहार किये। उस प्रहार को शूरवीर मोमिनों ने अपने मुख पर लेकर झेला-सहन किया।

स. ६४-हम कुरान पढ़कर क्या सोचते थे और क्या हुआ?

स. ६५-यह कौन-सा युद्ध है, जो मोमिनों ने लड़कर दिखा दिया?

ज. ६५- बारह शूरवीर मोमिनों द्वारा किया हुआ युद्ध वही युद्ध है, जिस युद्ध के विषय में हजार साल पहले से ही कुरान द्वारा पढ़कर →

स. ६६-श्रीजी साहेबजी मोमिनों को कहाँ की, कौन-सी खबर, किन्हें भेजने के लिए कह रहे हैं?

स. ६७-पत्र में श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अन्य सुन्दरसाथ को भी क्या करना है, ऐसा कहने का आदेश दे रहे हैं?

स. ६८-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को पत्र के माध्यम से संबोधित करते हुए क्या कह रहे हैं?

स. ६९-बारह मोमिनों द्वारा बाँधे गए इस मोर्चे की खबर कौन, किसे लिखकर भेज रहे हैं?

स. ७०-इस समय अपने पास आनेवालों के प्रति श्रीजी स्वरूप मोमिनों को क्या करने के लिए कह रहे हैं?

स. ७१-उनमें धर्म के प्रति चाह उत्पन्न कर उन्हें क्या देने के लिए श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं?

ज. ७१- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं, "कोई भी सुन्दरसाथ आपके →

ज. ६४- हम कुरान के प्रसंगों को पढ़कर सोचते थे कि, "ब्रह्मात्माओं का दज्जाल के साथ धर्मयुद्ध होगा।" वही कुरान में कहा हुआ धर्मयुद्ध स्वयं मोमिनों ने ही कर दिखाया।

→ दुनिया सोचती आई थी। कुरान में क़यामत के समय मोमिनों और दज्जालों के बीच होनेवाले जिस युद्ध का वर्णन किया गया था, वही युद्ध बारह मोमिनों ने लड़कर दिखा दिया।

ज. ६६- श्रीजी साहेबजी मोमिनों को धर्म विषय में जो कुछ भी संघर्ष हुआ, उन सभी बातों की खबर अन्य सुन्दरसाथ को पत्र द्वारा भेजने के लिए कह रहे हैं।

ज. ६७- पत्र में श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अन्य सुन्दरसाथ को ऐसा कहने का आदेश दे रहे हैं, "हे सुन्दरसाथजी! यह कार्य आपको भी करना है और इसी प्रकार करना है।"

ज. ६८- श्रीजी स्वरूप बारह मोमिनों को पत्र के माध्यम से संबोधित करते हुए कह रहे हैं, "यह कार्य तो आपने भलीभाँति आरम्भ कर दिया है, परन्तु अब आगे भी सावधान होकर संघर्ष में लगे रहना है।"

ज. ६९- बारह मोमिनों ने जो मोर्चा बाँधा है, उस मोर्चे की खबर श्रीजी साहेब सभी जगह सुन्दरसाथ को पत्र के द्वारा भेज रहे हैं।

ज. ७०- "इस समय जो भी आप-मोमिनों के पास आये,उसकी भली प्रकार से परख करना, उसका मन टटोलना और उसमें धर्म विषय चाह उत्पन्न करना।"-ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं।

→ पास आयें, तो उन्हें समझाकर उनके मन में धर्म के प्रति उत्साह-चाह उत्पन्न करना और तुम्हारे पास परमधाम का जितना ज्ञान-धन हो, उन्हें देकर समझाना।"

स. ७२-उनमें परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के प्रति कैसा विश्वास उत्पन्न कराने के लिए श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं?

स. ७३-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को कैसी चाल चलकर दिखाने के लिए कह रहे हैं?

स. ७४-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को किसका परिचय देते हुए, कैसे कार्य करने को कह रहे हैं?

स. ७५-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को किसमें लिखे प्रमाण आचरणवत् कदम बढ़ाने को कह रहे हैं?

स. ७६-किसने, किसे, किसके लिए, किस तरह बैठा रखा है?

स. ७७-किसके सदाचरण बिना, किनकी प्रतिष्ठा, कहाँ न रह पाती?

स. ७८-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को किस प्रकार चलकर, किसकी लाज रखने के लिए कह रहे हैं?

स. ७९-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को किस राह में, कैसे रहने तथा क्या वश में करने को कह रहे हैं?

स. ८०-श्रीजी साहेब मोमिनों को हमेशा सतर्क रहने के लिए क्यों कह रहे हैं?

ज. ७२- "उन सुन्दरसाथजी के दिल में श्री परमधाम का ज्ञान-धन देकर परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के प्रति आप सब में जितना अटूट विश्वास है, उतना ही उत्पन्न करा देना।" - ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं।

ज. ७३- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को जैसे वे सब ब्रह्मसृष्टि के अवतार हैं; जैसा उनके लिए परमधाम में कहा जाता है, वैसी ही चाल चलकर दिखाने को कह रहे हैं।

ज. ७४- श्रीजी स्वरूप धर्मवीर मोमिनों को जैसे-"जिस धाम का उन्हें कहा जाता है, वैसा ही बड़प्पन दिखाते हुए गम्भीरतापूर्वक जागनी का कार्य करते रहने को कह रहे हैं।"

ज. ७५- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को ब्रह्मसृष्टियों के लिये कुरान-पुराण के ब्रह्मवाक्यों में कथित आचरणवत् कदम बढ़ाने को कह रहे हैं।

ज. ७६- इतने दिनों तक परब्रह्म श्री राजजी ने मोमिनों के लिए श्रीजी स्वरूप श्री प्राणनाथजी को इस पंचभौतिक शरीर में पकड़कर बैठा रखा है।

ज. ७७- बारह धर्मपरायण शूरवीर मोमिनों के सदाचरण बिना श्रीजी स्वरूप की मान-प्रतिष्ठा औरंगजेब के आगे न रह पाती।

ज. ७८- श्रीजी स्वरूप प्राणवल्लभ मोमिनों को अपनी प्रतिष्ठित मर्यादा के अनुरूप चलकर मुख्यतः उनकी लाज रखने के लिए कह रहे हैं।

ज. ७९- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को आत्म-समर्पण की राह में एक-दूसरे के आगे भारी होकर रहने तथा अपने गुणों से सब को वश में कर लेने को कह रहे हैं।

ज. ८०- श्रीजी साहेब बारह मोमिनों को हमेशा सतर्क रहने के लिए कह रहे हैं क्योंकि ये बारह मोमिन बड़े मोहरे (बादशाह औरंगजेब) के साथ टक्कर ले रहे हैं।

स. ८१-नये साथी क्या देखकर धर्म की राह पकड़ेंगे?

स. ८२-उक्त नये साथियों के कार्य-कारणवश मोमिनों को क्या उपस्थित करते हुए, कैसी चाल चलकर दिखाना है?

स. ८३-धर्मवीर बारह मोमिन कैसे-कैसे गुणयुक्त विचक्षण हैं, ऐसा श्रीजी साहेब कहते हैं?

स. ८४-बारह शूरवीर मोमिनों के पास सद्गुरु स्वरूप द्वारा प्रदत्त कैसी निधि है?

स. ८५-मोमिन किस बुद्धि के स्वामी हैं?

स. ८६-कैसे लोगों को बार-बार समझाकर लिखना पड़ता है?

स. ८७-कितने दिनों के लिए ही पत्र द्वारा मिलाप है अर्थात् सशरीर भेंट नहीं हो पा रही है, ऐसा श्रीजी स्वरूप किस-को सान्त्वना देते हुए कह रहे हैं?

स. ८८-इस पत्री में किसने, किसके लिए अच्छे प्रकार से तौलकर दो-चार कठोर शब्द भी लिखे हैं?

स. ८९-श्रीजी स्वरूप ने क्या विचार कर उक्त दो-चार कठोर शब्द मोमिनों के प्रति लिखे हैं?

स. ९०-किसे, किस कार्यार्थ कुछ दिनों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है?

स. ९१-श्रीजी को बाहर निकलने के प्रति क्या आभास हो रहा है, ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों को सूचित कर रहे हैं?

ज. ८१- नये साथी मोमिनों का कथन एवम् चलन देखकर उसके अनुरूप धर्म की राह पकड़ेंगे।

ज. ८२- उक्त नये साथियों के कार्य-कारणवश मोमिनों को उच्चादर्श उपस्थित करते हुए भारी चाल चलकर दिखाना है।

ज. ८३- धर्मवीर बारह मोमिन विज्ञ समाज के मुकुटमणि, विवेकशील, चतुरता आदि गुणयुक्त विचक्षण हैं, ऐसा श्रीजी साहेब कहते हैं।

ज. ८४- बारह शूरवीर मोमिनों के पास सद्गुरु स्वरूप द्वारा प्रदत्त तारतम ज्ञान की परमातिपरम निधि है।

ज. ८५- मोमिन महामति स्वरूप परम बुद्धि के स्वामी हैं।

ज. ८६- नासमझ लोगों को बार-बार समझाकर लिखना पड़ता है।

ज. ८७- बस दो-चार दिनों के लिए ही पत्र द्वारा मिलाप है अर्थात् सशरीर भेंट नहीं हो पा रही है, ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों को सान्त्वना देते हुए कह रहे हैं।

ज. ८८- इस पत्री में श्रीजी साहेब ने मोमिनों के लिए अच्छे प्रकार से तौलकर दो-चार कठोर शब्द भी कसकर लिखे हैं।

ज. ८९- श्रीजी स्वरूप ने मोमिनों के प्रति उक्त दो-चार कठोर शब्द यह विचार कर लिखे हैं कि शायद इन शब्दों से मोमिनों के प्रयास में और दृढ़ता अथवा धैर्यता तथा लगनता आ जाये।

ज. ९०- श्रीजी साहेबजी को इसी धर्मयुद्ध के कार्यार्थ कुछ दिनों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

ज. ९१- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को सूचित करते हुए कह रहे हैं, "उक्त मेरा बाहर निकलना भी आप लोगों के लिये ही है। वह भी कार्य-

→ कारण से ही है। परन्तु कुछ अन्य कार्य के लिये भी मेरा बाहर →

स. ९२-कौन, किन्हें जूझता छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जा सकते?

स. ९३-श्रीजी स्वरूप अपने प्यारे मोमिनों को मुख्य तीर्थस्थानों और सुन्दरसाथ के प्रति क्या करने को कह रहे हैं?

स. ९४-श्रीजी स्वरूप अपने धर्मवीर प्यारे बारह मोमिनों को सकुमारबाई को जगाने में जो संघर्ष उन्हें करना पड़ा, उसका समाचार पत्र द्वारा कहाँ-कहाँ पहुँचाने का आदेश दे रहे हैं?

स. ९५-पुनः श्रीजी स्वरूप मोमिनों को समय प्राप्त कर उक्त समाचार अन्य कहाँ-कहाँ लिखकर भेजने को कह रहे हैं?

स. ९६-श्रीजी साहेबजी मोमिनों को उक्त स्थानों पर किस तरह पत्र लिखने को कह रहे हैं?

स. ९७-श्रीजी साहेबजी मोमिनों को पत्र में किसकी विशेषता दर्शाने को कह रहे हैं तथा पत्र पढ़ते ही पढ़नेवालों पर पत्र का क्या असर होना चाहिए, ऐसा कह रहे हैं?

स. ९८-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को पत्र में अन्य कौन-सा वृत्तान्त लिखने को कह रहे हैं?

ज. ९८- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं, "पत्र में रसूल मुहम्मद साहेब →

→ निकलना हो रहा है, ऐसा आभास मुझे हो रहा है।"

ज. १२ - श्रीजी स्वरूप मोमिनों को इन शराअ के शैतानों के साथ जूझता छोड़कर अन्यत्र कहीं नहीं जा सकते।

ज. १३- श्रीजी स्वरूप अपने प्यारे धर्मवीर मोमिनों को मुख्य तीर्थस्थानों और सुन्दरसाथ को पत्र द्वारा अपनी खबर देते रहने को कह रहे हैं।

ज. १४ - श्रीजी स्वरूप अपने धर्मवीर प्यारे बारह मोमिनों को सकुमारबाई को जगाने में जो संघर्ष उन्हें करना पड़ा, उसका समाचार तीर्थस्थान नवतनपुरी-जामनगर, खम्भालिया-गुजरात स्थानों के साथ-साथ पोरबन्दर, मंडई, ठट्ठा नगर, सूरत, खंभात और अहमदाबाद के साथियों को भी पत्र द्वारा लिखकर भेजने का आदेश दे रहे हैं।

ज. १५- पुनः श्रीजी स्वरूप मोमिनों को समय प्राप्त कर उक्त समाचार भड़ोच, सिद्धपुर, उदयपुर तथा मेरता के सुन्दरसाथ को भी लिखकर भेजने को कह रहे हैं।

ज. १६- श्रीजी साहेबजी मोमिनों को उक्त स्थानों पर बहुत ही प्रसन्नचित्त और आनन्दमग्न होकर इस महान् कार्य का बड़ा भारी महत्त्व बताते हुए पत्र लिखने को कह रहे हैं।

ज. १७- श्रीजी साहेबजी मोमिनों को पत्र में तारतम की शक्ति-ज्ञान द्वारा बिलकुल निर्भय होकर जागनी के ब्रह्माण्ड की विशेषताएँ दर्शाने को कह रहे हैं तथा पत्र पढ़ते ही पढ़नेवालों में भी जागनी के क्षेत्र में उतरने की हिम्मत और उत्साह उमड़ आये, ऐसा पत्र लिखने को कह रहे हैं।

→ क्यों आये, किसके लिये आये, सर्वज्ञ स्वामी इमाम मेहदी कौन हैं, वे खेल में क्यों आये, सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा तारतम लेकर आने का कारण क्या है, यह जागनी का कार्य कौन-कौन करा रहे हैं?"-इन सभी बातों का सम्पूर्ण वृत्तान्त पत्र में लिखना।

स. ९९- श्रीजी साहेब मोमिनों से किन तीन स्वरूपों की पहचान और उनके प्रकटीकरण की घोषणा करने को कह रहे हैं?

ज. ९९- श्रीजी साहेब ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों से तीनों स्वरूप अर्थात् बसरी- →

स. १००-धर्मवीर मोमिनों से श्रीजी स्वरूप कैसे-कैसे सुन्दरसाथ को दर्जानुसार पत्र लिखने को कह रहे हैं?

ज. १००- श्रीजी साहेब धर्मवीर मोमिनों से जो सुन्दरसाथ धर्म के प्रति →

स. १०१-जगह-जगह पर बसे सुन्दरसाथ को किस विषय का समाचार पूछने और उन्हें किस तरह सान्त्वना देने के विषय में पत्र लिखने हेतु श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं?

ज. १०१- जगह-जगह, गाँव-गाँव और शहर-शहर में बसे सुन्दरसाथ से →

स. १०२-पुनः अपने ही गाँव में बसे अपने साथियों में से ही यदि कोई विरोधी बनकर सुन्दरसाथ को कष्ट देते हों, तो धर्मवीर मोमिन सुन्दरसाथ से क्या करने को कहते हैं?

ज. १०२- पुनः अपने ही गाँव में बसे अपने साथियों में से ही यदि कोई →

स. १०३-धर्मवीर मोमिन ऐसे विरोधियों पर किसका प्रहार कर, उन्हें किसके अनुकूल बनाने के विषय में सुन्दरसाथजी से कह रहे हैं?

स. १०४-श्रीजी साहेब मोमिनों से सुन्दरसाथजी को भेष बदलने का कारण बताते हुए पत्र में क्या लिखने को कह रहे हैं?

ज. १०४- श्रीजी साहेब मोमिनों से सुन्दरसाथजी को भेष बदलने का कारण →

रसूल मुहम्मद साहेब, मलकी-रूह अल्लाह सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी एवम् हकी स्वरूप-महामति श्री प्राणनाथजी के कार्यकलाप की पहचान एवम् प्रकटीकरण की घोषणा करते हुए पत्र लिखने को कह रहे हैं।

→ सुस्त हैं, उन्हें उद्बोधक शब्दों का प्रयोग कर और 'हम यह सत्य बातें आपके भले के लिये लिख रहे हैं'-इस प्रकार नम्र बनकर न कि रोते-गिड़गिड़ाते हुए पत्र लिखने को कह रहे हैं।

→ धर्म विषय का समाचार पूछने हेतु और उन्हें सान्त्वना देते हुए "जो भी व्यक्ति आप लोगों को किसी भी प्रकार का कष्ट पहुँचायेगा, उसका सिर कुचलकर उसके अभिमान को नष्ट करके हम ऐसा उपाय करेंगे, जिससे आप सुन्दरसाथ को आत्मतोष प्राप्त हो।" इस प्रकार का पत्र लिखने को श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं।

→ विरोधी बनकर सुन्दरसाथ को कष्ट देते हों, तो धर्मवीर मोमिन ऐसे विरोधियों के विषय में पत्र लिखकर अवगत कराने को कह रहे हैं, जिससे वे उनका सिर कुचलकर उनके अभिमान को नष्ट करके ऐसा उपाय करें, जिससे सुन्दरसाथजी आत्मतोष प्राप्त करें।

ज. १०३- धर्मवीर मोमिन ऐसे विरोधियों पर बचनों का प्रहार करके उन्हें सुन्दरसाथ के अनुकूल बनाने के विषय में सुन्दरसाथजी से कह रहे हैं।

→ बताते हुए पत्र में 'हम भेष बदलकर दरबार में तो केवल माया में लिप्त उलटे लोगों को धर्म-मार्ग पर लगाने के लिए ही प्रविष्ट हुए हैं।'- ऐसा लिखने को कह रहे हैं।

स. १०५- भेष बदलना किसे सीधा करने की एक युक्ति है, ऐसा श्रीजी साहेब मोमिनों से पत्र में लिखने को कह रहे हैं?

ज. १०५- "हमने किसी भय या दुराग्रह से भेष नहीं बदला है। यह तो →

स. १०६- किनसे सम्पर्क साधने और मिलने में मोमिनों को यत्किंचित् भी संकोच नहीं है?

स. १०७- कौन पीछे हटने को तैयार नहीं है और क्यों?

ज. १०७- धर्मप्राण शूरवीर मोमिन अपने धर्म-कर्तव्य से पीछे हटने को →

स. १०८- श्रीजी स्वरूप नजरकैद में पड़े मोमिनों से निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा की गई मुसलमान खोजीबाई की जागनी के विषय में पत्र द्वारा सुन्दरसाथ को क्या संदेश भेजने को कह रहे हैं?

ज. १०८- श्रीजी स्वरूप नजरकैद में पड़े शूरवीर मोमिनों से निजानन्द →

स. १०९- जाति भेद का किसने पहले ही अन्त कर दिया था और अब किसने उसे निर्मूल कर दिया?

स. ११०- कौन जाति भेद विषयक बातों को स्पष्ट नहीं कर पाये?

स. १११- अब किसके समुदाय की बात संसार में किसका अस्तित्त्व नहीं रहने देगी?

स. ११२- अब किस-किसमें बँटे हुये लोग, क्या भूल जायेंगे?

→ माया में लिप्त लोगों को परमात्मा की तरफ लगाकर सीधा करने की एक युक्ति है।"- ऐसा श्रीजी साहेब मोमिनों से पत्र में लिखने को कह रहे हैं।

ज. १०६- चाहे वह बादशाह औरंगजेब हो या कोई अन्य यवनों में से हो, उनसे सम्पर्क साधने अथवा उनसे मिलने में मोमिनों को यत्किंचित् भी संकोच नहीं है।

→ तैयार नहीं हैं क्योंकि निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी ने मुसलिम जाति में भी ब्रह्मसृष्टियों की सुरताओं के प्रकट होने का संकेत किया ही है।

→ स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी द्वारा की गई मुसलमान खोजीबाई की जागनी के विषय में सुन्दरसाथजी को पत्र द्वारा यह संदेश भेजने को कह रहे हैं, "सुन्दरसाथजी! श्री सद्गुरु स्वरूप ने मुसलमान खोजीबाई की आत्मा जागृत कर उनकी परात्मा का नाम रईबाई बताया था और उन्हें तारतम देकर अपनाया था। यह बात आप सबके सामने ही है। इसे भूलना नहीं।"

ज. १०९- सद्गुरु स्वामी श्री देवचन्द्रजी ने जाति भेद का पहले ही अन्त कर दिया था। अब धर्मवीर मोमिनों ने भी उसे निर्मूल कर दिया है।

ज. ११०- निजानन्द स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी जाति भेद विषयक बातों को स्पष्ट नहीं कर पाये।

ज. १११- अब ब्रह्मसृष्टियों-मोमिनों के समुदाय की बात संसार में जाति भेद का कोई अस्तित्त्व नहीं रहने देगी।

ज. ११२- अब विभिन्न गुटों, सम्प्रदायों एवम् बहत्तर फिरकों में बँटे हुए लोग अलगाव-फिरकापरस्ती भूल जायेंगे।

स. ११३- किसकी आज्ञा से मोमिनों ने क्या दूर कर दिया?

स. ११४- मोमिनों ने किसे, किस तरह उड़ा दिया?

स. ११५- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से उक्त प्रकार की बातें लिखकर किसमें नींदग्रस्त हुई ब्रह्मात्माओं को कैसे खड़ा कर देने को कह रहे हैं?

स. ११६- श्रीजी स्वरूप यहाँ मोमिनों को शब्दों के प्रयोग के विषय में क्या सूचित कर रहे हैं?

ज. ११६- श्रीजी स्वरूप यहाँ मोमिनों को शब्दों के प्रयोग के विषय में सूचित →

स. ११७- श्रीजी साहेब बारह मोमिनों से कैसे शब्दों द्वारा अपने साथियों को जागृत करने के लिए कह रहे हैं?

स. ११८- श्रीजी साहेब प्यारे धर्मवीर मोमिनों से मूल धर्मस्थान में किन-किनके प्रति, कैसे पत्र लिखकर भेजने को कह रहे हैं?

स. ११९- मोमिनों को मूल धर्मस्थान में विराजमान गादीपतिजी द्वारा जो उत्तर मिलेगा, उससे उन्हें क्या विदित हो जायेगा?

स. १२०- किसके पत्रों का उत्तर शीघ्र प्राप्त करके, उसके द्वारा क्या कर लेने के लिए श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं?

ज. ११३- परब्रह्म स्वामी श्री राजजी की आज्ञा से मोमिनों ने चौदह लोक-ब्रह्माण्ड में फैले जातिपाँति के भेदभाव के चलते मानव में अहंकार के कारण आये विकार को दूर कर दिया।

ज. ११४- मोमिनों ने जगत् के मानव मात्र के मन में उठने और उथल-पुथल मचानेवाली विभिन्न शंकाओं को तारतम ज्ञान प्रदान कर कपूर की तरह उड़ा दिया।

ज. ११५- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से उक्त प्रकार की बातें लिखकर शीघ्रातिशीघ्र भेजने और अज्ञानता की घोर नींदग्रस्त हुई ब्रह्मात्माओं को जागृत कर खड़ा कर देने को कह रहे हैं।

→ करते हुए कह रहे हैं, "जहाँ जिस प्रकार के आदरसूचक एवम् प्रभावशाली वचनों की आवश्यकता हो, वहाँ वैसे ही शब्दों का प्रयोग करके लिखना।"

ज. ११७- श्रीजी साहेब बारह मोमिनों से अपने साथियों में जो शब्द जिनके लिए उपयुक्त हों, उन्हें वैसे ही शब्दों द्वारा बोध देकर जागृत करने के लिए कह रहे हैं।

ज. ११८- श्रीजी साहेब प्यारे धर्मवीर मोमिनों से मूल धर्मस्थान में विराजमान गादीपति श्री बिहारीजी, नागजी भाई और अखई भाई के प्रति उनके उपयुक्त शब्दों द्वारा पत्र लिखकर श्री पूज्य-स्थान नबतनपुरी, जामनगर भेजने को कह रहे हैं।

ज. ११९- धर्मवीर मोमिनों को पूज्यस्थान में विराजमान गादीपति श्री बिहारीजी द्वारा उनके पत्र का जो प्रत्युत्तर मिलेगा, उससे उन्हें यह विदित हो जायेगा कि गादीपतिजी के मन में क्या है ?

ज. १२०- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से उपरोक्त स्थानादि में भेजे हुए पत्रों का उत्तर शीघ्र प्राप्त करके सुन्दरसाथ के विचारों को जानकर अपने सनंध ग्रन्थ को समर्थित, पुष्ट एवम् प्रमाणित कर लेने को कह रहे हैं।

स. १२१-धर्मप्राण बारह मोमिन कैसे शूरवीर हैं और कैसी पाखर से सुशोभित हैं?

स. १२२-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से क्या देखकर किसी की खुशामद न करने और जब तक हो, तब तक क्या करने को कह रहे हैं?

स. १२३-श्रीजी साहेब मोमिनों से सुन्दरसाथ को तथा तीर्थस्थानों में कब तक पत्र भेजते रहने को कह रहे हैं? उससे क्या होगा?

स. १२४-किस विषय में कोई अपने मन का संदेह प्रकट न करना चाहे, तब भी क्या करने पर छिपी भावना प्रकट हो ही जायेगी?

स. १२५-गाँव-गाँव में बसे सुन्दरसाथ को किस प्रकार का पत्र लिखने का आदेश श्रीजी साहेब मोमिनों को दे रहे हैं?

स. १२६-अग्नि के सामने मोम की क्या दशा होती है? उसी प्रकार मोमिनों के शब्दों का किस पर क्या असर होगा, ऐसा श्रीजी साहेब का कथन है?

स. १२७-मोमिनों के कैसे ज्ञान की अग्नि, क्या नष्ट कर देगी?

स. १२८-दयाराम भाई के विषय में श्रीजी स्वरूप ने मोमिनों से पत्र द्वारा क्या चर्चा की?

ज. १२८- दयाराम भाई के विषय में श्रीजी स्वरूप ने मोमिनों से पत्र द्वारा →

ज. १२१- धर्मप्राण बारह मोमिन केसरी सिंह के समान शूरवीर धर्मज्ञ हैं। वे श्री तारतम ज्ञानरूपी पाखर से सुशोभित हैं।

ज. १२२- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से एक बात यह ध्यान में रखने के लिए कह रहे हैं कि किसी का पद देखकर उसकी खुशामद न करना। जब तक हो, तब तक पत्रवाहक द्वारा अपना समाचार भेजते रहना।

ज. १२३- श्रीजी साहेब मोमिनों से जब तक स्थान-स्थान में सुन्दरसाथजी को तथा तीर्थस्थानों में भेजे गए पत्रों का उत्तर न मिले, तब तक पत्र भेजते रहने को कह रहे हैं। इससे उन लोगों के विचार जाने जायेंगे।

ज. १२४- कदाच इस धर्मयुद्ध के विषय में कोई अपने मन का संदेह प्रकट न करना चाहे, तब भी बार-बार पत्र लिखने से उनकी छिपी भावना प्रकट हो ही जायेगी।

ज. १२५- गाँव-गाँव में बसे सुन्दरसाथ में से जिनकी जैसी भावनाएँ हों, उन्हें उसी प्रकार का पत्र लिखने का आदेश श्रीजी साहेब मोमिनों को दे रहे हैं।

ज. १२६- जिस प्रकार अग्नि के सामने समस्त मोम पिघल जाता है, उसी प्रकार धर्मज्ञ शूरवीर मोमिनों के शब्दों द्वारा अवश्यमेव ही लोगों का हृदय पिघलकर परिवर्तित हो जायेगा, ऐसा श्रीजी साहेब का कथन है।

ज. १२७- धर्मवीर मोमिनों के श्रद्धा-विश्वासपूर्ण ज्ञान की अग्नि सुन्दरसाथजी के विकारों को गलाकर नष्ट कर देगी। उनके मन शुद्ध हो जायेंगे।

→ कहा, "सुनने में आया है कि दयाराम के भाइयों ने यह बात सर्वसाधारण में कह दी है कि अपने भाई के भेष-परिवर्तन से वे बड़े दुःखी हैं।"

स. १२९-दयाराम के भाई किस व्यक्ति को, किस कार्य के लिए, कितने रुपये देनेवाले हैं?

स. १३०-कदाच दयाराम भाई क्या बन जायेगा, तो क्या होगा, ऐसा उसके भाइयों का कहना है?

स. १३१-उक्त कारणों की वजह से संसार को कैसा माना गया है? इस संसार में भाई पैसा खर्च क्यों कर रहा है?

स. १३२-संसार किसे कहा जाता है?

स. १३३-लोग किस लिए, किसके वशीभूत होकर चाहे जो कुछ भी कर डालते हैं?

स. १३४-किसकी कथाएँ अनन्त हैं? इस बात को ध्यान में रखकर क्या करना चाहिए?

स. १३५-यह गोविन्द भेड़ा किसके समान, किससे परिपूर्ण है?

स. १३६-उक्त बातें श्रीजी स्वरूप ने यहाँ किस लिए लिखी हैं? इसे ध्यान में रखकर श्रीजी मोमिनों को किस तरह रहने को कह रहे हैं?

स. १३७-श्रीजी साहेब यहाँ विश्वास के साथ मोमिनों से क्या कह रहे हैं?

स. १३८-श्रीजी साहेब मोमिनों को क्या सँभाल लेने और कौन-सा कार्य सतर्क होकर करने को कह रहे हैं?

ज. १२९- दयाराम के भाई उस व्यक्ति को चार हजार रुपये देनेवाले हैं, जो उनके भाई दयाराम को जान से मार डाले।

ज. १३०- कदाच दयाराम भाई मुसलमान हो गया, तो दयाराम के भाइयों की मान-मर्यादा, लाज-शर्म उसके समाज के आगे मिट्टी में मिल जायेगी, ऐसा उसके भाइयों का कहना है।

ज. १३१- उक्त कारणों की वजह से ही इस संसार को गोविन्द भेड़ा के समान स्वार्थपूर्ण माना गया है। इस संसार में भाई भाईको मरवा डालने के लिए पैसे खर्च करता है।

ज. १३२- संसार में मायावी लोगों का सम्बन्ध स्वार्थपूर्ण होता है। ऐसे स्वार्थपूर्ण आचरणयुक्त सम्बन्ध को ही संसार कहा जाता है।

ज. १३३- लोग अपनी मान-मर्यादा, लोक-लाज के लिए स्वार्थ के वशीभूत होकर चाहे जो कुछ भी कर डालते हैं।

ज. १३४- गोविन्द भेड़ा-माया नगरी की ऐसी कथाएँ अनन्त हैं। इस बात को ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिए।

ज. १३५- यह चौदह लोक रूप संसार-गोविन्द भेड़ा, भूत-प्रेतों की दुनिया के समान स्वार्थ से परिपूर्ण है।

ज. १३६- उक्त बातें श्रीजी स्वरूप ने यहाँ उदाहरण के लिए लिखी हैं। इसे ध्यान में रखकर वे मोमिनों को निःशंक होकर रहने को कह रहे हैं।

ज. १३७- श्रीजी साहेब यहाँ विश्वास के साथ मोमिनों से कह रहे हैं, "हे मोमिनों! आप सब विज्ञ, शिरोमणि सुन्दरसाथ हैं। हमें विश्वास है कि आपसे किसी प्रकार की भूल नहीं होगी।"

ज. १३८- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहते हैं, "आप बारह मोमिन धर्म के थंभ के रूप में प्रकट हो। अतः आप सब हर प्रकार से इस →

स. १३९-ब्रह्मनिष्ठ बारह मोमिन बारह हजार ब्रह्मात्माओं के क्या हैं? उन्होंने बड़े साहस से क्या किया?

स. १४०-वेदों ने किसे, किसमें बाँधकर, क्या किया? धर्मनिष्ठ बारह मोमिनों ने उसे क्या किया?

स. १४१-मोमिनों ने किसका ध्यान छोड़कर यह मोर्चा तोड़ दिया?

स. १४२-बारह मोमिन किसके गढ़ में प्रविष्ट हुए हैं? वे अलग-अलग होकर भी कैसे हैं?

स. १४३-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अलग-अलग होकर भी उन शराअ के काज़ियों की नज़र में कैसे रहने के लिए कह रहे हैं?

स. १४४-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को किसके बीच पहुँचकर, क्या नहीं रखने को कह रहे हैं? इसका परिणाम क्या होगा?

स. १४५-श्रीजी साहेब मोमिनों को ये सभी बातें पत्र में क्यों लिख रहे हैं?

स. १४६-किस समय श्रीजी स्वरूप मोमिनों को नज़रकैद से बुला लेंगे, ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं?

→ के कार्य को सतर्क होकर करना। ”

ज. १३९- ब्रह्मनिष्ठ बारह मोमिन बारह हजार ब्रह्मात्माओं के शिरोमणि सिरदार हैं। उन्होंने बड़े साहस से शब्द कहे हैं।

ज. १४०- वेदों ने मानव मात्र को जातिपाँति, वर्णाश्रम धर्म की मर्यादाओं में बाँधकर बाँट दिया। धर्मनिष्ठ मोमिनों ने उक्त मर्यादारूपी बन्धन को तोड़ दिया।

ज. १४१- शूरवीर मोमिनों ने लोक-लाज एवम् मर्यादा का ध्यान छोड़कर यह मोर्चा तोड़ दिया।

ज. १४२- बारह धर्मनिष्ठ मोमिन शराअ के शैतानों के गढ़ में प्रविष्ट हुए हैं। ये बारह मोमिन अलग-अलग होकर भी एक इमाम के मोमिन के रूप में प्रसिद्ध हैं।

ज. १४३- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अलग-अलग अर्थात् विभिन्न मत और जाति के होने पर भी शराअ के काज़ियों की नजर में एक स्थान-एक रूप होकर अर्थात् घुल-मिलकर रहने के लिए कह रहे हैं।

ज. १४४- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को मुसलमानों के बीच पहुँचकर उनसे अलगाव नहीं रखने को कह रहे हैं। इसके फलस्वरूप उनकी नज़रों में लज्जित होना पड़ेगा।

ज. १४५- श्रीजी साहेब ब्रह्मात्माओं-मोमिनों को ये सभी बातें पत्र में सावधान करने के लिए लिख रहे हैं, जिससे कि बाद में मोमिन ये न कहें कि श्रीजी साहेब ने उनसे कहा नहीं!

ज. १४६- उचित और अनुकूल अवसर आने पर श्रीजी स्वरूप मोमिनों को नज़रकैद से बुला लेंगे, ऐसा श्रीजी मोमिनों से कह रहे हैं।

स. १४७-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अपनी आवश्यकता पड़ने पर क्या करने को कह रहे हैं?

स. १४८-उक्त प्रकार का वातावरण बन जाने पर श्रीजी स्वरूप कहाँ आकर इकट्ठा रहने की बात कह रहे हैं?

स. १४९-श्रीजी साहेब मोमिनों को क्या किये बिना कोई भी कार्य न करने की सलाह दे रहे हैं?

स. १५०-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कहाँ का परस्पर प्रेम-स्नेह याद करके नज़रकैद में किस प्रकार रहकर कार्य करने को कह रहे हैं?

स. १५१-श्रीजी स्वरूप किसके पत्र पर 'मैं भलीभाँति विचार करके ही आगे बढ़ूँगा'-ऐसा कह रहे हैं?

ज. १५१- श्रीजी स्वरूप धर्मज्ञ शूरवीर मोमिनों के पत्र पर 'मैं भलीभाँति →

स. १५२-किस प्रकार कमर बाँधने पर ही मोमिन जागनी के कठिन कार्य का उत्तरदायित्व उठा सकेंगे, ऐसा श्रीजी का वचन है?

स. १५३-उक्त कथित प्रकार से हृदय को दृढ़ रखकर कमर बाँधकर आगे बढ़ने से नि:संदेह ही क्या होगा?

स. १५४-श्रीजी स्वरूप को क्या अन्त:प्रेरणा हो रही है, ऐसा वे मोमिनों को सूचित कर रहे हैं?

ज. १४७- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से अपनी आवश्यकता पड़ने पर उन्हें ही वहाँ बुला लेने को कह रहे हैं।

ज. १४८- उक्त प्रकार का वातावरण बन जाने पर श्रीजी स्वरूप स्वयं भी नज़रकैद में पड़े मोमिनों के पास जाकर एक साथ इकट्ठे रहने की बात कर रहे हैं।

ज. १४९- श्रीजी साहेब धर्मवीर मोमिनों को परस्पर मंत्रणा किये बिना कोई भी कार्य न करने की सलाह दे रहे हैं।

ज. १५०- श्रीजी स्वरूप मोमिनों को यह स्मरण करने को कह रहे हैं कि श्री निजधाम में वे कैसे थे? श्री निजधाम के परस्पर स्नेह-प्रेम को स्मरण करके नज़रकैद में भी उसी भाव से सलाह-मशविरा करके एकरूप होकर सभी कार्य करने को कह रहे हैं।

→ सोच-विचार कर और मोमिनों द्वारा पत्रोत्तर मिलने पर ही कामा पहाड़ी से निकलकर अन्यत्र जाने के लिए आगे बढ़ूँगा'-ऐसा कह रहे हैं।

ज. १५२- मोमिन यदि हँसते-खेलते प्रसन्नचित्त होकर कमर बाँधेंगे, तभी वे जागनी के कठिन कार्य का उत्तरदायित्व उठा सकेंगे, ऐसा श्रीजी साहेब का वचन है।

ज. १५३- उक्त कथित प्रकार से हृदय को दृढ़ रखकर यदि धर्मनिष्ठ शूरवीर मोमिन कमर बाँधकर आगे बढ़ेंगे, तो निःसंदेह ही वे सफलता प्राप्त करेंगे।

ज. १५४- श्रीजी स्वरूप को इस जगह से दो-चार दिन अलग रहने अथवा अन्यत्र कहीं चले जाने की अन्तःप्रेरणा हो रही है, ऐसा वे मोमिनों को सूचित कर रहे हैं।

स. १५५-क्या धर्मनिष्ठ मोमिनों का मार्गदर्शन करेगा अथवा उन्हें प्रकाश दिखायेगा?

स. १५६-मोमिनों पर किसे पत्र लिखकर समाचार लेने का आदेश हुआ?

स. १५७-श्रीजी स्वरूप भीम भाई के विषय में मोमिनों से क्या कह रहे हैं?

स. १५८-पत्रों द्वारा भी कौन नहीं समझेंगे और क्यों?

स. १५९-किससे पीछा नहीं छुड़ाया जा सकता और क्यों?

स. १६०-इस संसार को कैसा ठिकाना कहा गया है और क्यों?

स. १६१-किसके बीच, किनकी आज्ञा के बिना कोई भी जागृत नहीं हो सकता?

स. १६२-पुनः किनकी आज्ञा के सिवाय, किसका अन्य कोई उपाय भी नहीं है?

स. १६३-इस संसाररूपी सागर में क्या भरा हुआ है तथा इस सागर में कैसी-कैसी लहरें उठतीं हैं?

स. १६४-इस अथाह अपार मोहजल से पूर्ण भवसागर में कौन समझदारी से सचेत होकर रहते हैं?

ज. १५५- उक्त लिखित उदाहरण-दृष्टांत एवम् अवतरित ब्रह्मवाक्य धर्मनिष्ठ साहसी मोमिनों का मार्गदर्शन करेगा अथवा उन्हें प्रकाश दिखायेगा।

ज. १५६- मोमिनों पर उदयपुर स्थित भीम भाई को पत्र लिखकर उनका समाचार लेने का आदेश हुआ।

ज. १५७- श्रीजी स्वरूप भीम भाई के विषय में पत्र द्वारा मोमिनों से कहते हैं, "हे मोमिनों! भीम भाई अब भी समझे नहीं हैं। वे माया में भटक गये हैं, उन्हें अब और क्या कहा जाय?"

ज. १५८- इन पत्रों द्वारा भी भीम भाई नहीं समझेंगे क्योंकि उनकी अन्तरात्मा में मोह-निद्रा का प्रवेश हो रहा है।

ज. १५९- मायावी नींद से पीछा नहीं छुड़ाया जा सकता क्योंकि माया की यह नींद भी प्रियतम परमात्मा की आज्ञा से ही उत्पन्न हुई है।

ज. १६०- इस संसार को उपहास का पात्र बना देनेवाला ठिकाना कहा गया है क्योंकि इस ठौर में आकर कोई भी बच नहीं पाता, फँस ही जाता है।

ज. १६१- इस बलवती माया के बीच परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की आज्ञा के बिना कोई भी जागृत नहीं हो सकता।

ज. १६२- पुनः उन परमात्मा श्री राजजी की आज्ञा के सिवाय जागृत होने का अन्य कोई उपाय भी नहीं है।

ज. १६३- इस अथाह संसाररूपी सागर में अपार मोहजल भरा हुआ है। इस सागर में दुर्बलताओं एवम् विकारों की नई-नई लहरें उठतीं हैं।

ज. १६४- इस अथाह अपार मोहजल से पूर्ण भवसागर में कुछ ही लोग समझदारी से सचेत होकर रहते हैं। वे अन्य कोई नहीं, अपितु ब्रह्मनिष्ठ स्वामी की अंग स्वरूपा उनकी प्यारी ब्रह्मात्माएँ मात्र हैं।

स. १६५-इस समय किसने और किसको मोल ले लिया, ऐसा श्रीजी साहेब मोमिनों से कह रहे हैं?

स. १६६-किसकी आत्मा, किसकी आत्मा से कदापि पृथक नहीं हो सकती? क्यों?

स. १६७-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से क्या निश्चित कर सत्य रूप से मान लेने के लिए कह रहे हैं?

ज. १६७- श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं, "यह निश्चित कर सत्य →

स. १६८-श्रीजी स्वरूप मोमिनों को किस प्रकार आगे बढ़ने को कह रहे हैं?

स. १६९-श्रीजी साहेब का समाचार मोमिनों को कौन अवगत करायेंगे? अतः श्रीजी स्वरूप मोमिनों को उनकी बातें क्या करने को कह रहे हैं?

स. १७० कौन भाई, किनका समाचार लेकर श्रीजी साहेब के पास पहुँचे? समाचार सुनकर श्रीजी साहेब को क्या हुआ?

स. १७१-श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कब और कैसे एक-दूसरे के सारे दुःख क्या कर लेने की बातें कर रहे हैं?

स. १७२-कौन, किससे प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं? कौन, किसे, हमेशा कैसे रहने का आशीर्वाद दे रहे हैं?

ज. १६५- श्रीजी साहेब बारह मोमिनों से कह रहे हैं, "हे धर्मप्राण मोमिनों! आप बारह जनों ने तो इस समय मुझे मोल ले लिया है!!"

ज. १६६- उक्त कारण से यह अकाट्य निश्चित है कि अब धर्म के नाम पर कुरबान होनेवाले धर्मनिष्ठ शूरवीर मोमिनों की आत्मा अपने धनी श्रीजी साहेब से कदापि पृथक नहीं हो सकती।

→ रूप से मान लो कि सर्व जगत् के मान्य एक परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के प्रति दृढ़ विश्वास रखनेवाले एकनिष्ठ मोमिन हैं।"

ज. १६८- श्रीजी स्वरूप धर्मप्राण शूरवीर मोमिनों को धर्म-संघर्ष का पूर्ण दायित्व सिर पर होने से भलीभाँति अपना ध्यान रखते हुए सँभलकर आगे बढ़ने को कह रहे हैं।

ज. १६९- श्रीजी साहेब का समाचार मोमिनों को शेख बदल भाई अवगत करायेंगे। अतः श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं, "शेख बदल भाई जो कुछ कहें, उसे सत्य मानना एवम् ध्यानपूर्वक उनकी बातों को सुनना।"

ज. १७०- शेख बदल भाई दिल्ली में नजरकैद शूरवीर मोमिनों का समाचार लेकर कामा पहाड़ी में स्थित श्रीजी स्वरूप के पास पहुँचे। मोमिनों का समाचार सुनकर श्रीजी स्वरूप को बड़ा सुख मिला। उन्हें अपार प्रसन्नता का अनुभव हुआ।

ज. १७१- जब श्रीजी साहेब और बारह धर्मनिष्ठ मोमिन फिर मिलेंगे, तब दोनों हँस-हँसकर परस्पर एक-दूसरे के सारे दुःख निर्मूल-दूर कर देंगे, ऐसी बातें श्रीजी स्वरूप पत्र द्वारा मोमिनों से कर रहे हैं।

ज. १७२- श्रीजी साहेबजी धर्मप्राण मोमिनों से अत्यन्त प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं। श्रीजी साहेब मोमिनों को सदैव जागृत एवम् सुखी रहने का आशीर्वाद दे रहे हैं।

स. १७३-श्रीजी साहेबजी विशेषकर किन्हें शाबाशी देते हुए प्रणाम कर रहे हैं? क्यों?

स. १७४-किसने, किस तरह कदम बढ़ाया है? अब कौन मोमिनों के पास आ रहे हैं?

स. १७५-किनसे मिलकर, बारह शूरवीर मोमिनों को क्या प्राप्त होगा, ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं?

स. १७६-इसके उपरान्त श्रीजी साहेब किन्हें, किस तरह, क्या लिखते रहने को कह रहे हैं? किन्हें, किसकी आत्मा का प्रणाम स्वीकार हो?

स. १७७-बीतककार स्वामी श्री लालदासजी पन्नी के अंत में प्यारे सुन्दरसाथजी से क्या कह रहे हैं? इसके आगे किस विषय के कैसे मुकदमे का विवरण है?

ज. १७७- बीतककार स्वामी श्री लालदासजी पन्नी के अंत में प्यारे सुन्दरसाथजी से कह रहे हैं, "हे प्यारे सुन्दरसाथजी! यह श्रीजी →

❖ राजस्थान के पड़ाव ❖

स. १- श्री प्राणनाथजी राजस्थान के आमेर शहर में कहाँ से आए हैं? उनके साथ इस समय कितनी जमात है?

ज. १- महामति श्री प्राणनाथजी दिल्ली-कामा पहाड़ी से चलकर →

ज. १७३- श्रीजी साहेबजी विशेषकर लालबाई को अपनी ओर से शाबाशी देते हुए प्रणाम भी अवगत करने को कह रहे हैं क्योंकि वे स्त्री होते हुए भी मर्द हैं।

ज. १७४- धर्मनिष्ठ शूरवीर मोमिनों ने अत्यधिक वीरता दिखाकर कदम बढ़ाया है। अब शेख बदल भाई मोमिनों के पास आ रहे हैं।

ज. १७५- भाई शेख बदल से मिलकर बारह शूरवीर मोमिनों की आत्मा को सुख-शांति प्राप्त होगी, ऐसा श्रीजी स्वरूप मोमिनों से कह रहे हैं।

ज. १७६- इसके उपरान्त श्रीजी साहेब धामस्थ शूरवीर मोमिनों से सुख-सन्तोष और आनन्द-मंगल का पत्र लिखते रहने को कह रहे हैं तथा साथ ही समस्त सुन्दरसाथ सहित लालबाई की आत्मा को मुझ इन्द्रावती का प्रणाम स्वीकार हो, ऐसा भी कह रहे हैं।

→ साहेबजी द्वारा लिखे उस पत्र का यथार्थ वृत्तान्त है, जो उन्होंने हमें जब हम बादशाह औरंगजेब की नजरकैद में दिल्ली में थे, तब लिखा था। इसके आगे कुरान में वर्णित भविष्य के विषय में कहेंगे, जिसमें क़यामत-जागनी के समय के मुकदमे का विवरण है।"

- (प्रकरण ४८, सवाल-जवाब नं. १७७, कुल सं.२८९७+१७७ =३०७४)।

❖ राजस्थान के पड़ाव ❖

→ राजस्थान के आमेर शहर में आये हैं। उनके साथ इस समय जमात नहीं है। सिर्फ छबीलदास और मलूकचन्द-ये दो भाई हजूरी के रूप में साथ में हैं।

स. २- श्री प्राणनाथजी आमेर में कितने दिन ठहरे? वहाँ से निकलकर किस ओर चले?

स. ३- इस समय मुकुन्ददासजी कहाँ थे? वे सांगानेर क्यों आ रहे थे?

स. ४- सांगानेर में मुकुन्ददासजी ने किनके द्वारा बारह मोमिनों के भीषण धर्मयुद्ध का समाचार सुना?

स. ५- पुनः मुकुन्ददासजी का सांगानेर छोड़कर आमेर आने का मुख्य कारण क्या था?

स. ६- आमेर पहुँचकर मुकुन्ददासजी ने क्या समाचार सुना, जिससे वे पुनः सांगानेर लौट आये?

स. ७- आमेर से सांगानेर आते समय मुकुन्ददासजी को राह में कौन मिले?

स. ८- कौन दोनों मिलकर श्री प्राणनाथजी से मिलने, किस मार्ग से सांगानेर जा रहे थे?

स. ९- उक्त दोनों भाइयों को लूटने की नीयत से किसने उनका पीछा किया? अतः उक्त दोनों भाई भयभीत होकर किस ओर भाग चले?

स. १०-उक्त दोनों भाई भागते-भागते किस गाँव में घुस गये?

आग्रह



तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विषे रस लाग ।
पाउं पकड़ कहे इन्द्रावती, उठ खड़े रहो जाग ।।

- (प्रकाश हिं. प्र.१७/चौ.२१) ।

अर्थः- हे मेरे धाम के सुमन सुन्दरसाथजी !

आप सभी तो अत्यंत ही बुद्धिमान्, होशियार एवं समझदार हैं । सुनो, देखो और विचार करो ! पंचविषय के इन्द्रियजन्य स्वाद में ही मत लगे रहो । मैं इन्द्रावती आप सबके चरण पकड़कर कहती हूँ कि अज्ञानरूपी निद्रा में से ज्ञान लेकर जागो ! उठो !! खड़े हो जाओ !!! क्योंकि आब अपने घर जाने का समय हो गया है।

- लेखक

पुनश्चः-

❋ आत्मीय प्रेमाग्रह ❋

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को ।
बिचार देखो हादीय की, बानी ले दिलमों ।।

- (श्री खुलासा, प्र.१६/चौ. ७९)।

हे मेरी प्यारी धामस्थ आत्माओं ! आप लोग निजधाम से इस दुःखरूपी ब्रह्माण्ड में क्यों आए हो ? असत्, जड़, दुःख और सत्, चिद्, आनन्द का तारतम ज्ञान के माध्यम से संतुलनात्मक ज्ञानार्जित कर उस ज्ञान के द्वारा आत्म-जागृति करो क्योंकि आत्म-जागृति का अपूर्व, अवर्णनीय सुखानुभव करने के लिए ही आप सब श्री राजजी से वचनबद्ध होकर आये हो । दिए हुए वचन को याद करो ।

श्री राजजी ने आप लोगों को दिए हुए वचन को बिलकुल भूलकर कुम्भकर्णवत् मायावी नशे में चूर होकर सोवने के अथवा भूलने के लिए खेल में नहीं भेजा है। यदि आप सब धामधनी सम्बन्धी आत्माओं में से हो, तो अपने हादी-सद्गुरु निजानन्द श्री देवचंद्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी प्रदत्त उक्त वाणी की चौपाई को कोमल चित्त में धारण करो और निश्चिंत होकर शीघ्रातिशीघ्र निर्णय कर लो कि आप लोग धाम से संसार में क्यों आए हो तथा श्री राजजी ने क्यों भेजा है ? खेल में आकर क्या करना था ? विचार-विवेक करके देखो ! क्या आप सब दिए हुए वचनानुसार चल रहे हो ?

हे आत्माओं !

चरण पकड़ कहे यशवन्ती,
उठो ! खड़े रहो जाग ।

- प्रणाम ।

ज. २- श्री प्राणनाथजी आमेर शहर में एक-दो दिन ठहरे। फिर वहाँ से निकलकर सांगानेर चले।

ज. ३- इस समय मुकुन्ददासजी उदयपुर में थे। वे श्रीजी साहेबजी से मिलकर दिल्ली के सुन्दरसाथ के विषय में बात करने के लिए सांगानेर आ रहे थे।

ज. ४- सांगानेर आकर मुकुन्ददासजी वहाँ के साथियों से चर्चा करने लगे। वहीं आकर उन्होंने दिल्ली में औरंगजेब और बारह मोमिनों के बीच चल रहे भीषण धर्मयुद्ध का सब ओर फैला समाचार सुना।

ज. ५- मुकुन्ददासजी ने जब सांगानेर आकर सुना कि 'श्रीजी साहेबजी इस समय आमेर में हैं।' तब श्रीजी स्वरूप से मिलने के लिए वे सांगानेर छोड़कर आमेर आ रहे थे। यही मुख्य कारण था।

ज. ६- आमेर पहुँचकर मुकुन्ददासजी ने सुना कि श्रीजी साहेबजी तो इस समय आमेर से सांगानेर चले गये हैं। अतः वे आमेर से पुनः सांगानेर लौट आये।

ज. ७- आमेर से पुनः सांगानेर आते समय मुकुन्ददासजी को राह में शेख बदल भाई मिले।

ज. ८- मुकुन्ददासजी और शेख बदल भाई मिलकर मवासियों के मार्ग से होकर श्री प्राणनाथजी से मिलने सांगानेर जा रहे थे।

ज. ९- उक्त दोनों भाइयों को लूटने की नीयत से वहाँ के मवासियों ने उनका पीछा किया। इन दोनों भाइयों की कमर में कुछ रुपये बँधे हुए थे। अतः वे दोनों लुटेरों से भयभीत होकर अपनी सुरक्षा के लिए वहाँ से उदयपुर की ओर भाग निकले।

ज. १०- उक्त दोनों-मुकुन्ददासजी और शेख बदल भाई लुटेरों से जान बचाने के लिए भागते-भागते निकट के पुरमण्डल नामक गाँव में घुस गये।

स. ११-वहाँ चलते-चलते अचानक उक्त दोनों भाइयों ने एक दुकान के बाहर चारपाई पर क्या देखा?

स. १२-श्रीजी साहेब की सेवा में उस समय कौन-कौन उपस्थित थे? देखने से ये दोनों भाई कैसे प्रतीत हो रहे थे?

ज. १२- श्रीजी साहेब की सेवा में उस समय छबीलदास एवम् मलूकचन्द →

स. १३-किन्हें उस गाँव में किसी के घर से खाने को कुछ नहीं मिला और पास में पैसे भी नहीं थे?

ज. १३- मलूकचन्द और छबीलदास भाई को उस पुरमण्डल गाँव में किसी →

स. १४-कौन श्रीजी साहेब को पहचानते ही दूर से ही दौड़कर आये और श्रीजी के चरणों में प्रणाम किया?

स. १५-शेख बदल भाई के साथ दूसरे भाई कौन थे? वे भी आकर किनके चरणों में लगे?

स. १६-किस-किस की कमर में कितने-कितने रुपये थे? भोजन का प्रबन्ध कैसे हुआ?

ज. १६- मुकुन्ददासजी की कमर के गाँठ में ४०० रुपये थे और शेख बदल →

स. १७-श्रीजी साहेबजी को अपने-अपने कमर की बसनी में से किस-किसने, कितने-कितने रुपये दिये?

ज. १७- शेख बदल भाई की जेब में तीन सौ रुपये थे। उन्होंने वे सारे →

स. १८-रात्रि में श्रीजी साहेबजी और मुकुन्ददासजी ने क्या विचार-विमर्श किया?

ज. १७- वहाँ से भयभीत होकर भागते-भागते जब अचानक उक्त दोनों भाइयों की नज़र नीचे पड़ी, तो उन्होंने देखा कि एक दुकान के बाहर चारपाई पर श्री प्राणनाथजी विराजमान हैं।

→ भाई उपस्थित थे और पास में खड़े पंखा डुला रहे थे। उन्हें देखने से ऐसा लग रहा था कि जैसे कई दिनों से भूखे हैं। भूख के कारण ये तीनों स्वरूप दुःखी प्रतीत हो रहे थे।

→ के घर से खाने को कुछ नहीं मिला क्योंकि राजस्थान के पड़ाव में लुटेरों के इस गाँव में कोई भिक्षा तक देनेवाला नहीं था। भिक्षा माँगी, परन्तु नहीं मिली और पास में पैसे भी नहीं थे। अतः ये तीनों ही तीन दिनों से भूखे पड़े थे।

ज. १४- श्रीजी साहेबजी को देखते ही शेख बदल भाई दूर से ही दौड़कर उनके पास आये और उनके चरणों में प्रणाम किया।

ज. १५- शेख बदल भाई के साथ दूसरे भाई मुकुन्ददासजी थे। वे भी आकर श्रीजी के चरणों में लगे।

→ भाई की कमर के गाँठ में ३०० रुपये थे। मुकुन्ददासजी ने उन रुपयों द्वारा बाज़ार से सामग्री मँगवाकर भोजन का प्रबन्ध किया। इस तरह यहाँ कार्य-व्यवहार चल पड़ा।

→ रुपये निकालकर श्री प्राणनाथजी के आगे रख दिए। मुकुन्ददासजी की बसनी में चार सौ रुपये थे। उसमें से उन्होंने बाज़ार से भोजन-सामग्री मँगवाकर भोजन की व्यवस्था कर दी।

ज. १८- भोजन-प्रसाद लेने के पश्चात् रात्रि के समय में श्रीजी साहेबजी और मुकुन्ददासजी ने नजरकैद में पड़े दिल्ली के बारह मोमिनों के विषय में विचार-विमर्श किया।

स. १९-किसके द्वारा, किसके प्रति किए गए दुर्व्यवहार की बातें सुनकर किसे अत्यंत खेद हुआ?

स. २०-"देखें कैसी मसलहत करत हैं"- यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है? कौन, क्या जानने के लिए उत्सुक हैं?

स. २१-कौन, किनसे और किस विषय की बातें पूछने लगे?

ज. २१- अपने साथियों पर आए कष्ट और कसौटियों को देखने के बाद श्रीजी साहेब का मुगल बादशाह औरंगज़ेब के प्रति कैसा विचार →

स. २२-मुकुन्ददासजी के उक्त प्रश्नों के उत्तर में श्री प्राणनाथजी ने क्या कहा?

स. २३-मुकुन्ददासजी ने इस समय श्रीजी के अन्दर क्या देखा?

स. २४-उक्त प्रश्नों के पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने मुकुन्ददासजी से क्या पूछा?

स. २५-कहाँ जरगा पन्थी लोग भारी संख्या में रहते हैं? वहाँ कौन-सा पंथ प्रचलित था?

स. २६-उनका धर्म-सिद्धान्त किस तरह हमारे निजानन्द सिद्धान्त का प्रतिपादन करता था?

स. २७-मुकुन्ददासजी की उक्त प्रकार की बातें सुनकर श्रीजी साहेबजी ने उन्हें क्या सलाह दी?

ज. १९- दिल्ली स्थित बादशाह औरंगज़ेब के अधिकारियों द्वारा ब्रह्मात्माओं-बारह मोमिनों के प्रति किए गए दुर्व्यवहार की बातें सुनकर मुकुन्ददासजी के मन में बड़ा खेद हुआ।

ज. २०- *"देखें कैसी मसलहत करत हैं"*-यह वाक्यांश श्री मुकुन्ददासजी के श्री मुख का है। मुकुन्ददासजी महामति श्री प्राणनाथजी के मन की बातें जानने के लिए बड़े उत्सुक हैं।

→ है? आगे के कार्यक्रम के लिए श्री प्राणनाथजी की क्या सलाह है? इस प्रकार श्रीजी के विचार जानने के लिए मुकुन्ददासजी उक्त बातें पूछने लगे।

ज. २२- मुकुन्ददासजी के उक्त प्रश्नों के उत्तर में श्रीजी साहेब ने उनसे कहा, "अब मैं औरंगजेब को कदापि नहीं छोड़ूँगा। अन्य उपाय करके भी मैं उसे जड़मूल से उखाड़कर नष्ट-भ्रष्ट कर दूँगा।"

ज. २३- मुकुन्ददासजी ने इस समय श्री प्राणनाथजी के अन्दर उक्त विषय में अद्भुत आवेश एवम् आत्मबल देखा।

ज. २४- उक्त प्रश्नोत्तर के पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने मुकुन्ददासजी से पूछा, "अब इसके उपरान्त आपका कहाँ जाने का विचार है?"

ज. २५- पुरमण्डल क्षेत्र के आस-पास लाखों की संख्या में जरगापन्थी रहते थे। वहाँ धनी बाबा का पन्थ प्रचलित था।

ज. २६- जिस प्रकार हमारा श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त निज-आत्मानन्द को महत्त्व देता है, उसी प्रकार उनका सिद्धान्त भी आन्तरिक आनन्दानुभूति को महत्त्व देता था। इस प्रकार उनका सिद्धान्त हमारे सिद्धान्त का प्रतिपादन करता था।

ज. २७- मुकुन्ददासजी की उक्त बातें सुनने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने उन्हें यह सलाह दी, "तुम उन जरगा पंथियों के पास जाकर →

→उनसे बात करो! यदि उचित लगे, मेरी जरूरत पड़े, तो मुझे वहीं →

स. २८-श्री प्राणनाथजी की आज्ञा शिरोधार्य करके कहाँ से, कौन-कौन, किस ओर चल पड़े?

स. २९-उक्त दोनों भाइयों पर राह में किसने आक्रमण किया? अतः दोनों भाइयों को किस ओर जाना था और वे किस ओर चले गये?

स. ३०-उदयपुर पहुँचकर मुकुन्ददासजी ने किससे, किस विषय की बातें कीं?

स. ३१-मुकुन्ददासजी ने लाधू मसानी से श्रीजी साहेबजी के विषय में क्या करने को कहा?

स. ३२-किनकी बातें मानकर लाधू मसानी ने मुकुन्ददासजी से श्रीजी स्वरूप के विषय में क्या कहा?

स. ३३-इस समय श्री प्राणनाथजी के पास कहाँ से, कितने जन और कौन-कौन आये?

स. ३४-उक्त आनेवाले लोगों ने श्री प्राणनाथजी से मिलते ही क्या किया?

स. ३५-यहाँ क्या देखकर श्री प्राणनाथजी ने अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव किया?

स. ३६-मुकुन्ददासजी ने उदयपुर से आकर श्रीजी साहेबजी से लाधू मसानी के विषय में क्या कहा?

→ बुला लेना।"

ज. २८- श्री प्राणनाथजी की आज्ञा शिरोधार्य करके मुकुन्ददासजी और मलूकचन्द भाई सांगानेर के पुरमण्डल गाँव से जरगा पन्थियों के गाँव की ओर चल पड़े।

ज. २९- उक्त दोनों भाइयों पर राह में भीलों ने आक्रमण किया। भीलों से जान बचाकर भागते-भागते उक्त दोनों भाइयों को जाना था जरगा पन्थियों के गाँव में और वे पहुँच गये उदयपुर!

ज. ३०- उदयपुर पहुँचकर मुकुन्ददासजी ने लाधू मसानी के घर जाकर श्रीजी साहेब की बातें की, जिससे लाधू मसानी को श्रीजी स्वरूप के प्रति श्रद्धा-विश्वास आ जाये।

ज. ३१- मुकुन्ददासजी ने लाधू मसानी से श्रीजी साहेबजी के विषय में कहा, "आप एक बार स्वामी श्री प्राणनाथजी के दर्शन अवश्यमेव कर लीजिए।"

ज. ३२- अपने गुरुदेव मुकुन्ददासजी की बातें शिरोधार्य करते हुए लाधू मसानी ने विनयपूर्वक उनसे कहा, "आप स्वयं श्रीजी साहेबजी को बुलाकर यहाँ लाने की कृपा करें।"

ज. ३३- इस समय श्रीजी साहेबजी के पास खंभात से बनमालीदास, रंगबाई और गोदावरीबाई-ये तीन जन आ गये।

ज. ३४- उक्त आनेवाले श्रद्धालु सुन्दरसाथजी ने श्रीजी साहेबजी से मिलते ही अपना तन, मन, धन सर्वस्व उन पर न्योछावर कर दिया।

ज. ३५- यहाँ ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों के समुदाय को एकत्रित होते देखकर श्रीजी साहेबजी ने अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव किया।

ज. ३६- उदयपुर से लौटकर मुकुन्ददासजी ने श्रीजी साहेबजी से लाधू मसानी के विषय में कहा, "लाधू मसानी अपने निजानन्द धर्म →

→ में प्रतिष्ठित हो गये हैं। उन्होंने आप सबको अपने यहाँ आमंत्रित →

स. ३७-आगरा से श्री बाईज्यूराज सहित सुन्दरसाथजी को कहाँ बुलवाया गया, उदयपुर या पुरमण्डल में?

स. ३८-कौन, कहाँ से भागकर श्री प्राणनाथजी को लेने आये?

स. ३९-लाधू मसानी सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी को कहाँ ठहराकर सेवा करने लगे?

स. ४०-लाधू मसानी की जागनी श्रीजी स्वरूप के हाथों से हुई या मुकुन्ददासजी के हाथों से ?

स. ४१-श्रीजी स्वरूप के आने का समाचार लाधू मसानी को किसने दिया?

स. ४२-श्रीजी साहेब के आगमन का समाचार सुनते ही लाधू मसानी को क्या हुआ? वे किसकी चर्चा से प्रभावित हुए?

स. ४३-सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी को ठहरने के लिए हवेली किसने दी?

स. ४४-श्रीजी साहेब की रसमयी चर्चा अब कहाँ होने लगी? वहाँ किसके सिवाय अन्य कोई बात ही नहीं होती है?

स. ४५-उदयपुर में चर्चा का प्रभाव कैसा रहा? चर्चा के प्रभाव से क्या होने लगा?

→ किया है। आपके रहने के लिए जगह की अच्छी व्यवस्था भी कर दी गयी है।"

ज. ३७- उक्त प्रकार से आमंत्रण की बातें सुनते ही श्रीजी साहेबजी ने मुकुन्ददासजी को भेजकर श्री बाईज्यूराज सहित समस्त ब्रह्ममुनियों को आगरा से सांगानेर के पुरमण्डल गाँव में बुलवा लिया।

ज. ३८- लाधू मसानी के भाई अपने घर से भागकर श्री प्राणनाथजी को लेने आये।

ज. ३९- लाधू मसानी सुन्दरसाथ सहित श्रीजी को अपने घर में ठहराकर अपने सामर्थ्य और श्रद्धानुसार अच्छी तरह से सबकी सेवा करने लगे।

ज. ४०- लाधू मसानी की जागनी श्री मुकुन्ददासजी के हाथों से हुई थी अर्थात् वे श्री मुकुन्ददासजी के हाथों से श्रीमन्निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में दीक्षित हुए थे।

ज. ४१- लाधू मसानी से मिलकर श्रीजी स्वरूप के आने का समाचार उन्हें मुकुन्ददासजी ने दिया।

ज. ४२- श्रीजी साहेब के आगमन का समाचार सुनते ही लाधू मसानी अत्यंत प्रसन्न हो उठे। श्री प्राणनाथजी की चर्चा सुनकर वे अत्यंत प्रभावित एवम् आनन्दित हुए।

ज. ४३- लाधू मसानी ने श्री प्राणनाथजी सहित उनकी जमात को ठहरने के लिए हवेली दी।

ज. ४४- लाधू मसानी द्वारा दी गई हवेली में श्री प्राणनाथजी की रसमयी चर्चा होने लगी। वहाँ परब्रह्म, परमात्मा, श्री राजश्यामाजी की चर्चा के अतिरिक्त अन्य कोई बात ही नहीं होती है।

ज. ४५- उदयपुर में लाधू मसानी की हवेली में श्रीजी साहेबजी की चर्चा के प्रभाव से नये-नये श्रोता आने लगे। अनेकों लोग प्रेम-विह्वल →

→ होकर भजन-कीर्तन, चर्चा-कथा में तल्लीन होने लगे। बहुत से →

स. ४६-यहाँ श्री प्राणनाथजी स्वरूप किन-किन ग्रन्थों द्वारा चर्चा सुनाते थे? श्रोताओं को उनके श्रीमुख की चर्चा कैसी लगती थी?

स. ४७-उक्त प्रकार की चर्चा का समाचार चारों ओर फैलते ही उदयपुर में क्या होने लगा? लोग किससे तृप्त होते थे?

ज. ४७- उक्त प्रकार की चर्चा का समाचार यत्रतत्र-सर्वत्र फैलते ही उदयपुर →

स. ४८-श्रीजी के साथ चलनेवाले सुन्दरसाथ किस तरह परमात्मा के सम्मुख हुये?

स. ४९-श्रीजी स्वरूप के श्री मुख की चर्चा सुनकर किन्हें तारतम ज्ञान और स्वामीजी की पहचान हुई?

स. ५०-इस समय श्रीजी साहेबजी से किसकी भेंट हुई? चर्चा सुनकर उन्हें क्या हुआ?

स. ५१-किसने श्रीजी साहेब की चर्चा ध्यान से सुनकर उस पर विचार भी किया?

स. ५२-इस समय कहाँ के सैयद आकर श्रीजी से मिले तथा श्रीजी साहेब की चर्चा का उन पर क्या प्रभाव पड़ा?

स. ५३-वे सैयद श्रीजी की चर्चा में क्या देखकर धर्म में समर्पित हुए?

→ सुन्दरसाथ श्रीमन्निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में दीक्षित होने लगे।

ज. ४६- यहाँ श्री प्राणनाथजी वेद, शास्त्र और कुरान, कतेब आदि ग्रन्थों द्वारा चर्चा सुनाते थे। श्रोताओं को उनके श्री मुख की चर्चा सुनकर आत्म-शान्ति प्राप्त होती थी।

→ के लोग आश्चर्यपूर्वक चर्चा से अधिक श्रीजी स्वरूप के ओजस्वी स्वरूप के दर्शन करने आने लगे। यहाँ तो केवल मधुर वाणी में अखण्ड आनन्ददायी चर्चा सुनकर ही सुन्दरसाथ तृप्त होते थे।

ज. ४८- श्रीजी के साथ चलनेवाले सुन्दरसाथ श्रीजी की बोधदायी चर्चा सुनकर परमधाम और परब्रह्म परमात्मा श्री राजश्यामाजी के सम्मुख हुये।

ज. ४९- इस हवेली में दो राजपूत आये थे। उन्होंने वहाँ बैठकर श्रीजी के श्री मुख की वाणी-चर्चा सुनी, तो उन दोनों भाइयों को तारतम ज्ञान और श्रीजी के स्वरूप की कुछ-कुछ पहचान हुई।

ज. ५०- इस समय उदयपुर स्थित लाधू मसानी की हवेली में श्रीजी साहेबजी से नूर मुहम्मद की भेंट हुई। श्रीजी की भावभरी चर्चा सुनकर उसका मन पिघलकर गद्‌गद हो उठा।

ज. ५१- नूर मुहम्मद नामक भाई ने स्वामी श्री प्राणनाथजी की बातों को ध्यानपूर्वक सुनकर उस पर विचार-विमर्श भी किया।

ज. ५२- इस समय एक बारात के सैयद आकर श्रीजी से मिले। वे श्रीजी साहेब की ओजस्वी चर्चा सुनकर अत्यंत प्रभावित हुए।

ज. ५३- उन सैयद ने हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म की चर्चा रुचिपूर्वक सुनी और ब्रह्मनिष्ठ मोमिन-साथियों का कार्य-व्यवहार देखकर धर्म में समर्पित हुए।

स. ५४-यहाँ उदयपुर की हवेली में किस-किस ने साथ समुदाय में समर्पित होकर सेवा की?

स. ५५-परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की अपार कृपा होने पर उदयपुर में लाधू मसानी के यहाँ क्या हुआ?

स. ५६-यहाँ की चर्चा और उत्सव में कौन-कौन सम्मिलित होते थे और कौन-कौन नहीं?

स. ५७-चिट्ठी आई..... चिट्ठी आई..... चिट्ठी आई..... परन्तु कहाँ से और किसकी चिट्ठी आई?

ज. ५७- जिस समय उदयपुर-लाधू मसानी के यहाँ उक्त प्रकार की धूम मच रही थी, उसी समय श्रीजी साहेबजी के लिए चिट्ठी आई। →

स. ५८-"बिना सोंटे इन पर"-यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है? इस वाक्यांश का क्या तात्पर्य है?

ज. ५८- *"बिना सोंटे इन पर"*- यह वाक्यांश दिल्ली में नज़रकैद बारह मोमिनों ने परस्पर सलाह कर निश्चित करके श्रीजी स्वरूप से →

स. ५९-मोमिनों ने भलीभाँति क्या देख लिया अथवा बादशाह औरंगजेब को किस-किस पर विश्वास नहीं है, ऐसा कहा?

स. ६०-कौन, कहाँ और किनकी आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं तथा वे किनकी आज्ञानुसार कार्य करने को तत्पर हैं?

ज. ६०- दिल्ली में बादशाह औरंगजेब से "धर्मयुद्ध" करने के लिए डटे →

ज. ५४- यहाँ उदयपुर की हवेली में सुन्दरसाथ समुदाय में समर्पित होकर सेवा करनेवाले साथ में भीखू भाई सोनी, राधाबाई, रूक्मिणीबाई, सुन्दर भाई और सोनाबाई हैं।

ज. ५५- परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की अपार कृपा अवतरित होने पर लाधू मसानी की हवेली में मयाराम, वसुदेव, सुकदेव और देरासरी भाई भी निजधाम मार्ग में प्रविष्ट हो गये।

ज. ५६- यहाँ की चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन, उत्सव-रसोई में तो वे ही लोग सम्मिलित होते थे, जिनका हाथ स्वयं श्री राजजी ने थामकर उन्हें अपने आश्रय में लिया हो, अन्य कोई नहीं।

→ यह चिट्ठी दिल्ली नज़रकैद से उन्हीं बारह मोमिनों ने भेजी थी, जो श्रीजी साहेब की आज्ञा में जी रहे थे अथवा जो शूरवीर धर्मनिष्ठ मोमिन औरंगजेब से धर्मयुद्ध करने के लिए डटे हुए थे। अतः इस चिट्ठी में धर्मनिष्ठ बारह मोमिनों ने अपने तरफ की निश्चयता लिखकर श्रीजी से निर्णय माँगा था।

→ कहा है। श्रीजी साहेबजी को बारह मोमिन औरंगजेब के विषय में ज्ञात कराते हुए कह रहे हैं, "हम लोगों ने सब ओर से देखा। यह बादशाह दैविक सोंटा मिले बिना धर्म के प्रति ध्यान देनेवाला नहीं है। जिस कार्य के लिए हम इंतजार कर रहे हैं, वह कार्य होने की संभावना तक दिखाई नहीं देती। अतः अब आगे हमें क्या करना है? हम आपकी आज्ञा के इंतजार में हैं।"

ज. ५९- मोमिनों ने भलीभाँति देख लिया कि बादशाह औरंगज़ेब को सत्य इसलाम, क़यामत और इमाम मेहदी पर तनिक भी विश्वास नहीं है। इसलिए उसने संदेश लौटा दिया और खुदा की आज्ञा ठुकरा दी।

→ हुए बारह शूरवीर मोमिन श्रीजी साहेबजी की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे आगे श्री प्राणनाथजी की आज्ञानुसार कार्य करने के लिए एक पग से तत्पर हैं।

स. ६१-मोमिनों द्वारा भेजी गई उक्त प्रकार की चिट्ठी के जवाब में श्रीजी साहेबजी ने क्या लिख भेजा?

ज. ६१- मोमिनों द्वारा भेजी गई उक्त प्रकार की चिट्ठी के जवाब में श्री →

स. ६२-"इन पर सींटा होएगा"-यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है? इस वाक्यांश के द्वारा वे क्या कहना चाहते हैं?

ज. ६२- *"इन पर सींटा होएगा"* -यह वाक्यांश श्रीजी साहेबजी के →

स. ६३-श्री प्राणनाथजी का पत्र लेकर दिल्ली स्थित मोमिनों तक पहुँचाने कौन गया?

स. ६४-श्रीजी का पत्र मिलते ही मोमिनों के दिल में क्या हुआ?

स. ६५-पत्र पढ़कर दूसरे दिन नज़रकैद में पड़े मोमिन कहाँ, किसके पास गये और क्या कहा?

ज. ६५- शेख बदल भाई द्वारा लाया हुआ श्रीजी का पत्र पढ़कर नज़रकैद →

स. ६६-मोमिनों की बातें सुनकर शेख इसलाम काज़ी ने उन्हें क्या कहा?

ज. ६६- मोमिनों की उक्त बातें सुनकर शेख इसलाम काज़ी ने कहा, →

स. ६७-पुनः दूसरी बार कितने दिन पश्चात् मोमिन शेख इसलाम काज़ी के घर गए?

ज. ६७- पुनः एक दिन छोड़कर दूसरे दिन मोमिन शेख इसलाम काज़ी के →

→ प्राणनाथजी ने लिखा, "आप लोग बादशाह के यहाँ से वापस आ जाइये। सामर्थ्यशाली परमात्मा की आज्ञा से इन पर सोंटा जरूर पड़ेगा। उन्हें वह दण्ड अवश्य ही भोगना पड़ेगा।"

→ मुखारविन्द का है। इस वाक्यांश के द्वारा वे यह कहना चाहते हैं, "अपने इष्ट-खुदा का और हादी मुहम्मद पर अविश्वास कर इमाम का पैगाम ठुकराने का परिणाम इन्हें अवश्य ही भोगना पड़ेगा।"

ज. ६३- श्री प्राणनाथजी का पत्र लेकर शेख बदल भाई दिल्ली स्थित बारह मोमिनों तक पहुँचाने गये। उन्होंने बारह मोमिनों को पत्र देकर श्रीजी की खबर सुनाई।

ज. ६४- श्रीजी साहेब की चिट्ठी देखते ही साथियों ने दिल में बड़ी प्रसन्नता का अनुभव किया। श्रीजी के प्रेममय बचनों से उनका चित्त प्रकाशित और गद्गद हो उठा।

→ में पड़े मोमिनों ने शेख इसलाम काज़ी के घर जाकर उनसे कहा, "अब आप हमें यहाँ से जाने की आज्ञा दीजिए। हम लोग अपने ठिकाने पर जाने के लिए आपसे अनुमति माँगने आए हैं।"

→ "मैं बादशाह से आप सबको जाने की स्वीकृति दिला दूँगा। आप लोग एक दिन छोड़कर परसों आना। मैं स्वयं साथ चलकर बादशाह को विशेष रूप से आपकी बात सुना दूँगा।"

→ घर गए। काज़ी कहे अनुसार मोमिनों को साथ लेकर सुलतान औरंगजेब के पास गया और उन्हें सुलतान के सामने खड़ा कर दिया। तत्पश्चात् वह स्वयं बादशाह से बात करने लगा।

स. ६८- मोमिनों को बादशाह औरंगजेब के पास ले जाकर शेख इसलाम काज़ी ने उनसे कैसा व्यवहार किया?

ज. ६८- मोमिनों को बादशाह औरंगज़ेब के पास ले जाकर काज़ी ने उन्हें →

स. ६९- शेख इसलाम काज़ी ने मोमिनों का परिचय कराते हुए बादशाह से क्या कहा?

ज. ६९- शेख इसलाम काज़ी ने मोमिनों का परिचय कराते हुए पुनः →

स. ७०- औरंगजेब बादशाह ने काज़ी की बातें सुनने के पश्चात् मोमिनों को देखकर क्या किया?

ज. ७०- शेख इसलाम काज़ी की बातें सुनकर बादशाह औरंगजेब ने तीन →

स. ७१- बादशाह ने मोमिनों को मार्ग-खर्च के लिए कितने रुपये देने का आदेश दिया?

स. ७२- बादशाह के सेवकों ने मोमिनों को मार्ग-खर्च देते हुए क्या कहा?

स. ७३- उस समय नजरबंद हुए साथी क्या जान-समझकर सन्तुष्ट थे?

स. ७४- औरंगजेब की नजरकैद से छुटने के बाद मोमिन कितने दिन दिल्ली में रहकर उदयपुर चले?

स. ७५- बारह मोमिनों ने उदयपुर में विराजमान श्री राजजी के चरणों में पहुँचने के बाद क्या किया?

ज. ७५- ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मात्माओं ने उदयपुर में विराजमान श्रीजी साहेबजी →

→ बादशाह के सम्मुख खड़ा कर दिया और कहा, "हुजूर ! ये लोग अपने घर जाना चाहते हैं। ये वही लोग हैं, जिन्होंने शरीअत के विषय में संघर्ष किया है।"

→ बादशाह से कहा, "ये वही मोमिन हैं, जिन्होंने उस दिन आपसे रू-बरू बातचीत की थी। दीन पर विश्वास लाकर समर्पित होनेवाले मोमिन यही हैं।"

→ बार मोमिनों की ओर देखकर अल्लाह का स्मरण किया। तत्पश्चात् सिर झुकाकर कुछ विचार कर कहा, "हे खुदा! इन पर कृपा कर इन्हें खैरियत बख्शिश करें।"

ज. ७१- औरंगजेब बादशाह ने अपने कर्मचारी को आदेश दिया, "इन मोमिनों को मार्ग-खर्च के लिए एक सौ रुपये दें।"

ज. ७२- बादशाह का सेवक शीघ्र आज्ञा मिलते ही दौड़कर रुपये ले आया और मोमिनों को देते हुए बोला, "हे मोमिनों! यह हुजूर की भेंट लीजिए।"

ज. ७३- उस समय नजरबंद हुए साथी-मोमिन 'बादशाह औरंगजेब ने घर जाने की स्वीकृति दे दी है' -यह जानकर सन्तुष्ट थे।

ज. ७४- धर्मयुद्ध करनेवाले धर्मनिष्ठ मोमिनों ने औरंगज़ेब की नज़रकैद से छुटने के बाद एक-दो दिन दिल्ली ठहरकर वहाँ के सुन्दरसाथ से विदा लेकर उदयपुर की ओर प्रस्थान किया।

→ के चरणों में पहुँचने के पश्चात् पहना हुआ मुसलिम भेष उतारकर हिन्दू भेष ले लिया। वे साथ समूह में सम्मिलित हो गए और पूर्ववत् धर्म-कार्य में प्रवृत्त हो गये।

स. ७६-पहली बार दिल्ली से श्रीजी के पास कितने और कौन-कौनसे मोमिन आये थे?

ज. ७६- पहली बार दिल्ली से श्रीजी के पास धर्मयुद्ध करनेवाले छः मोमिनों →

स. ७७-उक्त मोमिनों ने श्री प्राणनाथजी से मिलने पर किस सुख का अनुभव किया और अपनी आत्मा सौंप दी?

स. ७८-इस समय उदयपुर में श्रीजी साहेबजी की चर्चा का कैसा रंग चढ़ा?

ज. ७८- इस समय उदयपुर में श्री प्राणनाथजी स्वरूप द्वारा बड़े जोर-शोर →

स. ७९-श्रोतागण श्रीजी स्वरूप में किनके दर्शन करते थे? पुनः उन पर तारतम का कैसा प्रभाव पड़ा?

ज. ७९- श्री प्राणनाथजी की ओजस्वी चर्चा द्वारा श्रोतागण अपनी-अपनी →

स. ८०-उदयपुर में जब चर्चा की धूम मच गयी, तब इस बात की खबर कहाँ तक पहुँची और कहाँ के लोग चर्चा में आने लगे?

ज. ८०- उक्त प्रकार से जब उदयपुर में तारतम ज्ञान की चर्चा की धूम →

स. ८१-मोटीबाई कहाँ से श्रीजी की शरण में आईं? वे श्री प्राणनाथजी से किस विषय में हँसी-विनोद करती थीं?

ज. ८१- मोटीबाई आहेड़ की सुन्दरसाथ थीं। वे आहेड़ से श्रीजी स्वरूप →

स. ८२-उदयपुर में आध्यात्मिक कथा-चर्चा की प्रभावशाली बातें कहाँ तक फैल गईं?

→ के साथ अन्य तीन जन भी आये थे, जिनके नाम हैं - लक्ष्मण भाई, भीम भाई, श्यामदास, खिमाई भाई, श्यामलदास और गरीबदास। इनके साथ अन्य ब्रह्मात्माओं में लालबाई, श्यामबाई और रामराय भी थे। ये सब आकर श्रीजी साहेबजी के चरणों में लगे।

ज. ७७- उपरोक्त मोमिनों-ब्रह्मत्माओं ने श्री प्राणनाथजी से मिलकर अत्यधिक सुख-आनन्द का अनुभव किया और श्रीजी स्वरूप के चरणों में अपनी आत्मा सौंप दी।

→ से चर्चा की धूम मच गयी। श्रीजी स्वरूप में सबको प्रियतम परमात्मा के दर्शन होते थे। इस प्रकार चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन, उत्सव-रसोई आदि के साथ तारतम ज्ञान का अत्यधिक प्रकाश फैलने लगा।

→ भावनानुसार श्रीजी स्वरूप में प्रियतम परमात्मा के दर्शन करते थे। इस प्रकार यहाँ तारतम ज्ञान का अधिकाधिक प्रकाश फैल गया।

→ मच गयी, तो यह समाचार उदयपुर के राजदरबार में राजा के कान तक पहुँच गया। इधर एक ओर चर्चा की खबर राजदरबार में पहुँची, तो दूसरी ओर यह समाचार आहेड़ गाँव में भी पहुँच गया तथा वहाँ के लोग भी चर्चा श्रवणार्थ दौड़-दौड़कर आने लगे।

→ की शरण में आईं। उन्होंने कुछ दिन चर्चा क्या सुनी, वे तो 'मेरी बिल्ली मुझे ही म्याऊँ' की तरह स्वयं श्रीजी स्वरूप के साथ माँगे हुए खेल के विषय में हँसी-विनोद भरी मसख़री करने लगी।

ज. ८२- उदयपुर में होनेवाली आध्यात्मिक चर्चा-कथा,उत्सव-रसोई, भजन-कीर्तन आदि की प्रभावशाली बातें राजदरबार तक फैल गईं।

स. ८३-उदयपुर के राजा के राजदरबार में प्रतिदिन श्रीजी साहेब के श्री मुख की प्रभावशाली चर्चा की बातें क्यों होती थी?

ज. ८३- उदयपुर के राजा के राजदरबार में प्रतिदिन श्रीजी साहेब के श्री मुख की प्रभावशाली चर्चा की बातें होती थी क्योंकि उदयपुर में आज तक आध्यात्मिक चर्चा-कथा करनेवालों में से कोई भी →

स. ८४-उदयपुर का राणा श्रीजी की प्रभावशाली चर्चा-कथा की बातों में क्या-क्या सुनता था?

ज. ८४- उदयपुर के राणा ने राजदरबार की राजसभा में उपस्थित उभय →

स. ८५-उदयपुर के राणा की राजसभा में प्रशंसा करनेवाले श्रीजी के चर्चा की कैसी-कैसी प्रशंसा करते थे?

ज. ८५- उदयपुर के राणा की राजसभा में उपस्थित कोई सदस्य श्रीजी →

स. ८६-पुनः निन्दनीय बातें फैलानेवाले लोग श्रीजी स्वरूप के विषय में क्या-क्या कहते थे?

ज. ८६- पुनः श्रीजी स्वरूप की निन्दा करनेवाले लोग राजसभा में कहते थे, "अरे! ये महात्मा तो ठग हैं। ये हिन्दू साधु के भेष में राणा को ठगने आए हैं। ये तो कुरान पढ़ते हैं। हिन्दुओं को मुसलमान →

स. ८७-श्रीजी साहेब के विषय में निन्दनीय बातें करनेवाले लोग कैसी-कैसी बातें बना-बनाकर राणा को भटकाते-डराते थे?

ज. ८७- श्रीजी साहेब के विषय में निन्दनीय बातें करनेवाले लोग राणा को भटकाने के लिए कहते थे, "अरे! ये महात्मा हिन्दू महात्मा →

→ ऐसी विवेकवत् चर्चा नहीं सुना पाए थे और न श्रोतागण सुन ही पाए थे। यहाँ तो जो भी किसी भी भावना से मात्र एक बार आकर श्रीजी स्वरूप के अपनी आँखों से दर्शन और अपने कानों से चर्चा-श्रवण कर लेते थे, उसका बेड़ा पार ही हो जाता था। दूसरे दिन चर्चा-श्रवण करने आये बिना उन्हें चैन ही नहीं पड़ता था। जो हाल हिन्दू श्रोताओं का था, वही हाल मुसलिम श्रोताओं का भी था, तो लोग क्यों विभिन्न दृष्टि से न देखें और दिमाग से न सोचें?

→ पक्ष के लोगों की बातें सुनी। उनमें से कोई उन साधु-महात्मा की निन्दा करके नहीं अघाते थे, तो कोई उनकी प्रार्थना-स्तुति गाकर भी तृप्त नहीं होते थे।

→ साहेबजी के विषय में कहते थे, "अरे! वे तो पहुँचे हुए साधु हैं। धर्म के विषय में इनका दृष्टिकोण बड़ा विशाल (विराट) है।" पुनः कोई कहते थे, "ये महात्मा तो परमात्मा स्वरूप हैं।"

→ बनाने के लिए ही इन्होंने हिन्दू भेष लिया है। वास्तव में ये महात्मा हिन्दू नहीं हैं, बल्कि औरंगजेब द्वारा भेजे हुए मुसलमान साधु हैं। छल-कपट कर हिन्दू धर्म का संहार करके मुसलिम धर्म फैलानेवाले ढोंगी महात्मा हैं।" उक्त प्रकार से दोनों पक्षों की बातें सुनकर उदयपुर का राणा आश्चर्यचकित हो जाता था।

→ नहीं हैं। ये बड़े चतुर, छली और जादूगर हैं। कोई भी उनके पास जाता है, तो वे उस पर बुरकी डालकर उसे अपना बना लेते हैं। हिन्दू राजाओं को छलने के लिए हिन्दू भेष में आये हुए ये साधु बादशाह के फकीर हैं। उनके पास भले कोई भी आये, वे दूर से ही उनके ऊपर बुरकी डालकर उनका दिमाग फिरा देते हैं। उन्हें अपना बना लेते हैं और तत्पश्चात् उन्हें ठग लेते हैं।"

स. ८८-वेद और कुरान धर्मग्रन्थों के विषय में उदयपुर के लोग अपनी-अपनी समझ से क्या-क्या कहते थे?

ज. ८८- वेद और कुरान धर्मग्रन्थों के विषय में उदयपुर के लोगों में से →

स. ८९-लोगों की विभिन्न प्रकार की बातें सुनकर वास्तविकता जानने के लिए राणा ने किन्हें श्री प्राणनाथजी के पास भेजा?

स. ९०-उन पण्डितों को राजा ने क्या कहकर श्रीजी स्वरूप के पास भेजा था?

ज. ९०- उन पण्डितों को राजा ने यह कहकर श्रीजी स्वरूप के पास भेजा →

स. ९१-राणा द्वारा भेजे गये राणा के विश्वस्त व्यक्ति श्रीजी स्वरूप के पास कैसे आये थे? क्या वे चर्चा सुनने की नीयत से आये थे?

स. ९२-वे पण्डित श्रीजी की आत्मकल्याणकारी चर्चा सुनकर उलटे डर क्यों गये?

ज. ९२- राणा के पण्डितों ने जब श्री प्राणनाथजी की आत्मकल्याणकारी चर्चा सुनी, तो वे डर गए क्योंकि उन्हें लगा कि कदाच इन महात्मा →

स. ९३-श्रीजी साहेबजी ने आदरपूर्वक उन पण्डितों के आगे किस-किस ग्रन्थ के प्रश्न रख दिये?

ज. ९३- हिन्दू वेदों, शास्त्रों और उपनिषदों का ज्ञाता समझकर श्रीजी ने →

स. ९४-उन प्रश्नों को पढ़कर जब राणा के पण्डितों के होश हवास गुम हो गये, तो क्या सोचते हुए उन्होंने परस्पर सलाह-मशविरा किया?

→ कोई कहते थे, "ये लोग कुरान-हदीसे पढ़ते हैं।" पुनः कोई-कोई कहते थे, "नहीं ये कुरान और पुराण दोनों ही पढ़ते हैं।" इस प्रकार राणा के सम्मुख पहुँचकर लोग श्रीजी के ऐसे दोष बताते थे।

ज. ८९- विभिन्न प्रकार की बातें सुनने के बाद वास्तविकता जानने और समझने के लिए उदयपुर के राणा ने श्रीजी स्वरूप के पास अपने विश्वसनीय ब्राह्मणों (पण्डितों) को भेजा।

→ था, "वहाँ जाकर वास्तविकता का पता लगाकर मुझे बताना। वे महात्मा कैसी चर्चा करते हैं? उनकी चर्चा सुनकर चर्चा की बातें लाकर मुझे बताना। तब मैं तथ्य बातें ढूँढ़ निकालूँगा।"

ज. ९७- राणा द्वारा भेजे गए विश्वसनीय ब्राह्मण पेटार्थू, स्वार्थी और आत्मघाती व्यक्ति थे। उन्हें न ऊपरवाले का डर था, न अपने आत्मघात का! वे तो मायाजन्य सुख के पुतले थे। श्रीजी की चर्चा सुनकर वे लोग उलटा उनके निन्दक बन गए।

→ का मिलाप राणा से हो गया, तो इन महात्मा की चर्चा सुनकर राणा पिघल जायेंगे और इन्हें अपना गुरु बना लेंगे। तब वे महात्मा जैसा कहेंगे, राणा हमसे वैसा ही व्यवहार करेंगे। तब हमारी भौतिक जीवन-गाड़ी कैसे चलेगी?

→ उन पण्डितों के सामने श्रीमद्भागवत के चालीस प्रश्न और वेदान्त के पन्द्रह प्रश्न रख दिये और उनसे कहा, "आप लोग इन प्रश्नों का स्पष्टीकरण कर दीजिए।"

ज. ९४- श्रीजी साहेबजी द्वारा आगे रखे गए प्रश्नों ने पण्डितों के होश हवास गायब कर दिए क्योंकि उन प्रश्नों का उत्तर खोलने में उनकी दाल नहीं गल पा रही थी। अतः वे यहाँ नतमस्तक हो →

→ गये। श्रीजी स्वरूप ने स्वयं सभी प्रश्नों का उत्तर खुलस्त कर दिया। तब वे सोचने लगे, "धन्य! हम तो बच गये !! राणा के →

स. ९५-श्रीजी द्वारा अपना आत्म-कल्याण करने की चिन्ता छोड़कर वे श्रीजी के विषय में क्या अनर्थ सोचने लगे?

ज. ९५- श्रीजी द्वारा अपना आत्म-कल्याण करने की चिन्ता छोड़कर सभी →

स. ९६-ब्रह्माजी के वंशज-इन ब्राह्मणों की ऐसी बुद्धि ने उन्हें आत्मार्थी बनने के बदले पेटार्थू होने की सलाह क्यों दी?

ज. ९६- सतलोक स्थायी ब्रह्माजी के वंशज-इन ब्राह्मणों की ऐसी बुद्धि ने उन्हें आत्मार्थी बनने के बदले पेटार्थू होने की सलाह दी क्योंकि ये ब्राह्मण पण्डित उन्हीं ब्रह्माजी के वंशज तो थे, जिन्होंने श्री →

स. ९७-नारदजी की बातों में आकर ब्रह्माजी ने श्री कृष्णजी के विषय में क्या-क्या किया?

स. ९८-बीतककार श्री लालदासजी ने इन पण्डितों का परिचय कराने हेतु कितने और कौन-कौन से दृष्टान्त दिये हैं?

ज. ९८- बीतककार श्री लालदासजी ने इन पण्डितों का परिचय कराने →

स. ९९-दूसरे उदाहरण में पण्डितों का परिचय देने हेतु किन्हें पेश किया गया है?

ज. ९९- दूसरे उदाहरण में पण्डितों का परिचय देने हेतु यज्ञ-कर्म में लीन ऋषिश्वरों को पेश किया गया है। जैसे-एक दिन श्री कृष्णजी बछड़े चराने के लिए वन में गये थे। भूख लगने पर उन्होंने ग्वालों →

→ आगे यदि ये महात्मा इस प्रकार ये प्रश्न रख देते तो !!!" इस तरह सलाह-मशविरा करने लगे।

→ पण्डित मिलकर श्रीजी के विषय में यह अनर्थ सोचने लगे कि "अब राणा के आगे हम इन महात्मा की ऐसी निंदा करेंगे कि जिसके कारण राणा का इन महात्मा से मिलाप न हो सके। तब जाकर हम बच पायेंगे और हमारा रोजगार भी चलता ही रहेगा।"

→ कृष्णजी जब गर्भ में थे, तब तो उनकी स्तुति करते हुए कहा था कि, "संसार के कल्याणार्थ आप शीघ्र ही प्रकट हों।" और जब श्री कृष्णजी प्रकट हुए, तब उनकी अलौकिक शक्ति की परीक्षा लेने ब्रज में पहुँच गए। श्री कृष्ण की साधारण बालकों की-सी लीला ने ब्रह्माजी को चक्कर में डाल दिया। ब्रह्माजी श्री कृष्णजी की निन्दा करने लगे। यसर्थ पिताजी की भूल का अंश रूप तत्त्व इन ब्राह्मणों में भी आ गया और इसी तत्त्व ने इन ब्राह्मणों को आत्मार्थी बनने के बदले पेटार्थू बनने की सलाह दी।

ज. ९७- नारदजी की बातों में आकर ब्रह्माजी ने पहले तो श्री कृष्णजी की गर्भ-स्तुति की। पुनः उनकी शक्ति की परीक्षा लेने के लिए ग्वाल-बाल, बछड़े आदि को ब्रह्मालोक में ले जाकर छिपा दिया।

→ हेतु तीन-तीन उदाहरण दिये हैं, जिनमें से पहला उदाहरण है-ब्रज में बाललीला करते हुए श्री कृष्ण और ग्वाल-बालों का। दूसरा है-ऋषिश्वरों के पास जाकर प्रसाद माँगने का और तीसरा है-भृगु ऋषि द्वारा भगवान की छाती पर लात मारने का।

→ को यज्ञ-कर्म में रत ऋषिश्वरों के पास भोजन माँगने के लिए भेजा। परन्तु ऋषिश्वर कर्मकाण्ड द्वारा जिनकी स्तुति में लगे हुए थे, उन्हीं श्री कृष्ण को न पहचानने के कारण ऋषिश्वरों ने श्री कृष्ण के लिए भोजन माँगने आए ग्वालों को भोजन नहीं दिया और उन्हें वहाँ से डाँटकर भगा दिया।

स. १००-पुनः तीसरे दृष्टान्त में ब्रह्माजी के वंशज इन पण्डितों का परिचय किसने दिया है? उन्होंने वैकुण्ठ में जाकर क्या किया था ?

ज. १००- पुनः तीसरे दृष्टान्त में ब्रह्माजी के वंशज-इन पण्डितों का परिचय →

स. १०१-ब्रह्माजी की औलाद-राणा के इन पण्डितों ने राणा के आगे श्रीजी के विषय में कैसी बातें पेश की?

ज. १०१- ब्रह्माजी की औलाद-राणा के इन पण्डितों ने राणा के आगे श्री →

स. १०२-उक्त धर्महीन पण्डितों की बातें सुनकर राणा ने क्या निश्चय किया?

ज. १०२- धर्महीन पण्डितों की उक्त प्रकार की बातें सुनकर राणा ने →

स. १०३-एक दिन अचानक तालाब के पास कौन-कौन पहुँच गये? उस समय श्रीजी साहेबजी के साथ अन्य कौन-कौन चल रहे थे?

स. १०४-उदयपुर के तालाब (झील) के पास पहुँचकर श्रीजी साहेबजी ने क्या किया?

स. १०५-तालाब की हवेली में क्या होने लगा और वहाँ आनेवाले क्या अनुभव करने लगे?

ज. १०५- तालाब की हवेली में अब जोर-शोर से चर्चा-कथा, भजन- →

स. १०६-इस वक्त श्री प्राणनाथजी ने किनके छिपे अवगुणों का, क्या करने का सोचा?

ज. १०६- इस वक्त श्री प्राणनाथजी ने अपने सुन्दरसाथ समाज के मन →

→ कराने के लिए भृगु ऋषि को पेश किया गया है क्योंकि वे भी ब्रह्माजी के वंशज ही थे। उन्होंने वैकुण्ठ में जाकर भगवान की छाती पर लात मारकर उनकी महानता की परीक्षा लेनी चाही थी। ब्राह्मण जाति के इन पण्डितों ने भी अपने पूर्वजों के अनुसार ब्रह्म को पहचानने में भूल कर दी।

→ प्राणनाथजी की निन्दा करते हुए कहा, "ये वैरागी तो निकम्मे हैं। इनके पास तत्त्व विशेष कोई बात नहीं है। इनका तो मुख भी नहीं देखना चाहिए।"

→ पण्डितों की निन्दा पर ध्यान दिया और उसमें परमधाम का अंकुर न होने के कारण वह सांसारिक बुद्धि से ग्रस्त हो गया। उसने श्रीजी साहेब के पास तक न जाने का निर्णय किया।

ज. १०३- एक दिन अचानक भ्रमण करने के लिए राणा तालाब की ओर आया था। संयोगवश श्रीजी साहेब भी उसी तालाब के पास गये थे। उस समय उनके साथ श्री बाईज्यूराज-तेजकुँवरी सहित कुछ अन्य सुन्दरसाथ भी जा रहे थे।

ज. १०४- उदयपुर के तालाब (झील) के पास पहुँचकर श्री प्राणनाथजी ने एक हवेली में ठहरने का प्रबन्ध किया।

→ कीर्तन की धूम मचने लगी। आस-पास के लोग भी चर्चा सुनने के लिए आने लगे। श्रोताओं की तो यहाँ भीड़ उमड़ पड़ी। वहाँ आनेवाले श्रोताओं को चर्चा में अखण्ड आनन्द की अनुभूति होने लगी।

→ में छिपे अवगुणों का लेखा-जोखा करने का विचार किया क्योंकि उन्होंने उनके अन्दर सांसारिक बहुमूल्य वस्तुओं के प्रति मोह देखा।

स. १०७-यहाँ सुन्दरसाथजी के प्रति श्री प्राणनाथजी ने किस प्रकार की चर्चा की?

स. १०८-सारे संसार के सामने श्रीजी स्वरूप ने मोमिनों की जमात को धर्मशास्त्र सम्मत क्या कराया?

ज. १०८- सारे संसार से विरक्त कराने के लिए श्री प्राणनाथजी ने मोमिनों →

स. १०९-कितने सुन्दरसाथजी ने रोते-रोते फकीरी भेष स्वीकार किया और कितनों ने सहर्ष? क्यों?

ज. १०९- इस समय यहाँ कुछ मोमिनों-ब्रह्मात्माओं-सुन्दरसाथजी ने श्रीजी के आदेश अर्थात् फकीरी भेष को रो-धोकर अनिच्छापूर्वक →

स. ११०-तत्पश्चात् समस्त सुन्दरसाथ किनकी शक्ति प्राप्त कर आत्मीय भाव-दशा में आ गये?

स. १११-इस समय यहाँ राजधानी-दिल्ली से श्रीजी के पास कौन-कौन आ पहुँचे?

ज. १११- इसी समय राजधानी दिल्ली में शेष रहे हुए अन्य साथी जैसे →

स. ११२-पुनः कौन-कौन भाई सूरत की ओर से श्रीजी स्वरूप के पास आये और आकर श्रीजी साहेबजी के चरणों में प्रणाम किया?

ज. ११२- श्री मोहनदास और चतुर्भुज भाई सूरत से श्रीजी की शरण में →

स. ११३-इस समय एक पठान सौदागर सहित अन्य कौन-कौन धर्म में शामिल हुए?

अक्षरातीत श्री कृष्ण परमात्मने नमः

(श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-श्रीमन्निजानन्द संप्रदाय)

स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत बीतक साहेब

के -

श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज कृत

सवाल - जवाब

(मध्यांश - द्वितीय खण्ड)

लेखक -

"प्राणनाथ साहित्य भास्कर"-सम्मान से विभूषित

परमपूज्य "वाणी आचार्य"

श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज

संरक्षक - श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट

बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

प्रकाशक -

१. हिन्दी - श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र के संस्थापक,
"प्राणनाथ साहित्य भास्कर"-सम्मान से विभूषित
परमपूज्य "वाणी आचार्य"
श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज
बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

२. गुजराती - ज्ञान केन्द्र -
C/O श्री प्राणनाथ महिला मंडल (रजि.),
बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

पुस्तक प्राप्ति स्थान

१. श्री १०८ प्राणनाथजी मंदिर
श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम (मुक्तिपीठ),पन्ना,
मध्य प्रदेश - ४८८ ००१. संपर्क: ०७७३२-२५२०४६

२. श्री ५ महामंगलपुरी धाम
श्री कृष्ण प्रणामी मोटा मंदिर,
सैयदवाड़ा, सूरत - ३. संपर्क: ०२६१-२४२४९८६

३. श्री कृष्ण प्रणामी मूल मिलावा मानव मंदिर
वेड रोड, सूरत. संपर्क: ०२६१-२५१२७२२

४. श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट
३, सुंदरधाम बिल्डिंग, जामली गली, बोरीवली (प.),
मुंबई - ४०० ०९२. संपर्क: ०२२-२८९९ ८७५८

५. श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर
डिल्ली बाजार, काठमाण्डौ (नेपाल).
संपर्क: ००९७७-९८४१२३१०३५

६. श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर
सेवक रोड, सिलिगुड़ी, (पश्चिम बंगाल).
संपर्क: ०३५३-२६४२७२८

७. श्री कृष्ण प्रणामी साधनालय चे. ट्रस्ट
श्री प्राणनाथ वाणी प्रशिक्षण केन्द्र,
पोस्ट - गडऊमरिया, धरमपुर, दर्रामुरा,
रायगढ़, छत्तीसगढ़ - ४९६ ००१.
संपर्क: ०९९०७ ४४२ ४४२

ज. १०७- यहाँ श्री प्राणनाथजी ने अपने सुन्दरसाथ को अवगुणों से बचाने के लिए प्रवृत्ति और निवृत्ति-दोनों मार्गों के विषय में अत्यंत बोधदायी और मर्मभेदी चर्चा करके सुन्दरसाथ को समझाया।

→ की जमात-सुन्दरसाथ को धर्मशास्त्र सम्मत भेष धारण कराया। उन्हें फकीरी भेष का श्रृंगार कराया। कानों में मुद्रा पहना दी और फकीरी भेष की अन्य सभी सामग्रियाँ मोमिनों-ब्रह्मात्माओं के हाथ में दे दी।

→ स्वीकार किया और कितनों ने सहर्ष। जिन्होंने ज्ञान द्वारा भेष के मर्म को समझ लिया था, उन्होंने श्री प्राणनाथजी के आदेश को सहर्ष स्वीकार लिया और वैरागी भेष धारण कर लिया। अब यहाँ सभी सुन्दरसाथ आनन्द में नाचने-कूदने लगे।

ज. ११०- तत्पश्चात् समस्त सुन्दरसाथ परमात्मा का आवेश (शक्ति) प्राप्त कर अपने अंदर के अवगुण निकालकर आत्मीय भाव-दशा में आ गये।

→ दयाराम भाई, चंचलदास भाई, गंगाराम भाई और बनारसी भाई भी श्रीजी की शरण में आ पहुँचे। ये सभी भाई-ब्रह्ममुनि विभिन्न स्थानों से आये थे।

→ आये और आकर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी के चरणों में प्रणाम किया। इस समय अन्य भी कई ऐसे सुन्दरसाथ श्रीजी की चरण-शरण में आये, जिन्होंने श्रीजी के चरणों में अपनी आत्मा ही सौंप दी।

ज. ११३- इसी समय इनायत खाँ नामक एक पठान सौदागर आया। इनायत खाँ के साथ मुराद खाँ और अब्दुलनबी भी आये और आकर साथी-समाज में प्रविष्ट हो गये।

स. ११४-श्री प्राणनाथजी की चर्चा सुनकर किन-किन को इस हवेली में इमाम मेहदी स्वरूप की पहचान हुई?

स. ११५-यहाँ कौन-कौन श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ आये? इनमें से किसने चर्चा सुनकर इमाम मेहदी स्वरूप श्रीजी की शरण ली?

स. ११६-श्रीजी साहेबजी जब घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहे थे, उस समय राह में किस मुसलिम भाई ने श्रीजी के दर्शन प्राप्त किये?

स. ११७-उस भाई ने इस जमात में से किनसे घोड़े पर सवार वैरागी-श्रीजी स्वरूप की खबर पूछी?

स. ११८-उक्त भाई ने नूर मुहम्मद से उन वैरागी के विषय में क्या-क्या बातें पूछीं और किस तरह?

ज. ११८- उक्त भाई ने नूर मुहम्मद से उन वैरागी के विषय में पूछा, "ये →

स. ११९-उनके प्रश्नों के उत्तर में नूर मुहम्मद ने उनसे क्या कहा?

स. १२०-उक्त आनेवाले भाइयों में से किस भाई के विषय में कहा है कि वह तो "हकुल आकीन" में था?

ज. ११४- श्रीजी साहेबजी की चर्चा सुनकर इस हवेली में अलाद खाँ, यार खाँ, इलयास खाँ, अबाबकर और मिहीन खाँ को स्वामी श्री प्राणनाथजी में इमाम मेहदी स्वरूप की पहचान हुई।

ज. ११५- इस हवेली में श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ आनेवालों में उस्मान खाँ, हसन खाँ, अहमद खाँ, और अब्बल खाँ हैं। इनमें से अब्बल खाँ ने चर्चा सुनकर इमाम मेहदी स्वरूप श्रीजी साहेबजी की शरण ली।

ज. ११६- एक दिन जब श्रीजी साहेबजी घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहे थे, उनके साथ उस समय नूर मुहम्मद और अन्य साथी सब संन्यासी भेष में थे और सभी सुन्दरसाथ सतर्क होकर चल रहे थे, इसी समय अब्बल खाँ ने घोड़े पर सवार श्रीजी साहेबजी के दर्शन प्राप्त किये।

ज. ११७- उस भाई-अब्बल खाँ ने इस जमात में से नूर मुहम्मद से, घोड़े पर सवार संन्यासी-वैरागी श्रीजी स्वरूप की ओर दिखाते हुए कहा, "नूर मुहम्मद! तुम मुझे इन संन्यासी के विषय में भली प्रकार से अवगत कराओ।"

→ कैसे संन्यासी हैं? कहाँ से आये हैं? इनका परिचय क्या है? इनका पूरा परिचय मुझे बता दो। यदि तुमने मुझसे कोई बात छिपाई, तो मैं क़यामत के दिन दामन झटककर तुमसे ये बातें पूछूँगा।"

ज. ११९- उनके प्रश्नों के उत्तर में नूर मुहम्मद ने उनसे कहा, "ये वैरागी-फकीर हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म में प्रतिष्ठित हैं। कलमा और कुरान का यथार्थ ज्ञान इनके पास ही है। ये स्वरूप दीन इसलाम का वास्तविक ज्ञान देने के लिए कटिबद्ध हैं।"

ज. १२०- उक्त आनेवाले मुसलिम भाइयों में से अब्बल खाँ के विषय में कहा है कि वह तो "हकुल आकीन" अर्थात् खुदा पर अटल विश्वास रखनेवालों में से था।

स. १२१-वे कौन भाई हैं, जो अपने पीठ पर हाथों से चाबुक मारने लगे? उन्हें देखकर श्रीजी स्वरूप ने उनसे क्या कहा?

स. १२२-उस समय वहाँ क्या कार्य चल रहा था? श्रीजी स्वयं क्या कर रहे थे?

स. १२३-वहाँ सबके साथ में मुकुन्ददासजी किस रूप में कार्य कर रहे थे?

स. १२४-पठान लोग मिलकर श्रीजी साहेब के पास क्यों आए थे और उन्होंने क्या प्रश्न किया था?

ज. १२४- इस समय कुछ मुसलिम पठान लोग मिलकर श्रीजी स्वरूप -→

स. १२५-उक्त पठानों ने ऐसा क्या कहा, जिसे सुनते ही श्रीजी साहेबजी को आवेश आ गया?

ज. १२५- उन पठानों ने श्रीजी साहेबजी से कहा, "यदि आप हमारे→

स. १२६-उक्त पठानों की बातों के जवाब में श्रीजी साहेबजी ने क्या कहा?

ज. १२६- उक्त पठानों की बातों के जवाब में श्रीजी साहेबजी ने कहा, →

स. १२७-श्रीजी साहेबजी को आवेशपूर्ण देखकर किस भाई को भी आवेश आ गया?

स. १२८-अव्वल खाँ की रूह पर आवेश देखकर पठान लोग क्या करने लगे?

ज. १२१- वे भाई अब्बल खाँ ही हैं, जो आवेश में आकर अपने हाथों में चाबुक लेकर स्वयं अपने ही शरीर पर वार करने लगे। उन्हें ऐसा करते देखकर श्रीजी साहेब ने उन्हें मना किया और कहा "तुम हमारे पास आकर बैठो।"

ज. १२२- उस समय वहाँ पर परमधाम के पट अर्थात् चर्चनी का कार्य चल रहा था। श्रीजी स्वयं परमधाम का वर्णन करके विरत लिखवा रहे थे।

ज. १२३- वहाँ सबके साथ मुकुन्ददासजी उक्त कार्य की देख-रेख के लिए निरीक्षक के रूप में आगे बैठे हुए थे।

→ इमाम मेहदी के दर्शन करने के लिए आये थे। वहाँ उन्होंने इमाम मेहदी की चर्चा सुनी और प्रश्न किया, "हमारे परवरदिगार को आप अपना कैसे कहते हैं?"

→ मुहम्मद साहेब के कलमा का उच्चारण करेंगे, तो हम सब पठान भी आपके होकर रहेंगे।" वे पठान केवल इतना ही चाहते थे। उनकी उक्त बातें सुनते ही श्रीजी साहेबजी को आवेश आ गया।

→ "बड़े खेद की बात है। हमारे और मुहम्मद साहेब के बीच में आनेवाले तुम लोग कौन हो? मुहम्मद साहेब तो मेरे अन्दर हैं। तुम लोगों पर मुझे बड़ा अफसोस होता है।"

ज. १२७- श्री प्राणनाथजी को आवेशपूर्ण देखकर तुरन्त ही अब्बल खाँ की रूह पर भी आवेश आ गया।

ज. १२८- अब्बल खाँ के आवेशपूर्ण मुखमण्डल का तेज देखकर अवज्ञाकारी पठान लोग भयभीत होकर शोर मचाने लगे।

स. १२९- पठान लोग श्रीजी स्वरूप से अनुमति माँगकर घर जाने के बाद क्या-क्या कहने लगे?

स. १३०- उदयपुर का राणा एक दिन तालाब की हवेली में किस प्रकार आया और किस प्रकार रहा?

स. १३१- जब राणा भेष बदलकर श्रीजी के दर्शन के लिए आया, तब वहाँ क्या कार्यक्रम चल रहा था?

स. १३२- उदयपुर का राणा तालाब की हवेली में आया तो सही, पर क्या उसने श्रीजी साहेबजी से भेंट करके उनसे कुछ बातचीत की?

ज. १३२- नहीं! उदयपुर का राणा तालाब की हवेली में आया तो सही, परन्तु डर के मारे वह श्रीजी के पास नहीं आया क्योंकि उसके →

स. १३३- किस लीला के कीर्तन सुनकर उदयपुर का राणा अपने नसीब के मुताबिक अपनी आत्मा निर्मल कर गया?

ज. १३३- रासलीला के कीर्तनों को सुनकर राणा बड़ा आनन्दित हुआ। →

स. १३४- "तिनसो मसकरी करे"-यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है? कौन और किनसे मसखरी करते थे?

ज. १३४- *"तिनसो मसकरी करे"*-यह वाक्यांश बीतककार श्री →

स. १३५- अमराजी भाई श्रीजी के प्रति कब विश्वास लाये थे? उनके सत्संग द्वारा किस-किस ने श्री प्राणनाथजी स्वरूप की पहचान की?

ज. १२९- पठान लोग श्रीजी स्वरूप से घर वापस जाने की अनुमति माँगकर घर पहुँचकर ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मात्माओं की बुराई करते हुए विभिन्न प्रकार के अनर्गल प्रलाप करने लगे।

ज. १३०- एक दिन उदयपुर का राणा तालाब की हवेली में भेष बदलकर श्रीजी स्वरूप के दर्शन करने आया। वहाँ आकर अपना मुँह छिपाए खड़ा देखता ही रहा।

ज. १३१- जब राणा भेष बदलकर श्रीजी के दर्शन के लिए आया, तब वहाँ रासलीला के कीर्तन की धूम मच रही थी, जिसे सुनकर राणा बड़ा आनन्दित हुआ।

→ विश्वसनीय पण्डितों ने उसके अन्दर यह डर बिठा दिया था कि 'वे महात्मा आनेवाले पर बुरकी डालकर उसकी मति भ्रष्ट कर देते हैं और अपना भक्त बना लेते हैं।' इस बात से भयभीत होकर राणा श्रीजी से दूर ही रहा। नज़दीक जाकर बातचीत नहीं कर सका।

→ उसके नसीब में बस इतना ही आनन्द लिखा था। अतः ऊपरवाले की जितनी आज्ञा थी, उतनी ही देर तक वह आनन्द ले सका। राणा की आत्मा उतनी ही निर्मल हो पाई।

→ लालदासजी का ही है। वे कहते हैं, "राणा व्यंगात्मक शब्दों में अब्बल खाँ से मसखरी करता था। मसखरी करते हुए वह कहता था-अब्बल खाँ! तुम्हें तो आत्मतत्त्व की पूर्णरूपेण पहचान हो गई है।"

ज. १३५- अमराजी भाई तो बहुत पहले ही श्रीजी साहेब जी के प्रति विश्वास ला चुके थे। अमराजी भाई के सत्संग से रामसिंह और गंगा को भी श्रीजी स्वरूप की कुछ-कुछ पहचान हो गयी थी।

स. १३६-श्रीजी स्वरूप के दर्शन करने आये भोगीदास ने श्रीजी स्वरूप की चर्चा सुनकर श्रीजी साहेबजी का दर्शन किस रूप में किया?

स. १३७-यहाँ बीतककार श्री लालदासजी महाराज सुन्दरसाथजी से किस हवेली को स्मरण करने के लिए कह रहे हैं? यह हवेली अपने धर्म-परियाण में किस विषय का मुख्य आधार है?

ज. १३७- यहाँ बीतककार श्री लालदासजी महाराज उदयपुर के तालाब की हवेली की याद दिलाते हुए कह रहे हैं, "हे सुन्दरसाथजी ! →

❖ उदयपुर ❖

स. १- उदयपुर के तालाब (झील) की हवेली से निकलकर श्री प्राणनाथजी कहाँ गये अथवा कहाँ ठहरे?

स. २- उस हवेली में श्री प्राणनाथजी से मिलने और उनके दर्शन करने कहाँ-कहाँ से लोग आये?

स. ३- सूरत से श्रीजी स्वरूप के दर्शन के लिए कौन-कौन आए थे और वे कहाँ आकर श्रीजी साहेबजी से मिले?

स. ४- किन दोनों ने आकर श्रीजी स्वरूप को प्रणाम किया और कहाँ के सुन्दरसाथ से मिले?

ज. १३६- भोगीदास श्री प्राणनाथजी के दर्शनार्थ आये थे। उन्हें श्रीजी की चर्चा अत्यंत मीठी और भली लगी। उन्होंने श्री प्राणनाथजी के स्वरूप में साक्षात् पूर्णब्रह्म परमात्मा के दर्शन पा लिये।

→ इसी हवेली में हमारे श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में प्रवृत्त सुन्दरसाथजी ने सर्गुण भेष का परित्याग कर निर्गुण भेष को धारण किया था अर्थात् माया को परित्याग कर आध्यात्मिक गुणों को धारण किया था। पुनः विराट पट की शुरूआत भी यहीं से हुई । इतना ही नहीं कुरान विषय की चर्चा भी विशेष रूप से यहीं से शुरू हुई । यसर्थ इसे याद करो।"

- (प्रकरण ४९, सवाल-जवाब नं. १३७, कुल सं.३०७४+१३७ =३२११)।

❖ उदयपुर ❖

ज. १- उदयपुर के तालाब (झील) की हवेली से निकलकर श्री प्राणनाथजी पुनः शहर में आ गए। तत्पश्चात् शहर में एक हवेली लेकर उसमें ठहरे।

ज. २- जब श्रीजी साहेबजी शहर की हवेली में आ गए, तब वहाँ इधर-उधर फैले सभी ब्रह्ममुनि आकर श्रीजी से मिले और अपने धनी का दर्शन-लाभ लेकर सुखी हुये।

ज. ३- सूरत से गोवर्धन भट्ट धोलीबाई को लेकर उदयपुर श्रीजी स्वरूप के दर्शन के लिए आ पहुँचे। वे उदयपुर शहर की हवेली में आकर श्रीजी से मिले।

ज. ४- उक्त दोनों-गोवर्धन भाई और धोलीबाई ने आकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में प्रणाम किया तथा उदयपुर में इकट्ठा हुए सुन्दरसाथ से मिले। उक्त सुन्दरसाथ के बीच श्रीजी साहेब ने जोर-शोर से चर्चा प्रारम्भ की।

स. ५- इस प्रकार चर्चा-कथा, उत्सव-रसोई, भजन-कीर्तन आदि के चलते अचानक औरंगजेब की ओर से उदयपुर के राणा को कैसा संदेश मिला? वह संदेश लेकर कौन उदयपुर आया था?

स. ६- उक्त संदेश में औरंगजेब ने उदयपुर के राणा से क्या कहा था?

ज. ६- दिल्ली सम्राट औरंगज़ेब ने उदयपुर के हिन्दू राजा राजसिंह को →

स. ७- मथुरिया ने उक्त संदेश उदयपुर के राणा तक पहुँचाने के लिए किसे माध्यम बनाया?

स. ८- राजा के कानों तक मंत्र की तरह बादशाह का वह संदेश किसने पहुँचाया?

स. ९- उक्त संदेश कानों से सुनते ही उदयपुर का राणा क्यों बहुत ही क्रोधित हो उठा?

स. १०-मथुरिया की सलाह मानने का प्रतिफल गरीबदास पुरोहित को क्या मिला?

ज. १०- मथुरिया की सलाह मानकर बादशाह का संदेश राजा तक पहुँचाने का प्रतिफल यह हुआ कि गरीबदास को राजा की फटकार सुननी →

स. ११-वह संदेश लेकर आनेवाले मथुरिया को सभा से कैसे निकाला गया?

ज. ५- इस प्रकार उदयपुर में चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन, उत्सव-रसोई आदि की धूम मच रही थी। उसी दरमियान दिल्ली के सम्राट औरंगज़ेब की तरफ से उदयपुर के राणा के नाम एक संदेश आया। वह संदेश लेकर उदयपुर के राणा तक पहुँचाने के लिए मथुरिया नामक हिन्दू भाई आए थे।

→ संदेश में कहा था, "तुम मेरे द्वारा पालनीय इसलाम धर्म पर विश्वास ले आओ। यदि तुम मुसलमान हो जाओगे, तो तुम्हें पाँच परगने भेंट में दिए जाएँगे।"

ज. ७- दिल्ली सम्राट औरंगजेब का उक्त संदेश उदयपुर के हिन्दू राजा राजसिंह के कानों तक पहुँचाने के लिए मथुरिया ने राजा के पुरोहित गरीबदास को माध्यम बनाया।

ज. ८- उदयपुर के राणा राजसिंह के कानों तक मंत्र सदृश बादशाह का वह संदेश पुरोहित गरीबदास ने पहुँचाया।

ज. ९- उक्त संदेश कानों से सुनते ही उदयपुर का राणा राजसिंह बहुत ही क्रोधित हो उठा क्योंकि बादशाह औरंगजेब ने उस संदेश में कहा था, "यदि तुम इसलाम धर्म में आ जाओगे, तो मैं तुम्हें पाँच परगने भेंट में दूँगा।"

→ पड़ी। राजा ने फटकारते हुए गरीबदास से कहा, "यदि तू पुरोहित न होता, तो तुझे मैं जीवित ही नहीं छोड़ता। अब तू मेरे राज्य से भाग जा। वरना तू जीवित नहीं रहेगा।" इस तरह कहकर राणा ने गरीबदास को राज्य से निकाल दिया।

ज. ११- उदयपुर के राणा राजसिंह तक बादशाह का संदेश पहुँचाने आनेवाले हिन्दू धर्म के पामर दूत मथुरिया को धक्के मारकर राजसभा से बाहर निकाल दिया गया।

स. १२-औरंगजेब द्वारा भेजे गए उक्त प्रकार के संदेश के विषय में उदयपुर का राजा बड़ा दुःखी क्यों हुआ?

ज. १२- बादशाह औरंगज़ेब द्वारा भेजे गए उक्त प्रकार के संदेश को सुनकर →

स. १३-मथुरिया तो वापस गया, परन्तु उसके जाने के बाद उदयपुर राज्य में हलचल क्यों मच गई?

ज. १३- मथुरिया-जो बादशाह का संदेश लेकर आया था, जिसे राजसभा →

स. १४-उक्त बातों को लेकर किसे राजा को उकसाने का मौका मिल गया?

ज. १४- उक्त बातों को लेकर दज्जाल वृत्तिवालों को श्रीजी साहेबजी के →

स. १५-राणा का संदेश मिलते ही श्री प्राणनाथजी ने उसे क्या कहला भेजा?

स. १६-इस समय राणा को श्रीजी साहेबजी ने किस प्रकार सान्त्वना दी?

ज. १६- इस समय उदयपुर के राणा राजसिंह को सान्त्वना देते हुए श्रीजी →

स. १७-श्री प्राणनाथजी की बातें सुनकर उदयपुर के क्षत्रिय राणा ने उन्हें क्या प्रत्युत्तर दिया?

ज. १७- श्रीजी साहेबजी की उक्त बातें सुनकर राणा ने कहा, "हम ऐसे →

स. १८-"हमसे बोझ पातसाह का"-यह वाक्यांश किनकी तरफ का है? पुनः उक्त बातों को कहने का तात्पर्य क्या है?

→ उदयपुर का हिन्दू राणा राजसिंह अधिकाधिक दुःखी हुआ क्योंकि वह मन में अपने को कट्टर हिन्दू धर्मवाला समझता था। उसे हिन्दू होने का बड़ा गर्व था।

→ से बेइज्जत करके निकाल दिया गया था, वह तो वापस लौट गया, परन्तु राणा के राज्य में बादशाह के चढ़ाई करने के भय से बड़ी हलचल मच गई।

→ विरोध में राजा को उकसाने का अवसर मिल गया। वे सब मिलकर राणा को बहकाकर उससे श्रीजी स्वरूप सहित जमात को उदयपुर से बाहर भेजने की प्रार्थना करने लगे।

ज. १५- उदयपुर के राणा राजसिंह का संदेश पाते ही श्रीजी साहेबजी ने उसे कहला भेजा, "आप चिंतित न हों, निश्चिंत रहें। बादशाह को आने दीजिए। हम स्वयं उससे वार्तालाप करके निपट लेंगे।"

→ साहेबजी ने कहा, "हे राणा राजसिंह ! आप बादशाह से कुछ मत कहना। हम औरंगज़ेब के लोगों से अथवा स्वयं बादशाह से चर्चा करेंगे। वह हमारी बातों को सुनकर हमारे द्वारा प्रतिपादित धर्ममार्ग पर चलते हुए स्वयं ही हमारी आज्ञा पालन करने लगेगा।"

→ योग्य पात्र नहीं हैं कि धर्म की चर्चा बादशाह से कर सकें। पुनः इस तरह किसी भी विषय में बादशाह की बराबरी करने का सामर्थ्य भी हममें नहीं है।"

ज. १८- *"हमसे बोझ पातसाह का"*- यह वाक्यांश उदयपुर के राणा राजसिंह के मुख का है। उसके उक्त वाक्यांश का तात्पर्य यह है कि उसमें बादशाह की एक भी आज्ञा को नकारने की ताकत नहीं है। बादशाह की एक भी आज्ञा वह ठुकरा नहीं सकता।

स. १९-राणा के पास दज्जाल स्वरूप होकर कौन बैठे थे? वे अवसर पाकर यहाँ क्या कहने लगे?

ज. १९- राणा के पास दज्जाल रूप होकर वही पेटार्थू पण्डित लोग बैठे →

स. २०-राणा के पास उपस्थित दज्जाल लोग राणा को कैसी-कैसी बातों की सलाह देते रहे?

ज. २०- राणा के पास उस समय उपस्थित दज्जाल पण्डितों में से कुछ राणा को सलाह देते हुए कहने लगे, "इन बैरागियों को राज्य से →

स. २१-पण्डितरूपी दज्जालों की उक्त प्रकार की बातों का किसने विरोध किया?

ज. २१- पण्डितरूपी दज्जालों की उक्त प्रकार की दुष्टाईपूर्ण बातें सुनकर →

स. २२-उस समय राजसभा में राणा के पास कौन बैठे हुए थे?

स. २३-कोतवाल के द्वारा राणा ने श्रीजी साहेबजी के प्रति क्या कहला भेजा?

स. २४-इसी समय किस दज्जाल की फौज ने उदयपुर को घेर लिया?

ज. २४- इसी समय कलियुगी दज्जाल स्वरूप औरंगज़ेब की फौज ने →

स. २५-इस समय श्री प्राणनाथजी ने राणा के संदेश के विषय में क्या विचार किया?

→ थे। ये कुवृत्तिग्रस्त पण्डित अवसर पाकर श्रीजी स्वरूप की निन्दा करने लगे और कहने लगे, "हमने तो पहले ही आपसे कह दिया था कि इस साधु को यहाँ रखना ठीक नहीं है।" इस प्रकार अनेक बातें बनाकर राणा के आगे वे श्रीजी स्वरूप की बुराई करने लगे।

→ बाहर निकाल दें।" दूसरे कुछ पण्डित कहने लगे, "नहीं! इन्हें लूट लेना चाहिए।" परन्तु राणा राजसिंह सबकी बातों को मात्र सुनता ही रहा। उसने ऐसी कोई अनुचित आज्ञा अपने सेवकों को नहीं दी।

→ पास में ही बैठे भीमसेन ने विरोध करते हुए कहा, "यदि वैरागियों को यहाँ हमारे राज्य में लूट लिया जाएगा, तो हमारी कितनी बदनामी होगी।"

ज. २२- उस समय राजसभा में राणा के पास भीमसेन और कोतवाल बैठे हुए थे।

ज. २३- राणा ने कोतवाल को भेजकर श्री प्राणनाथजी से प्रार्थना की, "आप दो-चार दिन के लिए यहाँ से विदा होकर कहीं अन्यत्र चले जाइए। कुछ सुख-शान्ति होने के बाद आप पुनः आ जाइयेगा।"

→ उदयपुर को चारों ओर से घेर लिया। घेराव के कारण कोई भी नगर से अपनी सुरक्षा के लिए अन्यत्र कहीं जा भी नहीं सकते थे। इस प्रकार उदयपुर में आतंक फैल गया।

ज. २५- इस समय श्रीजी साहेबजी ने राणा के संदेश के विषय में यह विचार किया, "यहाँ से जाने के लिए श्री राजजी की ही आज्ञा हुई है।" ऐसा विचार कर वहाँ से निकलने के विषय में सोचने लगे।

स. २६-उदयपुर से निकलने के विषय में विचार करते समय श्रीजी स्वरूप ने कैसी वस्तुओं को वहीं बाँट देने का आदेश दिया?

स. २७-पुनः दूसरी बार कोतवाल राणा की तरफ से क्या संदेश लेकर आया?

ज. २७- पुनः डर के मारे कोतवाल उदयपुर के राणा का आदेश लेकर →

स. २८-उस कोतवाल को श्रीजी साहेबजी ने क्या जवाब देकर भेजा?

ज. २८- श्रीजी साहेबजी ने उस कोतवाल को जवाब देते हुए कहा, "अब →

स. २९-यहाँ से जाने के लिए मुझे इस राणा के माध्यम से कौन निकाल रहे हैं, ऐसा श्रीजी के मन में आया अर्थात् श्रीजी स्वरूप की नज़र किस ओर गई और उन्होंने क्या सोचा?

स. ३०-इसी समय दूसरा कौन श्री प्राणनाथजी के दर्शन करने आया, जिसे श्रीजी साहेबजी ने सिरोपाव पहनाया और सचेत होकर रहने को कहा?

ज. ३०- इसी समय उदयपुर के राणा राजसिंह का भाई राणा महासिंह →

स. ३१-महासिंह को 'सिरोपाव' पहनाने के बाद श्रीजी स्वरूप ने उदयपुर पर आनेवाली आपत्ति के विषय में उनसे क्या कहा?

ज. ३१- राणा राजसिंह के भाई राणा महासिंह को 'सिरोपाव' पहनाने के →

ज. २६- उदयपुर से निकलने का विचार करते समय श्रीजी स्वरूप ने इस घड़ी में अनावश्यक वस्तुएँ साथ में लेकर निकलने से अच्छा वहाँ के सुन्दरसाथ समाज में ही बाँट देने का विचार किया और समस्त सामग्री को वहीं उदयपुर में बाँट देने का आदेश दिया।

→ दूसरी बार आया और राजा राजसिंह की तरफ से श्रीजी के आगे हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहने लगा, "राणा ने आपसे पुनः अनुरोध किया है कि आप इस वक्त कहीं अन्यत्र चले जाइए।"

→ यहाँ रहना हमारा धर्म नहीं है। मुझे यहाँ रखने या कहीं बाहर ले जाने का अधिकार स्वयं परमात्मा के हाथ में है । वे जहाँ चाहें, वहीं हमें रखें। अब वे हमें जहाँ ले जाना चाहते होंगे, हम ढूँढ़कर उसी जगह चले जायेंगे।"

ज. २९- राणा के बार-बार चले जाने की प्रार्थना सुनकर श्रीजी के मन में यह भास होने लगा कि यहाँ से हमें राणा राजसिंह को माध्यम बनाकर श्री राजजी ही निकाल रहे हैं। अब हमारा यहाँ रहना उचित नहीं होगा।

→ श्रीजी साहेबजी के दर्शनार्थ आया। उसे श्रीजी ने सम्मानपूर्वक सिरोपाव (सिर से पाँव तक की पूरी पोशाक) पहनाया और कहा, "अब तुम सचेत होकर रहना। हम तो तुम्हारे देश से प्रस्थान कर रहे हैं। अब तुम सब भी इस प्रदेश में शान्ति से न रह सकोगे। तुम्हारा यह प्रदेश वीरान हो जायेगा।"

→ उपरान्त उसे समझाते हुए श्रीजी स्वरूप ने उससे कहा, "देखो! इस क्षेत्र का अंधकारमय भविष्य सामने दिखाई दे रहा है। यहाँ सब कुछ उजड़ जानेवाला है। यदि तुम्हारे भाई मुझे विदा नहीं देते, यहीं ठहरने देते, तो मैं स्वयं आत्मबल के प्रयोग द्वारा इस विपत्ति को झेल लेता।"

स. ३२-पुनः राणा राजसिंह के भाई महासिंह के सिवाय अन्य किस-किसको सिरोपाव पहनाया?

ज. ३२- राणा राजसिंह के भाई महासिंह के सिवाय उदयपुर के जितने भी →

स. ३३-पुनः किस-किस के घरों में ही 'सिरोपाव' एवम् अन्य सामग्रियाँ पहुँचा दी गईं?

स. ३४-अपने साथ-साथ चलनेवालों को श्रीजी साहेब ने क्या आज्ञा दी?

स. ३५-श्री प्राणनाथजी और श्री बाईज्यूराज सहित सभी सुन्दरसाथ ने कैसे श्रृंगार को ठुकराकर कैसे भेष को अपनाया?

स. ३६-अब उक्त भेष बनाकर सभी सुन्दरसाथ कहाँ जाने की तैयारी करने लगे?

स. ३७-कैसे-कैसे बर्तन और वस्त्राभूषण सुन्दरसाथ ने वहीं वितरित कर दिए और कैसे-कैसे धारण करके चले?

स. ३८-उदयपुर में पारलौकिक धनरूपी जागृत आत्माएँ धर्म में आयीं या नहीं?

स. ३९-भूली-भटकी धाम की कितनी आत्माओं ने उदयपुर में धर्म में दीक्षित होकर अपना आत्मोद्धार किया?

ज. ३९- भूली-भटकी परंतु जिज्ञासु असंख्य आत्माएँ प्रेम से चर्चा श्रवण →

→ प्रतिष्ठित और सेवाभावी एवम् अपने साथी थे, जिन्हें श्रीजी के स्वरूप की पहचान थी, उन सबको सम्मानित करते हुए श्री प्राणनाथजी ने सिरोपाव पहनाया।

ज. ३३- जो लोग श्रीजी के प्रस्थान के समय वहाँ उपस्थित नहीं थे, उन सबके घरों में ही 'सिरोपाव' एवम् अन्य सामग्रियाँ पहुँचा दी गईं।

ज. ३४- अपने साथ-साथ चलनेवाले ब्रह्ममुनियों को श्रीजी साहेब ने "वैरागी भेष" धारण करने की आज्ञा दी।

ज. ३५- श्रीजी साहेबजी और श्री बाईज्यूराज सहित सभी सुन्दरसाथ ने क़ीमती रंग-बिरंगे वस्त्रों तथा बहुमूल्य आभूषणों का परित्याग कर निर्गुण संन्यासी (गेरुआ) वस्त्र अपना लिया।

ज. ३६- अब उक्त प्रकार से श्रृंगार आदि करके सभी सुन्दरसाथ जमात अपना कार्य व्यवहार छोड़कर उदयपुर से चलने की तैयारी करने लगे।

ज. ३७- प्रवृत्ति मार्गवालों के, मोमिनों को अनावश्यक बरतन एवम् बहुमूल्य वस्त्राभूषण वहीं-उदयपुर में वितरित कर दिये। समस्त जमात तूँबा-कूबड़ी और गुदड़ी धारण कर निर्गुण भेष लेकर निकल पड़ी।

ज. ३८- उदयपुर में श्रीजी साहेबजी की पारलौकिक धनरूपी जागृत आत्माएँ बहुत संख्या में आयीं और निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में दीक्षित हुयीं।

→ कर अपने भाग्य की सराहना करते हुए धर्म में सम्मिलित हुईं। इन्होंने बड़े प्रेम से चर्चा श्रवण कर श्रीजी स्वरूप की पहचान की और अपना आत्मोद्धार किया। सर्वप्रथम आनेवालों में लाधू मसानी, अमराजी, देवजी भाई और हर सुन्दर आदि हैं।

स. ४०-श्री प्राणनाथजी स्वरूप के चरणों में अटूट प्रेम लेकर कौन-कौन धर्म-मार्ग में सम्मिलित हुए?

स. ४१-किन-किन्होंने अखण्ड सुख का खजाना जानकर निजानन्द धर्म को अपनाया?

स. ४२-कौन-कौन माया के लगाव को परित्याग कर श्रीजी के चरणों में आये?

स. ४३-उदयपुर में अन्य भी बहुत से सुन्दरसाथ धर्म में शामिल हुए। अतः उनमें से कुछ सुन्दरसाथ के नाम का उल्लेख करो।

ज. ४३- उदयपुर में अन्य भी बहुत से सुन्दरसाथ धर्म में शामिल हुए। →

स. ४४-कौन बाई स्वयं तो आई ही, परन्तु अपने साथ-साथ अपनी संगी-सहेलियों को भी धर्म में शामिल कराया?

स. ४५-कौन-कौन श्रीजी से तारतम ज्ञान पाकर हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म में शामिल हुए?

स. ४६-किन-किनको श्री प्राणनाथजी के ज्ञान ने माया से विरक्त कर धर्म में प्रविष्ट कराया?

ज. ४०- श्री प्राणनाथजी के चरणों में अटूट प्रेम लेकर मंगलजी भाई, गिरधर भाई, गेहेला भाई, मनाबाई और हिम्मत भाई धर्म-मार्ग में सम्मिलित हुए।

ज. ४१- बेनीदास, केशवदास, शोभादास, भीमाबाई, भोगीबाई और बीरजी भाई आदि ने यह भलीभाँति जान लिया कि यह धर्म-मार्ग अखण्ड सुख का खजाना है। इसलिए वे निजानन्द धर्म सिद्धान्त पर समर्पित हुए।

ज. ४२- वे शूरवीर आत्माएँ, जो माया के लगाव को ठुकराकर श्रीजी के चरणों में आईं, उनमें श्री प्रेमदास भाई, जगन्नाथ भाई, लक्ष्मीदासजी और नारायण सोनी शामिल हैं।

→ उनमें से कुछ सुन्दरसाथ के नाम निम्नलिखित हैं। जैसे-वासुदेव भाई, इनकी माताजी, मोटीबाई, कुंजाबाई, कमलाबाई, खुशालीबाई, लालबाई, नागरबाई तथा भूरो और भत्तू। ये सभी आत्माएँ चर्चा सुनकर आत्म-जागृति कर पूर्णब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के लिए माया त्याग कर श्रीजी की शरण में आ गयीं।

ज. ४४- श्रीमन्निजानन्द धर्म सिद्धान्त में आनेवालों में केशरबाई, मनाबाई, गंगाबाई, गंगीबाई और लाड़बाई हैं। अरे! लाड़बाई ने तो कमाल ही कर दिया। वे स्वयं तो धर्म में आई ही, परन्तु अपने साथ-साथ अपनी संगी-सहेलियों को भी धर्म में शामिल कराया।

ज. ४५- कृष्णावती, बालबाई, सोनाबाई, फूलाबाई, जीवीबाई और देवबाई श्रीजी साहेबजी से तारतम ज्ञान पाकर हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म में शामिल हुईं।

ज. ४६- श्रीमती सहूबाई, गंगाबाई, जग्गूबाई, तारूबाई, बछुबाई और फूलबाई को श्री प्राणनाथजी की ओजस्वी चर्चा ने माया से विरक्त कर दिया और वे स्वप्निक जंजालरूपी माया को छोड़कर धर्म में प्रविष्ट हो गईं।

स. ४७-किस-किसने स्वप्नवत् संसार को भली प्रकार जानकर उससे विमुख होकर धर्म-मार्ग अपनाया?

ज. ४७- भोगनबाई, मथुरीबाई, गौरीबाई, मनूबाई, अमेखीबाई, दानीबाई, →

स. ४८-कौन-कौन छः सरूपदे (स्त्रियाँ) व्रज-रास लीलाएँ खेलकर यहाँ निजधाम मार्ग में आईं?

स. ४९-किन-किन्होंने अपना सर्वस्व त्याग दिया और निजानन्द धर्म में शामिल होकर सत्संग द्वारा अखण्ड आनन्द की प्राप्ति की?

स. ५०-किन-किनके ऊपर जब परब्रह्म परमात्मा की कृपा उतरी, तो वे भी साथ-समूह में आ मिलीं?

ज. ५०- भाग्यवंती अमृतदे, करमाबाई, चीमाबाई, सहोद्रीबाई, कानबाई →

स. ५१-यहाँ आनेवालों में कौन-कौन भावपूर्ण आये थे? अन्त में दर्शनादि के पश्चात् उन्होंने क्या समझा?

ज. ५१- उक्त प्रकार से आनेवालों में से कोई पहले, कोई बीच में तथा →

स. ५२-जब उदयपुर के राणा पर औरंगज़ेब की चढ़ाई हुई, तब वहाँ के प्रजा की क्या हालत हुई?

स. ५३-उस समय उस क्षेत्र के सुन्दरसाथ की क्या हालत हुई?

→ खेतीबाई, मनीबाई, बेरामीबाई, नानीबाई, गोमाबाई आदि ने स्वप्नवत् संसार को भली प्रकार जान-समझकर उससे विमुख होकर धर्म-मार्ग अपना लिया।

ज. ४८- गोमाबाई, वीरबाई, नाथीबाई, लखीबाई, भागबाई और ताराबाई - इन छः सरूपदे-स्त्रियों ने ब्रज-रास लीलाएँ खेली थीं और ये ही आत्माएँ यहाँ आकर निजधाम-मार्ग में प्रविष्ट हुईं।

ज. ४९- अनदूबाई, मनीबाई, पूरबाई, गंगबाई, भानाबाई और अमृतबाई ने अपना सर्वस्व त्याग दिया और निजानन्द धर्म में शामिल होकर सत्संग द्वारा अखण्ड आनन्द की प्राप्ति की।

→ और मनादे पर जब परब्रह्म परमात्मा की कृपा उतरी, तो वे भी साथ समुदाय में आ मिलीं। अन्य भी जैसे-चीमाबाई, सजनीबाई, दीपाबाई आदि सुन्दरसाथ उदयपुर शहर में जागृत होकर साथ-समुदाय में आ मिले।

→ कोई बाद में आकर निजानन्द धर्म में प्रविष्ट हुए थे। उक्त में से कुछ लोग तो परमतत्त्व को समझने का भाव लेकर आए थे और कुछ महाप्रभु के दर्शनों से आत्म-शान्ति पाने के लिए उनके चरणों में आए थे। अन्त में दर्शनादि के पश्चात् उन्होंने श्री प्राणनाथजी के अन्दर श्री राजजी के दर्शन कर आत्म-शान्ति प्राप्त की।

ज. ५२- जब दिल्ली सम्राट औरंगज़ेब की सेना ने उदयपुर के राणा पर चढ़ाई की, तो सम्पूर्ण क्षेत्र के लोग अपनी सुरक्षा के लिए इधर-उधर भाग गए। उदयपुर के प्रजा की हालत तो बिन पानी की मछली की-सी हो गई।

ज. ५३- उक्त प्रकार की हालत के कारण उस क्षेत्र के सुन्दरसाथ भी तितर-बितर होकर पहाड़ों और पर्वतों की ओर भाग गये।

स. ५४-उदयपुर से चलकर अपनी जमात के साथ श्रीजी स्वरूप ने कहाँ डेरा डाला?

स. ५५-यह वृत्तांत कहाँ का है? आगे कहाँ का वृत्तान्त सुनने में आयेगा?



ज. ५४- उदयपुर से चलकर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी अपनी जमात सहित रामपुर आए। वहीं पास में स्थित दुधलाई गाँव में पूरनदास के यहाँ जमात सहित डेरा डाला।

ज. ५५- उक्त वृत्तान्त उदयपुर का है। अब इसके आगे श्री राजजी की आज्ञा से अवश्यमेव मन्दसोर का वृत्तान्त सुनने में आयेगा क्योंकि श्रीजी स्वरूप अपनी जमात सहित वहीं जा रहे हैं।

- (प्रकरण ५०, सवाल-जवाब नं. ५५, कुल सं. ३२११+५५=३२६६)।

मध्यांश-द्वितीय खण्ड समाप्त ।



नोट :-

यशवन्ती कहे मेरे श्रद्धा सुमन साथजी !

आपश्री घर में ही बैठे-बैठे, जरूर यह मनन करनाजी ।

मनन करके प्रेम धरके, शीघ्र ही परमधाम आनाजी ।।

यशवन्ती सखी कहे.....

- प्रणाम



आह्वान



निसदिन रंग मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम ।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम ।।

- (परिक्रमा, प्र.४/चौ.५) ।

अर्थः- हे मेरे धामस्थ सुन्दरसाथजी !

हम सब अक्षरातीत ब्रह्मधाम-श्री रंगमहल में रात-दिन श्री श्यामश्यामाजी के साथ कैसे रहा करती थीं ? अपने अंग-प्रत्यंग से उन सुखों को याद करो, जिन्हें हम आठों पहर-चौबीसों घण्टों की लीलाओं द्वारा निरंतर प्राप्त किया करतीं थीं ! इतना तो करो !!

- लेखक

- श्री राज -

श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट तथा श्री प्राणनाथ महिला मंडल (रजि.) बोरीवली, मुंबई

का ई. स. १९९८ से २०१४ तक का प्रकाशन -

१.	विवरण पत्रको समीक्षा	-	नेपाली
२.	विवरण पत्र की समीक्षा	(ई. स. १९७८ में नेपाल-धरान मंदिर से प्रकाशन हुआ है) -	हिन्दी
३.	मोहजलको पाँच प्रकरण	-	नेपाली
४.	समीक्षा- संसार और मेरा भर्तार की	-	हिन्दी
५.	समीक्षा- संसार और मेरा भर्तारनी	-	गुजराती
६.	Samiksha - A reply to Sansar Aur Mera Bhartar	-	English
७.	संसार और मेरा भर्तार की समीक्षा का 'उपसंहार'	-	हिन्दी
८.	संसार और मेरा भर्तारनी समीक्षाना 'उपसंहार'	-	गुजराती
९.	विराट विज्ञान दर्पण	-	हिन्दी
१०.	विराट विज्ञान दर्पण	-	गुजराती
११.	अपना धाम दर्शन (दीनदयाल कृत मझली वृत्त)	-	हिन्दी
१२.	आपणुं घर परमधाम (दीनदयाल कृत बचली वृत्त)	-	गुजराती
१३.	आफ्नै घरको वर्णन (दीनदयाल कृत नेपाली वृत्त)	-	नेपाली
१४.	चर्चनी के प्रश्नोत्तर (दीनदयाल कृत)	-	हिन्दी
१५.	चर्चनीना सवाल-जवाब (दीनदयाल कृत)	-	गुजराती
१६.	विराट विज्ञान दर्पण के सवाल-जवाब (दीनदयाल कृत)	-	हिन्दी
१७.	विराट विज्ञान दर्पणना प्रश्नोत्तर (दीनदयाल कृत)	-	गुजराती

१८. अष्टादशोऽध्यायः (कुलजम स्वरूप साहेब के) - हिन्दी

१९. अष्टादशोऽध्यायः (" " " ") - गुजराती

२०. अष्टादशोऽध्यायः (" " " ") - नेपाली

२१. पञ्चरोशनी (" " " ") - हिन्दी

२२. पंचरोशनी (" " " ") - गुजराती

२३. पञ्चरोशनी (" " " ") - नेपाली

२४. त्रिरंगी बोध (" " " ") - हिन्दी

२५. त्रिरंगी ज्ञान (" " " ") - गुजराती

२६. द्वादश प्रकाश (" " " ") - हिन्दी

२७. द्वादश प्रकाश (" " " ") - गुजराती

२८. मेहेर सागर-नित्य पाठ (" " " ") - हिन्दी

२९. मेहेर सागर-नित्य पाठ (" " " ") - गुजराती

३०. सेवा-पूजा (दैनिक) - हिन्दी

३१. सेवा-पूजा (दैनिक) - गुजराती

३२. चर्चनी पट दर्शन - हिन्दी

३३. अभिनन्दन ग्रंथ (१०८ श्री दीनदयालजी महाराज हीरक जयन्ती) - हिन्दी

३४. सेवा-पूजा (अर्थ सहित) - गुजराती

३५. अष्ट प्रहर सेवा-पूजा (अर्थ सहित) - गुजराती

३६. स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत
बीतक साहेब के श्री दीनदयाल कृत - हिन्दी
- सवाल-जवाब ३ खण्डों में
१.पूर्वांश-प्रथम खण्ड-मजल शुरूआत से सूरत पर्यन्त
२.मध्यांश-द्वितीय खण्ड-मजल सूरत से उदयपुर पर्यन्त
३.उत्तरांश-तृतीय खण्ड-मजल मंदसोर से बीतक समाप्ति

३७. स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत
बीतक साहेबना श्री दीनदयाल कृत - गुजराती
- प्रश्नोत्तर ३ खण्डोमां
१. पूर्वांश-प्रथम खण्ड-मजल शरूआतथी सूरत पर्यन्त
२. मध्यांश-द्वितीय खण्ड-मजल सूरतथी उदयपुर पर्यन्त
३. उत्तरांश-तृतीय खण्ड-मजल मंदसोरथी बीतक समाप्ति

३८. श्री प्राणनाथजी प्रणीत कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत स्थित
श्री किरंतन और श्री प्रकाश ग्रंथ के 'पुराना किरंतन' और
'भागवत का सार' - हिन्दी

३९. श्री प्राणनाथजी प्रणीत कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत स्थित
श्री किरंतन अने श्री प्रकाश ग्रंथना 'पुराना किरंतन' अने
'भागवत नो सार' - गुजराती

❖ प्रणाम ❖

